विश्व भारती पुष्पमाला पुष्प—१

पृथ्वीराज रासो

[लघु सस्करण]

पजाब विश्वविद्यालय से पी एच डी डिगरी के लिए
स्वीकृत शोध प्रबन्ध ।

[मूल इगलिश से परिवर्द्धित हिन्दी रूपान्तर]

सम्पादक —

डा० वी० पी० शर्मा

एम ए, पी एच डी

डी० ए० वी० कालेज, चण्डीगढ।

विश्व भारती प्रकाशन

1178/22-B चण्डीगढ़ ।

आमुख

मेरे मित्र डा० वेणीप्रसाद शर्मा द्वारा सुसम्पादित "पृथ्वीराज रासो" के इस सस्करण का प्रकाशन निस्सदेह स्वागत योग्य है। सभी जानते हैं कि पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता को लेकर हिंदी भाषा और साहित्य के विद्वानो में कितना मत भेद हैं। किसी समय इसे भारतीय इतिहास के लिये बहुमूल्य ग्रथ समझा जाता था। 'रायल एशियाटिक सोसायटी आफ बगाल नामक विद्वत्सभा ने इस का प्रकाशन शुरु किया था, पर "पृथ्वीराज विजय" नामक सस्कृत काव्य के मिल जाने से इस की ऐतिहासिक प्रामाणिकता पर सदेह होने लगा। प्रो० बूलर ने सन् १८६३ मे एक पत्र उक्त सोसायटी को लिखा था जो उस साल की प्रोसीडिंग्स मे प्रकाशित हुआ था। इस पत्र मे प्रो० बूलर ने लिखा था कि मुझे उन लोगो का समर्थन करना पडेगा जो रासो को जाली मानते हैं। मेरे एक विद्यार्थी श्री जेम्स मोरिसन ने पृथ्वीराज विजय नामक सस्कृत ग्रथ का अध्ययन किया है, जो मुझे सन् १८७५ मे काश्मीर मे प्राप्त हुआ था और उन्होने १४८०-७५ मे लिखित जोन राज की टीका का भी अध्ययन कर लिया है पृथ्वीराज-विजय का लेखक निस्सदेह पृथ्वीराज का समकालीन आदि राज कवि था। सभवत कश्मीरी था और अच्छा कवि एव विद्वान था। उस का लिखा हुआ चौहानो का वत्तान्त चद के लिखे विवरण के विरुद्ध है। और वि-स० १०१० तथा वि० स० १२२५, (जे० ए० एस० ब० भाग-५५, प्रथम जिल्द १८८६ पृष्ठ १४ और टिप्पणी,) के शिला लेख लेखो से मिल जाता है। पृथ्वीराज विजय काव्य मे जो वशावली दी हुई है वही उक्त लेखो मे मिलती हैं और उन मे दी हुई घटनाए दूसरे प्रमाणो-अर्थात मालवा और गुजरात के शिला लेखो से मिल जाती हैं।" इसके बाद कुछ और एतिहासिक असगतियो का उल्लेख करने के बाद प्रो० बूलर ने लिखा था—"मैं समझता हूँ कि रासो का प्रकाशन बन्द कर दिया जाए तो अच्छा होगा"। इस पत्र के परिणाम स्वरूप सोसायटी ने रासो का प्रकाशन बन्द कर दिया। परन्तु प्रकाशन बन्द होने से एतद्विषयक ऊहा-पोह बद नही हुआ बल्कि बढता ही गया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने पूरे ग्रथ का सम्पादित सस्करण प्रकाशित किया और

कई विद्वानो ने उसकी ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियो को सुलझाने का असफल प्रयत्न किया। डा० वेणी प्रसाद जी ने इस सस्करण की भूमिका म विद्वत्ता पूण इन सभी बातो की समीक्षा की है। उन्होंने पृथ्वीराज रासो के सब से पुराने समझे जाने वाले हस्त लेख के अध्ययन से अनेक महत्वपूण निष्कष निकाले हैं। वे हिन्दी के भावुक हिमायतियो की भाति हर बात का उल्टा-सीधा समथन करना अपना कतव्य नही मानते। वे सत्य की खोज करना ही अपना पावन कर्तव्य समझते हैं वे कहते हैं "उपयु क्त ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियो की उपस्थिति म हमे ऐसा विश्वास नही होता कि रासो की रचना तेहरवी शताब्दी मे हुई हो।' अत प्रतीत एसा होता हैं कि रासो की रचना सम्राट पृथ्वीराज के राज्यकाल—१३वी शताब्दी के प्रथमार्ध मे नही हुई अपितु यह एक लगभग बाबर समकालीन कृति है"। (पष्ठ ७३) यह निष्कष अभी सवजन ग्राह्य हो सकेगा या नही यह कहना अभी कठिन है। किन्तु डा० शर्मा के तक और विवेचन पद्धति मे बल है और विद्वानो को इस पर अवश्य विचार करना पडेगा।

रासो के चरित नायक के इतिहास प्रथित व्यक्ति होने के कारण आरम्भ मे इसके ऐतिहासिक पक्ष पर ही अधिक चर्चा हुई। परन्तु पथ्वीराज रासो एक काव्य है, उसमे ऐतिहासिक विप्रतिपत्तिया हो भी तो वह काव्य के अध्येता के लिए उपेक्ष्य नही है। डा० शर्मा ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है। यह ठीक है कि रासो की ऐतिहासिक सामग्री भी बहुत महत्वपूण है और इतिहास का विद्यार्थी उस को उपेक्षा नही कर सकता। परन्तु रासो को चरित-काव्य के रूप मे अध्ययन करना अधिक आवश्यक हैं। डा० शर्मा जी को "प्रस्तुत लघु सस्करण, प्रबधात्मकता, कथा सौष्ठव तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उपयु क्त तीनो सस्करणा से अधिक समीचीन प्रतीत हुआ" है। स्पष्ट है कि उन का बल रासो के साहित्यक अध्ययन पर है।

वस्तुत जैसा कि मैं ने पहले कहा हैं, इस देश में इतिहास को ठीक आधुनिक अर्थ मे कभी नही लिया गया। बराबर ही ऐतिहासिक व्यक्ति को पौराणिक या काल्पनिक कथा-नायक बनाने की प्रवृत्ति रही है। कुछ मे दैवी शक्ति का आरोप करके पौराणिक बना दिया गया है। जसे राम

कृष्ण तथा बुद्ध आदि। और कुछ मे काल्पनिक रोमास का आरोप करके निजधरी कथाओ का आश्रय बना दिया गया है। जैसे—उदयन, विक्रमादित्य और हाल। जायसी के रत्न सेन और रासो के पृथ्वीराज मे भी तथ्य और कल्पना का Facts और Fiction का अद्भुत योग हुआ है। कर्म फल की अनिवायता मे दुर्भाग्य और सौभाग्य की ओर मनुष्य के अपूव शक्ति भण्डार होने म दृढ विश्वास और आस्था ने इस देश के ऐतिहासिक तथ्यो को सदा आदशवादी काल्पनिक रग मे रगा है। यही कारण है कि जब ऐतिहासिक व्यक्तियो का भी चरित्र लिखा जाने लगा तब भी इतिहास का काम नही हुआ। अत तक ये रचनाए काव्य ही बन सकी, इतिहास नही। फिर भी निजधरी-कथाओ से व इस अथ मे भिन्न थी, कि उन में बाह्य तथ्यात्मक जगत् से कुछ न कुछ योग अवश्य रहता था। कभी कभी मात्रा मे कमी पेशी तो हुआ करती थी, पर योग रहता अवश्य था। ये निजधरी कथाए अपने आप मे ही पूण होती थी। जिस प्रकार भारतीय कवि काल्पनिक कथाओ मे ऐसी घटनाओ को नही आने देता, जो दु खपरक विरोधों को उकसावे, उसी प्रकार वह ऐतिहासिक कथानको म भी किया करता है। सिद्धान्तत काव्य में उस वस्तु का आना भारतीय कवि उचित नही समझता जो तथ्य और औचित्य की भावनाओ मे विरोध उत्पन्न करे। दु खोद्रेचक परिस्थितियो Tragic Contradiction की सृष्टि करे। परन्तु वास्तव जीवन मे ऐसी बाते होती ही रहती हैं इस लिए इतिहासाश्रित काव्य मे भी ऐसी बातें आवेंगी ही। बहुत कम कवियो ने ऐसी घटनाओं की उपेक्षा कर जाने की बुद्धि से अपने को मुक्त रखा है। ऐतिहासिक काव्य में भी नायक को सब प्रकार से धीरोदात्त या धीर ललित बनाने की प्रवृत्ति ही प्रबल रही है। परन्तु वास्तविक जीवन के कतव्य द्वन्द्व, आत्म-विरोध और आत्म-प्रतिरोध जैसी बाते उस मे नही आ पाती या बहुत कम आ पाती हैं, ऐसा करने से इन काव्यो मे इतिहास का रस भी नही आ पाता और कथानायक कल्पित पात्र की कोटि मे आ जाता है। फिर जीवन मे कभी २ हास्योद्रेचक अनमिल-स्वर भी आ जाते हैं। नायक के प्रसग म भारतीय कवि कुछ अधिक गम्भीर रहने मे विश्वास करता हैं, और ऐसे प्रसगो को प्राय तरह दे जाता है।

हिन्दी के आदि कालीन ऐतिहासिक चरिताश्रित काव्यो मे यह

यह प्रवत्ति और भी बढ गई है। उन मे ऐतिहासिक मामग्री तो खोजी जा सक्ती हैं, परन्तु इतिहास नही खोजा जा सक्ता। फिर पथ्वीराज रासो तो विकसनशील महाकाव्यो की कोटि म आता हैं, जिस मे परवर्तीकाल मे निरन्तर प्रक्षेप होते रहे हैं। प्रक्षेपो के लेखक सब समय उत्तम कोटि के कवि नही होते। चरित-नायक के विषय मे अतिरजना और कथानक को मनोरजक बनाने की प्रवत्ति ने इन प्रक्षेपो की समस्या को और भी अधिक जटिल बना दिया है। ऐमी अनेक कथानक-रूढियो को जो किसी समय निजधरी कथा के कथानक की अभीष्ट दिशा मे मोडने के लिये प्रचलित हुई थी—इस प्रकार मिलाया जाता हैं, मानो वे ऐतिहासिक तथ्य हो। इन कथानक रूढियो की चर्चा मैं ने 'हिन्दी साहित्य का आदि काल" मे की थी। अब मेरे प्रिय विद्यार्थी श्री व्रज विलास श्रीवास्तव ने "पथ्वीराज रासो मे कथानक रूढिया" नामक पुस्तक मे सकलन करने का प्रयत्न किया है।

इन सब बातो मे स्पष्ट हैं कि ऐतिहासिक दष्टि मे पथ्वीराज रासो का अध्ययन कितना कठिन प्रश्न हे। इधर विद्वानो मे यह बात तो लगभग मान्य हो चुकी हैं कि—पथ्वीराज रासो के बडे सस्करण (ना०प्र० सभा सस्करण) में कुछ पुरातन रूप अवश्य है। 'पुरातन प्रबध सग्रह" म प्राप्त कुछ छप्पयो से इस विश्वास को और भी बल मिलता हैं। परन्तु मूल रूप क्या था—यह आज भी जल्पना कल्पना का विषय बना हुआ है। इधर पथ्वीराज रासो के कई छोटे सस्करण प्राप्त हुए हैं—जो समस्या को और भी उलझाने मे समथ सिद्ध हुए हैं। डा० शर्मा जी ने दिखाया है कि पाठ विश्लेषण की दृष्टि से लघुतम रूपातर के सभी पाठ लघु रूपान्तर मे मिलते है और लघु के मध्यम में और मध्यम के वृहद मे। परन्तु चारो रूपान्तरो मे खण्डो की योजना, छदो का पूर्वापर सम्बन्ध तथा शब्दावली मे पर्याप्त अतर है, लघु रूपातर की पाण्डुलिपिया अन्य तीनो रूपातरो की पाण्डुलिपियो से प्राचीनतम अनुमानित की गई हैं। डा० शर्मा जी ने बीकानेर दरबार की अनूप सस्कृत लाइब्रेरी से प्राप्त तीन प्रतियो के आधार पर इस सस्करण का सम्पादन किया हैं। उन्होने इन तीनो प्रतिया के पाठो का बहुत अच्छा विश्लेषण किया है। उनका मत है कि इस

विश्लेषण से "यह बात निश्चित प्राय है कि पति BK1 अन्य दोनो प्रतियो से विश्वसनीय तथा प्राचीनतम है और इसका पाठ भी दोनो प्रतियो से शुद्ध प्रतीत हुआ है"। अत प्रस्तुत सस्करण का सम्पादन इसी प्रति को मुख्य आधार मान कर किया गया है। यथास्थान अन्य दोनो प्रतियो का उपयोग भी उन्होने किया है।

मैं इस सस्करण का स्वागत करता हूँ। डा० शर्मा जी ने बडे परिश्रम और वैज्ञानिक ढग से सम्बद्ध सामग्रियो की जाच की है, उन्हें इस परिश्रम के फल स्वरूप पजाब विश्व विद्यालय से पी एच डी की उपाधि भी प्राप्त हो चुकी है। निस्सदेह इनका परिश्रम श्लाघ्य है और रासो की समस्याओ के समाधान म एक महत्त्व पूर्ण कदम है। मेरा विश्वास है कि हिन्दी-ससार इस प्रयत्न का हार्दिक स्वागत करेगा। डा० शर्मा बहुत परिश्रमी और विनयी विद्वान् हैं। इन ग्रन्थ के सम्पादन के बाद भी वे रासो के और भी अधिक गहरे अध्ययन में सलग्न हैं। उन से हिन्दी ससार और भी आशा रखता है। परमात्मा उन्हे दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करे ताकि वे निरन्तर साहित्य सेवा करते रहे।

हजारी प्रसाद द्विवेदी
[अध्यक्ष हिन्दी विभाग पजाब विश्व विद्यालय]
चण्डीगढ़।

चण्डीगढ
३-३-६३

पुनश्च—बड़ी सावधाना रखने पर भी ग्रथ में यत्र तत्र कुछ प्रिंटिंग की अशुद्धिया रह गई हैं। आशा है क्षम्य होंगी। इस ग्रथ का अग्रिम सस्करण, इस से भी अधिक सुचारु तथा सुन्दर रूप मे प्रकाशित होगा। —सम्पादक

समर्पण:—

परम श्रद्धास्पद

२व० डा० बनारसीदास जैन

जिनकी प्रेरणा तथा आशीर्वाद से

मैं इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण कर पाया हूँ

उनकी ही पुण्य स्मृति में

सादर समर्पित।

श्रद्धावनत

—वी पी शर्मा

—आपका जन्म लुधियाना नगर के एक साधारण वैश्यकुल में दिसम्बर सन् १८८६ म हुआ। आपने ओरियण्टल कालेज लाहौर से एम ए (संस्कृत) में उत्तीर्ण किया। मेयो पटियाला रिसर्च स्कालर के रूप म पजाब भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया। भारत के पुरातत्व विभाग म शिलालेख तथा पुरान सिक्कों पर अनुसन्धानात्मक कार्य किया। ओरिण्टल कालेज में प्राध्यापक नियुक्त होने और डा० ए सी वुल्लर के सम्पर्क में आने से आपने प्राकृत, अपभ्रश तथा जैन साहित्य का विशेष अध्ययन किया। सन् १९२८ मं लण्डन युनिवर्सिटी से आपको "फोनोलोजी ऑफ पजाबी" विषय पर डॉक्टरेट की उपाधि मिली। आपने संस्कृत तथा पजाबी भाषा विषयक अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। आपका जीवन परोपकारी तथा बड़ा ही सात्विक था।

भारत के यशस्वी भाषाविद्—

डा० बनारसी दास जैन, एम ए, पी एच डी
(लण्डन)

जन्म—१६ १२ १८८६

मृत्यु—अप्रैल, १९५४

भारत के यशस्वी भाषाविद्—

डा० बनारसी दास जैन, एम ए पी एच डी
(लण्डन)

जन्म—१६ १२ १८८६ मृत्यु—अप्रैल, १९५४

विषय-सूची

द्वितीय भाग

—०—

प्रस्तावना

पृथ्वीराज रासो राजपूताने के क्षत्रिय वीरों का अति प्रिय ग्रंथ रहा है। वहां महाभारत से उतर कर रासो ही सब श्रेष्ठ गौरव का पात्र समझा जाता था। इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ को हिंदी साहित्य का आदि स्रोत या आदि ग्रंथ माना गया है। इस के वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक सम्पादन के लिये लगभग गत सौ वर्षों से प्रयत्न होते रहे, परन्तु इस का अभी तक कोई प्रामाणिक तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से उचित सस्करण प्रकाशित नहीं हो सका था। ऐसा होने में दो बाधाएं थीं। प्रथम तो इस के अन्तर्गत आने वाली ऐतिहासिक समस्याओं अथवा विप्रतिपत्तियों का विचार विद्वानों में उहा पोह चलता रहा, क्योंकि रासो का सम्बंध इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति भारत पर मुस्लिम आक्रमणकारियों से लोहा लेने वाले हिंदु सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के जीवन चरित्र तथा तत्कालीन राजनैतिक वातावरण से है। इसकी ऐतिहासिक विषमताओं अथवा विप्रतिपत्तियों के कारण ही किसी विद्वान ने इसे जाली ग्रंथ माना तो किसी ने अप्रामाणिक[1]।

सर्व प्रथम सन १८३६ में गार्वटनेज नामक एक रूसी विद्वान इस ग्रंथ के कुछ भाग का अनुवाद कर प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु उसकी असामयिक मृत्यु ने पूर्वी भाषा तथा साहित्य के विद्वानों को उसका कौशल देखने से वंचित कर दिया। कर्नल टाड इस ग्रंथ से इतना प्रभावित था कि उसने अपने गुरु यति ज्ञानचन्द्र से रासो के पद्यों का अर्थ सुन सुन कर कुछ अंशों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Annals of Rajasthan" में रासो का विशेष उपयोग किया। यही नहीं लम्बी सर्विस के पश्चात् भारत भूमि को छोड़कर स्वदेश चले

[1] इस समस्या पर विशेष विवरण "ऐतिहासिकता" अध्याय में देखें।

जाने पर भी कर्नल महोदय का प्रेम रासो मे बराबर बना रहा, जिसका परिचय कन्नौज खण्ड के उस पद्यमय अनुवाद से लगता है जिसे छपवा कर कर्नल महोदय ने अपनी मित्र मण्डली मे मुफ्त वितरित किया। इगलैण्ड की गुणग्राही विद्वनमण्डली ने उसे इतना पसन्द किया कि सन् १८३८ के एशियाटिक सोसाइटी के जनरल की ३५वी जिल्द मे उसे पुन प्रकाशित किया गया। केवल अनुवाद से ही विदेशी विद्वान् मुग्ध हो गए।

इसके पश्चात सन १८७१ मे मनपुरी के मजिस्ट्रेट ग्रौस महोदय ने रासो का सम्पादन प्रारम्भ किया और बगाल एशियाटिक सोसाइटी को इस के छपवाने के लिए प्रेरित किया। परन्तु दो वर्षो तक रासो पर निरन्तर काय करने के पश्चात् ग्रौस महोदय ने सरकारी काय अधिक होने के कारण अथवा रासा गत भापा आदि की कठिनाइयो के कारण इस ग्र थ के सम्पादन मे अपनी असमथता प्रकट की और उक्त सोसाइटी को सम्मत्ति दी कि यह काय किसी भारतीय विद्वान् को सौपा जाय। एतदनन्तर उक्त सोसाइटी ने भारतीय भाषाओ के विशेषज्ञ जॉन बीम्स को रासो के सम्पादनाथ प्रेरित किया। बीम्स महोदय ने सम्मति दी कि रासो के सम्पादन से भाषा शास्त्र की विशेष पुष्टि हो सकेगी और इससे इण्डो-आय भाषाओ की खोई हुई लडी का पता चल जाएगा। सस्कृत और प्राकृत की बोलियो से भारत की वतमान बोलियो के उदगम और उनके तारतम्य पूण विकास के इतिहास का भली प्रकार ज्ञान रासो के सम्पादन तथा प्रकाशन के बिना सम्भव नही है। परिणाम स्वरूप बीम्स महोदय ने जय नारायण कालेज बनारस के सस्कृत के प्रोफसर डा० रूडोल्फ हनले के सहयोग से रासो का सम्पादन काय आरम्भ किया। फलत रासो का आशिक प्रकाशन "बिब्लियाथिका इण्डिका" ग्र थमाला म प्रारम्भ हुआ। लगभग चार सौ पृष्ठ ही प्रकाशन मे आए थे कि बीम्स महोदय सन् १८७४ मे अपने सहायक हनले सहित किसी कारण वश रासो के सम्पादन काय से विरत हो गए।

सन १८८६ मे महामहोपाध्याय कविराज मुरारी लाल श्यामलदास

ने बगाल एशियाटिक सोसाइटी के जरनल[1] मे एक लेख प्रकाशित किया जिस मे रासो को सवथा एक जाली ग्र थ ठहराया गया और कविवर चद वरदाइ के साथ रासो के सम्बध को आकाश कुसुमवत् मिथ्या प्रमाणित किया। प्रो० बूलर[2] ने "पृथ्वीराज विजय" काव्य के आधार पर कविराज जी का समथन किया, परिणामत विद्वानो का रासो विषयक जोश ठडा पड गया। इसी समय कविराज श्यामलदास जी के प्रतिवाद में श्री मोहन लाल विष्णु लाल पाण्डया ने "रासो सरक्षा" नामक लेख ब ए सो के जनरल मे प्रकाशनाय भेजा पर सोसाइटी रासो के प्रति इतनी निराश हो चुकी थी कि उक्त लेख के छापने से भी इनकार कर दिया। इस पर पाण्डया जी ने उक्त लेख को पुस्तिका रूप मे छपवा कर मुफत वितरण किया। मिश्रबधु तथा बाबू श्यामसुन्दर दास आदि विद्वानो ने पाण्डया जी की युक्तियो का समथन किया। परिणाम स्वरूप नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने सहस्रो रुपयो के व्यय से रासो के प्रक्षेप विक्षेप पूर्ण वहद सस्करण को पाठ शुद्धि का विशेष ध्यान न करते हुए सन् १६००–८ मे कतिपय भागो मे प्रकाशित किया।

इस पर भी प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् स्व डा० गौरीशकर हीरानद ओझा जी ने रासो गत ऐतिहासिक विषमताओ के आधार पर रासो को एक जाली ग्र थ ठहराया। स्व आचाय शुक्ल जी ने भी रासो का प्रामाणिकता मे सदेह प्रकट किया। रासो की प्रामाणिकता सम्बधो उपयु क्त ऊहापोह रासो के वृहद् सस्करण तथा मध्यम सस्करण को लेकर ही चलता रहा। लघु तथा लघुत्तम सस्करण की पाण्डुलिपिया अभी तक प्रकाश मे नही आई थी।

पजाब विश्व विद्यालय लाहौर के तत्कालीन वाइस चासलर डा० ए सी वुलनर की प्रेरणा से स्व० डा० बनारसी दास जैन के निर्देशन मे मध्यम सस्करण का लेकर प० मथुराप्रसाद दीक्षित कुछ सशोधन काय करते रहे। डा० बनारसी दास जी के सुयोग्य

1 देखो B A S Journal Vol LV 1886 Part I Page 5।
2 देखो—R A S J जनवरी दिसम्बर १६१३ पृष्ठ ८३

पुत्र श्री मूलराज जैन ने रासो के लघु सस्करण के सम्पादनार्थ सामग्री एकत्रित की थी परन्तु देश के विभाजन के कारण वह समस्त सामग्री लाहौर मे ही रह गई और सभवत आग की भेंट हो गई।

रासो के समालोचनात्मक सम्पादन मे दूसरा कारण उसकी विविध वाचनाओ (Recensions) की उलझन रही हैं। सन् १६३० तक इस ग्रन्थ की बृहद् तथा मध्यम वाचनाओ का ही ज्ञान था। सन् १६३० से १६४२ तक के समय मे बीकानेर के प्रसिद्ध व्यापारी तथा विद्वान् श्री अगरचन्द जी नाहटा के परिश्रम से रासो की लघु तथा लघुतम दो वाचनाए और प्रकाश मे आईं। बृहद तथा मध्यम वाचनाओ की अनेको पाडु लिपिया भारत तथा योरुप की लाइब्रेरियो मे कुछ पूर्ण और कुछ खण्डित रूप मे सुरक्षित हैं। कुछ प्रतियो का ब्योरा इस प्रकार है —

१ बीकानेर फोर्ट लाइब्रेरी मे आठ प्रतिया।
२ अबोहर साहित्य सदन मे एक प्रति।
३ बीकानेर वृहद ज्ञान भण्डार मे एक प्रति।
४ बीकानेर के श्री अगरचन्द नाहटा की एक प्रति।
५ पन्जाब यूनिवर्सिटी लाहौर लाइब्रेरी मे चार प्रतिया।
६ भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट मे दो प्रतिया।
७ रायल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई शाखा म तीन प्रतिया।
८ जोधपुर सुमेर लाइब्रेरी मे दो प्रतिया।
९ उदयपुर स्टेट विक्टोरिया हाल लाइब्रेरी म एक प्रति।
१० आगरा कालिज आगरा मे चार भागो में एक प्रति।
११ कलकत्ता निवासी स्वर्गीय पूरणचन्द नाहर की एक प्रति।
१२ रायल एशियाटिक सोसायटी बगाल मे कुछ प्रतिया।
१३ नागरी प्रचारिणी सभा काशी की कुछ प्रतिया।
१४ किशनगढ स्टेट लाइब्रेरी की कुछ प्रतिया।
१५ अलवर स्टेट लाइब्रेरी मे कुछ प्रतिया।
१६ चद के वशधर नानूराम की दो प्रतिया।
१७ युरोप के विभिन्न पुस्तकालयो म कतिपय प्रतिया।

मध्यम रूपान्तर की सब से प्राचीनतम प्रति लन्दन के रायल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय मे है। इसका लिपि काल स० १६६२ है। वृहद् रूपान्तर की सब से प्राचीनतम प्रति स० १७३८ की है और वह मेवाड के ठिकाना भीडर के सग्रह मे है।

लघु रूपान्तर की तीन प्रतिया बीकानेर के राजकीय पुस्तकालय मे है। इनमे से एक का लिपि काल सम्वत् १६३० के लगभग निश्चित है। बीकानेर के मोतीचद-खजानची सग्रह मे एक प्रति तथा एक प्रति नाहटा कला भवन मे है। ये दोना प्रतिया बीकानेर राजकीय लाइब्रेरी वाली प्रति से अर्वाचीन हैं। लघुतम रूपान्तर, जिसका कुछ सम्पादित पाठ "राजस्थान[1] भारती" मे प्रकाशित हुआ है, की एक प्रति श्री अगरचन्द नाहटा जी को गुजरात के किसी एक गाव से प्राप्त हुई थी। इसका लिपिकाल सवत् १६६७ वताया जाता है। एक प्रति मुनि जिनविजय जी के सग्रह मे है। (लिपिकाल स० १६६७)

प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से वृहद् तथा मध्यम रूपान्तरो मे तो प्रबन्धात्मकता नाम मात्र ही है। घटनाक्रम अत्यन्त शिथिल है। प्रत्येक घटना अपने स्वतन्त्र रूप मे वर्णित है और बीच बीच मे इतने अनिच्छित प्रसग आ घुसे हैं कि उनका प्रधान कथानक से लवमात्र का भी सम्बन्ध नहीं जोडा जा सकता। जसे—दीपावली प्रसग, शकुन विचार, भूत, प्रेत, ऋषि मुनि, देवता और न जाने कितने प्रसग हैं कि मुख्य कथावस्तु उपयुक्त प्रसगो मे आटे मे नमक के समान है। लघुतम रूपान्तर का कथानक जहा तहा बिखरा पडा है। अनुमान ऐसा है कि इस वाचना का पाठ क्रमबद्ध नही है। जैसे प्रथम खण्ड के प्रारम्भ मे छन्द भुजगी सख्या २ मे ईश्वर, व्यास— शुकदेव तथा कवि कालिदास आदि की प्रस्तुति के पश्चात छद सख्या ३ मे वशोत्पत्ति वर्णन है। इसके बाद छद विराज (सख्या २२) मे शिव स्तुति और छद साटक २३ मे गणेश स्तुति का वर्णन है। हालाकि मगलाचरण ग्रन्थ के प्रारम्भ मे चाहिए था और उपर्युक्त छद भुजगी सख्या २ का सम्बन्ध छद (दूहा) सख्या १६ के साथ होना चाहिए था।

1 सवद् विभाजन सम्पादक द्वारा ही निश्चित किया गया है।

खट्टुवन मे धन प्राप्ति, किल्ली ढिल्ली कथा तथा अनगपाल द्वारा पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य का समरण प्रसग सकेत मात्र से एक २ दोह मे ही समाप्त कर दिए हैं। दूसरे खण्ड मे सयोगिता के जन्मे बिना ही उसका स्वयम्वर रचाया जा रहा है। अप्रासागिक रूप से कही सुनार और बढई आदि विवाहार्थ आभूषण तथा मण्डप की सजावट के लिये सामान तैयार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त अप्रसग मे ही सयोगिता यौवन मद वर्णन तथा एक ही छद मे जयचद पृथ्वीराज युद्ध समाप्त है। इस प्रकार लघुतम रूपान्तर मे प्रबन्धात्मकता नाम की कोई वस्तु खोजने पर भी नही मिलती।

प्रस्तुत लघु सस्करण प्रबधात्मकता, कथा सौष्ठव तथा भाषा विन्यास की दष्टि मे उपयुक्त तीनो सस्करणो से अधिक समीचीन प्रतीत हुआ। इसकी पाण्डुलिपिए भी उक्त तीना वाचनाओ की पाण्डुलिपिया से प्राचीनतम प्राप्त हुई हैं। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का भी यह मत है कि रासो का लघु सस्करण अन्य तीनो सस्करणो मे प्रामाणिक[1] है। डा० दशरथ[2] शर्मा इस लघु सस्करण की पाण्डुलिपिया के विशेष अध्ययन मे इसी निष्कर्ष पर पहुँच सके कि पथ्वीराज रासो का वास्तविक रूप इन्ही प्रतियो मे मिल सकता है।

उपयुक्त कारणा से तथा स्व० डा० बनारसी दास जैन की प्रेरणा से उनके निर्देशन मे मैंने यह कार्य सन १९५३ मे प्रारम्भ किया था। मैं इस दिशा मे किंचित् मात्र ही प्रगति कर पाया था कि अप्रैल १९५४ मे अकस्मात हृदय गति रुक जाने से श्रद्धेय जैन जी का स्वर्गवास हो गया। शोक सतप्त मुझको कुछ न सूझा। तीन मास तक किं कर्तव्य विमूढ रहा। आरम्भ कार्य को सिरे तक ले जाने की प्रबल इच्छा तो मन मे हिलोरे ले ही रही थी। अन्तत मैं ने डा० माता प्रसाद गुप्ता जी (रीडर

---

1 देखो—"सक्षिप्त रासो" पृष्ठ १६०

2 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सन् १९३९ के विवरण में डा० शर्मा का लेख देखें। "इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली जिल्द १८, १९४०"

हिन्दी विभाग इलाहाबाद वि० विद्यालय) से इस कार्य मे निर्देशन की प्रार्थना की। उन्होंने सहष स्वीकृति दे दी। उनके सुयोग्य निर्देशन तथा परिश्रम से मैं इस काय को सम्पूण कर प या हूँ। मेरे पास ऐसे शब्द नही कि जिनके द्वारा मैं श्रद्धेय गुप्त जी का आभार प्रदशन कर सकू। प्रस्तुत प्रति जो आप के हाथो मे है यह उन्ही की कृपा, विद्वत्ता, तथा परिश्रम का फन है, मैं तो केवल कारण मात्र हूँ।

मेरी आर्थिक दशा भी अच्छी नही थी। अत मुझे हर समय भय लगा रहता था कि कही आर्थिक कठिनाई के कारण प्रस्तुत शोध कार्य अधूरा न रह जाए। पजाब विश्व विद्यालय के तत्कालीन रजिस्टरार डा० भूपाल सिंह के सौजन्य तथा सहयोग से मुझे कुछ शोध-अनुदान प्राप्त हो सका था। एतदथ पजाब विश्व विद्यालय का आभार-प्रदशन करना मेरा कतव्य बन जाता है।

प्रस्तावना को समाप्त करने से पूर्व सव प्रथम महाराज बीकानेर के प्राईवेट सैक्रेट्री श्री के एस राजगोपाल का मैं आभारी हूँ, जिन के सौजन्य से मुझे अनूप सस्कृत राजकीय पुस्तकालय से तीन पाण्डुलिपिए प्राप्त हो सकी। बीकानेर के श्री अगर चद नाहटा जी, जो कि मुझे समय समय पर अपनी सम्मति तथा शोध सम्बधी सामग्री प्रदान करते रहे है, का कृतज्ञ हूँ। प्रयाग विश्व विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष का बहुत अनुगृहीत हूँ। जब मुझे शोध सबधी काय के लिये कुछ समय के लिये प्रयाग मे रहना पडा तो मुझे उक्त पुस्तकालय से अपने विषय से सम्बधित सामग्री एकत्रित करने की सुविधा रही। अपने परम मित्र प्रो० कलाश चन्द्र सिंहन (गौवनमेंट कालेज लुधियाना) तथा श्री मूलराज जन (स्व० डा० जैन के सुयोग्य पुत्र) का मैं हृदय मे आभारी हूँ, जिन की सुसम्मति मुझे हर समय प्राप्त होती रही।

अन्त में अपने परीक्षक-डा० सुनीति कुमार चटर्जी तथा डा० वासु देव शरण अग्रवाल का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिनकी सुसम्मति से प्रस्तुत पुस्तक और भी अधिक उपयोगी रूप मे प्रकाशित हो सकी है।

१९५८ से १९६२ चार वर्ष पर्यन्त मैं निरन्तर गण्य मान्य प्रकाशकों के दरवाजे इस महत्वपूर्ण महाकाव्य के प्रकाशन के लिये खटखटाता रहा, परन्तु किसी भी प्रकाशक ने उचित शर्तों पर इसे प्रकाशित करना स्वीकार नहीं किया। मेरी प्रार्थना पर इस ग्रंथ के प्रकाशनार्थ भाषा विभाग पटियाला ने १४०० रु० का अनुदान प्रदान किया, एतदर्थ भाषा विभाग के अधिकारीगण का मैं हृदय से आभारी हूँ।

विदुषामनुचर
बेनी प्रसाद शर्मा कौशिक
लक्ष्मी निवास
1178 सैक्टर 22 बी, चण्डीगढ़।

माघ संक्रांति
२०१९

प्रथम अध्याय

भूमिका

प्राप्त पाण्डुलिपियों का विवरण

पहिले कहा जा चुका है कि पृथ्वीराज रासो की अभी तक चार वाचनाएं उपलब्ध हुई हैं—वृहद मध्यम, लघु तथा लघुतम। वृहद् रूपान्तर के विविध संस्करणों का पाठ १६००० से ४०००० श्लोक प्रमाण तक अनुमान किया गया है। मध्यम का ११००० श्लोक प्रमाण, लघु का ३५०० श्लोक प्रमाण और लघुतम का ४०० छंद (१३०० श्लोक) प्रमाण पाठ है। पहले तीनों रूपांतर खण्डों में विभाजित हैं। इनमें क्रमश ६९, ४०-४५, १९ खण्ड अथवा समय हैं। लघुतम रूपांतर खण्डों में विभाजित नहीं है। इसका पाठ पाण्डुलिपियों में बिना विराम के लिखा मिलता है। पाठ विश्लेषण की दृष्टि से लघुतम रूपान्तर के सभी पद्य लघु रूपान्तर में मिलते हैं और लघु के मध्यम में तथा मध्यम के वृहद् में। परन्तु चारों रूपान्तरों में खण्डों की योजना, छंदों का पूर्वापर सम्बंध तथा शब्दावली में पर्याप्त अन्तर है। लघु रूपान्तर की पाडु-लिपियां अन्य तीनों रूपान्तरों की पाण्डुलिपियों से प्राचीनतम अनुमानित की गई हैं। पाठ तथा भाषा की दृष्टि से भी डा० दशरथ[1] शर्मा आदि कई विद्वानों ने इस लघु रूपान्तर को ही वास्तविक पृथ्वीराज रासो माना है। इस रूपांतर की तीन पाण्डुलिपियां राजकीय अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में सुरक्षित हैं। महाराजा बीकानेर के प्राइवेट सेक्रेटरी श्री के एम राजगोपाल के अनुग्रह तथा सौजन्य से ये तीनों

देखो—रासो की एक प्राचीन पाण्डुलिपि तथा उस की प्रामाणिकता" काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका कार्तिक सम्वत् १९९६।

तथा—पृथ्वीराज रासो का समय तथा उसकी प्रामाणिकता" इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टर्ली जिल्द १६ दिसम्बर १९४०।

प्रतिया मुझे अध्ययनार्थ उपलब्ध हो सकी थी। पृथ्वीराज रासो के प्रस्तुत पाठ सम्पादन में मैंने इन्ही तीनो प्रतियो का उपयोग किया है।

क्योकि उक्त तीनो प्रतिया अनूप सस्कृत पुस्तकालय बीकानेर से प्राप्त हुई है, अत उक्त स्थान के स्मरणार्थ प्रतिया का चिन्ह (Siglum) BK1 (६१), BK2 (५६) BK3 (६२) निश्चित किया गया है।

प्रतियों का विवरण

१ प्रति BK1—अनूप सस्कृत राजकीय पुस्तकालय म रजिस्टर न० ६१।

यह प्रति ८½"×७" इच आकार की है और पत्राक ४-१०२ तक ९९ पन्नो मे समाप्त है। प्रत्येक पृष्ठ म १८ से २० पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे लगभग २० अक्षर हैं। कागज जीर्ण, कही कही किनारो पर त्रुटित तथा हाथ का बना, मिट्टी रगा खुरदरा सा है। पन्ने खुले हैं, पत्राक सख्या देवनागरी अको मे दाए हाशिए के मध्य मे दी हुई है। अक्षर भद्दे हैं परन्तु पाठ सुपाठ्य है। अतिम कवित्त—

प्रथम वेद उद्धरिय बभ, मच्छह तनु किन्नउ।
दुतीय वीर वाराह धरनि उद्धरि जसु लिन्नो।
कौमारिक भट्टेस धम्म उद्धरि सुर रष्पिय।
कूरम सूर नरेस हिंदु हद उद्धरि रष्पिय।
रघुनाथ चरित्त हनुमत कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पथिराज सु जसु कविचन्द्र कृत, चद्र सिंह उद्धरिय इमि।

जो कि प्रति BK2 BK3 मे मिलता है, इस प्रति म नही है। परन्तु इस कवित्त से पहले का रूपक लिख कर तीन चार इच स्थान रिक्त छोड दिया गया है और पूर्णाहुति सूचक कुछ भी नही लिखा गया। प्रतीत ऐसा होता है कि जिस प्रति से प्रस्तुत प्रति का नकल किया गया है उसमे उपयुक्त कवित्त का स्थान जीर्ण हो गया अथवा फट गया होगा। अत स्पष्ट है कि यह छद लिखना छूट गया। इसी लिए स्थान छोडा गया कि बाद मे किसी अन्य प्रति से उक्त छद को नकल कर लिया जायेगा।

इस प्रति का शीर्षक है—'चद वरदाई का पथिराज रासो", और

प्रारम्भ—"श्रो नम श्री कृष्णाय परमात्मने, जय जय देवेश" तथा निम्नोक्त पुष्पिका समाप्ति सूचक है।

मन्त्रीश्वर मडन तिलक, वच्छावश भर भाण।
करमचद सुत करम वडे, भागचद ग्रव जाण।
तसु कारण लिपिया सही, पृथ्वीराज चरित्र।
पढता सुष सपति सकल, मन सुष होवे मित्र।
शुभ भवतु।

लिपिकाल— यद्यपि इस प्रति का लिपिकाल स्पष्ट रूप से पुष्पिका मे नही दिया गया, परन्तु पूर्वोक्त रूपक से अनुमान किया जा सकता है कि यह प्रति मत्रीश्वर कमचद के पुत्र भागचद के लिये लिखवाई गई थी। यह वात निश्चित हो चुकी है कि मन्त्रीश्वर कमचद सम्राट अकबर के दरवार मे अग्र मन्त्री थे। इनका जन्म सवत् १५९९ पौष वदी को निश्चित किया गया है। श्री अगरचद नाहटा[1] जी को इनकी जन्मपत्री भी मिली है जिसमे 'कमचद वच्छावत रो जन्म स० १५९९ पौष वदी १० इष्ट ३२" लिखा है। सम्राट् अकवर का राज्यकाल सम्वत १६१३-६२ तक है। कमचद स० १६५७ मे अकबर के दरबार मे मन्त्री अथवा दीवान थे स० १६७८ मे इन की मृत्यु हुई। इनकी मृत्यु के आस पास ही इनके सुपुत्र भागचद एक युद्ध मे खेत रहे। इस वात की पुष्टि के लिये दूसरा प्रमाण हमको "कमचद[2] वशोत्कीर्तनक काव्यम्" मे मिलता है। इस ग्रन्थ की रचना जयसोम द्वारा स० १६५० मे लाहौर मे हुई। यह ग्रन्थ दीवान कमचन्द के जीवनकाल मे ही लिखा गया। इसमे कमचद को सम्राट् अकवर का प्रगाढ मित्र तथा अत्यन्त विश्वासपात्र 'दीवान' बतलाया गया है। इस ग्रन्थ के अनुसार कमचद के दो पुत्र थे जिनमे से भागचद ज्येष्ठ पुत्र था।

---

1 देखो—"प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ" मे श्री मूलराज जैन का लेख—रासो की विविध वाचनाए तथा श्री अगरचन्द नाहटा का लेख"—कर्म चन्द का जन्म और इनके वशज" राजस्थान भारती—भाग २ अक १ जुलाई १९४८।

2—देखो—काशी नगरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ३ नि०द ? स० १९८१, श्री शिव दत्त पाण्डेय का एक लेख।

अत यह बात निश्चित प्राय है कि प्रस्तुत प्रति लगभग स० १६३०–१६७० (सन् १५७३–१६१३ के मध्य मे नक्ल की गई)।

२ प्रति **BK2**— अनूप सस्कृत पुस्तकालय मे रजिस्टर न० ५६।

यह प्रति १०१/२"×६३/४" साइज मे गुटकाकार है। आदि के ५ पन्ने लुप्त हैं। ६–८४ पन्नो मे रासो समाप्त हुआ है। प्रत्येक पक्ति मे १६ से १८ पक्तिया हैं, तथा प्रत्येक पक्ति मे ३० से ३७ तक अक्षर है। लिखाई सुदर तथा सुपाठ्य है कागज भी कुछ सफेदीनुमा मुलायम सा है परन्तु बना हुआ हाथ का है। इसकी अन्त्य पुष्पिका इस प्रकार है —

महाराज नप सूर सुव, कूरम चद उदार।
रासौ पथीय राज कौ, राख्यौ लगि ससार॥
शुभ भवतु। कल्याणमस्तु। पत्रे ७० माहै
सम्पूण लिपीयो स्थ। ग्रथाग्रन्थ ३३५०।

लिपिकाल– इस प्रति के लिपिकाल का अभी तक निश्चय नही हो सका। उपरि लिखित दोहे मे सकेतित महाराज नप सूर के पुत्र उदार कूरमचद कौन थे, एक खोज का विषय है। श्री अगर चद नाहटा जी का अनुमान है कि यह प्रति १७वी शताब्दी के अन्तिम दशाब्द म लिखी प्रतीत होती है।

यह प्रति जिस मूलादश से प्रतिलिपित की गई है उस म कुछ पाठ नष्ट हुये प्रतीत होते हैं। इसी लिये इस प्रति मे लगभग ११ त्राटक है। तथा इन त्राटको के लिये १, ३, ५ तथा ६ इन्च तक स्थान रिक्त छोडा गया है। इसी प्रकार लगभग ८ स्थानो पर हडताल से पद तथा पद्याश मिटाए हुए हैं। हडताल के डॉटस तो तकरीबन् ९२ हैं। प्रतीत ऐसा होता है कि प्रतिलिपिकार कुछ योग्य व्यक्ति नही है। लिखना कुछ होता है और मति विभ्रम से लिख कुछ जाता है। अत अशुद्ध अथवा अनिच्छित अक्षर अथवा शब्द लिख कर बाद मे हडताल मे मिटाने पडे।

दूसरे ज्ञात होता है कि यह प्रतिलिपि राजस्थानी लिपि मे लिखित

मूलादर्श से नकल की गई है। लिपिकार को राजस्थानी लिपि का पूर्ण रूप से ज्ञान प्रतीत नहीं होता। नकल करते समय जो अक्षर समझ में नहीं आया उसको उसने अपनी बुद्धि के अनुसार नकल कर लिया। इस से प्रतिलिपिकार ने रासोगत पाठ को यत्र तत्र अशुद्ध तथा असगत बना दिया है। इसके अतिरिक्त बहुत से पद पद्यांश छोड दिये गये हैं छद भग का कोई ध्यान नही और मतिविभ्रम तथा दृष्टि विभ्रम से कुछ पद पद्यांशो की आवृत्ति हो गई और कुछ छूट गए।

विकृत पाठ तथा दृष्टि विभ्रम आदि के कुछ उदाहरण देकर उपयुक्त कथन की पुष्टि करना उचित होगा —

१ BK1 का पाठ—लपे कृष्ण ध्यानम (१–१२६)
BK2 का पाठ—लपेध कृष्ण ध्यानम ,,
यहा "लपेध" शब्द मे "ध" निरर्थक है।

२ BK1 का पाठ—"पिय कट्टी पट्टी" (१–१२८)
BK2 का पाठ—पिय केट्टी पट्टी ,,
भाषा विज्ञान की दृष्टि से "कटि" का "कट्टि" तो ठीक जचता है "केट्टी" नही।

३ BK1 का पाठ –कूदत जोर (१–१३३)
BK2 का पाठ—कूरलट योर ,, जो कि सर्वथा-अनुचित तथा असगत प्रतीत होता है।

४ BK1 का पाठ खूब गुल्लाब केलाति हल्ल (१–१३५)
BK2 का पाठ - खूब गुल्लीब केलाति हल्ल
"गुल्लाब" के स्थान पर "गुल्लीब" शब्द अशुद्ध है।

५ BK1 का पाठ—निजु नेह सनेह जु नेह लिय (१–१४८)
BK2 में "नेह" को 'नेमेह" लिखा है।
इसी प्रकार BK2 मे 'वृषभ घघ सुघघ पुपजिय' है तो BK2 मे बृषभ गध सुगध पुप्पजिय"

६ BK1 का पाठ—अति सु दर सु दर तनह" (१–१६२)

BK2 का पाठ—प्रति सु दर तनह" यहा एक "सु दर" शब्द छोड दिया गया है जिससे छदो भग हो गया।

७ BK2 का पाठ—परमेसर सेव" (२-२१)
BK2 का पाठ—तु पम्मेर तौ सेव „ जोकि अशुद्ध है।

८ BK1—सट्ठ लक्ष परजक' (३-२)
BK2—सुप्त जक कर जकति" जोकि अर्थ सगति की दष्टि से अशुद्ध है।

९ BK2 म ३-४ दोहे का द्वितीय चरण 'अवर देस कहुँ केत छूट गया।

१० इसी प्रकार ३-२४ मे तोटक छद के प्रथम चरण—'भव भूपति भूप तन लहन" मे 'भूपति भूप" शब्दो को तूपति तूप" लिखा है। इसी रूपक के अन्तिम चरण मे कयज" शब्द का 'जकय प्रतिलिपित किया है।

इसी तरह से यत्र तत्र ऐसी पाठ विकृति तथा अशुद्धिया इस प्रति में मिलती हैं। इस प्रकार की पाठ विकृति का पाठान्तर मे यथास्थान निर्देशन कर दिया गया है।

दष्टि विभ्रम अथवा मति विभ्रम के भी एक दो उदाहरण दे देने अनुचित न होंगे।

१ खण्ड १३, रूपक सख्या १२ प्रति BK2 मे रूपक इस प्रकार है —

नर रहित अहितनि पथए, गति पक पूजित गा धनम्।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम कोपि ककस मो धनम॥

प्रति BK2 मे इसी रूपक को इस प्रकार दिया है —

रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम, कोपि गति पक पूजित गा धनम्।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिम, कोपि ककस मो धनम्॥

इस प्रकार —प्रथम तथा तृतीय चरणो मे एक ही पद्याश की आवृत्ति है। इन दोनो चरणो से पूर्व का चरण- "नर रहित अहितनि पथए' है। वास्तव मे प्रतिलिपिकार की दृष्टि नकल करते समय दोनो वार "रवि रत्त मत्तह अम्भ उद्दिम" चरण पर ही पटी अत "नर रहित अहितनि-पथए" चरण छूट गया और उक्त तृतीय चरण की पुनरावृत्ति हो गई।

२ इसी प्रकार खण्ड १७, छद ३० —

छूटै मत्त ममत दीसै भयान।

रूप्यौ रघरी राइ सेस दिसान॥ को नकल करते समय प्रथम चरण के पद्याश "दीसै भयान" से दृष्टि दूसरे चरण "सेस दिसान" पर जा अटकी। परिणामत दीसै भयान—रूप्यौं रघरी राइ" पद्याश छूट गया।

इस प्रति मे उक्त प्रकार के दोषो के अतिरिक्त —इ- द्र, थ—घ, द -तु, च—व, ह्र —ढ, च्छ—ह, त्थ —थ आदि अक्षरो मे अभेद प्रतीति है। प्रकरणानुसार ही इन अक्षरो मे भेद प्रतीति हो सकी है। जैसे —

१ उ—तु, उट्टिय7तुट्टिय (८-५७) तुरक्कि7उरक्कि (६-११७)
२ ऊ7ओ, ऊह7ओंह (८-६८) ऊ7ओ, उच्छगी7ऑच्छगी (६-१२)
३ आ7ओ, ओवास7आवास (७-६७)
४ इ7द्र, पुहप द्रवे7पुहुप इवे (८-६५)
५ घ7थ्व, उल्लघि7उन्नद्धि (७-६)
६ घ7घ, घनु7धनु (७-१३)
७ त7न, पुत्तनि7पुत्तति (७-८८)
८ न्न7त्त, छिन्न तडिता7छिन्न तडिता (७-३) गहन्न7गहत्त (८-१६)
६ त्थ7त्त्थ, अत्थह7अत्त्थह (७ ६)
१० च्छ7त्थ, अच्छै7अत्थै (७-१४) मत्थ7मच्छ (८-२८)

प्रति मख्या BK2 की यथाथ रूप म प्रतिलिपि है। इमकी ग्रन्तिम पुष्पिका निम्नोक्त है –

"इति श्री पथ्वीराज रासो समापता शुभ भवतु। क्रियाणमस्तु।
श्रीरस्तु साह श्री नरसिंह सुत नरहरदास पुस्तका लिखावतम्।
श्री ग्रथाग्रथ ५५५ छ।

जाद्रिस पुस्तक द्रष्टवा ताद्रस लिपत मिया।
जदि सुद्धि मवि शुद्ध दा मम दोषो न दीयात।
छ। लिपत मयेन उदा ब्रह्मापुर मध्ये। छ। श्री।

द्वितीयोऽध्याय

आलोचनात्मक सम्करण की समस्या

पिछले अध्याय मे वर्णित तीनो प्रतियो के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि तीनो प्रतिया किसी एक ही अज्ञात मूलाधार की प्रतिलिपिया हैं क्योकि तीनो का पाठ कुछ न्यूनाधिक तारतम्य के साथ समान है। तीनो प्रतियो मे खडो (Cantos) की सख्या १६ है। प्रथम दो समय एक ही खण्ड मे समाप्त हैं अर्थात प्रथम खण्ड की समाप्ति सूचक पुष्पिका नही दी गई है। इसी प्रकार सप्तम तथा अष्टम खण्ड भी एक ही समाप्ति-सूचक पुष्पिका (Colophon) केसाथ समाप्त हैं। १६वे खण्ड की समाप्ति-सूचक पुष्पिका भी तीनो प्रतियो मे नही दी गई है। अत तीनो का मूल रूप (Arche type) एक ही है। समयान्तर मे प्रति BK2 (५६) और EK3 (६२) ने प्रति BK1 (६१) से भिन्न रूप धारण कर लिया। और उक्त दोनो प्रतिया, प्रति BK1 से पथक हो गइ। अत BK1 दोनो प्रतियो से पूव, अर्थात स० १६६० के लगभग प्रतिलिपित हुई। प्रति BK2 और BK3 का लिपिकाल क्रमश १७ वी तथा १८वी शताब्दी अनुमानित किया गया है। अत समय की प्रगति के साथ साथ उक्त दोनो प्रतियो मे पाठ का न्यूनाधिक होना पाठ का छूट[1] जाना तथा पाठ मे कुछ परिवतन होना स्वाभाविक है। इसी लिए इन दोनो प्रतियो मे प्रति BK1 से यत्र तत्र पाठ मे न्यूनाधिकता है और यह न्यूनाधिकता शेप दोनो प्रतियो म समान है। वैसे भी ये प्रतिया पाठ साम्य, शाब्दिक साम्य तथा समान अशुद्धियो आदि की दृटि से समान हैं और एक दूसरे की प्रतिलिपिया जान पडती हैं। एक जसे न्यूनाधिक पाठ प्रक्षिप्त अश और समान अशुद्धियो के कुछ उदाहरण देकर दोनो की समानता को प्रमाणित कर देना उचित रहेगा।

---

1 "Omission and transposition are the surest test of affinity" Says Mr Hall, Vide "Indian textual criticism" Page 38

1 प्रति BK2 और BK3 मे प्रति BK1 की अपेक्षा न्यून पाठ की सूची –

१ १–१३५–वे का अन्तिम चरण –
किधु रत्न सू कनक मिलि कज कोरे।

२ १–१३८–वें का अन्तिम चरण –
इमि भार अट्ठार वृच्छ सुहाय।

३ ३–३३–वें का चौथा चरण –
हैं सुदमक दामिनि जामिनि जगावन।

४ ३–४५–वें का चौथा चरण –
सूर वीर गम्भीर धीर क्षत्रिय मन रोचन।

५ १३–६३–वे का चौथा चरण –
कसकि कहीं वसमीर भीर भारथ्य सभारी।

इसी प्रकार कोई ४५ स्थान पर दोनो प्रतियो में प्रति BK1 की अपेक्षा कही कही एक ग्रार कही कही दो-दा पद छूट गये हैं।

2 उक्त दोनो प्रतियो मे लगभग १२ स्थानो पर प्रति BK1 की अपेक्षा अधिक पाठ मिला है। कुछ उदाहरण देखिए –

१ ५–७४–वें मे प्रथम चरण के पश्चात् –
गहि ग्गल भीम हमकि हिलोयो।
ग्रव चरित्त ज्यो जानि भहोयो।

२ ८–८७ छद के पश्चात् –

दोहा

सो पट्टन राव्योर पुर, उज्जल पुण्य प्रविच्छ।
कोटि नगर नागर धरनि, धज वधिय तिनि लच्छि।

छद नाराच

ज लप्पु लप्पु द्रव्य जासु, नत्य इद्र उट्ठवै।
ग्रनेक राइ जासु भाइ, ग्राइ ग्राइ बठवे।
मुगध तार साल मान, सा मृदग सुब्भए।
समस्त छिनो मम्त रूप, साव ग्रग मुभए ॥१॥
जिचद वार धूव सेस, कठ गाव ही।

उपग वीणा तासु वालि, बाल ता गावही।
गमन तेय अग रग, सगए परच्चए ॥२॥
सवीर सद्द भरथ अग, परधि तात नच्चए।
सव्रह् सोभ उद्धरैइ, कित्ति काव थानिए।
नरिंद इद इत्तनै जु, कोटि इद जानिग ॥३॥

और यह अधिक पाठ प्रक्षिप्त प्रतीत होता है।

३ ११–४६–व छद के पश्चात् –
धार तिच्छ अद्दरिय, पग सेवहि वैरागिय।

४ १४–४५ छद के पश्चात् –

दाहा

कहि राजा सजोगि सुनि, सुपनह वत्थ अकत्थ।
श्रवन मझि कविज्जिनि सा सुपनतर तत्थ।

3 BK2 और BK3 दोनो प्रतियो मे समान त्रोटक तथा समान अशुद्धिया –

१ १८–७३ छद के अंतिम चरण –
इनि जुद्ध हिंदुव हवस हय गय पायक जुत्थ रत्थ।
मे "इनि जुद्ध 'शब्द छूट गये और शेष पद्याश के स्थान पर –
"लिपय मेच्छ हिंदुव वयन, रचित हय गय जुत्त इत्थ' है।

२ १–२०१ छद के प्रथम दो चरणो मे–
कवि एम रच्यो, जु अग्गे सुवदे—के स्थान पर प्रति BK2 तथा BK3 दोनो मे त्रोटक है।

३ ६–१४ वें छद के तीसरे चरण –
"इक कवि भाष, छत्री सह सुवत्ते" का स्थान दोनो प्रतियो मे रिक्त है।

४ ३–४ छद के पश्चात
तोरन तिलग सुवधि नप, विवल फेरि निवूट"
यह पद प्रति BK2 मे लिख कर हडताल से काट दिया गया है और प्रति BK3 म इतना ही स्थान रिक्त है।

५ ५–८७ छद के तीसरे चरण –
परिपथ मारग उसो राउ पाली" मे उ–पाली तक स्थान

रिक्त है, अर्थात् "सो गउ" शब्द दोनो प्रतियो मे छूट गये है।

4 जसा कि पहिले कहा जा चुका है कि प्रति BK2 मे दो पन्नाक–२१, २२ मे परिवतन है तो प्रति BK3 मे भी ऐसा ही किया गया है। अत यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि BK3 प्रति BK2 की वास्तविक प्रतिलिपि है।

उपयुक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकला कि प्रति BK1 दोनो प्रतियो से प्राचीनतम तथा अधिक विश्वसनीय है। समय की प्रगति के साथ साथ BK2, BK3 प्रतियो मे, प्रतिलिपिकारो की असावधानी के कारण, पाठ का छूट जाना, शब्द-व्यत्यय, आगम तथा पाठ परिवर्तन होता रहा है। अत BK1 का पाठ प्रामाणिक, शुद्ध तथा अधिक विश्वसनीय है। यद्यपि तीनो प्रतिया का कल्पित मूलादश तो एक ही है परन्तु समयान्तर मे BK2, BK3 प्रतिया BK1 प्रति से पृथक् हो गई' BK1 की अपक्षा इनके पाठ मे अतर पड जाना स्वाभाविक है। परिणामत उक्त तीनो प्रतियो का प्रतिलिपि-क्रम अथवा वश-वृक्ष (Pedigree) निम्न रूप मे हो सकता है –
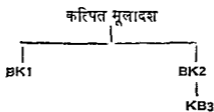
पाठ पुनर्निर्माण के सिद्धात

पृथ्वीराज रासो एक ऐसी काव्य रचना है जिसका उपयोग चारण अपनी आजीविकार्थ तथा अपने आश्रयदाताओ को प्रसन्न करने के लिए विशेष रूप से करते थे। राजदरबारो मे रासो के छदो को उच्चारण करन का ढग भी इन लोगो का अपना अनोखा ही था। स्वाभाविक रूप से रासो के पाठ म मौखिक परम्परा के कारण परिवतन होना अवश्यम्भावी है। और कुछ परिवतन प्रतिलिपिकारो के प्रमाद के कारण भी सम्भव है।

अत ऐसी अवस्था मे सम्पादक के लिये कवि की वास्तविक कृति की खोज करना एक कठिन काय होता है। मैंने उपलब्ध सामग्री के आधार पर पूव वर्णित तीनो प्रतियो के विभिन्न पाठो को ध्यान मे रख कर प्राचीनतम पाठ की खोज करने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे पुनर्निमित तथा सम्पादित शुद्ध पाठ ऊपर देकर शेष प्रतियो के पाठान्तर नीचे टिप्पणी मे दिये गये हैं।

सम्पादित पाठ के सिद्धान्त :—

पाठ पुनर्निर्माण मे निम्नलिखित सिद्धान्तो का अनुसरण किया गया है।

१ साधारणतया प्रति BK1 सब से प्राचीनतम, विश्वसनीय तथा अन्य दोनो प्रतियो से अधिक प्रामाणिक अनुमानित की गई है, अत अधिकतर इसी प्रति का पाठ शुद्ध तथा प्राचीनतम है। पुनर्निमित तथा सम्पादित शुद्ध पाठ के लिये मुख्यतया इसी प्रति का उपयोग किया गया है। शेष दोनो प्रतियो का पाठान्तर पाद टिप्पणी मे दे दिया है। उदाहरण—

(क) BK1 का पाठ— नालेर=(नारियल)
BK2, BK3 का पाठ— नालीय
स्वीकृत पाठ— नालेर (१-१३८)

(ख) BK1 का पाठ— विहार
BK2, BK3 का पाठ—निहार
स्वीकृत पाठ— विहार (१-१३६)

(ग) BK1 का पाठ— टोर
BK2 BK3 का पाठ—टेर
स्वीकृत पाठ— टोर— १-१४२) चाल गति पजाबी)

२ प्रकरण सगति को दृष्टि मे रखकर सम्पूण पुनर्निमित पाठ म बहुत कम स्थानो पर BK1 के पाठ को उपेक्षित कर BK2 तथा BK3 पाठो को स्वीकृत किया गया है। जैसे —

(क) BK1 का पाठ— कलक
BK2, BK3 का पाठ—कलिंग
स्वीकृत पाठ— कलिंग—प्रदेश (१-१७८)

(ख) BK1 का पाठ— मत्री
BK2, BK3 का पाठ—मत्र
स्वीकृत पाठ— मत्र (५-२८)
(ग) BK1 का पाठ— पीयाति, पियन।
BK2 BK3 का पाठ—पीवति, पियनि।
स्वीकृत पाठ— पीवति, पियनि। (६-२३)

३ जिन स्थानो पर प्रति BK2 और BK3 मे पाठ-भेद है ऐसी स्थिति मे उक्त दोनो प्रतियो मे से एक प्रति तथा BK1 प्रति के मिलान से शुद्ध पाठ निश्चित किया है। शेष दो प्रतियो का पाठ नीचे पाठान्तर मे दिया गया है। जैसे —

(क) BK2 का पाठ— गुजहि
BK1 BK3 का पाठ—गज्जहि
स्वीकृत पाठ— गज्जहि—(३-१) गरजते हैं
(ख) BK3 का पाठ— सुप्पन
BK1, BK2 का पाठ— सिप्पन
स्वीकृत पाठ— सिप्पन—(३-५) शिक्षण
(ग) BK2 का पाठ— ससम
BK1, BK3 का पाठ— सम
स्वीकृत पाठ— सम—(३-२४) समान

४ जहा कहीं तीनो प्रतियो मे पाठ-भेद है, ऐसी स्थिति मे मैंने उसी प्रति के पाठ को शुद्ध माना है जो कि प्रकरण सगति, भाषा तथा छद की दृष्टि से शुद्ध जचा हो। शेष प्रतियो का पाठ नीचे पाठान्तर मे द दिया गया है। जैसे —

(क) BK1 का पाठ— छुरी
BK3 का पाठ— क्षरी
BK2 का पाठ— छरी
स्वीकृत पाठ— छरी—(१-६७, छडी
(ख) BK1 का पाठ— हत

BK1 का पाठ— चढटी
यर्थाथ पाठ— चढटी

(ग) BK2 BK3 का पाठ— थरे
BK1 का पाठ— धरे (४ ०३)
यथाथ पाठ— धरे

(घ) उडे पत्त गात बब्बूरे सपच्छ (८-१७) यहा "बब्बूरे" शब्द "बघूरे" लगता था। परतु प्रकरण सगति से 'बब्बूरे" शब्द का अथ वावरोला (Whirlwind) ठीक जचता है। अत 'बब्बूरे' पाठ सही है।

३ तीनो प्रतियो मे ब् ड् ण न् म् अनुनासिको के स्थान म सवत्र अनुस्वार का ही प्रयोग किया गया है। अत मैंने भी सवत्र शुद्ध पाठ मे इन के स्थान मे अनुस्वार का ही प्रयोग किया है। जसे —

कुण्डला के स्थान मे कु डला (१-१) कुम्पी की अपेक्षा कुंपी। इसी प्रकार लङ्क–लक आदि। इसी तरह चद्र बिन्दु "ँ" का प्रयोग भी न्यूनाधिक रूप मे ही हुआ है। जसे जहा–जहा, तहा–तहा।

४ तीनो प्रतियो मे "ख्" की अपेक्षा प् का सवत्र प्रयोग मिलता है। मैं ने भी शुद्ध पाठ मे 'ख्" के स्थान मैं प का ही प्रयोग किया है। वसे भी मध्यकाल मे "ख" स्थाने "ष्" ही प्रयुक्त होता था। जसे — पड्यौ (१-१०२) पषि (२-१५) दुष्प (१-२२) आदि परन्तु कही कही पर "ख" भी मिलता है। जसे —मयूख (१ ८२) तथा मुखे मद हास (१ ३३) आदि।

५ यद्यपि रासो जसी रचना मे प्रक्षिप्त पाठ की खोज करना एक महान कठिन काय है, क्योकि इस कव्य मे रचना क्रम विभिन्न है, विभिन्न शैलियाँ हैं तथा प्रत्येक पद मे अनेक भाषाए हैं, फिर भी जहा कही भाषा तथा शैली की दष्टि से जो पाठ मुझे प्रक्षिप्त प्रतीत हुआ है उसको मैंने कोष्टक मे रख दिया है। BK1 की तुलना मे BK2 BK3 का अधिक पाठ टिप्पणी के अन्तगत पाठान्तर मे दे दिया गया है।

६ प्रतिलिपिकारो ने मूलादश से—प्रतिलिपि करते समय विराम

चिन्ह तथा छदो भग आदि की सवथा उपेक्षा की गई प्रतीत होती है। मैंने भी सम्पादन सिद्धातो का पालन करते हुये छदो भग को सुधारने के लिये निर्णीति शुद्ध पाठ मे परिवर्तन करना उचित नही समझा। हा विराम चिन्ह यत्र तत्र अवश्य दे दिये हैं।

उपयु क्त विश्लेषण से यह तथ्य तो निश्चित प्राय है कि प्रति BK1 अन्य दोनो प्रतियो से विश्वसनीय तथा प्राचीनतम है। और इसका पाठ भी दोनो प्रतियो से शुद्ध प्रतीत हुआ है। अत प्रस्तुत सम्करण का सम्पादन इसी प्रति को मुख्य आधार रखकर मैंने किया है। यथास्थान अन्य दोनो प्रतियो का उपयोग भी किया गया है।

तृतीयोध्याय

कहानी

ग्रन्थ के आरम्भ मे महाकवि चन्द गणेश की वन्दना करते हुए प्रार्थना करते हैं कि इस काव्य कृति की निर्विघ्न समाप्ति के लिये गणेश जी महाराज मेरी सहायता करें। गणेश जी के मस्तक पर मदगन्ध-लोभी भ्रमर छत्राकार मडरा रहे हैं, उन्होंने गले मे गुन्जाओं का हार धारण किया हुआ है, कानो के अग्रभाग कुण्डल-शोभित हैं तथा करि करवत उनकी भुजाएं हैं। एतदनन्तर कवि सरस्वती देवी का गुणगान करते हुए कहते हैं—मूर्ख तथा विद्वानो की रक्षिका कण्ठ मे सुन्दर माणिक्य हार पहने, गौरी गिरा, यागिनी नाम-सम्बोधित। हाथ मे सुन्दर वीणा धारिणी दीर्घकेशी नितम्बिनी, समुद्रोत्पन्ना एव हस वाहिनी सरस्वती मेरे सब विघ्नों को नष्ट करे। इसी प्रकार जटा जूट धारी द्वितीया के बाल चन्द्रमा से शोभित मस्तक वाले शिव, जो कि पार्वती को आनन्द देने वाले हैं जिन की जटाओ मे गगा है ग्रीवा मे सर्प तथा रुण्ड मुण्ड माला हस्ती चर्मधारी नेत्राग्नि से कामदेव को भस्म करने वाले प्रलयकारी तथा नट वेषधारी हैं उनको मैं प्रणाम करता हूँ। इसके पश्चात कवि ने मत्स्यावतार की स्तुति पूर्वक कृष्ण लीला का विस्तृत वर्णन किया है। कृष्णलीला मे नृत्य, रास नगर तथा वन वाटिका आदि का ललित छदो मे वर्णन है। इसके अतिरिक्त बुद्ध तथा कल्कि अवतारो का वर्णन कर कवि ने अपने पूर्ववर्ती महाकवियो की प्रशसा तथा अपनी लघुता प्रकट करते हुए कहा— 'प्रथम तो मैं उस आदि कवि जगदीश्वर को नमस्कार करता हूँ जो एक होते हुए भी सब व्यापक है दूसरे वेद प्रवक्ता, जगत रक्षक ब्रह्मा को मेरा नमस्कार हो, तीसरे महा भारत ग्रन्थ प्रणेता महा कवि व्यास को चौथे श्री शुकदेव मुनि को, जिन्हो ने राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत कथा सुना कर समस्त कुरु वंशियो का उद्धार किया, पाचवें राजा नल चरित्र (नैषध) रचयिता कवि हर्ष को, छठे छः भाषाओं के विद्वान महाकवि

कालिदास को और सातवे कवि दण्ड माली[1] को मेरा नमस्कार हो। इन्ही महाकवियो की रचनाओ के आश्रय से मैं भी कुछ छदो की रचना करता हूँ।

(प्रथम खण्ड समाप्त)

द्वितीय खण्ड

वशोत्पत्ति वर्णन—ब्रह्मा के यज्ञ से मानिक्क राय चाहुवान उत्पन्न हुआ। इसकी अनेक पीढियो मे धर्माधिराज से मदान्ध वीसलदेव का जन्म हुआ। वीसलदेव एक वणिक कन्या जिसका इसने सतीत्व नष्ट किया था, के शाप से नर मास भक्षक राक्षस बन गया। इस शाप से मुक्ति पाने के लिए वीसलदेव गाकण की यात्रा के लिए गया तो वहा सर्पदशन से इसकी मृत्यु हो गई। इसकी पटरानी पवारिन, चिता के साथ सती हो गई। चिताग्नि से एक भयानक मूर्ति उत्पन्न हुई जो कि वहाँ उपस्थित मनुष्यो को ढू ढ कर भक्षण करने लगी। इसी कारण इसका नाम "ढू ढा" राक्षस पड गया। परिणाम स्वरूप अजमेर नगरी जन शून्य हो गइ। सारगदेव (वीसलदेव का पुत्र) को भी इसी राक्षस ने भक्षण कर लिया। इसकी धर्म पत्नी गौरी अपने पति सारगदेव की मृत्यु के समय गर्भवती थी और राक्षस के भय से अपने मैके मे रहती थी। इसके गर्भ से 'आनल कुमार" अथवा "आना नरिंद" का जन्म हुआ। युवावस्था को प्राप्त होने पर राजकुमार ने अपनी माता गौरी से उक्त राक्षस को मारने की आज्ञा मागी। माता गौरी ने उत्तर दिया कि मानव राक्षस से क्योकर युद्ध कर सकता है? आनल कुमार ने उत्तर दिया—"यदि युद्ध से नही, तो सेवा से प्रसन्न करके अजमेर नगरी पर फिर से अपना राज्य स्थापित करूँगा, सेवा सुश्रूषा से देव दानव सब प्रसन्न हो जाते हैं।"

अजमेर नगरी ढू डा राक्षस के अत्याचार के कारण नर तथा पशु-पक्षियो से रहित हो गई थी। आना नरिंद उजाड अजमेर नगरी मे पहुँच कर ढ़ ढा राक्षस की खोज करने लगा। निदान नगरी के बाहर जगल मे एक पहाड की कदरा मे उसको सोते हुए देख कर 'आना' निधडक उसके सम्मुख

1 वृहद् सस्करण मे आठवें कवि जयदेव का नाम लिया गया है। गीत गोविंदकार जयदेव १३ वीं शती का कवि है।

जा उपस्थित हुआ। राक्षस की देह अत्यधिक विशाल थी। राक्षस के प्रश्न करने पर आना ने कहा—"मैं वीसलदेव का पौत्र तथा सारग देव का पुत्र हूँ। मेरी माता का नाम गौरी है। मैं यहा आपके दशन करने आया हूँ। राक्षस ढूढा ने कहा कि क्या तू निधन है अथवा कुष्ठ रोगी है या स्त्री का वियोगी है अथवा किसी देव द्वारा शापित है, या ससार से विरक्त है, अथवा तेरी स्त्री तुमसे आलिगन नही करती ? आना' ने उत्तर दिया कि मुझे उपयुक्त काई कष्ट नही। मैं तो केवल आप के दशनाथ आया हूँ। निदान, ढूढा ने प्रसन्न होकर आना को अपनी तलवार भेट की और अजमेर नगरी पर अक्षय राज्य करने का आशीर्वाद दिया। इसके अतिरिक्त रविवार के दिन विशेष पूजन करने का निर्देश देकर ढूढा आकाश मे तिरोहित हो गया। इस प्रकार वरदान पाकर आना नरिंद ने अजमेर नगरी को फिर से आबाद किया तथा सब प्रकार मे धन धान्य समद्व किया। आना नरिंद का पुत्र जयसिह हुआ, जिसने 'वीसल तडाग" म गडा हुआ पर्याप्त धन प्राप्त किया। यह समस्त धन उसने यज्ञ दानादि म व्यय कर दिया।

जयसिह का पुत्र आनन्द देव हुआ जिस को वराहावतार के दशन हुए। इसने सौ वष पयन्त आनन्द से राज्य किया तदनन्तर अपने पुत्र सोमेश्वर को राज्यभार सौप कर वह स्वय तपोमय जीवन व्यतीत करने के लिये वन मे चला गया। सोमेश्वर के राज्यकाल मे भी अजमेर नगरी का यश वैभव प्रति दिन उन्नतशील रहा।

सोमेश्वर की धमपत्नी तथा दिल्लीश्वर अनगपाल तोवर की पुत्री के गभ से पृथ्वीराज का जन्म (यहा सवत नही दिया) छतीस कुलो मे हुआ। इसी समय पराक्रमी तथा विद्वज्जन वदनीय कविचद का जन्म हुआ (बृहद् सस्करणानुसार यहा पर चद के पिता 'राव वेन' सोमेश्वर के दरबारी कवि हैं तथा पुत्रोत्पत्ति की खुशी म इन्हे पर्याप्त धन दिया गया) कविचद पृथ्वीराज का यश सौरभ फैलाने के लिये उत्पन्न हुए और कवि ने साटक, गाहा, दूहा तथा कवित्त आदि उत्तम तथा अनूपम छदो मे पृथ्वीराज का यशो वणन किया।

एक बार बाल्यावस्था मे बालक पृथ्वीराज को स्वप्न आया कि एक सुन्दर स्त्री ने उसको अपनी गोद मे बिठा कर दिल्ली का राज्य सौंप दिया है। इस घटना के कुछ वष पश्चात् पृथ्वीराज अपने प्रधान मन्त्री कमास के साथ खट्टु वन मे शिकार खेलने के लिये गए तो वहा शिकार खेलते समय एक शिला के नीचे से इहे पर्याप्त धन मिला। मृगया से निवृत्त होकर अजमेर पहुँचे तो अनगपाल के दूत ने एक पत्री दी जिसमे लिखा था कि राजा अनगपाल बद्रिकाश्रम मे तपस्या के लिये जा रहे हैं अत दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दान मे दे दिया गया है।

पत्री को पढकर प्रधान मन्त्री कैमास ने गम बड गुज्जर, हाहुलीराय हम्मीर तथा जत पवार आदि सामतो से विचार विमश पूवक निश्चय किया कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य ग्रहणाथ धूमधाम से वहा पहुँचे। परिणाम स्वरूप, पृथ्वीराज दिल्ली का सम्राट् घोषित कर दिया गया।

(द्वितीय खण्ड समाप्त)

तृतीय खण्ड

कन्नौज मे कमधुज्जवशी राजा विजयपाल राज्य करता था। एक बार विजय पाल अपनी सेना सहित दिग्विजय करता हुआ जगन्नाथ पुरी की यात्रा करके पूर्वी समुद्र के किनारे पहुँचा। यहा सोमवशी राजा मुकु द दव राज्य करता था। इसकी राजधानी कटक नगरी थी। इस के पास बीस हजार घोडे, एक लाख हाथी तथा दस लाख पैदल सेना थी। मुकु द देव ने विजय पाल का बहुत आदर सत्कार किया। इसके अतिरिक्त इसने असख्य घोड, हाथी, धन रत्न, पर्यंक तथा अन्य बहुत सी वस्तुओ के साथ भेंट मे अपनी एक सु दरी कन्या विजय पाल को समर्पित की। विजय पाल ने इस कुमारी का विवाह अपने पुत्र जयचद से कर दिया। जयचद का अपनी नव परिणीता पत्नी से अत्यधिक प्रेम था। यहा तक कि दोनो पति पत्नी एक ही थाल मे बैठकर भोजन करते थे। विजय पाल और जयच द सेत ध माग से होते हुए माग मे कु कुन, कर्नाटक मैथिल, कलिग गुर्जर, गुण्ड तथा मगध आदि प्रदेशो को विजित कर कन्नौज पहुँच गए। विजय पाल तथा जयचन्द की यात्रा से सकुशल वापसी पर कन्नौज मे सर्वत्र खुशिया मनाई जाने लगी। कुछ समयानन्तर जयचन्द की धमपत्नी-

जुन्हाई के गभ से सोलह वष की अवस्था मे चद्रमा के समान सुदर कन्या (सयोगिता) का जन्म हुआ। कन्या चद्र कला के समान प्रतिदिन बढने लगी। यह वही चद्र कना है जिस के कारण जयचद की अस्सी लाख अश्वारोही सेना का नाश हुआ और पथ्वीराज का अन्तिम पतन हुआ। सयोगिता अपनी सम वयस्का सखियो मे क्रीडा करती हुई ऐसी प्रतीत होती थी मानो तारागण म चद्रमा। बालपन से ही सयोगिता अपने पिता जयचद की बहुत लाडली बेटी रही है। वह तुतली बातें कर अपने पिता का मन प्रसन्न करने लगी।

मदन ब्राह्मणी के शिष्यत्व म सयोगिता विद्याध्ययन तथा नैतिक शिक्षा ग्रहण करने लगी। मदनब्राह्मणी ने शिक्षा दी कि स्त्री को चाहिये कि वह प्रात काल उठकर अपने पति के चरण स्पश कर उस के दशन करे और अपनी तुच्छता प्रदशन पूवक उनकी स्तुति करे। इस के पश्चात स्नान ध्यानादि से निवत्त हो, स्वादिष्ट भोजन बनाकर अपने पति को खिलाए। तदनन्तर वस्त्राभूषणो से सज कर अपने पति को प्रसन्न करती हुई सदा उसकी आज्ञा मे रह। स्त्री को चाहिये कि वह अपना तन मन धन सुख दुख तप-जप तथा सब कुछ अपने पति को ही समझे। मान तथा अभिमान छोड कर स्त्री विनय पूवक अपने पति की आज्ञा मे रहे विनय से ही स्त्री अपने पति को वश म कर सकती ह। पति के साथ रमण करते समय भी स्त्री कभी अपने पति को कटुवचन न कह विनयशीला ही रहे।

मदन ब्राह्मणी के आगन स्थित एक सहकार वक्ष पर तोता मना (गधव गधर्वी) रहते थे। यह दम्पति युगल सयोगिता के चरित्र, सौदय तथा उसकी विनय शीलता पर अत्यन्त मोहित हुआ और उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह सौदय सभरि-नरेश पथ्वीराज के उपभोग्य है। तोता मना ने एक रात जुग्गिनिपति सभरि-नाथ" पथ्वीराज का तप तेज तथा शौय पराक्रम आदि का वणन करते हुए व्यतीत की। सयोगिता ने भी इस वणन को सुना और उस के मन मे पथ्वीराज के प्रति प्रेम अकुरित हुआ। प्रात काल होने पर तोता मना दिल्ली की ओर उड गये। (सयोगिता के रूप सौदय का पथ्वीराज के सम्मुख वणन करने के लिये)

(ततीय खण्ड समाप्त)

चतुर्थ खण्ड

सवत् "अठतालीसा" (११४८) चैत्र मास के शुक्लपक्ष को भोरा राय भीमदेव (गुजरदेशाधिपति) ने सलख पवार (आबूराज) के पास दूत द्वारा सदेश भेजा कि वह अपनी कन्या इच्छिनी का विवाह पृथ्वीराज चहुवान से न करे अपितु उस के साथ कर देवे अन्यथा इसका परिणाम भयानक होगा। इस सदेश को सुनकर सलख पवार का पुत्र जैत पवार बहुत क्रोधित हुआ और उसने भीमदेव के दूत को करारा जवाब दे दिया। इस सदेश की सूचना पृथ्वीराज के पास भी पहुँचा दी गई। उधर भीमदेव ने शहाबुद्दीन गौरी को सहायतार्थ बुलाकर आबू नरेश सलख पवार पर चढाई कर दी। पृथ्वीराज भी अपने दलबल सहित सलख पवार की सहायता के लिये आ पहुँचा। दोनो ओर से घमसान युद्ध हुआ। सलख पवार तथा जैत पवार दोनो ने बडी वीरता से शत्रु का मुकावला किया। चौहाना आजान बाहु ने भी अत्यन्त साहस तथा प्रचण्डता से युद्ध मे "सुरितान फौज" के छक्के छुडवाए। दोनो दलो की ओर से प्रबल खड्ग युद्ध हुआ। तलवारो मे से अग्नि की ज्वालाए निकलने लगी। एक बार तो प्रलय सी मच गई और लाशो से भूमि पट गई। "सुरितान" की सेना मे भगदड मच गई। शहाबुद्दीन पकड लिया गया और भीमदेव जान बचा कर भाग निकला। पृथ्वीराज की चारो ओर से जय जयकार हुई। शहाबुद्दीन से कुछ दण्ड लेकर उसे मुक्त कर दिया गया। (चतुर्थ खण्ड समाप्त)

पचम खण्ड

गुजर देशाधिपति भीम देव जैन धर्मावलम्बी था। इसने वैदिक धर्म का खण्डन कर जैन धर्म की स्थापना का प्रचार किया। इसका प्रधान मत्री अमरसिंह सेवरा तथा वह स्वय दोनो ही मत्र-तत्र विद्या मे बहुत निपुण थे। भीमदेव ने पृथ्वीराज के प्रधान मत्री दाहिमा कैमास को षडयत्रपूर्वक अपनी ओर फासने के विचार से अपने दूत को सदेश देकर उस के पास भेजा। सदेश मे इसने अपने पराक्रम, वैभव तथा ऐश्वर्य की बहुत प्रशसा की और कमास को धन धान्य से सम्मानित करने का प्रलोभन

1 बृहद् सस्करण मे "छत्तीसा शुक्रवार" लिखा है।

दिया। इस के अतिरिक्त एक चचल नयनी, पीनस्तनी तथा अत्यन्त सुन्दर रमणी को भी भेंट देने का प्रलोभन दिया। निदान कमास नागौर पहुँच गया और भीमदेव का सहयोगी होकर उपयुक्त रमणी के साथ विलासमय जीवन व्यतीत करने लगा। भीमदेव के नगर नागौर मे सर्वत्र यह चर्चा फैल गई कि दाहिमा कैमास भीमदेव का सहयोगी बन गया है। इससे भीमदेव के शत्रुओ पर आतक छा गया।

मत्री कमास के इस आचरण का ब्योरा चद वरदाई को स्वप्न म ज्ञात हुआ। वह घबरा उठा और विचार करने लगा कि कमास जसे बुद्धिमान् मत्री को देव दानव आदि कोई भी वश म नही कर सकता, परन्तु मनुष्य-बुद्धि पर क्या विश्वास किया जाए। कविचद न भरो तथा चण्डी देवी की स्तुति करके इस समस्या को सुलझाने तथा कमास की बुद्धि पर जैन यत्र मत्र के प्रभाव को दूर कर सुबुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना की। इसके पश्चात् चद कवि, बगरी राय जद्दौराव राम राजा, गोविंद राय तथा बलिराय आदि सामता को साथ लेकर शत्रु (भीमदेव) की सेना से युद्ध कर कैमास के समक्ष जा उपस्थित हुआ। चण्डी दुर्गा की कृपा से कमास की बुद्धि पर से जनियो के पाषण्ड का प्रभाव दूर हुआ। भीम देव भी अपनी सेना सजा कर चद तथा कमास के साथ युद्ध थ आ उपस्थित हुआ। पृथ्वीराज भी इस घटना की सूचना मिलने पर अपनी सेना सहित युद्ध मे सम्मिलित हो गया। दोनो सेनाओ मे प्रचण्ड युद्ध हुआ। यहा कवि ने दोनो ओर के सनिक, घोडे, हाथी तथा युद्ध[1] की भयकरता आदि का विस्तृत वर्णन किया है। कैमास ने भीमदेव का पराभव किया। पृथ्वीराज की सर्वत्र जय जयकार हुई। (पचम खण्ड समाप्त)।

छठा खण्ड

रमधुज्ज जयचन्द समुद्र पर्यन्त पृथ्वी को जीत कर धर्माचरण करता हुआ कन्नौज मे राज्य कर रहा है। उसके पास असख्य हाथी घोड तथा सेना है। धन-वभव की उसके पास कमी नही है। एक बार उसने अपने मत्री (सुमन) से यज्ञ करने के लिये विचार विमर्श किया। मत्री ने कहा

1 बृहद् सस्करण म इस युद्ध का समय १९४४ दिया है।

कि कलियुग मे हम अर्जुनादि वीरो के समान तो हैं नही जो यज्ञ रचाने मे समथ हो। जयचद ने सुमन्त की सम्मति पर ध्यान नही दिया और उसने यन की सामग्री प्रस्तुत करने तथा षोडसादि दान का उत्तम प्रबध करने की आज्ञा दे दी। यज्ञ की सूचना देने के लिये सर्वत्र दूत भेज दिये गये। एक दूत दिल्ली भी पहुँचा। पृथ्वीराज, दूत का सदेश (छडी हाथ मे लेकर यज्ञ द्वार पर प्रतिहार-पद सभालना) सुनकर ऐसे सन्न रह गया जैसे साकरे मे फस कर सिंह तथा गुरुजनो के सम्मुख लज्जाशील स्त्री। परन्तु पृथ्वीराज के छोटे भाई गोइन्द राय ने क्रोधित हो उत्तर दिया कि कलियुग मे यज्ञ रचाने का किस को साहस हो सकता है? सतयुग मे राजा बलि ने यज्ञ किया था, त्रेता मे राजा रघु ने, जिस मे कुबेर उनके सहायक थे। द्वापर मे धमराज युधिष्ठर ने श्री कृष्ण की सहायता से यज्ञ किया था। कलियुग मे यज्ञ कराने से जग हसाई होगी। जयचद ने यह समझ लिया है कि पृथ्वी वीर क्षत्रियो से खाली हो गई है। इसी लिये वह अहकार से ऐसा कर रहा है। पृथ्वी निर्वीर कभी नही हो सकती। हम जयचद को यमुना के तट पर रहने वाला जगली समझते हैं। क्या वह जुग्गिनिपुरेश पृथ्वीराज को नही जानता जिसने तीन बार शहाबुद्दीन को बाधा और भीमदेव को परास्त किया। पृथ्वीराज के होते हुये यह यज्ञ नही हो सकता। गोइन्दराय का ऐसा उत्तर सुनकर विचारे दूत सायकाल मे मुरझाये हुये कमलो जसा मुख लेकर उठकर चल दिये। दूत मुख से पृथ्वीराज का उत्तर सुनकर जयचद बहुत क्रोधित हुआ और प्रधान को यज्ञ के द्वार पर पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा रखने की आज्ञा दे दी।

नगर मे यज्ञ के लिये सवत्र सजावट हो रही है। द्वारो तथा तोरणो पर बदनवारे सजाई गईं। सुनार आभूषण बना रहे हैं। यज्ञ मण्डप पर स्वर्ण कलश चमकने लगे और वह कैलाश पवतवत् शोभित है। विविध पताकाओ, सुन्दर वस्त्रो तथा अन्य विविध आडम्बरो से राजमहल, नगर के समस्त भवन, तथा राजमाग शोभित होने लगे। सुगन्धित धूप की सुगन्धि सर्वत्र फैलने लगी।

इधर राज महलो मे सयोगिता अपनी समवयस्क सखियो के साथ उछल कूद कर रही है, कलकण्ठो मे मधुर गान हो रहा है। जब

सखियां सयोगिता से अठखेलियां करती हैं तो वह लज्जा से आंखें नीची कर पद नखों से भूमि कुरेदने लगती है। वह वय सधि अवस्था में है। उसके सुदर घुघराले केश कामोद्दीपक करते हैं लाल अधरोष्ठ मर्यादित कोमल किसलय हैं, माथे पर मजरी तिलक है और उसका कोयल सा मीठा स्वर है। उधर प्रकृति भी अपने यौवन पर है। विकसित पुष्पों पर भवरे मकरद रस का आस्वादन कर रहे हैं। पल्लवों से लदे वृक्ष मदमत्त-रूप हाथी की तरह झूम रहे हैं। बाग, वन उपवन प्रफुल्लित हैं। मजरित सहकार कामदेव के दूत से ज्ञात होते हैं। कोयल की मधुर ध्वनि से प्रकृति गुजरित हो रही है। भांति भांति के पुष्पित वृक्षों की पक्तियां कामदेव के बाणों की तरह विरही जनों के हृदयों को बीध रही हैं। इस प्रकार वसंत ऋतु शिशिर को जीतकर सर्वत्र अपना आधिपत्य जमाये हुए है। सयोगिता के हृदय में कामाग्नि उद्दीपित हुई। पथ्वीराज ने भी यज्ञ विध्वंस करने के लिये (विग्रह[1] दल) पर चढाई कर दी। और पिपिदपुर के शत्रु समूह (बालुकाराय और उसकी सेना) का सहार कर दिया। पिपिदपुर निवासी स्त्रियों की बडी दुर्दशा है। आंखों से आंसू बह रहे हैं। शोक के कारण सब ने आभूषण उतार कर फेंक दिये हैं। चंद्रवदनी रमणियां पिय पिय पुकारती हुई जगलों की ओर भागी जा रही हैं और कहती हैं कि विधाता को वाम करने के लिये पृथ्वीराज से शत्रुता क्यों ठानी"। जयचन्द के दरबार में भी इस विनाश की पुकार हुई। ब्राह्मणों ने वेद मन्त्रों का गायन बद कर दिया। अत यज्ञ कार्य[2] में विघ्न पड गया।

सयोगिता ने अपनी सखियों से कहा — मैंने पथ्वीराज को वरण करने का व्रत लिया है, यदि पथ्वीराज से मेरा विवाह न हुआ तो मैं गंगा में डूब मरूंगी। जयचद ने सयोगिता की ऐसी प्रतिज्ञा सुनकर उसको समझाने के लिये साम, दान, भेद तथा दण्ड नीति में निपुण तथा विवेक-शीला दूती को उसके पास भेजा। दूती, कलकण्ठी तथा वाग्वदग्धा

1 वृहद् सस्करण में "पिपिद" लिखा है। यहां जयचन्द का भाई बालुकाराय रहता था। यहां युद्धवर्णन नहीं, केवल मात्र नगरध्वंस का सकेत है।

2 यज्ञ विध्वंस, सकेत द्वारा ही वर्णित है, यहां युद्ध का वर्णन नहीं है।

थी। इस के अतिरिक्त वह सुंदर इतनी थी कि (दर्शकों) के मूर्च्छित काम को उन्दीपित करती थी। परन्तु दूती संयोगिता को समझाने मे सफल न हुई।

पुन जयचन्द ने उसकी धाया को उस के पास भेजा परंतु संयोगिता ने उत्तर दिया – "क गगहि सचरौ क पाणि गहौ पृथ्वीराज"। हार कर जयचन्द ने संयोगिता को गंगा तट स्थित एक ऊँचे महल मे कैद कर दिया।

जयचन्द का प्रताप-तेज इतना था कि दिल्ली भी भय से कांपती थी। जिस प्रकार तालाब मे पानी के कम हो जाने से मछलिए कम हो जाती है इसी प्रकार पग भय से दुजन कम होते है। (छठा खण्ड समाप्त)

सप्तम खण्ड

कैमास को राज्य भार सौप कर सम्राट पृथ्वीराज स्वय (दुर्गावन म) मृगयार्थ चला गया। मेधावी कैमास ने दिल्ली-राज्य का कार्य सचालन बड़ी कुशलता से किया। वह शूरवीर इतना था कि उसने परिहारों को विजय किया शहाबुद्दीन का वाध और गुजरदेशाधिपति भीमदेव का परास्त किया। इसके अतिरिक्त कैमास ने बुद्धिमत्ता तथा शूरवीरता के बहुत से कार्य किये। इसी कैमास की बुद्धि दासी कर्नाटी के प्रेम म आसक्त हो नष्ट हो गई। दैव की विचित्र गति है, इधर भादो की काली रात्रि में पृथ्वीराज मृगया मे मग्न था और उधर कैमास कर्नाटी के साथ विषय भोग म आसक्त था। यही रात्रि कैमास के लिये 'कालरात्रि' हो गई। (रानी इच्छिनी ने कैमास की इस काम क्रीडा को अपने महल से देखा) एक चतुर दासी द्वारा कैमास की इस काम क्रीडा की सूचना तत्काल ही पृथ्वीराज के पास पहुँचा दी गई। पृथ्वीराज ने उसी समय इच्छिनी के महल मे पहुँच कर अपनी आंखो से कैमास की विषय लोलुपता को देखा। (कर्नाटी का महल रानी इच्छिनी के महल के बिलकुल समक्ष ही प्रतीत होता है) पृथ्वीराज ने क्रोधित होकर, कैमास पर बाण चलाया। पहला बाण निशाने से चूक गया, दूसरे बाण से कैमास की मृत्यु हो गई। दम तोडते हुये कैमास ने यह समझा कि (कलियुग मे) स्वामी के बिना ऐसा बाण न दशरथ का हो सकता है और न अर्जुन का कैमास के शव को

वही (कर्नाटी प्रासाद के आगण मे) भूमि मे गाड दिया गया। पृथ्वीराज पुन मगयार्थ वन मे चला गया। उधर कवि चन्द को स्वप्न मे हंस वाहिनी देवी की कृपा से यह सब वृतान्त ज्ञात हो गया।

दूसरे दिन प्रात काल ही पृथ्वीराज राज दरबार मे अपने सामतो के मध्य तारागण मे चन्द्रमा के समान शोभित हैं। (परतु दरबार मे कैमास उपस्थित नही है) चन्द कवि ने दरबार मे उपस्थित होकर पृथ्वीराज का शौर्य पराक्रम, अनेक शत्रुओ पर विजय, चौहान वश वर्णन, (माणिक राय के दस पुत्रो का वर्णन) चावड राय का हाथी का मारना तथा उसको पृथ्वीराज द्वारा पावो मे बेडी डाल कर कारावास मे डालना आदि अनेक प्रसगो का सकेत कर पृथ्वीराज का स्तुति गान किया। पृथ्वीराज ने कवि चन्द से प्रश्न किया —'कैमास कहा है ? या तो कैमास का पता बताओ अन्यथा अपनी "बरदाई" पदवी छोड दो"। चहुवान ने इस बात के लिये बहुत हठ करके मानो साप के मुह मे अगुलि दे दी हो— "अगुलि मुषह फनिद"। कवि ने उत्तर दिया "पहला बाण जो पृथ्वीराज ने कैमास पर छोडा वह केवल कवच को बीध सका और चूक गया। दूसरे बाण से कैमास की मृत्यु हो गई। उसके शव को गढा खोद वही कर्नाटी के महल मे दबा दिया गया। इस प्रलय (पाप) का कहा निपटारा होगा।' । भट्ट कवि के वचन सुनकर सभरि नरेश तथा सब सामत विस्मित तथा शोकग्रस्त, अपने अपने महलो मे चले गये। यह बात सर्वत्र फल गई यहा तक कि घरो मे पति पत्निए समस्त रात जाग कर इस बात की चर्चा करती रही। कवि भी राजा को धिक्कार कर अपने घर की ओर चल दिया। (कवि का मन इतना उदास था कि वह आत्म हत्या के लिये उद्यत हुआ) परन्तु उसकी स्त्री ने कवि को समझाया कि जीवन बडा अमूल्य है। इसी जीवन की रक्षा के लिये तथा मृत्यु को टालने के लिये हम धर्म का पालन, होम, यज्ञ तथा नवग्रहो आदि का पूजन-जप करते हैं। उधर पृथ्वीराज का मन भी बहुत उद्विग्न तथा शोकमग्न था। कवि ने राजा को समझाया कि तुम्हारी तरह ही श्री रामने रावण तथा बाली को मारा था। कैमास का शव (उसकी स्त्री) को सौंप कर अपने मन का शोक दूर करें। पृथ्वीराज ने कवि से कहा—कि हम (कन्नौज) मे जयचन्द के पास जाना

चाहते है। मैं सेवक के रूप मे तुम्हारे साथ चलूगा। उस से युद्ध करेंगे (तो चित्त और तरफ लगेगा) कवि ने भी स्वीकृति दे दी। पृथ्वीराज प्रसन्न हुए। (सप्तम खण्ड समाप्त)

अष्टम खण्ड

पृथ्वीराज ने अपने सामतो को कन्नौज यात्रा के लिये तैयारिया करने की आज्ञा द दी। निदान, सभरि नरेश ने सवत् ११६१ चैत्र तृतीया रविवार को ग्यारह सौ घुडसवार, सौ सामत तथा कविचन्द को साथ ले कर कन्नौज की ओर प्रस्थान कर दिया। (यहा पर कवि ने कुछ सामतो के नाम तथा उनकी शूर वीरता का वर्णन किया हैं, जिन मे से जतपरमार[1], चद पुण्डीर, वड गुज्जर, कूरम्मराव, हाहुलिराय, चालुक्कराय तथा परिहारराय आदि प्रमुख हैं) आकाश धूलि से आच्छादित हो गया। ये सौ सामत ही जयचन्द की एक लाख सेना का मुकाबला करेंगे। माग मे कुछ अपशकुन दिखाई दिये तो पथ्वीराज ने कविचद से इन के फलाफल पर प्रकाश डालने के लिये प्रश्न किया। कवि ने उत्तर दिया कि यदि माग मे विना तिलक के ब्राह्मण, काला घोडा, विना विभूति के योगी तथा गधे पर सवार नगे सिर कुम्हार सम्मुख मिले तो कुछ न कुछ उपद्रव अवश्य होता है। सिर पर दाहिनी ओर कोई पक्षी वोले तथा वाए स्यार वोले अथवा सम्मुख शव मिले, जल पूरित कलश, उज्ज्वल वस्त्रधारी पुरुप, दीपक, अग्नि आदि सम्मुख मिले तो ये शकुन शुभ होते हैं। कवि तथा सामनो सहित पथ्वीराज ने नावो द्वारा यमुना को पार किया। यहा एक सुन्दर महल के समीप एक विलक्षण दृश्य दिखाई दिया। एक स्त्री जिस के एक हाथ मे अनार की शाखा है मुख मे हसी परन्तु नेत्र क्रोध से आरक्त हैं वक्षस्थल पर कमल, कनेर और सिरीस के फूलो की माला धारण किये हैं। उसके वाए अगो पर स्वर्णाभूपण सज्जित हैं तथा दाए अगो पर लोहाभूपण, सिर के आधे केश खुले हैं और शेष का जूडा बधा है जूड वाले भाग पर मोतियो की माला शोभित है, श्वेत तथा पीत वस्त्र धारण किये हुये हैं और उसके मुख म से सप की सी फु कार निकल रही

[1] कैमास की मृत्यु क पश्चात् जैतपरमार पृथ्वीराज का प्रधान मत्री बना।

है। पथ्वीराज ने इस प्रकार की विलक्षण स्त्री के सम्मुख मिलने का कारण कविचद से पूछा। कवि ने उत्तर दिया कि यह भगवती देवी है और हमारी विजय का शुभ शकुन है। (इस के अतिरिक्त इस प्रसग मे कुछ और शकुन विचारो का वणन है) इस प्रकार तीन रात दिन चलते २ सूय उदय होते ही पथ्वीराज अपने दलबल सहित कन्नौज के समीप जा पहुँचा।

कन्नौज नगर के मदिरो पर स्वण कलश सूय-किरणो मे झिलमिला रहे हैं। कही हाथी तथा घोडो की ठल पल हो रही है तो कही पर ब्राह्मण प्रात कालिक सध्या के लिए गगा तट की ओर जा रहे हैं। कही पर तपस्वी ध्यान मग्न हैं तो कही पर स्वर्णादि का दान हो रहा है। इस प्रकार गगा तट पर पवित्र आचरण देखने से शरीर के सब पाप नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकरण मे कवि ने गगा स्नान तथा ब्रह्म कमण्डल से गगा की उत्पत्ति का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त गगा तट पर जल भरती हुई सुदर रमणियो का हृदयस्पर्शी तथा शृगारिक वणन है। इसी गगा के तट पर पथ्वीराज ने अपने दल बल सहित पडाव डाल दिया। चद कवि (साथी "पवास" वेष मे पथ्वीराज है) पूछता पूछता जयचद दरबार की ओर चल दिया। माग मे कन्नौज नगर के बाजारो का जिन मे विविध मणिमाणिक्य तथा स्वर्णादि का व्यापार हो रहा है कवि ने आखो देखा वणन किया है। (अष्टम खण्ड समाप्त)

नवम खण्ड

कवि, जयचद-दरबार के द्वार पर जा पहुचा। द्वारपाल अध्यक्ष रघुवशी हेजम कुमार ने चद का आगमन देखकर सादर पूछा—कि आप कौन हैं और कहा से आए हैं। कवि ने उत्तर दिया कि मैं सम्राट पृथ्वी राज का दरबारी कवि चद दिल्ली से महाराजा जयचद का दरबार देखने के लिए आया हूँ। हेजम कुमार ने जयचद-दरबार मे सूचना पहुँचा दी। सम्राट जयचद ने दसौंधी भाट, चन्द को दरबार मे लाने के लिए भेजा और कहा—कि देखना कही कोई डफ बजाने वाला आडम्बर वेषधारी कवि न हो ऐसे कवियो को अथ, अनथ तथा रस आदि का कुछ भी ज्ञान नहीं होता।

यदि छ भाषाओं, नवरस नान विज्ञान तथा काव्य का साङ्गोपाङ्ग ज्ञाता कोई विद्वान कवि हो तो उसको मेरे पास लाओ। दसौंधी भाट ने द्वार पर जाकर कवि चन्द मे उपयुक्त विद्वत्ता की परीक्षा के लिये प्रश्न किया तो चन्द ने उत्तर दिया—" भारती वाणी के मुख कमल, दाडिम के दानो के सदृश दान्त, स्थिर सुन्दर नेत्र, शुक-नासिका, केशर के समान सूक्ष्म काले केशो की सर्पिणी सी गुथी हुई वेणी तथा चन्द्रमा के समान सुन्दर मस्तक आदि छ अगो से छ भाषाए उत्पन्न हुई है"। कवि ने पुन लक्ष्मीपति, द्रुपद सुता के चीर बढाने वाले भगवान् कृष्ण का स्मरण कर के कहा कि गोपवर भगवान ने गज को ग्राह से छुडाया, राजा मान का मान रक्खा, विषाक्त को निर्विष किया और अर्जुन की सहायता कर कौरवो का नाश किया। मोह वश अर्जुन को अपने मुख मे ब्रह्माण्ड दिखाकर उसका मोह दूर किया। वह अविनाशी भगवान् समस्त सृष्टि का कर्ता, पालन कर्ता तथा सहर्ता है। इसी परम पुरुष को प्रकृति, भारती वाणी तथा लक्ष्मी दासी है। इसी लक्ष्मीपति भगवान् के मुख मे निवास करने वाली भारती मे छ भाषाओ तथा नवरसो की उत्पत्ति हुई है। दसौंधी भाट ने पुन प्रश्न किया कि यदि आप "वरदाई" हैं तो कनवज्ज नरेश के दरबार का अदृष्ट वर्णन कीजिए। चन्द वरदाई ने उत्तर दिया, कि पगु नरेश के शिर पर श्वेत रजत छत्र छहरा रहा है। शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित क्षत्रिय वीर तथा आसमुद्र प्रजा उस के आधीन है, परन्तु पृथ्वीराज उनके गले मे, गरल के समान गडा हुआ है। दसौंधी भाट ने महप दरबार मे उपस्थित हो, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि तथा समस्त नक्षत्रो मे चन्द्र समान सुशोभित जयचन्द से निवेदन किया कि चन्द वरदाई, छहो भाषा, नवरस तथा काव्य कला का ज्ञाता और त्रिकाल दर्शी है। अतत चन्द कवि ने दरबार मे उपस्थित हो जयचन्द को आशीर्वचन कह उसकी कीर्ति तथा विरुदावली का बखान करते हुए कहा—कि आप ने अपनी शस्त्र सुसज्जित सेना के बल से समस्त पृथ्वी और धर्म-बल से दशो दिशाओ के दिग्पालो को जीत लिया है। शहाबुद्दीन गौरी सहित अन्याय समस्त नरेशो को कीर्तिहीन करके उनको आतकित

कर दिया है। तिरहुत को विजय किया, आसेतुबंध समस्त दक्षिण देश को अपने वश मे किया, कर्ण डाहल को दो बार बांधा, सिद्ध चालुक्य को पराजित किया, तिलगाना और गोलकुण्डा को अपने आधीन किया और गुण्ड, जीरा, और वैरागर प्रदेशो को विजय कर मुक्त किया। इस के अतिरिक्त सुलतान अपने भाई निसुत्तखा का दूत बना पर जिस के दरबार मे रखता है ऐसे विजय पाल के सुपुत्र जयचन्द के क्रोध से समस्त ससार थरथर कापता है, परन्तु पृथ्वीराज चौहान ही एक ऐसा नरेश है जो कि जयचन्द को कुछ नही समझता। अपने शत्रु पृथ्वीराज का नाम सुन कर जयचन्द के नेत्र रोषारक्त हो गए और उसने चन्द कवि से कहा कि तुम केवल मात्र एक याचक और दरिद्र हो, तुम्हारी ऐसी बातों से तुम्हारी दरिद्रता क्यो कर दूर हो सकती है। (यहा पर चन्द और जयचन्द मे वरद्दिया-वरदाई शब्द पर एक रोचक वाद विवाद होता है) इसी प्रसग मे चन्द ने वातो ही वातो मे अपने स्वामी पृथ्वीराज जो कि "षवास" (सेवक) के वेष मे उसके समीप ही खडा था, के गुणा का वर्णन किया। इसी समय कर्नाटी[1] कुछ सहेलियो के साथ पानो का थाल हाथ म लिये दरवार मे उपस्थित हुई। उसने ज्योंही सेवक वेष मे चन्द के साथ खडे पृथ्वीराज को देखा तो झट से घुघट[2] निकालने लगी। कर्नाटी के इस आचरण को देख कर दरवार मे सन्नाटा छा गया। सब के मन मे सदेह हुआ कि चन्द के अनुयायियो मे पृथ्वीराज अवश्य दरवार मे है। किसी ने कहा कि पृथ्वीराज यहा कैसे हो सकता है। चन्द और पृथ्वीराज का मन एक है अत यह (कर्नाटी) लज्जा[3] करती है। अन्त मे सम्राट् जयचन्द ने कवि चन्द को आदर पूर्वक पान का बीडा दिया और कहा—कि तुम सकोच न करो, कल जो कुछ तुम मागोगे

---

1 कर्नाटी, केवल पृथ्वीराज से ही घुघट निकालती थी।

2 चद ने कर्नाटी को घुघट उठाने का सकेत किया तो उसने घुघट उठा दिया।
(बृहद् सस्करण)

3 कैमास की मृत्यु के पश्चात् कर्नाटी पृथ्वीराज के भय से जयचन्द के दरबार में चली गई थी।

दूँगा। (दरबार विसर्जित हुआ)। जयचद सात हजार शखध्वनियों के साथ महल मे चला गया।

जयचन्द ने राजा रावण नामक सामत को बुलाकर आज्ञा दी कि वह नगर के पश्चिम प्रात मे कविचन्द के ठहरने का प्रबन्ध करे। स्वामी की आज्ञानुसार उसने ऐसा ही किया। पृथ्वीराज अपने सामतो के मध्य उच्चासन पर शोभित है। सामतो के पूछने पर कवि ने जयचन्द-दरबार का सब वृत्तान्त सुनाया। रात्रि को सब सामत सो गए और पृथ्वीराज भी निशक पलग पर सो गया। इसी रात को जयचन्द ने दूत द्वारा कविचन्द को नृत्य देखने के लिये बुलवा भेजा। चद अपने स्वामी को सुख की नीद मे सोता हुआ छोडकर पगराज की नाटचशाला मे जा पहुँचा। (यहा पर नाटचशाला तथा वेश्याओं के नृत्यादि का वर्णन है)। अगले दिन प्रात काल ही जयचद ने अपने गुप्तचरो द्वारा सब भेद जानकर पृथ्वीराज को पकडने के लिये शिकार के बहाने सेना सजाली। (घोडे, हाथी तथा सेना आदि का यहा विस्तृत वर्णन है) उधर पृथ्वीराज भी अपने सामतो सहित युद्धार्थ तैयार हो गया। कन्नौज मे युद्ध के नगारे बज उठे और सर्वत्र कोलाहल मच गया। कमठ कलमलाने लगा, पृथ्वी हिल गई और प्रलय सी मच गई। देवतागण विमानो पर चढ कर रण कौशल देखने लगे। गगा-तट स्थित महल[1] के झरोखो से सुदरिया पृथ्वीराज का रण चातुर्य देखने लगी। सयोगिता ने पृथ्वीराज का शब्द सुना तो वह रोमाचित हो गई, स्वरभग हो गया और शरीर पसीने से भीज गया। पृथ्वीराज ने भी सयोगिता को देख कर अपना घोडा उधर को ही घुमा लिया। सयोगिता भी एक दरिद्र की तरह ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त कर पृथ्वीराज के गले से लिपट गई। (यहा सयोगिता का शृगारिक वर्णन है)। पृथ्वीराज के योद्धाओं ने पग दल को युद्ध मे रोके रक्खा और पृथ्वीराज स्वय अस्सी लाख सेना को चीरता हुआ सयोगिता को साथ लेकर दिल्ली की ओर चल पडा। दोनों सेनाओं मे अष्टमी शुक्रवार, (दशम

---

1 जैसा कि छठे खण्ड में कहा गया है कि जयचन्द ने सयोगिता को गगा-तट स्थित महल मे कैद कर दिया था।

खण्ड) नवमी शनिवार (एकादश खण्ड) तथा दशमी रविवार (द्वादश खण्ड) तीनों दिन रात घोर संग्राम होता रहा। दोनों दलों के योद्धा कई चहुवान तथा जयचन्द का मन्त्री सुमंत आदि इस युद्ध में खेत रहे। पृथ्वीराज के सौ सामंत तथा एक हजार योद्धाओं ने जयचन्द की अस्सी लाख सेना का मुकाबला किया। पृथ्वीराज ने चौथे दिन एकादशी को अपने राज्य की सीमा स्थित एक जगह में पड़ाव डाला और जयचन्द दल हाथ मलता हुआ वापिस लौट गया। उपर्युक्त तीनों खण्डों में कवि ने तीन दिन के युद्ध का विशद वर्णन किया है। युद्ध की समता कहीं राम रावण युद्ध से की है तो कहीं कंस, शिशुपाल कृष्ण युद्ध से की है।

(नवम, दशम, एकादश एवं द्वादश खण्ड समाप्त)

त्रयोदश खण्ड

यमुना के किनारे (निगमबोध तट) पर पृथ्वीराज-संयोगिता का स्वागत करने के लिये दिल्ली नगर के आबाल वृद्ध नर नारी उमड़ चले आ रहे हैं। अश्वारोही तथा हाथियों पर सवार सामन्तों की चहल पहल है। दिल्ली नगर के समस्त भवनों के द्वारों पर वन्दनवार लटक रही हैं, त्रयोदशी गुरुवार को सभरि नरेश ने अपने राज महलों मे प्रवेश किया। जयचन्द ने भी विवश हो अपने पुरोहित (श्री कण्ठ) के द्वारा दहेज आदि दिल्ली भेज दिया। पृथ्वीराज संयोगिता का विधिवत विवाह सम्पन्न हो गया।

रात्रि मे आकाश तारागण से शोभित होता है, सरोवर कमलों से रणाङ्गण योद्धाओं से तथा संसार महिलाओं से शोभित होता है। पृथ्वीराज का अन्तःपुर पहिले ही सुन्दर रमणियों से शोभित था, संयोगिता के आ जाने से वह स्वर्ग बन गया। दम्पति युगल दाम्पत्य सुख भोगने लगा। ग्रीष्म ऋतु है। संयोगिता के महल मे शीतलता उत्पादक साधन एकत्रित किए जा रहे हैं। अगरबत्ति के धूम्र रूप बादलों को देखकर मत्त मयूर नाचने लगे। राजमहल के उज्ज्वल कलश बिजली की तरह चमक रहे हैं। स्त्रियों का मधुर गान दादुर ध्वनि को मात कर रहा है। नर्तकियों के गायन तथा नूपुर ध्वनि से रंग महल गुंजरित हो उठा। पृथ्वीराज-संयोगिता विलास रस में मग्न हैं।

एक दिन सयोगिता ने स्नान करके अपने काले कोमल केशो की वेणी गुथी और उस पर सुगधित फूल लगाए, माथे पर जडाउ बिंदिया आखो मे कज्जल, नाक मे मोती और मुख मे पान का बीडा रखा। सुदर वस्त्र तथा आभरण पहने तथा सोलह शृ गार किये वह पति के समीप पहुँची। लज्जावनत मुखी, कटाक्ष विक्षेप पूर्वक वह पथ्वीराज से लिपट गई। रति क प्रारम्भ हुआ। गुह्य अगो का वणन नही हो सकता। भवरा-भवरी रति क्रीडा मे एक रस हो गए।

ग्रीष्म व्यतीत हो गया, वर्षा-ऋतु आ पहुँची। भूमि लहलहा उठी, लता-द्रुम फल पुष्पो से प्रफुल्लित हो उठे। उद्यानो मे झूले झूलने लगे। सयोगिता नित नूतन शृ गार कर पति के साथ रति क्रीडा म मग्न रहने लगी। (इसी प्रकार तीन मास बीत गए)।

एक दिन सवत् ११५२ असौज मास मे पृथ्वीराज के मन मे अपने सामतो की बल परीक्षार्थ (निगमबोध स्थान पर) जैत खम्भ आरोपण करने का विचार उत्पन्न हुआ। एतदर्थ नवदुर्गा की पूजा तथा होम यज्ञ होने लगा और भैंसो की बलिए दी गई। परवा तिथि से दुर्गाष्टमी तक, आठ मुट्ठी मोटा, आठ हाथ ऊँचा और आठो धातुओ का मिला कर बनाया हुआ जत खम्भ तयार हो गया।

चद सेन पुण्डीर (जोकि कन्नौज की लडाई मे मारा गया था) का पुत्र धीर सेन पुण्डीर सौ सामतो मे से एक था। वह इस परीक्षा मे उत्तीण होने के लिये अपनी आराध्या जालधरी देवी की आराधना करने लगा। देवी ने प्रसन्न हो, धीर पुण्डीर को एक ही साग के प्रहार से जत खम्भ भेदन का आशीर्वाद किया। निदान, धीर पुण्डीर आठ दिन तक नवीन विधि से शक्ति की पूजा कर, कमर म तलवार, कधे पर ढाल और हाथ म साग लिये अपने घोडे पर सवार हो परीक्षा स्थान पर जा पहुँचा। पथ्वीराज की आज्ञा पाकर समस्त शूर सामत खड्ग साग तथा तीरा से जत खम्भ का भेदन करने लगे, परन्तु उस अष्टधातु मिश्रित तीस मन वजनी कठोर खम्भ मे केवल एक भरीट ही पड सकी। धीर पुण्डीर की साग का एक ही वार जत खम्भ के पार हो गया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर

हिसार गढ सहित पाच हजार गाव एक भण्डा तथा बहुत से हाथी घाडे ग्रादि धीर पुण्डीर को पुरस्कार स्वरूप दे कर उसको सामतो का सरदार नियुक्त कर दिया। उसने इस पुरस्कार को स्वीकार कर प्राथना की कि ग्रब मेरा क्या कतव्य है ? पथ्वीराज ने उत्तर दिया कि क्षत्रियो का युद्ध के अतिरिक्त ग्रौर क्या कतव्य हो सकता है। शहाबुद्दीन को एक बार पुन जीवित ग्रवस्था मे पकडना है। पुण्डीर ने ऐसा ही करने की प्रतिज्ञा की। धीर पु डीर के इस सम्मान से ग्रय समस्त सामत ईर्ष्याग्नि मे जलने लगे। जत राय ने चावड राय की ग्रोर ग्राख से सकेत किया तो उसने हस कर कहा —"धीर ! "पातसाह" की रक्षा मे ग्रसख्य सेना रहती है उसे जीवित पकडना ग्रासान काम नही, तुम केवल घर बैठे ही शेखी बघार रहे हो।" धीर पु डीर ने उत्तर दिया—"मैं भी चन्द पुण्डीर का पुत्र नहीं यदि ग्रपनी इष्ट देवी शक्तिमती के बल से शाहाबुद्दीन को जीना न पकड लू।" चावडराय ने पुण्डीर की इस प्रतिज्ञा की सूचना पत्र द्वारा शाह सुलतान के पास पहुँचा दी कि वह (जालधरी देवी की पूजा के लिये कागडा जा रहा है उसको वही पकड लिया जाए)। सुलतान ने तदनुसार ग्राठ हज़ार गक्खरो को ग्राज्ञा दी कि धीर पुण्डीर को छलबल से पकड लिया जाए। गक्खर सरदारो ने ऐसा ही किया ग्रौर उस को कागडा से पकड कर सुलतान के दरबार म उपस्थित कर दिया। बातो ही बातो मे सुलतान ने पुण्डीर को लालच दिया परन्तु वह ग्रपनी प्रतिज्ञा पर ग्रडिग रहा। परिणामत निश्चय हुग्रा कि सुलतान ग्रौर धीर पुण्डीर के युद्ध मे दो दो हाथ होगे। शहाबुद्दीन ने तीन लाख सेना के साथ दिल्ली पर चढाई कर दी। सेना मे रूमी, गक्खर तुरक तथा बलोल ग्रादि जाति के सनिक थे। धीर पुण्डीर भी दिल्ली ग्रा पहुँचा। इधर पृथ्वीराज भी सुलतान के ग्राक्रमण की सूचना पाकर उसका मुकाबला करने के लिये तैयार हो गया। इधर जैतराव तथा चावडराय ग्रादि सामत ईर्ष्याग्नि मे जल रहे थे। चन्द कवि के समझाने पर वे भी युद्धाथ तैयार हो गए। (कवि ने यहा पर दोनो ग्रोर को सेना, हाथी, घाडे तथा शस्त्रास्त्रो के वणन के साथ साथ पक्षी-विपक्षी योद्धाग्रो के ग्राक्रमण प्रत्याक्रमण कौशल का विस्तृत वणन किया है)। ग्रन्तत धीर पुण्डीर ने सुलतान के ग्रगरक्षक

(शस्त्री) को मार कर उसे पकड़ लिया। युद्ध समाप्त हुआ। सुलतान शहाबुद्दीन से कुछ दण्ड लेकर उसे पुन मुक्त कर दिया गया।

इतने म शिशिर ऋतु आ पहुँची। पृथ्वीराज पुन महलो म जाकर सयोगिता के साथ विलासमय जीवन व्यतीत करने लगा। (यहा पर शिशिर वणन के साथ शृ गारादि वणन है। (त्रयोदश खण्ड समाप्त)

चतुर्दश खण्ड

एक दिन गजनी शाह ने अपने प्रधान मंत्री तत्तार खा से पूछा कि क्या दिल्ली से कोई सूचना मिली तत्तार खा ने उत्तर दिया —"हिन्दू पातसाह" ने जो हमारी बे-अदबी की है उसका बदला लेने के लिये दिल्ली पर चढाई कर देनी चाहिए।" निर्णयानुसार कुछ दूत दिल्ली भेजे गए। दूतो ने पथ्वीराज के सामतो मे आपसी फूट का समस्त भेद मुलतान दरबार मे आकर प्रकट किया तो सुलतान ने दिल्ली पर चढाई करने का 'फुरमान" घोपित कर दिया।

इधर दिल्ली नगर निवासी तथा पृथ्वीराज के सामत मुलतान के आक्रमण की सूचना पाकर व्याकुल हो उठे तथा घर घर इसी बात की चर्चा होने लगी। सामतो की आपसी फूट, पृथ्वीराज की सयोगिता मे आसक्ति के कारण-राज्य काय से विरक्ति तथा सुलतान के आक्रमण से चिन्तित और व्याकुल कवि चद, राज-पुरोहित गुरु राम के घर पहुँचे। विचार विमश के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि पृथ्वीराज को सचेत करने के लिए अन्त पुर मे लिखित सदेश भेजा जाए। कवि-चद ने एक दासी द्वारा पृथ्वीराज के पास सदेश भेजा जिस मे उक्त विषय का जिकर किया और एक पद्याश भी लिखा।

"गोरी रत्तो तुअ धरनी, तू गोरी अनुरत्त"

अर्थात् सुलतान गौरी तुम्हारे राज्य पर लालायित है और तुम गोरी-सयोगिता मे अनुरक्त हो। पत्र पढकर पृथ्वीराज क्रोध से तमतमा उठा। और उसने अपने शस्त्रास्त्र सभाले। सयोगिता ने क्रोध का कारण पूछा तो उत्तर मिला कि आज रात को मुझे एक स्वप्न आया है— "अन्य रानियो के मध्य मे मैं तुम्हारे साथ बैठा हूँ और तुम सब रानियो

मे लडने लग गई। इतने म आकाश से कुछ राक्षस उतर कर, तुम्हारा हाथ पकडकर तुम्हे अपनी ओर खीचने लगे तो तुम चिल्लाई और मेरी आख खुल गई।'

राज पुरोहित गुरु राम को यह स्वप्न सुनाया गया। पुरोहित जी ने इस दु-स्वप्न के अरिष्ट निवारणाथ अभय पजर स्तोत्र का पाठ किया ब्राह्मणो को दान दिलवाया। कवि चद ने देवी की अचना पूवक दशो दिशाओ मे दस भसे बलिदान करवाए।

चावड राय[1] की बेडिया खोल दी गई। इस से सब को प्रसन्नता हुई। इसी समय पथ्वीराज का बहनोई सामत सिंह अपनी धमपत्नी पथा (पथ्वीराज की बडी बहिन) सहित दिल्ली (निगम बोध घाट पर) आ पहुँचा।

पथ्वीराज ने स्वण तथा हाथी घोडे आदि देकर उनका स्वागत किया। कविचन्द ने विरुदावली कही। रुठ सामतो को मनाया गया, विशेष कर चावड राय को विरदावली कह कर उसकी कमर मे खडग बाध कर उसे सम्मानित किया गया। मुलतान का मुकाबला करने के लिये तैयारिया होने लगी। बडगुज्जर, जतराय राम देवगुज्जर तथा अय समस्त सामत युद्ध सम्बन्धी तैयारियो मे सलग्न हो गए।

इधर दिल्ली नगर म अपशकुन दिखाई दिये। निगम बोध स्थान पर, तीस हाथ लम्बी, बारह हाथ चौडी और चौसठ अगुल मोटी एक पाषाण शिला स्वय हिलने लगी। सब विस्मित हो गए। किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ। इतने मे शिला के नीचे से एक भीमकाय देव निकला। चन्द कवि ने पूछा तुम कौन हो? देव ने उत्तर दिया — 'मेरा नाम वीरभद्र है। जब सती के अपमान से रुष्ट होकर महादव ने दक्ष प्रजापति का यज्ञ विध्वस करने के लिए अपनी जटाओ को फटकारा तो मेरी उत्पत्ति हुई। मैंने ही दक्ष यज्ञ का विध्वस किया। यह सतयुग की बात है। मैंने द्वापर-त्रेता युगो मे इन्द्र-वृत्रासुर, राम रावण, कृष्ण

---

1 चावंडराय को पृथ्वीराज का हाथी मार देने के अपराध म पावों में बेड़ियां डाल कर कारावास में डाला हुआ था। (बृहद् सस्करण)।

जरासध आदि युद्धो को देख है। कौरव-पाण्डवो के युद्ध मे लेकर आज तक मैं यही पडा हूँ। कोलाहल सुनकर मेरी आंख खुल गई। इस कोलाहल का क्या कारण है" ? चन्द ने उत्तर दिया —"गजनी का सुलतान दिल्ली पर आक्रमण के लिये आ रहा है। उसका मुकाबला करने के लिये तैयारियां हो रही हैं। अत यह कोलाहल है"। वीरभद्र ने कहा—"मानवो ! तुम्हे इतना गव मैंने देवासुरो के युद्ध देखे हैं"। अन्तर कवि चद ने पूछा कि इस युद्ध मे क्या होनहार है ? वीरभद्र ने उत्तर दिया इस युद्ध का परिणाम अच्छा नही होगा । इस के पश्चात कवि चन्द ने, जैत राव, प्रसग राय, जामराय, रामराय बलिभद्रराय तथा चावडराय आदि समस्त सामतो का, उनकी विरुदावली तथा शौय पराक्रम वणन पूवक वीरभद्र से परिचय करवाया। एतदनन्तर चावडराय तथा जामराय के मध्य पृथ्वीराज की सेना तथा सुलतान सेना के बलाबल की तुलना तथा साम दान भेदादि नीति विषयक वाद विवाद होता रहा। इसी प्रकार सिंहपरमार, लोहाना आजान बाहु, गुरु राम, सामतसिंह आदि मे युद्ध विषयक विचार विमर्श चलता रहा। (चतुदश खण्ड समाप्त)

पञ्चदश खण्ड

सुलतान गौरी घरियारे बजाता हुआ अपने दल बल सहित सिंधु नदी के समीप आ पहुँचा। उस की सेना पावस के बादलो की तरह उमडती चली आ रही है। इधर पृथ्वीराज भी अन्त पुर से चलने लगा तो उस की बाई आंख फडकने लगी। सयोगिता अपने प्रियतम को शस्त्रास्त्रो से सुसज्जित युद्ध मे जाते देख चित्रलिखित सी रह गई और एक टक पृथ्वीराज की ओर देखती रही। हृदय मे करुणा उमड पडी और वह सज्ञा हीन हो गई। परन्तु अब पृथ्वीराज रुकने वाले नही थे। युद्ध के नगाडे बज ही रहे थे। हिन्दु सेना ने कूच का नगाडा बजा दिया। सयोगिता के मन मे आभास हुआ कि अब प्रियतम से रवि मडल (स्वग) मे ही मिलना होगा। हिन्दु नारियो का यही धम है।

शहाबुद्दीन गौरी सिंधुनद पार कर आगे बढता चला आ रहा है। इधर हिसार गढपति पावस पुण्डीर[1] (धीर पुंडीर का पुत्र) ने पृथ्वीराज

1 पावस पुण्डीर ने पृथ्वीराज से बागी होकर लाहौर नगर को लूट लिया था। (बृहद् सस्करण)

से आकर क्षमा मागी और स्वामी धम का पालन करते हुए रणक्षेत्र म जूझ मरने की प्रतिज्ञा की। पृथ्वीराज ने कवि चद को कागडा से हाहुलि राय को मनाकर युद्ध मे सहायक होने के लिये भेजा। कविचद आज्ञा नुसार कागडा पहुँचा। हम्मीर ने आवभगत की और कुशल क्षेम पूछी कवि ने कहा—कि और तो सब ठीक है पर सुलतान गौरी ने पथ्वीराज पर आक्रमण कर दिया है। पथ्वीराज अपनी सेना सहित पानीपत के मैदान मे जा पहुँचा है। तुम्ह यही उचित है कि क्षत्रिय तथा स्वामी धम का पालन कर अपना जन्म सफल करो। इस के अतिरिक्त कवि ने उस को बहुत समझाया, परन्तु उस के कान पर जू तक न रेगी। वह तो लालच मे फसा था। (गौरी की विजय होने पर पजाब का आधा भाग हाहुलिराय को मिलना था) अत हाहुलिराय[1] के दिल मे कपट था। वाद-विवाद के पश्चात यही निश्चय हुआ कि देवी जालपा के मदिर मे जाकर देवी की आज्ञानुसार इस प्रश्न का निणय हो। इस प्रकार कपट से हाहुलिराय ने कवि चद का देवी के मदिर मे कद कर दिया और स्वय चालीस हजार सेना और पाच हजार घुडसवार ले कर शहाबुद्दीन से जा मिला। भट मे उसने कस्तूरी केसर तथा अन्य अनेक पदाथ दिए। विधिगति बलवान है। लोभवश उसने अपने सनातन स्वामी और गौ ब्राह्मण का पक्ष छोड, अपना देश तथा धमशत्रु शहाबुद्दीन को अर्पित कर दिया।

शहाबुद्दीन का दल पानीपत के मदान की ओर बढता चला जा रहा है। उसने तत्तारखा खुरासान खा हस्तम खा मारूफखा तथा कमाल खा आदि अपने सरदारो से कहा—कि मैं कई बार दुश्मन से हार चुका हूँ। वैसे शत्रु अपनी फूट के कारण निबल हो चुका है। फिर भी होशियार तथा शौय-पराक्रम से युद्ध सचालन करना है। सरदारो ने सब प्रकार से सुलतान को विश्वास दिलाया। सुलतान की (तीन लाख) सेना युद्धक्षत्र की ओर बढी। पृथ्वीराज की सत्तर हजार सेना व्यूहाकार मे युद्ध के लिये तयार हो गई। सावन मास की अमावस्या को पूव पश्चिम से दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई। (पचदश खण्ड समाप्त)

---

1 हाहुलि राय पृथ्वीराज से इस लिये असतुष्ट था कि दिल्ली दरबार में पृथ्वीराज के चाचा कन्ह चौहान ने उस का अपमान कर दिया था (बृहद् सस्करण)

षोडस खण्ड

दोनो ओर के योधा कट कट कर मरने लगे। एक एक राजपूत वीर ने शाही फौज के सैकडो योद्धाओ को मार कर वीर गति प्राप्त की। रक्त की धारा बह निकली। डकिनिया रक्त पी पीकर उछलने कूदने लगी। अप्सराए[1] इच्छानुसार वरो की प्राप्ति से आनदित हो उठी। तीन दिन तक घमसान युद्ध होता रहा। राजपूत योद्धा एक एक कर वीर गति पाने लगे। पथ्वीराज के प्रमुख सामत—जत राव, चावड राय, प्रसग राय खीची दवराय बग्गरी, सिंघराय परमार, वीरसिंह परमार, आजान बहु, बलिभद्र राय, पावस पु डीर तथा सामत सिंह आदि असख्य मुसलमानी सेना का सहार कर वीर गति को प्राप्त हुए। सत्तर हजार सिपाही तथा हाथी—घोडे खेत रहे। पृथ्वीराज को पकड लिया गया। कागडा स्थित जालधरी देवी के मन्दिर म वीरभद्र ने शिव जी को इस युद्ध का समस्त वृत्तान्त सुनाया। (षोडस खण्ड समाप्त)

सप्तदश खण्ड

दिल्ली के राज महलो मे एक चील ने पथ्वीराज को चवर डुलाने वाले "पवास" (सेवक) की एक कटी हुई भुजा ला कर फेंक दी। डकिनी ने प्रकट हो कर युद्ध वर्णन पूवक पथ्वीराज के पकडे जाने की कथा सयोगिता को सुनाई। पृथ्वीराज की पराजय का वृत्तान्त सुनते ही सयोगिता के प्राण पखेरू उड गये। पथा सहित अन्य क्षत्राणिए सती हो गई। (सप्तदश खण्ड समाप्त)

अष्टादश खण्ड

उधर जालधरी देवी के मन्दिर म वदी कवि चन्द ने वीरभद्र के मुख से, सुलतान द्वारा पृथ्वीराज के पकडे जाने को तथा गजनी ले जाकर उसे 'अख विहीन' करने का वृत्तान्त सुना। कवि का हृदय फट गया। व्याकुल हो वह अपने आप को सभाल न सका। उसका मन माता पिता, मित्र-बन्धु तथा सासारिक माया मोह मे विरक्त हो गया। शोकग्रस्त

1 युद्ध स्थल में लडते लडते मरने से स्वर्ग प्राप्ति होती है अत जो योद्धा वीर गति प्राप्त करके स्वर्ग म पहुँचते हैं उनको अप्सराए वर लेती है।

कविचन्द दिल्ली पहुँचा। नगर की दुर्दशा देखी। घर मे अपनी स्त्री से भी पृथ्वीराज की पराजय का समाचार सुना। (अष्टादश खण्ड समाप्त)

नवदश खण्ड

जोगी वेष धारण कर, तन पर विभूति तथा शिर पर जटाए बाध कविचन्द ने गजनी को जाने वाले मार्ग का अनुसरण किया। कवि के मन म यही विचार था कि कब गजनी पहुँच कर अपने स्वामी तथा मित्र का उद्धार करू। तीस दिन तक, भूखा प्यासा कवि गहन वनो मे विचरता रहा। एक दिन पिपासा के कारण जल की खोज मे एक वट वृक्ष के नीचे बैठा तो उसने सिंह वाहिनी हसती हुई एक तरुणी को देखा। उसकी हसी ऐसी थी मानो धुए म अग्नि का प्रकाश हो। यह साक्षात कवि की आराध्या देवी थी। चन्द ने मस्तक झुकाया। देवी ने उसकी उदासीनता को दूर करने के लिए कहा कि आत्मा परमात्मा का अश है जीवन नश्वर है, अत शोक किस लिए ? एतदनन्तर देवी ने अपने आचल से एक चीथडा फाड कर कविचन्द के शिर पर बाध दिया और उसको अपने ध्येय म सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। भूख प्यास को सहन करता हुआ कविचन्द गजनी पहुँच गया। गजनी मे विजय के उपलक्ष म खुशिया मनाई जा रही थी सुलतान शहाबुद्दीन का प्रताप मध्याह्न सूर्य के सम न था। नगर मे योद्धाओ के आवागमन की चहल पहल थी। कोई वजू कर रहा था, कोई नमाज तो कोई कुरान पढ रहा था। नगर को देखता हुआ कविचन्द सुलतान दरबार के द्वार पर जा पहुँचा। कनक–दण्डधारी द्वारपालो ने उस को भीतर नही जाने दिया। वह नगर म इधर उधर घूमता रहा। मध्याह्न ढलते ही शहाबुद्दीन हदफ (पोलो) खेलने के लिये हाथी पर सवार हो कर महलो से बाहर निकला। उसके साथ जडाऊ काठियो से सुसज्जित बहुमूल्य घोडो पर चढे हुये रूमी रुहला गक्खर, खुरसान, हबशी तथा ईरानी आदि विभिन्न जगहो के सरदार थे कविचन्द ने हाथ उठा कर सुलतान को स्तुति पूर्वक आशीर्वाद दिया और अपना परिचय देकर कहा — मैं और पृथ्वीराज एक ही समय जन्मे और साथ साथ हमारा पालन पोषण हुआ। मैं ने सुना है आपने पृथ्वीराज को 'अपहीन" कर दिया है। यदि एक बार मुझे उसके दर्शन करवा दो तो फिर मैं

बद्रिकाश्रम की ओर चला जाऊँगा। सुलतान ने उत्तर दिया कि तुम कल दरबार में हाजिर होना। हुज्जाबखा को आज्ञा दी गई कि कविचन्द का आतिथ्य सत्कार का उचित प्रबंध कर दिया जाये। तदनुसार (भीम नामक) मन्त्री के घर कवि की रिहायस आदि का प्रबध हो गया। चन्द ने अपनी आराध्या देवी की अर्चना तथा होम के लिये इच्छित सामग्री मगवा कर एकान्त स्थान में आराधना आरम्भ कर दी। देवी ने प्रसन्नता पूर्वक प्रकट हो कर कहा —"माग क्या मागता है"। कवि ने उत्तर दिया कि कहा तो तपते सूर्य के समान सुलतान शहाबुद्दीन और कहा भूमि पर चुगने वाला मैं फकीर। पर तू सर्वान्तर्यामिनी तथा सर्वशक्तिमती है। मेरी यही अन्तिम अभिलाषा है कि मैं अपने बालसखा तथा स्वामी पृथ्वीराज का उद्धार कर अपना अपयश धो सकू। "तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो" इतना कह कर देवी अन्तर्धान हो गई।

शाही दरबार सज गया। प्रधान मन्त्री तत्तार खा के साथ अन्य समस्त दरबारी उपस्थित हैं। कविचन्द भी हाजिर हुये। कवि ने प्रार्थना की कि बाल्यावस्था मे मैं और पृथ्वीराज साथ साथ खेला करते थे तो एक दिन पृथ्वीराज ने मुझे शब्द वेधी बाण द्वारा सात घरियारे बीधने की प्रतिज्ञा की, परतु उसकी यह प्रतिज्ञा अभी तक पूरी नही हो सकी। सुलतान कवि की बात सुनकर हसा और कहा कि "अपहीन" पृथ्वीराज से अब ऐसा क्या कर हो सकता है? चन्द के आग्रह पर सुलतान ने 'फुरमान" जारी करते हुए कहा कि हमे तुम्हारी बात मजूर है। हम भी तमाशा देखेंगे।

कवि को पृथ्वीराज के पास पहुँचा दिया गया। चद क्या देखता है कि वीर शिरोमणी पृथ्वीराज चक्षु विहीन है। चिन्ताप्रज्ज्वलित शरीर मलिन अवस्था मे पड़ा है। वरदाई ने आशीर्वाद देकर कहा "आप ने भीमदेव चालुक्य को परास्त किया, आजानबाहु तथा अर्जनराय को बाधा और पग नरेश का यज्ञ विध्वस किया। क्या आप वही सोमेश सुत सभरि नरेश हैं"? पृथ्वीराज के जर्जरित शरीर ने कुछ बल पकड़ा और वह सभला। कवि ने पुन कहा —"तुम्हे वह अर्धरात स्मरण हैं कि जब तुम ने एक ही बाण से उल्लू को मार गिराया था और इस प्रकार के शब्द वेधी बाण से सात घरियार भेदने की प्रतिज्ञा

की थी। निदान, पथ्वीराज प्रोत्सहित हुआ और दोनो मुलतान दरबार मे जा उपस्थित हुए। घरियारे तैयार हो गई। तत्तार खा ने इस समय सुलतान को सावधान किया कि शत्रु पर विश्वास नही करना चाहिये। परन्तु उसने तत्तार के सुझाव को हसी म टाल दिया।

पथ्वीराज रगभूमि म खडा हो गया। कमान उसके हाथ म थाम दी गई। पथ्वीराज प्रसन्न था। कवि ने कहा —"पथ्वीराज ! इस समय तुम्हारे सम्मुख समस्त सामग्री प्रस्तुत है हाथ मे हथियार, सम्मुख घरियार तथा दाईं ओर सुलतान विराजमान है। अपने हृदय की कमान को दढ कर लो। इससे लोक परलोक सुधर जायगे। अब सोचने का समय नही बाण सधानिए।" इतना सुनते ही पथ्वीराज ने कमान दढता से सभाली। चद ने पुन उत्तेजित करते हुये कहा —'राजन् ! राम ने एक ही बाण से रावण का मारा था अर्जुन ने कर्ण का सिर भी एक ही बाण से उडाया था और एक ही बाण पर बिठा कर भरत ने हनुमान को मूर्च्छित लक्ष्मण के पास पहुँचा दिया था। सभरि नरेश ! तुम्ह भी दूसरे बाण की आवश्यकता नही पडनी चाहिए'।

शहाबुद्दीन के प्रथम शब्द पर पथ्वीराज ने प्रत्यचा खीच ली, दूसरे शब्द पर वह अडिग तथा अकड कर खडा हो गया और कर्णपर्यन्त कमान खीच ली। बादशाह के मुख से तीसरा शब्द निकलते ही पथ्वीराज ने बाण छोड दिया जो कि शहाबुद्दीन के ठीक जबाड म जा धसा दात जीभ को बीध कर तालु को फोड कर पार हो गया। वह पथ्वी पर मिट्टी मे लुढकने लगा। दरबार मे खलबली मच गई। चद कवि ने क्षण मे छुरी से अपने दो टुकडे कर दिए और वही छुरी (मरते मरते) पथ्वीराज को दे दी। हसा उड गया ज्योति, ज्योति मे समा गई। आकाश से देवता गण पुष्प-वर्षा करने लगे।

कविचद ने सुधारस सदश नवरस शृगार वीर करुणादि रसो मे युक्त रासो की रचना की।

ससार मे शरीर, धन, स्त्री, सुत, नर, वापी, कूप अर्थात समस्त जड चतन पदार्थ नश्वर हैं, केवल अमर अक्षर—काव्य तथा गत्हा—यश अमर रहते हैं।

चतुर्थ अध्याय

ऐतिहासिकता

कथानक में इतिहास और कल्पना

ऐतिहासिक दृष्टि से अजमेर तथा दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान तथा सुलतान शहाबुद्दीन गौरी मे प्रथम युद्ध कुरुक्षेत्र भूमि से १४ मील दूरी पर तरौडी नामक गाव के मैदान मे सन् ११६१ म हुआ। कन्नौज नरेश जयचद के सिवाय राजपूताने के समस्त राजाओं ने इस युद्ध मे पथ्वीराज का साथ दिया। क्योकि सयोगिता को भगा ले जाने के कारण जयचन्द पथ्वीराज से रुष्ट था। इस युद्ध मे राजपूत योद्धाओं ने पथ्वीराज के नेतत्व मे भयकर युद्ध किया। परिणामत सुलतान गौरी की सेना मे भगदड मच गई। पथ्वीराज के भाई गोविंद राय ने सलतान को ऐसी करारी साग मारी कि वह जखमी होकर युद्ध क्षेत्र से भाग निकला। शौर्य व तेज से हीन होकर सुलतान गजनी पहुँचा। इस पराजय का वदला लेने की इच्छा से उसने दुबारा युद्ध की तैयारिया प्रारम्भ कर दी। परिणाम स्वरूप सन ११६२ मे उसी तरौडी गाव के मैदान मे सुलतान और पृथ्वीराज की सेनाओं मे मुठ भेड हुई। यद्यपि इस युद्ध मे पृथ्वीराज के १५० राजपूत सामत अपनी सेनाओं सहित सहायक थे। परतु सुलतान की भारी भरकम सेना के सम्मुख तथा राजपूत सामतो मे पारस्परिक फूट के कारण पृथ्वीराज की सेना के पाव उखड गए। पृथ्वीराज समरागण से भाग निकला। परतु वह सरस्वती नदी के किनारे (सभवत कुरुक्षेत्र के समीप) मुलतानी सेना के सिपाहियो द्वारा एक गाव से पकडा गया और वही मार दिया गया। इसके दो वर्ष पश्चात सन ११६४ म सुलतान ने कन्नौज पर चढाई कर दी और देश द्रोही जयचद भी इस युद्ध म मारा गया। प्रबध सग्रहान्तगत 'जयचन्द प्रबध' के अनुसार वह इस पराजय से आत्मग्लानि के कारण गगा मे डूब कर मर गया।

---

1 देखो—"शार्ट हिस्टरी आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया" पृष्ठ ५८ डा० ईश्वरी प्रसाद।

चद कवि ने इन्ही ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर रासो (सम्भवत लघु सस्करण) की रचना की। यह तो नि सदेह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत प्रति मे वर्णित स्थान, प्रधान पात्र तथा मध्यकालीन सामाजिक राजनतिक तथा धार्मिक वातावरण सामयिक तथा ऐतिहासिक हैं। जहा कही कवि ने इतिहास के विरुद्ध कल्पना का प्रयोग किया है तो वह केवल काव्य को उत्कृष्ट रूप देने के लिये अथवा अपने काव्य-नायक-पृथ्वीराज की प्रतिष्ठा के लिये है।

ऐतिहासिक विश्लेषण

रासो की प्रस्तुत प्रति मे मुख्य घटनाए निम्नलिखित हैं—

१—ब्रह्मा के यज्ञ से माणिक्य राय चौहान की उत्पत्ति।

२—पृथ्वीराज का खट्टूवन म धन प्राप्त करना तथा अनगपाल द्वारा गोद लिया जाना।

३—भीमदेव चालुक्य से आबू तथा नागौर के निकट युद्ध।

४—कैमास बध।

५—सयोगिता हरण तथा जयचन्द से युद्ध।

६—जत खम्भारोपण एव धीर पुडीर द्वारा शहाबुद्दीन गोरी का पकडा जाना।

७—पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरी म युद्ध।

(क) प्रथम युद्ध—जब पृथ्वीराज भीमदेव चालुक्य से युद्ध कर रहा था।

(ख) द्वितीय युद्ध जिसमे सुलतान गोरी धीर पुडीर के हाथो बन्दी हुआ।

(ग) अन्तिम युद्ध—जिसमे पृथ्वीराज स्वय बदी हुआ।

८—शब्दवेधी-बाण भेद खण्ड।

प्रस्तुत प्रति मे मुख्यतया दो ही घटनाओ का विशेष रूप से वणन है, प्रथम पृथ्वीराज द्वारा सयोगिता हरण, द्वितीय पृथ्वीराज गोरी म युद्ध। अन्य घटनाए गौण रूप मे ही वर्णित हैं।

उपयुक्त घटनाओ का ऐतिहासिक दृष्टि से सक्षिप्त विश्लेषण निम्नलिखित रूप से है —

१—किसी भी ऐतिहासिक काव्य अथवा शिलालेख का इस बात मे विरोध नही है कि माणिक्यराय चहुवान की उत्पत्ति ब्रह्मा के यज्ञ मे नहीं हुई। "सुजन चरित[1]" "हम्मीर महाकाव्य[2]" तथा "पृथ्वीराज विजय[3]" महाकाव्य इस बात का समर्थन करते हैं कि ब्रह्मा के यज्ञ से ही प्रथम चौहान की उत्पत्ति हुई। प्रस्तुत प्रति मे बृहद सस्करणवत् प्रथम चौहान की उत्पत्ति अग्नि कुण्ड मे नही हुई है। और इस प्रति मे वर्णित चौहान वंशावली भी किसी आधार पर असत्य प्रमाणित नही होती।

२—सम्भव है खट्टु वन से पथ्वीराज को धन प्राप्ति एक काल्पनिक घटना हो। और न ही यह घटना किसी भी रूप से कथा प्रवाह मे सहायक अथवा चमत्कार ही उत्पन्न करती है।

पथ्वीराज का दिल्ली गोद जाना इतिहास सम्मत नही है। अनगपाल तोवर का अपनी कनिष्ठा कन्या कमला का विवाह सोमेश्वर से करना तथा अपने दौहित्र पृथ्वीराज को अपने राज्य (दिल्ली) का उत्तराधिकारी नियुक्त करना दोनो काल्पनिक घटनाएं हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से उस समय न तो अनगपाल दिल्ली का राजा था और न ही उसकी पुत्री कमला का विवाह सोमेश्वर से हुआ। इस समय दिल्ली का राज्य तो पहले से ही सोमेश्वर के छोटे भाई विग्रहराज (चतुर्थ) ने अपने राज्य (अजमेर) के आधीन कर लिया था। सोमेश्वर का विवाह हैहयवंशी चेदिराज नरसिंह देव की कन्या कर्पूर देवी से हुआ और उनके गर्भ से दो पुत्र—पृथ्वीराज तथा हरिराज उत्पन्न हुए। इस कथा की पुष्टि हम्मीर महाकाव्य[4] 'सुजनचरित[5]'

---

1 १६ वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में एक बंगाली कवि द्वारा रचित संस्कृत काव्य।

2, ग्वालियर के राजा वीरम के दरबारी कवि नयचन्द्र सूरि द्वारा १५ वीं शताब्दी में रचित ऐतिहासिक संस्कृत महाकाव्य।

3 पृथ्वीराज के दरबारी कवि जयानक की रचना।

4 इला विलासी जगति स्म तस्मात्, सोमेश्वरोऽनश्वर नीति रीतिः।
कर्पूरदेवीति बभूव तस्य, प्रिया (प्रिय) राघव माधवाना। हम्मी म का सर्ग २

5 बहुन्तलामो गुणस्पर्शीले कर्पूरदेवीमुदाद विद्वान्। सु० च० सर्ग ४

तथा अन्य शिलालेखों[1] द्वारा प्रमाणित हो चुकी है।

इस कल्पना प्रसूत घटना से कवि ने जयचन्द–पृथ्वीराज में उत्कट वैमनस्य तथा वैर विरोध का बीजारोपण किया है। सम्भवतः पृथ्वीराज ने सयोगिता हरण भी इसी वैमनस्य के कारण किया हो।

३ पृथ्वीराज-विजय' महाकाव्य के अनुसार पृथ्वीराज का मन्त्री कदम्बवास (कैमास) चालुक्यो को अपना शत्रु समझता था। 'पार्थ पराक्रम व्यायोग'' मे भी यह विदित होता है कि पृथ्वीराज ने भीमदेव चालुक्य के आधीन आबू के राजा धारावर्ष पर आक्रमण किया था। प्रस्तुत प्रति मे इस राजा का नाम सलष परमार मिलता है। नाम मे परिवर्तन सम्भव हो सकता है। स्वर्गीय डॉ० ओझा जी के अनुसार भीमदेव चालुक्य स० १२३५ मे गद्दी[3] पर बैठा और उस ने स० १२९८ तक नागौर पर राज्य किया। पृथ्वीराज का राज्य[4] काल स० १२२० से १२४८ तक है। बीकानेर रियासत के एक चारलू[5] नामक गाव मे कुछ शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जिस के अनुसार आल्हड और अम्बराज नामक दो चौहान सरदार स० १२४१ मे नागौर के समीप एक युद्ध मे मारे गए। हो सकता है कि यह युद्ध पृथ्वीराज और भीम देव चालुक्य के बीच हुआ हो। जिनपाल उपाध्याय रचित 'खरतर गच्छ पट्टावली'' मे

---

1 बिजोल्यां के वि० स० १२२६ के पाच शिला लेख का ना प्र पत्रिका भाग ? स० १९७७ पृष्ठ ३७७-४२४ तथा "कोषोत्सव स्मारक सग्रह मे डा ओझा जी का लेख'' रासो निर्माण काल पृष्ठ ३३ ३९।

2 डॉ० दशरथ शर्मा का लेख ' रासो (लघु सस्करण) की घटनाओ का एतिहासिक आधार''। राजस्थानी, कलकत्ता, जनवरी १९४० जिल्द ३

3 देखो राजपूताना म्यूजियम अजमेर म भीम देव का स० १२६२ का एक शिला लेख—Indian Antiquary Vol II P 29

4 ''१४वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मेरु तुगाचार्य द्वारा रचित प्रबध चिन्ता मणि'' पृष्ठ ४४ ''पृथ्वीराज' सं० १ ३६ वर्षे राज्य चकार स० १२४८ वर्षे मृत''।

5 An Inscription of Charlu Village (Bikaner) Rajasthan Bharati P I, Vol I, April 1936

भी पृथ्वीराज और भीमदेव चालुक्य के युग का वर्णन मिलता है। अत यह घटना ऐतिहासिक प्रतीत होती है कि भीम देव चालुक्य तथा पृथ्वीराज मे स १२४० के लगभग युद्ध हुआ था।

प्रस्तुत प्रति मे पृथ्वीराज-भीमदेव मे युद्ध का कारण सलख परमार की पुत्री तथा जत परमार की बहन इच्छिनी है। यद्यपि उक्त तीनो व्यक्ति इतिहास सम्मत नही है और काल्पनिक प्रतीत होते हैं। परन्तु वि० स० १२८७ की वस्तु पाल मन्दिर की एक प्रशस्ति[1] से ज्ञात होता है कि उस समय आबू पर परमार-वश का अधिकार था। एक और बात कि वृहद् तथा मध्यम सस्करणो की तरह प्रस्तुत प्रति मे, इस युद्ध मे भीमदेव की मृत्यु नही हुई, अपितु वह युद्ध से जीवित भाग गया।

४ जैसा कि ऊपर कहा गया है कि पृथ्वीराज विजय काव्य तथा खरतरगच्छ पट्टावली म पृथ्वीराज के मन्त्री कैमास का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। और इन काव्यो मे कमास की बुद्धि कुशलता तथा उसकी नीति निपुणता को भूरि भूरि प्रशसा की गई है। श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित प्रबन्ध सग्रहान्तर्गत पृथ्वीराज' प्रबन्ध मे कमास की मृत्यु सबधी जो पद प्राप्त हुए हैं, इनसे पृथ्वीराज द्वारा कैमास की मृत्यु का प्रमाण भी मिलता है। "नैणसी ख्यात[2]" म पृथ्वीराज के एक सामत की कथा कैमास वध आख्यान मे मिलती जुलती है। अत सिद्ध है कि कैमास एक ऐतिहासिक व्यक्ति है और प्रस्तुत प्रति मे वर्णित कैमास वध आख्यान ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वथा निराधार नही है।

५ सयोगिता हरण तथा पृथ्वीराज जयचन्द युद्ध

इतिहास इस बात का साक्षी है कि पृथ्वीराज और जयचन्द परस्पर

---

1 देखो एपिग्राफिका इण्डिका Vol ४ पृष्ठ २०४ १२

2 पुरातन प्रबध सग्रह पृष्ठ ८६—"पृथ्वीराजस्यामात्यो दाहिमा जातीय कइवास नामा मत्रीश्वरोऽस्ति' । नृप (पृथ्वीराज) मन्त्रिणं (कइवासं) हन्तु बुद्धिमकरोत्। राजा दापिकाभिधानेन बाणमुक्रम् आदि।

3 देखो—रासा (ल स) की घटनाओं के ऐतिहासिक आधार राजस्थानी पत्रिका कलकत्ता जिल्द १६४०।

लिपिया लिखी मिलती है "र" और "त" अक्षर लिखने म अभेद प्रतीति है। कवि चद ने तो समतसिह अथवा सामत सिह ही लिखा होगा परन्तु किसी एक प्रतिलिपिकार ने ममत मिह के "त' का र नकल किया होगा। जिसमे समतसिह अथवा सामत सिह का समरसिह तथा समरसि बनना स्वाभाविक प्रतीत होता है। मेरा अनुमान है कि यह अशुद्धि निरन्तर अभी तक चली आ रही है। क्याकि रासो की पाडुलिपिया सकडो प्रतिलिपिकारो के माध्यम से हमारे हाथ लगी है। अत प्रस्तुत प्रति के चतुदश खण्ड मे पृथा विवाह और समरसिह का मुलतान के विरुद्ध लडते हुए मारा जाना गलत साबित नही होता। राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता स्वर्गीय जगदीश सिह गहलोत ने भी यही लिखा[1] है कि चित्तौड के रावल सामत सिंह" का विवाह पथ्वीराज की बहन[3] पथा से हुआ था।

४ यह प्रकरण प्रस्तुत प्रति मे नही है।

५ प्रस्तुत प्रति मे केवल सयोगिता अपहरण की कथा ही विस्तत रूप म वर्णित है। ऐतिहासिक दष्टि से यह घटना अकबर राज्य काल से

---

1 देखो—राजस्थान का इतिहास, पृष्ठ १६८, सन् १६३७ सस्करण।

2 पृथ्वीराज और जयचद के समय (सं० १२२६) म मेवाड़ का राजा सामत सिंह और उसका छोटा भाई कुमार सिंह थे। इन से पाचवी पुश्त म चित्तौड का राना राणा समरसिंह हुआ जो स० १३२४ तक जीवित रहा। डा जी एच ओझा "आनद सम्वत् कल्पना"

3 तत समरसिंहाख्य पृथ्वीराजस्य भूपत।
पृथाख्याया भगिन्यास्तु पतिरित्यात हान्त ॥
गौरी साहबदीनेन गज्जनीशेन सगरम्।
कुर्वतोऽखर्व ग र्स्य महासामन्तशोभिन ॥
दिल्लीश्वरस्य चौहाननाथस्यास्य सहायकृत्।
स द्वादश सहस्रै स्व वीराणा रुदितो रणे।
वध्वा गोरी पति दैवान् स्वयात सूर्य बिंबमित् ॥ तृतीय सर्ग, चतुर्थ शिला।
सम्वत् १७३२ में श्री मधु सूदन भट्ट रचित राज प्रशस्ति महाकाव्य। (चित्तौड़ के "राज समुद्र" सरोवर की शिलाओ पर उत्कीर्ण)

पूव प्रचलित थी। पद्मावती, हसावती तथा शशिव्रता आदि के विवाहो का इस प्रति मे वणन नही है। हा, सलप पम्मार की कन्या इच्छिनी का पथ्वीराज द्वारा अपहरण यहा हुआ है। भीमदेव चालुक्य के साथ पथ्वीराज का युद्ध इसी इच्छिनी के कारण होता है। यद्यपि आबू नरेश सलप परमार ऐतिहासिक व्यक्ति नही है परन्तु पृथ्वीराज के समय म आबू प्रदेश पर पम्मार वश का राज्य था। अत इछिनी आदि नाम कल्पित प्रतीत होते हैं।

६ वहद सस्करण के सवत तो इतिहास से मेल खाते ही नही परन्तु प्रस्तुत प्रति मे निम्नलिखित सवत भी एतिहासिक दष्टि से ठीक नही हैं।

क—स०[1] ११३८ मे पथ्वीराज का राज्याभिषेक।

ख—११४८ में पथ्वीराज भीमदेव चालुक्य युद्ध।

ग—११५१ मे पथ्वीराज का कनौज के लिए प्रस्थान तथा पृथ्वीराज जयचन्द युद्ध।

घ—११५२ धीर पुण्डीर का शहाबुद्दीन गौरी के साथ युद्ध।

यद्यपि डा० गौरी शकर हीराचद आदि द्वारा उपर्युक्त अधिकतर एतिहासिक विप्रतिपत्तिया प्रस्तुत प्रति मे नही मिलती, फिर भी रासो का रचना काल १६वी शताब्दी से पूव अनुमानित नही किया जा सकता। जब से सन् १९३६ म प्रकाशित श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित पुरातन प्रबन्ध सग्रहान्तगत "पथ्वीराज प्रबन्ध" मे कैमास वध सम्बन्धी[2] तीन पद्य प्राच्य अपभ्र श भाषा म पाए गये तब से यह विश्वास

1 एकादस से तीस अठ विक्रम साक आनद।
तिहि रिपु जय पुर हरन कौ, भयौ पृथिराज नरिंद। (२ ७०)

2 इक्कु बाणु पहुवीसु जु पइ, कइवासह मुक्कओ।
उर भितरि खडहडिउ धीर कक्खतरि चुक्कउ।
बीअ करि सधीउ भमइ सूमेसर नदण।
एहु सु गडि दाहिमओ खणइ खुद्दइ सइभरि वणु।
फुड छडि न जाइ इहु लुब्भिउ, वारइ पलकउ खल गुलह।
न जाणउ चद बलद्दिउ, कि न वि छुट्टइ फलह।

प्रस्तुत प्रति में देखो—खड ७ छद १

प्रबन्ध सग्रहान्तर्गत "पृथ्वीराज प्रबन्ध तथा जयचन्द प्रबन्ध का रचना सूरी जी ने सवत् १२९० अनुमानित किया है।

होने लगा कि पृथ्वीराज रासो वास्तविक रूप म चद वरदाई कृत प्राचीन महाकाव्य है । श्री सूरी जी ने भी उक्त ग्रथ की भूमिका (पष्ठ ८-६) में अपना यह मत दिया है कि रासो किसी न किसी रूप मे स० १२६० से पूर्व विद्यमान था । परन्तु इस सग्रह के अन्तगत प्रबन्धो के रचनाकाल तथा रचयिता के विषय मे सन्देह है । अभी तक निश्चित रूप से कोई भी विद्वान इस विषय मे अपना प्रामाणिक मत स्थिर नही कर सका । डा० दशरथ[1] शर्मा ने इस ग्रन्थ का रचनाकाल स० १५२४ अनुमानित किया है । ऐसी स्थिति मे श्री सूरी जी के कथन का कुछ महत्त्व नही रह जाता ।

यद्यपि साहित्यिक राज दरबार मे कोई साहित्यिक समस्या तथा उलझन उपस्थित होने पर एक न्यायाधीश की तरह स्थिर निणय देना न्याय सगत प्रतीत नही होता फिर भी रासो की प्रस्तुत प्रति के अध्ययन से मुझे यह आभास हुआ है कि निम्नलिखित कारणा से रासो की रचना १६ वी शताब्दी के प्रथमाध से पूवतर अनुमानित नही की जा सकती ।

१ "प्रबध चिन्तामणि के रचयिता मेरुतुगाचाय ने उक्त ग्रन्थ के अन्तगत 'पृथ्वीराज चरितम में लिखा है कि तरावडी के द्वितीय युद्ध म शहाबुद्दीन द्वारा पृथ्वीराज के पराजित होने पर उसे दिल्ली मे ही कारावास दण्ड दिया गया और कुछ कालानन्तर वह वही सुलतान गौरी के सिपाहियो द्वारा कतल कर दिया गया । पृथ्वीराज का राज्यकाल तथा उसकी मृत्यु— पृथ्वीराज स० १२३५ वर्षे राज्य चकार स० १२४८ वर्षे मृत '। भी इस ग्रन्थ के अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक बठती है । और इस कथन का डा० ओझा जसे इतिहास वेत्ताओ ने भी सही माना है । अत निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि मेरुतुगाचाय द्वारा वर्णित पृथ्वीराज का मत्यु विषयक वणन यथाथ है । आचाय जी की जन्म तिथि निश्चित रूप से सवत १३६१ है । उन्होने पृथ्वीराज चरितम की रचना सम्भवत १४ वी शताब्दी के अन्त मे अथवा १५ वी के प्रथमाध म की होगी । अत रासो मे वर्णित पृथ्वीराज की मृत्यु विषयक घटना मे

1 देखो—"राजस्थानी" जिल्द ३ भाग २ जनवरी १६४० रासो की घटनाओ क ऐतिहासिक आधार"

2 देखो—प्रबध चिन्तामणि पृष्ठ ११२, श्री जिन विजय सूरी द्वारा सम्पादित तथा सिंघी जैन ग्रथ माला, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित ।

काल्पनिक परिवर्तन इस काल के पर्याप्त समय पश्चात् किया गया प्रतीत होता है।

२ चद वरदाई को हिन्दी साहित्य का आदि महान कवि माना गया है। और कवि ने अपने आप को इतिहास म प्रसिद्धतम व्यक्ति हिन्दु सम्राट् पृथ्वीराज का दरबारी कवि तथा जीवन सखा[1] घोषित किया है। फिर यह एक आश्चय की बात है कि सम्राट अकबर के राज्य-काल से पूव (गग चद छद वणन से पूव) किसी भी साहित्यिक अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति ने चद कवि का जिक्र तक नही किया। पथ्वीराज के प्रमाणिक दरबारी कवि "पथ्वीराज विजय" के रचयिता जयानक ने भी अपनी रचना मे कही 'चद' का नाम नही लिया। १५ शताब्दी मे ग्वालियर के तोमरवशी राजा वीरम के दरबार मे नयचद्र सूरी द्वारा रचित "हम्मीर महाकाव्य मे "पृथ्वीराज का विस्तृत वणन है। पृथ्वीराज-पतन के २५० वष पश्चात पाचवी[2] पीढी मे राणा हम्मीर हुए, अर्थात् पथ्वीराज से हम्मीर तक पाच पीढियो का इस काव्य मे वणन है। इन्ही नयचद्र सूरी द्वारा रचित "रम्भामिजरी" नाटिका मे जयचद नायक है। इन दोना पुस्तका मे पथ्वीराज के जीवनसाथी चद वरदाई का नाम तक नही मिलता। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत प्रति मे राजा वीरम को पृथ्वीराज का एक सामत वर्णित किया गया है —

क—वलिराइ वीरम, सारग गाजी। (८-१४)

ख—सरस्री उर जनम नाम, बीरम रावत्ता। (११-११८)

अत यह कहा जा सकता है कि इस समय तक पृथ्वीराज रासो की रचना नही हुई थी।

३ यह एक ऐतिहासिक सचाई है कि सन् १२९७ (स० १३५४) म अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात नरेश राजा कर्ण-(राजधानी-अनहिलपुर-अनहिलवाडा) को परास्त कर उसकी स्त्री कमला देवी का अपहरण कर लिया था और गुजरात पर अपना अधिकार जमा लिया था। यहा प्रस्तुत

---

1 (क) हम सु साहा वर भट्ट चद, अवतार लीन्ह पृथिराज सत्थ।

(ख) बालप्पन पृथिराज सग, अति मित्त तन कीन। (१९-७२)

2 पृथ्वीराज गोविंदराज (रणथभोर का प्रथम राणा) वालहन देव-वाग् भट्ट जैत्रसिंह-हम्मीर।

प्रति में राजा कणराय जी पथ्वीराज की ओर से पानीपत की दूसरी लडाई मे शहाबुद्दीन गोरी से युद्ध करते हुए दिखाई देते हैं

करनराइ कुँडली ममर रावल वज्जीर।
अनहिलपुर आभरन राजराव ततहि भीर।

अत यह मानना पडेगा कि रासो की रचना अलाउद्दीन खिलजी के राज्य काल के पश्चात हुई।

४ अब्दुल रहमान कृत 'सदेश रासक' १३ वी शताब्दी के प्रथमार्ध की रचना है। इस पुस्तक के योग्य सम्पादक श्री जिन विजय सूरी जी का कथन है हेमचद्र की मत्यु स० १२३० मे हुई। इसके १५ अथवा २० वर्ष पश्चात शहाबुद्दीन गोरी के उत्तरी भारत तथा पजाब पर आक्रमण प्रारम्भ हो चुके थे। उसने अनगपाल, पथ्वीराज तथा जयचन्द आदि राजाओ को परास्त कर उनके राज्य अपने आधीन कर लिए थे। सदेश रासक लगभग इसी समय की रचना है। भाषा विकास की दृष्टि से यह रचना उस समय की है जब कि अपभ्रश भाषा अपना अन्तिम दम तोड रही थी और आधुनिक भाषाए विकास के पथ पर अग्रसर थी। सो यह कृति उस समय की भाषा का उत्कृष्ट तथा सर्वोत्तम उदाहरण है जिस काल मे हम रासो रचना सभावित मानते हैं यथा—

जइ अत्थि परिज्जाओ बहु विह गधड्ढ कुसुम समाओ।
फुल्लइ सुग्गिद भुवणो ता सेस तरुम फुल्लतु ॥ स० रा० प० ५

इसके विपरीत प्रस्तुत प्रति की भाषा उपयुक्त पद्य की तुलना मे सर्वथा नव्यतर प्रतीत होती है —

क—इतना कहत भुअपति चढ्यौ कहहि भले रजपूत सा। ६-१०४
ख—च्यारि राति जगली रह्यौ तह नीद न सुत्तौ। १० ६३।
ग—हलोहल कनवज्ज मज्झि। ६-११३

ऐसी परिस्थिति मे रासो को १२ शताब्दी की रचना मानने मे हमे सकोच होता है। परन्तु इस प्रति म यत्र तत्र प्राकृत तथा अपभ्रश के ऐसे प्राचीन रूप भी बिखर पड हैं जिनसे भ्रम होने लगता है कि सभव है रासो मध्यकालीन कृति हो। किंतु ऐसे शब्दो का प्रयोग कबीर तथा जायसी यहा तक की भूषण कवि की रचनाओ म भी उपलब्ध होता है।

1　देखो—भूमिका (पृष्ठ १२) अब्दुल रहमान कृत सदेश रासक, सम्पादित श्री जिन विजय सूरी, प्रकाशित भारतीय विद्या भवन बम्बई।

५—प्रस्तुत प्रति मे हयनारि[1]=बदूक तथा जबूर[2]=छोटी तोप शब्दो के प्रयोग से ऐसा प्रतीत होता है कि रासो की रचना १६वी (वि स) शताब्दी से पूर्व नही हुई, क्योकि भारत मे सब प्रथम बदूक तथा छोटी तोप का प्रयोग मुगल सम्राट बाबर ने किया था, जबकि उसने सन १५२६ ई० पानीपत की लडाई मे इब्राहीम लोदी को पराजित किया। यह बात सब विदित है कि भारत मे सब से पहले बदूक तथा तोप का निर्माण बाबर ने प्रारम्भ किया था। "मुगलन्नि" शब्द के प्रयोग से भी ऐसा भान होता है कि रासो की रचना भारत मे मुगलो के आगमन के उपरान्त, बाबर के समय मे अथवा इसी समय के लगभग हुई हो।

६—सब से अन्तिम युक्ति जो हम यहा देना चाहते हैं यह है कि यदि चद वरदाई पृथ्वीराज का जीवन सखा तथा उसका दरबारी कवि था तो वह अपने स्वामी तथा सखा के चरित सबधी काव्य मे ऐतिहासिक घटनाओ और तिथियो में असाधारण विषमता उत्पन्न न करता। यह एक साधारण सी बात है कि चन्द वरदाई द्वारा (पृथ्वीराज का समकालीन होते हुए भी) ऐसी असाधारण ऐतिहासिक विषमताए क्योकर सभव हो सकी। इसके विपरीत पृथ्वीराज के समकालीन तथा उसके दरबारी कवि जयानक द्वारा रचित 'पृथ्वीराज विजय" महाकाव्य मे ऐसी कोई ऐतिहासिक विप्रतिपत्ति अथवा विषमता दृष्टिगोचर नही होती। वास्तव मे प्रतीत ऐसा होता है कि चद कवि के हृदय मे सम्राट पृथ्वीराज के समान एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक[4] व्यक्ति बनने की आकाक्षा थी। और यह प्रबल इच्छा उसके हृदय मे हिलोर ले रही थी, जो एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक

---

1 (क) हय ारि सुधारि, करि अवाज उत्त ग। १३—७०
(ख) हट्टनार कुटवार सुनि, करि सावतनि जग। १०—४४

2 बिज्जलि जाव जनूर झलक्किय। १०—२६

3 बाबराउ बघ्घेल हेल, मुगलन्नि हलक्किय।
आवर्तमान सारतन, जमर मेच्छ सम्मर मिलिय। १०—५०

4 प्रथम वैर भंजने मनद, पुनि स्वामि उद्धारह।
लोक वेद कीरति अमर, सुकिय चन्द उद्धार। १६—१०

वीर पुरुष के साथ जुड़ने से ही पूरी हो सकती थी। इसीलिए पृथ्वीराज जैसे प्रसिद्ध नायक के साथ अपना नाम जोडकर उसने अपने को धन्य माना। तभी तो कवि ने गर्व से अभिमान पूर्ण घोषणा की कि —

हम सु साहि वर भट्ट चन्द, अवतार लीन्ह पृथिराज सत्थ।

अत ऐसा अनुमान है कि चन्द बरदाई बाबर समकालीन एक भाट[1] अथवा चारण कवि था। इतिहास का पूर्णरूप से उसे ज्ञान नहीं था। किंवदंतियों द्वारा सुनी सुनाई ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर उसने पृथ्वीराज रासो (लघु सस्करण) की रचना की। उसका एक मात्र ध्येय *अपने काव्य-नायक पृथ्वीराज के शौर्य तेज का उत्कृष्ट रूप में वर्णन करना* था। एतदर्थ उसने रासो में उन्मुक्त रूप से कल्पना का प्रयोग किया। समय की प्रगति के साथ साथ अन्य चारण कवियों द्वारा इसके कलेवर में वृद्धि होती रही। क्योंकि उस युग में रासो चारण कवियों की आजीविका का एक मुख्य साधन था। राजपूती राजदरबारों में इसी के पद्यों के उच्चारण अथवा गायन से उनकी आजीविका चलती थी। परिणामत १८वी शताब्दी के अन्त तक रासो के मध्यम तथा वृहद् रूपान्तर प्रकाश मे आए। प्रस्तुत प्रति के निम्नोक्त पद्य से भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि रासो की रचना १६वी शती के लगभग हुई होगी। इस पद्य को हम प्रक्षिप्त भी नहीं कह सकते, क्योंकि प्रस्तुत प्रति में भाषा का रूप अधिकतर इसी प्रकार का है —

अनगपाल पुच्छहि नृपति, कहहु भट्ट धरि ध्यान।
किहि संवत मवार पति बाधालया सुरतान।
सोरहि स कटि गहिन, विक्रम साक अतीत।
हिन्दोधर मेवारपति, नेइ पग्ग वर जीति। २-६७, ६८

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रासो की प्रस्तुत प्रति में इतिहास तथा कल्पना का सामजस्य है। ऐतिहासिक महाकाव्य में कल्पना तथा इतिहास का मिश्रण होता ही है। प्रस्तुत प्रति में मध्य युगीय प्रथानुसार

---

1 (क) भट्ट कहै। १ ८१
(ख) बरदाइ दुग टुगह सजिय, भट्ट जाति जीह ट्टुनौ। १४ १२

दैवी घटनाओ का समावेश भी है। जैसे —निगमबोध घाट पर एक भारी शिला के नीचे मे दैवी पुरुष वीर भद्र का प्रकट होना, संयोगिता को डकिनी द्वारा पथ्वीराज गारी युद्ध की कथा कहलवाना, कागडा-स्थित जालंधरी देवी के मंदिर मे बदी चदवरदाई का एक दैवी पुरुप से पृथ्वीराज पराजय वृत्तात सुनना। इसी प्रकार काव्य मे वर्णित अन्य दैवी घटनाए भी कवि-कल्पना प्रसूत हैं। इन घटनाओ द्वारा कवि ने मध्यकालीन समाज का धार्मिक तथा सामाजिक वातावरण उपस्थित करने का प्रयत्न किया है।

उपयुक्त ऐतिहासिक विप्रतिपत्तियो की उपस्थिति मे हमे ऐसा विश्वास नही होता कि रासो की रचना १३वी शताब्दी मे हुई हो। १३वी शती मे रचित सदेश रासक की भाषा की तुलना मे प्रस्तुत प्रति की भाषा १३वी शताब्दी की प्रतीत नहीं होती। सम्राट् अकबर के समय तक किसी भी साहित्यकार न अपनी रचनाओ मे चद वरदाई का उल्लेख नही किया। इसके अतिरिक्त "हथनारि" "जबूर" तथा 'मुगलनि" शब्दो का उस युग म प्रचलन नही था। अत प्रतीत ऐसा होता है कि रासो की रचना सम्राट पथ्वीराज के राज्यकाल १३वी शताब्दी के प्रथमार्ध मे नहीं हुई अपितु यह लगभग बाबर समकालीन कृति है।

पचम–अध्याय

साहित्यिक समालोचना

सगबधो महाकाव्यम् तत्रका नायक सुर ।
सद्वशा क्षत्रिया वापि धीरोदात्त गुणान्वित ॥
एकवशोद्भवा भूपा कुलजा वहवोऽपिवा ।
श्रृङ्गार-वीर शान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ।
अगानि सर्वेति रमा सर्वे नाटक मधय ।
इतिहासोद्भव वत्त अयद्वा सज्जनाश्रयम ।
आदौ नमस्त्रियाशीर्वा वम्नु निर्देश एव वा ।
नाति स्वल्पा नाति दीघा मर्गा अष्ठाधिका इह ।
सर्गान्ते भावि सगस्य कथाया सूचन भवत ।
सध्या सूर्येंदु रजनी प्रदोप ध्वान्त वासरा ।
प्रातमध्याह्न मृगया शलतु वनसागरा ।
सभोग विप्रलम्भौ च मुनि स्वग पुराध्वरा ।
रणप्रयाणोपयम मत्र पुनोदयादय ।
वणनीया यथा याग साङ्गो पाङ्गा अमी इह ।
कवेव त्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।

साहित्य दपण म वर्णित महाकाव्य के इस शास्त्रीय लक्षण के अनुमार रासो की प्रस्तुत प्रति उक्त लक्षणो पर सम्भवत पूरी उतरती है। इस प्रति मे १६ सग हैं और प्रत्येक सग म न्यून से न्यून छद सख्या ४६ तथा अधिक से अधिक २०० हैं। उच्च क्षत्रिय वशोद्भव हिन्दु सम्राट अजमेर तथा दिल्ली नरेश पथ्वीराज चौहान ततीय इस काव्य के धीरोदात्त नायक हैं। मन वचन कम से स्वामी-धम का पालन करने वाले अनेक सूर सामत उनके अनुयायी तथा सहायक हैं। उनके प्रतिद्वद्वी हैं — शहाबुद्दीन गौरी, कान्य कुब्जेश्वर जयचद तथा गुजरेश्वर भीम देव चालुक्य प्रतिद्वद्वी। जयचद की कन्या सयोगिता, नायक पथ्वीराज के सौदय तथा शौर्यादि गुणो पर मुग्धा इस काय की नायिका है।

यह वीर-रस प्रधान महाकाव्य है। इस काव्य के १६ खण्डो मे से १५ खण्ड रण-सज्जा, शस्त्रास्त्रा की खनखनाहट, हाथी घोडो की ठेल-पल तथा वीर योद्धाओ को उल्लास पूर्ण हुंकारो से भरपूर हैं। परन्तु प्रकरणानुसार शृ गार रस का निर्वाह भी बडे विशद तथा उत्कृष्ट रूप म हुआ है। युद्ध के तुमुल नाद, बाणो की वर्षा तथा शस्त्रो की कटु खनखनाहट मे उचित शृ गार रस के छीटो ने काव्य मे मनोहारिता और मधुरता उत्पन्न कर दी है। अत यहा वीर तथा शृ गार रसो का अगाङ्गीभाव मे वर्णन हुआ है।

लगभग प्रत्येक खण्ड का अन्त आगामी खण्ड के कथा सूत्र मे सम्बधित है। जसे सप्त खण्ड के अन्तिम छद म कैमास के वध से खिन्न मन पथ्वीराज ने कविचद से प्रछन्न वेष मे कनौज यात्रा की इच्छा प्रकट की है —

"दिप्पावइ पहु पगुरो, जइचद नरेस"। (७-७५) और अष्टम खण्ड में कनोज यात्रा प्रारम्भ हो जाती हैं। प्रकरणानुसार कवि ने प्रात काल, सूर्य, मध्याह्न, उद्यान तथा षट् ऋतु-वर्णन किया है। मृगया महाकाव्य के नायक पथ्वीराज के जीवन का एक अग है।

विप्रलम्भ तथा सभोग शृ गार म से यहा केवल सभोग शृ गार का ही विशद रूप मे चित्रण हुआ है। विप्रलम्भ शृ गार की अभिव्यजना म कवि को सफलता नही मिली। पृथ्वीराज के शौयादि गुणो पर मोहिता सयोगिता न अपने पिता के विरोध करने पर भी पृथ्वीराज को ही वरण करने का निश्चय किया। जयचद ने क्रोधित होकर उसे गगा के किनारे एक महल मे कद कर दिया। इस पर भी वह अपने निश्चय पर अटल रही। इस अवसर पर सयोगिता की विरह-दशा का सुदर चित्रण हो सकता था। परन्तु गगा तट-स्थित महल के कारावास से सयोगिता इतना ही कह सकी —

कै बहि गगहि मचरौं, कै पाणि गहुँ पथिराज। ६-४८

कवि के लिए दूसरा अवसर सभोग शृ गार मग्ना सयोगिता को छोडकर पृथ्वीराज का अन्तिम युद्धाथ प्रस्थान है। परन्तु कवि ने यहा सयोगिता की मर्म व्यथा अथवा विरह दशा का अल्पम भी वणन नही

किया। वस इतना ही हो सका कि डक्निी के मुख से युद्ध मे पथ्वीराज की पराजय का समाचार सुनकर शोक मग्ना सयोगिता ने प्राण त्याग दने का निश्चय किया —

> जनम जानि अन्तर मिलन, जुग्गिनिपुर आवास।
> चरण लग्गि वह्यो मरण, सब परिगहरु पवास ॥१७-१

रासो म प्रयाण, मगया तथा युद्धादि का विशद वणन है। पथ्वीराज ने इच्छिनी के अपहरणाथ गुजर नरश भीमदेव चालुक्य से युद्ध किया (पञ्चम खण्ड), तथा सयोगिता अपहरणाथ कनौज पर चढाई की। यहा युद्धादि प्रयाण आदि सब काय शकुनादि विचार पूवक होते हैं। धीर पु डीर ने जत पम्भ भेदन मे पूव एक सप्ताह दुर्गा की पूजा की भीमदव ने कैमास को मन्त्रो द्वारा अपने वश में किया। १५ व खण्ड म दिल्ली के निगम बोध स्थान पर एक भारी शिला के नीचे से एक देन वीरभद्र का निकलना, अपशकुन दिखाई देने तथा अरिष्ट निवारणाथ भसे आदि का वलिदान दिया जाना आदि दैवी वणन तत्कालीन समाज के धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था के द्योतक हैं। काव्य का शीपक तो नायक-पथ्वीराज के नाम से सम्बधित है ही।

कथा सगठन तथा प्रबन्धात्मकता— मह काव्य का कथानक ऐतिहासिक महापुरुष पथ्वीराज के जीवनचरित्र से सम्बधित है। अत इसे कल्पना मिश्रित प्रबध काव्य कहना उचित होगा, क्योकि कवि को कथानक मे रोचकता उत्पन्न करने के लिए जहा तहा कल्पना का प्रयोग करना पडा है। प्रधानतया कथा के केन्द्र स्थान तीन ही हैं—दिल्ली, कन्नौज, गजनी नायक के प्रतिद्वन्द्वी खलनायक शहाबुद्दीन गौरी भीमदेव चालुक्य तथा जयचन्द हैं। कथानक का सम्बध इन्ही स्थानो तथा व्यक्तियो से है। कवि ने ग्रन्थारम्भ मे (प्रथम खण्ड) परम्परानुसार मगलाचरण किया है। द्वितीय खण्ड मे नायक पृथ्वीराज का जन्म, वशावली तथा दिल्ली-राज्य प्राप्ति वर्णित हैं। यहा अनगपाल तोवर द्वारा पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य देना एक कवि कल्पित घटना है। क्योकि यह घटना पथ्वीराज-जयचन्द मे पारस्परिक वमनस्य उत्पन्न करने के कारण

कथानक की प्रगति मे सहायक सिद्ध हुई है। पृथ्वीराज-जयचन्द संघर्ष यही से प्रारम्भ हो जाता है। यही संघर्ष संयोगिता हरण तथा अनन्तो गत्वा पृथ्वीराज के पतन का कारण बना। तृतीय खण्ड म नायिका-संयोगिता का जन्म, उसका बाल्यकाल, यौवनोन्माद तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा का वर्णन है। चतुर्थ खण्ड म नायक का विरोधी दल-जयचन्द भीमदेव चालुक्य और शहाबुद्दीन गौरी मैदान मे आ उतरते हैं। चतुर्दश खण्ड तक नायक ने अपने प्रतिद्वंद्वी भीमदेव तथा जयचन्द को परास्त कर अपनी लक्ष्य सिद्धि संयोगिता को प्राप्त कर लिया और उसके साथ राज महलो मे विलासादि सुखोपभोग म मग्न रहने लगा। यह कथानक की चरमस्थिति हैं। यहा कवि ने धीर पुंडीर द्वारा "जैत खम्भ भेदन' नामक काल्पनिक घटना से दिल्ली दरबार के सामतो म आपसी फूट उत्पन्न करके पृथ्वीराज का अन्तिम पतन निश्चित कर दिया है। १५वें खण्ड मे दिल्ली दरबार के सामतो मे आपसी फूट तथा पृथ्वीराज की विलास प्रियता की सूचना पाकर शहाबुद्दीन गौरी द्वारा दिल्ली पर चढाई का वर्णन है। दिल्ली म अपशकुन दिखाई देने लगे। पृथ्वीराज ने अपने दलबल सहित इतिहास प्रसिद्ध तराडी के मैदान म शहाबुद्दीन गोरी का मुकाबला किया, जहा वह पराजित हुआ और मारा गया। परन्तु कवि ने इस ऐतिहासिक तथ्य को अपनी प्रबंध-कल्पना शक्ति के द्वारा गजनी मे कैदी तथा "अक्षहीन" पृथ्वीराज के हाथो शब्द वेधी बाण द्वारा खल नायक शहाबुद्दीन की मृत्यु करवा कर नायक की प्रतिष्ठा के रूप म परिणत कर दिया है। नायक पृथ्वीराज की विजय के उपलक्ष्य मे आकाश से देवताओं द्वारा पुष्प वर्षा के साथ साथ महाकाव्य की समाप्ति होती है। कथानक के बीच बीच म प्रसगानुसार पनघट युद्ध, तथा प्रकृत्यादि वर्णन से कथानक हृदयग्राही तथा सरस हो पाया है। इस से काव्य-कथानक मे काव्य सौष्ठव तथा उचित सगठन हो सका है।

परन्तु मार्मिक स्थलो की दृष्टि से, जिनका काव्य मे समावेश वाञ्छनीय है, यह काव्य शुष्क और नीरस है। यत्र तत्र शृङ्गार रस के छींटो तथा वीर रस की उद्भावना के अतिरिक्त कवि ऐसे सरस अवसर उपस्थित नही कर सका जिससे पाठको के हृदय रसोद्रेक से तरंगित हो उठें। यहा तो एक के पश्चात् दूसरी घटना इतिवृत्त मात्र रूप से घटित होती है। हाला कि कवि को ऐसे अवसर प्राप्त हुए, जैसे – संयोगिता की

विरह दशा तथा गजनी मे 'अपहीन' पथ्वीराज की हीन दीन दशा वर्णन से कारुण्य प्रवाह उमड सकता था और संयोगिता के मन मे विशुद्ध प्रेम की गगा उमड सकती थी।

२ चरित्र चित्रण— तुलसी के समान कवि की दृष्टि जीवन और जगत के विविध कार्य कलाप तथा क्षेत्रो पर मानव चरित्र चित्रण पर तथा जीवन और विशेषकर सभ्यता तथा संस्कृति की ओर आकर्षित नही हुई। और न ही आधुनिक उपन्यासो तथा काव्य ग्रन्थो मे वर्णित पात्रो का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही यहा मिलता है। यहा पात्रो के चरित्र म किसी प्रकार का उतार चढाव तथा निजी व्यक्तित्व नही झलकता। सब एक ही प्रकार के मौनव्रती वर्गगत पात्र हैं, और ये कवि के हाथ म कठपुतली से प्रतीत होते हैं। कवि की इच्छानुसार सब पात्रो का काम शौर्य प्रदर्शन तथा स्वामिभक्ति है। वास्तव मे महाकवि चन्द का मुख्य उद्देश्य अपने काव्य नायक पथ्वीराज के शौर्य प्रतापादि वर्णन से है। काव्य मे वर्णित समस्त घटनाओ का सबन्ध जिस किसी भी रूप मे पथ्वीराज से सम्बन्धित है। इसका कारण एक और भी है कि मध्ययुगीय कथा प्रबन्धो म चमत्कार पूर्ण घटनाओ, पात्रो की व्यक्तिगत विशेषताओ तथा कथानक की घटनाओ म उतार चढाव का रिवाज नही था। उस समय तो उच्च कोटि के काव्य की विशेषता घटनाओ और वस्तुवर्णन कुशलता पर ही आधारित थी। सो इन दोनो विशेषताओ का निर्वाह रासो की प्रस्तुत प्रति म पूर्ण रूप से हुआ है। रासो की प्रस्तुत प्रति की उक्त विशेषताओ का दिग्दर्शन सोदाहरण उपस्थित हैं —

वस्तु वर्णन—प्रकृति की पृष्ठ भूमि म प्रथम खण्डगत कृष्ण लीला वर्णन मे कृष्ण गोपियो के रास नृत्यादि का अति सरस वर्णन मिलता है। चन्द्रमा की निर्मल छिटकती हुई चादनी म मदङ्गादि वाद्य वृन्दो की ताल पर कृष्ण तथा गोपियो के मध्य भवरा भवरी की रस रीति से नत्य हो रहा है। व्रजवनिता वल्लरियो पर कृष्ण-भवरा चक्कर लगा रहा हैं उधर प्रत्येक गोपिका भी कृष्ण को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए एडी चोटी का जोर लगा रही हैं। नूपुरो की झकार है। देवतागण इस नृत्य से प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा कर रहे हैं

ततथे ततथे ततथे सुन्य। तत थुग मृदङ्ग धुनि द्दरय।
खड ८, छ ८१-८३

इमी प्रकार कृष्ण लीलान्तगत दान लीला वणन अति सरस तथा शृङ्गारिक छीटो से आसिक्त है।

४ कन्नौज यज्ञ वर्णन- कन्नौज मे यज्ञ के लिये धूमधाम से तैयारिया हो रही हैं। नगाडे की ध्वनि के साथ ही समस्त नगर सजने लगा। नगर भवनो तथा राज प्रासादो पर सफेदिया हो रही हैं। सब द्वारो पर वदनवारे लटक रही हैं। उधर यज्ञ मण्टप की सजावट के लिए सुनार सुवर्णाभूषण घड रहे हैं। यज्ञ मण्डप कैलाश पवतवत् सुशोभित है और मण्डप के मीनारों पर लगे स्वण कलश अधकार का परास्त कर रहे हैं—

सुनि सद्दनि बधि वदनवार।
कट्टहिं सुहेम गृहि गृहि सुनार।
।
धवलेह धम्म त्वेर सुवीय।
तम हरहिं कलस कल वीवलीय।
सज्जिया बभ कैलास वीय। ख० ६ छ० १९-२०

कन्नौज के समीप गगा तट पर तथा नगर के बाहर हाथी घोड़े, ब्राह्मण, तपस्वी तथा स्नान करते हुए स्त्री पुरुषो का आखो देखा बडा सुन्दर वणन उत्प्रेक्षालकार से किया है —

कहूँ मभरेनाथ गट्ठ गयदा,
मनो दिप्पियै रूब ऐराव इदा

कहूँ विप्रते उट्ठे हि प्रात चल्यैं।
मनो देवता स्वग ते मग्ग भूलै। ख० ८ छद ४८

कही तपस्वी ध्यान मग्न बैठे हैं—

कहूँ तापसा तापते ध्यान लग्गे।
तिनैं देपते रुप मसार भग्गे। (पाप) ख० ८ छ० ५०

इसके अतिरिक्त गगा स्नान का महत्व तथा गगा की ब्रह्म कमण्डल स उत्पत्ति का वणन अति मनोहारी है।

गगा के किनारे अपने सामन्तो सहित पृथ्वीराज का पडाव हो जाता है। चन्द कवि पूछते पूछते जयचन्द दरबार की ओर जा रहा है। मार्ग मे कन्नौज नगरी का आँखो देखा वर्णन कवि ने किया है। नगर मे आकाश चुम्बी भवन हैं, हाट (बाजार) विविध मोती माणिक्य आदि अमूल्य विक्रेय वस्तुओ से सुसज्जित हैं। दानव समान भटगण इधर उधर घूम रहे हैं और कही हय गय जूथो' की ठल पल है। इसके अतिरिक्त कवि की रसिक दृष्टि वेश्या हाटक पर भी जा अटकती है। यहा बाके छैल छबीलो का जमघट है, परन्तु बिना पैसे के यहा काम नही चल सकता —

जिके छैल सघट्ट वेशा सुरत्ते।
तिके द्रव्य के हीन हीनति गत्ते॥

इनकी अट्टालिकाओ मे ग्राहको को आकर्षित करने के लिये रात भर कोकिल कठो से मधुर राग लहरिया थिरकती रहती हैं। इसके अतिरिक्त कवि ने यहा वेश्याओ के वस्त्र, आभूषण बनाव शृगार तथा सुगन्धित पर्यंक आदि का भी आखो देखा वर्णन किया है। देखिये एक वेश्या की अगुली मुद्रिका का वर्णन भ्रान्तिमान अलकार से —

दु अगुली नारि निरप्पहि हीर।
मनौ फन विवहि चप कीर। स० ८ छ० १०१

राजदरबार के द्वार पर पहुँच कर कवि ने दरबारी भाट दसौधी के प्रश्न करने पर जयचन्द के दरबार तथा उसके यश प्रताप का अदृष्ट वर्णन बडे सुन्दर ढग से किया है। लुप्तामा की एक झलक देखे —

मगल बुध गुरु शुक्र शनि सकल सूर उददिट्ठ।
आतप ऊ ध्रुवत तमं सुभ ज चद बइट्ठ॥

इसी प्रकार जैचन्द के सम्मुख उपस्थित होकर कवि ने उसके शौर्य पराक्रम का वर्णन बडी ओजस्विनी भाषा मे किया है। जयचन्द ने क्षत्रियो के छत्तीस वशो को स्ववश किया हुआ है परन्तु—

बस छत्तीस आवेह कार।
एक चाहुवान पथिराज टार। स० ९ छ० ३७

क्यो न हो, चन्द अपने स्वामी तथा सखा पृथ्वीराज की हेठी कैसे होने दे। उसी का यश प्रताप वर्णन करने के लिए तो प्रस्तुत काव्य की रचना की गई है।

जयचन्द की नृत्यशाला मे चद रात्रि के समय नृत्यादि देखने जाता है तो उस का वणन कितना सुन्दर तथा सरस है। रगमच मृदुल मृदग ध्वनि से गु जरित है और शुद्ध छदो द्वारा राग अलापे जा रहे है। समस्त रगशाला अगरवत्ति आदि सुगधित द्रव्यो से सुवासित हो रही है —

मदु मृदग धुनि सचरिग, अलि अलाप सुध छद।

जलन दीप दिय अगर रस फिरि घनसार तमोर। ख० ६ छ० ७६

तबले पर थाप पड रही है और सात स्वरो का अलाप हो रहा है —

ततथेई तनथेई ततथे सुमडिय।

तत थु ग थु ग थु ग राग काम मडिय।

सर गि म प्पि ध नि धा धनु धनि तिर प्पिय। ख ६ छ ८२

और नूपुरो की झकार से रग शाला गु जरित हैं—

"रणकि झमि नूपुर बुलति तोरन भन। ख ६ छ ८३

ऐसी सु दर रमणियो का लय ताल स्वरादि युक्त नत्य देखने से दर्शको के लिये ब्रह्म मुक्ति के द्वार खुले हैं —

निरत्तते निरप्पि जानि बभ मुत्ति वाहिनी। छ ६ छ ८५

यहा यद्यपि कवि ने किसी अलकार तथा व्यजना आदि का आश्रय नहीं लिया फिर भी वाद्य-वृ दो तथा नूपुरो की झकार के साथ भाषा किस प्रकार थिरकती सी प्रतीत होती है।

युद्ध वर्णन पृथ्वीराज रासो वीर रस प्रधान काव्य है प्रस्तुत प्रति के १६ खण्डो म से १५ खण्डो मे जिस किसी भी रूप मे युद्धाथ तैयारी अथवा युद्ध का विशद वणन है। विशेषता इस मे यह है कि जायसी के पद्मावत की तरह काल्पनिक अथवा परम्परागत युद्ध वणन नही हैं। यहा तो कवि सदा रणागण मे अपने स्वामी के अग-सग रहता है। प्रत्येक युद्ध मे कुछ न कुछ नवीनता है। अलकारिक अतिशयोक्ति नही, स्वाभाविक आखो देखा सा वणन है। कुछ उदाहरण देखिये —

सयोगिता हरण प्रसग मे पगराज जयचद की सेना पृथ्वीराज से युद्ध करने के लिये उमडी चली आ रही है। इतनी भारी सेना को देख कर उद्र भी काप उठा और अस्सी लाख घोडो के भार मे शेष नाग व्याकुल हो गया—

"पल्लाग्यो जयचन्द मरद सुरपति आकप्यो।
असिय लष्प तुष्पार भार फणपति फण सक्यो॥ स० ९ छं० १०७

वर्णानुप्रास द्वारा—देखिये हाथी घोडो की ठेन पल से वराह कूर्म शेषनाग और नादिया बल सब पग सेना के बोझ से तिलमिला रहे है —

हय गय दल धसमसहिं, सेसु सलमलहि सलक्कहिं।
महि कूरम ग्रहि बराह मेर, भर भार हलक्कहिं। ९ ६०८

और हाफते हुए घोडो की मुख लार (झाग) से पृथ्वी पर कीचड हो गया है —

"हय लार वहत भीजत थल पक चिहुट्टहिं चक्कवें।

जिस जयचन्द की फौज को फसी देख कर समस्त पृथ्वी तथा इन्द्रादि देवता काप रहे हैं, उस पगराज की सेना का मुकाबला पृथ्वीराज के बिना कौन करे। क्यो न हो, चन्द कवि को पृथ्वीराज के अतिरिक्त ससार मे और स्वर्ग मे कोई अधिक बलवान् क्यो नजर आए —

पगुरो चढचो कविचन्द कहि, बिनु पथिराज हि को सहै। ९-११६

पथ्वीराज की सेना के भार से तो पथ्वी समुद्र पर्वतादि सब डगमगा रहे हैं और प्रलय सी मच गई है —

धरनि धसमसहि हयनि भर।
सर समुद्द परभरहिं डटह दल ढाल करक्कहिं।
कमट पीठि कलमलहिं पुहुमि से प्रलौ पलट्टहिं। ९-११७

जयचन्द और पथ्वीराज को समरागरण मे उपस्थित देख कवि ने चन्द्र सूर्य से उपमा दी —

तहा अप्पुव्व कव्वि चन्द पिप्यौ ? तरनि द्विजराज सम तेज दिप्यौ। ९-१२६

पथ्वीराज की क्रोधित सेना पग सेना पर लका पर वानरों की तरह टूट पडी —

उत्पर रोस पथिराज राज। मनौ बनरा लक लागेहिं काज। १०-९

घमासान युद्ध के कारण आसमुद्र धूलि उड रही है और धूलि से उठे हुए अधकार के कारण कुछ भी तो नजर नही आता —

"तहा उट्ठिय रेण आया समुद।
..
छन छिति भार दीस न पत्ता। १०-७

क्रोधित उभय पक्षीय योद्धागण आघात प्रतिघातो को ऐसे सहन कर रहे हैं—जसे शिव ने गगा के आघात को सहन किया।

मनौ भि लवै सीस त्रिनैन गगा। १०-८

सेना का ऊपर को उठता हुआ घटाटोप रग विरगे वादलो की तरह उमड रहा है—

मनौ तहा टोप टकार दीसै उतगा।
मानौ बद्दलै पति बधी सुरगा॥ १०-९

मदोन्मत हाथी सेना के आगे हैं। ये सूँडो से प्रहार भी करते हैं—

दिप्पिय मत मयमत मता। उग्रह रग अग्गे ढ्ररता।
सू डे प्रहारे। सार समूह धावै करारे। १०-१८

हाथियो की झपट से स्वग पाताल भी कापते हैं—

सीस सिंदूर गज झप झपै। देषि सुरलोक पायाल कपै। १०-२२

युद्ध में तलवार, भाले तथा अन्य शस्त्रास्त्र प्रहारो के अतिरिक्त त ण वर्षा इतनी हुई कि सूय देवता भी नजर नही आते —

"वहै बान कम्मान दिसै न भान। १०-५१

योद्धागण शवो पर भागते हुए युद्ध कर रहे हैं—

"भर उप्पर भर परहि, धरह उप्परि धावतनि। ११-१

पथ्वीराज के क्रोध की भी एक झलक देखिए—

'तव नरिंद जगली कोह, कट्ढचो मुबक असि। ११-४

और फिर क्या था शत्रु के होश हवाश उड गए।

अरि धम्मिल धु धग्गि, हुअ रन मैद्धिति ससि"।

युद्ध के नगाडो की ध्वनि से कायर तथा हाथी चौंकते हैं तथा योद्धागण एक दूसरे का वार बचा कर वार कर रहे हैं—

धम्मकिय धोम निसान निनद्द।
चमक्किय कातर सिंधु रमद्द।
घमडित सिंघु रस पुर रेल।
गहम्मह वचि झम्यौ सव सेन। ११-१०

युद्ध मे योद्धाओ के कटे हुए सिर भी आवाजें कसते हैं और रुण्ड मार धाड करने हुए नाचते हैं—

हक्ति सिर विकध, नचित धर कवध । ११-६४

"दस तीनि क्वध उठत लर । ११-४६

युद्ध मे लडते हुए भटो की तलवार-ढाल, नेजे और साग की खडखडाहट के साथ राजपूत वीरो की मु छे भी कसे फर फर कर रही हैं—

भिरैं साग सू साग, नेज नेजनि फग्क्कै ।
ढाल ढाल ढहढहै गहै मुछनि फररक्कैं । १६-८१

१६, १७, तथा १८वें खडा मे पृथ्वीराज-शहाबुद्दीन की सेना म इतिहास प्रसिद्ध पानीपत की लडाई का वणन बडा विस्तृत तथा सजीव है। यहा अनेक प्रकार की व्यूह रचना के साथ यवन सेना का वणन हाथी घोडो की ठेल पेल तथा राजपूती सेना का शौय पराक्रम का वणन है। विस्तार भय से उसका दिग्दशन करना कठिन है। फिर भी एक दो उदाहरण देखिए—

दोनो सेनाओ मे घमासान युद्ध हो रहा है। शस्त्रास्त्रो के प्रहारो से सिर कट कट कर पृथ्वी पर दौड रहे है और स्वग मे अप्सराए इच्छानुसार वर चुन रही हैं (युद्ध मे वीर गति मिलने स योद्धागण सीधे स्वग म पहुँचते हैं)—

दुहँ हक्कहु छक्क, सीस टुट्टै धर धावहिं ।
आनदित अपच्छरा, अप्प इच्छावर पावहिं । १६ २६

तलवार आग उगल रही हैं—

पग्ग झार झार" १६ ३२

युद्ध मे भारी शास्त्रो की खनखनाहट तथा गुरजो की खडखडाहट से किस तरह फटाफट सिर फूट रहे हैं जिस से पथ्वी खून के फव्वारो से तर हो गई और घोडे भी खून से लथ पथ है—

पथु आउध फुट्टहि गुरज्ज, वज्जिय गुरज्ज पर ।
जनु पपान बु द रु द च द लग्गिय दुज्जन धन ।
टुट्टि टटर सिर श्रोण छिछ उट्ठिय भुमि वुट्ठिय ।
तुरग रत्त मन मत्त सहस आउध ले उट्ठिय । १०-२

तलवारो की मार धाड से लाशो के ढेर लग गए और विना सवार के हाथी घोडे युद्ध-मदान मे इधर उधर घूम रहे हैं—

असिज असिज असिज जयय ।

लुत्थि लुत्थि उलत्थि पलत्थि पय ।
गज वाजि फिरक्कि फिरै हथिय । १७-३

प्रकृति वर्णन—चन्द कवि का प्रकृति के प्रति विशेष आकर्षण नही है। कारण इसका यही है कि उसकी दृष्टि काव्य नामक पृथ्वीराज के विलास, वैभव, अद्भुत वीरता तथा यश-प्रताप वर्णन तक ही सीमित है। चन्द ने प्रकृति को आलम्बन रूप मे ग्रहण नही किया। यथा तथ्य रूप से वस्तु परिगणन-शैली की प्रधानता है। कवि का प्रकृति के प्रति कोई रागात्मक सम्बध नही हैं और न ही सूक्ष्म निरीक्षण की पैनी दृष्टि ही है। हा शृगारिक प्रकरणो मे प्रकृति का उद्दीपन रूप मे अवश्य ग्रहण हुआ है। रूप चित्रण के अवसर पर उपमान और उपमेय के रूप मे भी कवि ने प्रकृति का उपयोग किया है। षट्-ऋतु वर्णन कामोद्दीपन की पृष्ठ भूमिका है। यहा प्रकृति मे भावो को तीव्रता प्रदान करने की, तथा मानव भावनाओ को प्रभावित करने की शक्ति दृष्टिगोचर नही होती। कुछ उदाहरण देखिए —

कृष्ण-लीला वर्णन प्रसग मे व्रज के मधुवन का वर्णन करते हुये, कवि ने अनेक पक्षी तथा वृक्षादिको के नाम गिनाए हैं। विविध मालती तथा केतकी आदि लताए पुष्पो से विकसित हैं। दाडिम खजूर, सहकार आदि वृक्ष फलो से लदे हुए हैं। इन वृक्षो पर मोर, वानर, तोते, मना आदि पक्षी गण चहचहाते हुए कल्लोलें कर रहे हैं —

कह विज्ज विज्जार पीयूषभार।
लुठे भुम्मि भुम्मे मनो हम नार।
कह दाडिमी सुव चचानि चपै।
मनौ लाल माणिक्क पेराज थप्पै। १-१४०

कुछ ऐसा ही प्रकृति वर्णन धनुष भग यज्ञ प्रसग मे नगर वाटिका वर्णन मे हुआ है। जायसी के पद्मावत मे भी ऐसी परिगणन शैली है। ऐसे प्रकृति-वर्णन प्रसग मे कवि ने प्रकृति-सौन्दर्य से मानव मन पर जो हर्ष उल्लासादि भाव जागृत होते हैं उन का वर्णन नही किया। हा, कामोद्दीप्ति के लिए कृष्ण-गोपियो की शृगारिक उछल कूद का प्रतिबिंब प्रकृति के रूप मे उल्लसित होता है। ऐसे स्थलो मे उत्प्रेक्षालकार की अनोखी उद्भावनाए भी कवि ने की हैं। सयोगिता हरण के पश्चात् त्रयोदश खण्ड मे शृगारिक

पृष्ठ भूमि के रूप मे षट ऋतु वर्णन सुन्दर तथा मनोहारी है। एक ऋतु का नमूना देखिए—

रिम झिम करती वर्षा ऋतु मे सयोगिता अपनी सखियो के साथ राजमहल के उद्यान मे उमडते हुए सावन के बादलो की छाया तले गीत ध्वनि के साथ साथ झूलना झूल रही है —

जल बुट्टि उट्ठि समूह वल्लिय सुथम श्रावन आवन।
हिंदोल लोलति चाल सपि सुर, ग्राम सुख सुर गावन। १३-२५

पुष्प रस से सुगधित रग बिरगे महीन (चीरा) दुपट्टे मे सयोगिता तथा उसकी सहेलियो के सुप्रसाधित केश पाश (जूडा) तथा चन्द्र मुख किस प्रकार झलक रहे हैं —

कुसुमत चीर गभीर गधति, मद बुद सुहावन।
ढरकत बेनिय बद्धए निय, चद सेनिय आनन। १३-२६

ऐसी रग रगीली वर्षा ऋतु मे बादल क्या गरजते हैं मानो कामदेव सब दिशाओ मे अपनी शक्ति का डका बजा रहा हो —

"मनौ निसान दिसाननि, आनि अनग आन दिय' १३-३०

पृथ्वी हरित है सर्वत्र लताद्रुम लहलहा रहे हैं, परन्तु जब तक मोर दादुरो की कूक और टर टर सुनाई न दे तो वर्षा ऋतु शोभित नही होती—

"नद रोर दद्दुर मोर सद्धुर, बनसि वन वन बद्दय"। १३ ३१

इसी प्रकार प्रत्येक ऋतु का उल्लासमय वर्णन के पश्चात पृथ्वीराज सयोगिता रति क्रीडा का प्रारम्भ होता है

शरद ऋतु मे प्रकृति के उपमान उपमेय के माध्यम से पृथ्वीराज-सयोगिता की काम क्रीडा का वर्णन रूपकातिशयोक्ति अलकार द्वारा एक झलक देखिए—

असि सरद सुभगति राज मन्नित सुमन काम उमद्दय।
नव नलिन अलि मिलि अलि ति अलि मिलि, मिलित अलि व्रत मडिय। १३ ३३

साथ मे अनुप्रासालकार की छटा भी देखने योग्य है।

७ रूप चित्रण—युद्ध सम्बन्धी शस्त्रास्त्रो की खनखनाहट तथा बाणो की वर्षा मे भी कवि की रसिक प्रवृत्ति म श्रृङ्गारिक भावनाओ मे ओत प्रोत हृदयग्राही अद्भुत रूप चित्रण किया है —

यौवनावस्था को प्राप्त होती हुई (वय सधि) सयोगिता की सखियो

के साथ उछल कूद यौवनोल्लास, लज्जा तथा उसकी क्रीडाओ का एक उदाहरण उत्प्रेक्षालकार से देखिए—

शुभ सरल वार वलया सुथार। अकुरे मनहुँ मनमत्थ जोर। ६-२६

सयोगिता के घु घराले केश मानो कामदेव के अकुर हैं। उसके अधर, कोमल, सुगन्धित तथा अरुण किसलय समान हैं, भाल पर मजरी तिलक सुशोभित हैं—

अधरत्त पल्लव सुवाम। मजरिय तिलकु मजरिय पास॥ ६-३१

सयोगिता के यौवनोद्गम के साथ प्रकृति भी अपने पूर्ण यौवन पर है। फल पुष्पो से लदे वृक्ष कामदेव की सेना के हाथिया की तरह झूल रहे हैं—

तरु भरहि फूल्ल इह रत्त नील।
हलि चलहि मनहुँ मनमत्थ पील॥ ६-३३

कवि ने अपनी आराध्या देवी दुर्गा का रूप चित्रण रासो मे कई स्थानो पर किया है। परन्तु यहा भी कवि अपनी शृ गारिक भावनाओ को दबा नही सका। सम्भव है यहा कवि कालिदास के कुमार सम्भव मे वर्णित सती पार्वती के शृङ्गारिक रूप चित्रण से प्रभावित हो। देखिए शक्तिमती दुर्गा के कानो मे मोतियो के कर्ण कुण्डल मानो कामदेव की रथ के दो पहिए हो -

'श्रवन्न तट्ट पिक्कए, अनग रत्थ चक्कए"। ७ २२

और चन्द्र मुख पर बिखरे हुए काले केश सर्प हैं —

"क इन्द केस मुक्करे, उरग्गवास विट्ठरे"। ७-२७

और सुशोभित देवी का रूप लावण्य कामदेव का कूप है (सम्भव है कामी जनो के डूबने के लिए)

"सुसोभितानि रूपये, अनगजानि कूपये। (७-३०)

कन्नौज के समीप गगा तट पर कुछ पनिहारिनें जल भरने के लिए आई हैं। अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षालकार द्वारा कवि ने इनके रूप सौंदर्य का अद्भुत चित्र खीचा है —

कटित्त सोभ सेपरी, कन्यौन जानि केसरी।
अनेक छवि छत्तिया, कहत चद रत्तिया।

दुराइ कुच्च उच्चरे, मनौ अनग ही भरे।
रत हार सोहए, विचित्त चित्त मोहए। ८७१

माना कि कटि तो जगल मे रहने वाले सिंहलक्खवत है, परन्तु कुचो का उभार तो देखिए, ये न कुचकुम्भ हैं और न इनमे कठोरता है। ये तो मानो कामदेव के रस भरे रसगुल्ले हैं। और इन कुचो पर मोतियो के हार उछल रहे हैं फिर दर्शकों के चित्त मोहित क्यो न हो ?

इसी प्रकरण मे व्यतिरेकालकार द्वारा रूप चित्र की एक छटा और देखिए —

अबद्ध ऊच भौह ही चलति ऊँह सौह ही।
लिलाट आड लग्गए सरद् चद लज्जए। (८७२)

आड (तिलक) से सुशोभित मुख शरद ऋतु के चद्रमा को लज्जित करता है। ये तो केवल कन्नौज की पनिहारियां ही हैं। राज-प्रासाद मे रहने वाली राजकुमारियां तथा राज महिषियो की सुन्दरता न जाने कैसी होगी ? इनको देखने मात्र से ही दर्शक गण कामदेव की तरगो मे तरगित होने लगते हैं —

रव भुव देपि अनरेपि दग्यौ।
मनौ काम करवाय उडि आपु लग्यौ। (८७९)

ऐसी रमणियो के उतु ग नितम्बो से हाथियो को भी ईर्ष्या होती है और हैरानी की बात तो यह है कि नितबो के ऊपर कटि प्रदेश— गयद रिप्पु" है, अर्थात कटि सिंह लक्खवत है —

नितव उतग जरेवे गयद। मधे रिपु पीन रप्पी है गयद।

यहा रूपकातिशयोक्ति (भेदप्यभेद) द्वारा कितनी रोमाचकारी रूप सौंदय की भावना उपस्थित की गई है।

रस निरूपण— कवि की निम्नलिखित उक्ति —

रासौ रासभ नव रस सरस, कविचद किय अमिय सम।
शृङ्गार वीर करुण बिभच्छ भय अदभुत हसत सम।

के अनुसार रासो में शृ गार वीरादि रसो का वर्णन हुआ है। वैसे तो चद कवि के केन्द्र बिन्दु दो ही रस हैं -वीर और शृङ्गार। अन्य रसो का चित्रण बहुत ही गौण रूप मे किया गया है। काव्य मे वीर रस की प्रधानता होते हुए भी शृङ्गार रस के रग बिरगे छीटे कम नहीं हैं।

९ वीर रस—का बहुत सा दिग्दर्शन युद्ध वर्णन मे हो चुका है। विस्तार भय से एक ही उदाहरण पर्याप्त होगा।

पृथ्वीराज सयोगिता के साथ विलास मे इतना आसक्त है कि उसे अपने राज्य की कोई सुध बुध नही। राज पुरोहित गुरुराम और चद कवि मन्नरि नरेश की इस विलासपूर्ण आसक्ति से चिंतित हो उठे। उधर शहाबुद्दीन, पृथ्वीराज की राज्य के प्रति इस उदासीनता से लाभ उठाकर युद्ध के नगाड़े बजता हुआ दिल्ली की ओर बढ रहा है। चन्द ने निम्न-लिखित पद अपने स्वामी को सचेत करने के लिए दासी के द्वारा अन्त पुर मे भेजा—

"गोरीय रत्तौ तुव धरनि तू गोरी अनुरत्त"। १४ ३२

(शहाबुद्दीन गौरी तुम्हारे राज्य पर अनुरक्त है और तुम गोरी—सयोगिता के प्रेम मे आसक्त हो)

शत्रु शहाबुद्दीन का नाम सुनते ही पृथ्वीराज क्रोध से भडक उठे। और सयोगिता का ख्याल छोड कर युद्ध की तैयारिया करने लगे —

सुनि कग्गद कुग्गौ सुकर, धर रप्पै गुरु भट्ट।
तमकि तून सिंगिनि सुकर, जिमि बदल्यौ रस नट्ट। १४-४३

शृङ्गार से वीर रस परिवर्तन का कितना सुदर उदाहरण है।

० शृगार रस—रासो की प्रस्तुत प्रति म मुख्यतया सभोग शृगार का ही वर्णन है, विप्रलम्भ शृङ्गार यहा दृष्टिगोचर नही हुआ।

रति क्रीडा आरम्भ होने मे पूर्व सयोगिता के षोडश शृङ्गार की एक झलक देखें

सुरेप कज्जल दुन, धनुक्क सगुन मन।
सनासिका समुत्तिय, तमोर मुप दुत्तिय।

सुकट्टि मेषला भर, मरोह नूपुर जन।
सताह हस सावक, तलेन रत्त जावक।
सबीर चातुरी रस, शृङ्गार मडि षोडश।
सुगध गोय चिहुए, अभूपनन्ति भूपए ॥१२-१८-५

अब रत्यारम्भ मे सयोगिता की स्त्री स्वभाव लज्जा देखिए -
लज्जा मान कटाच्छ लोरन कला, अल्पम्नया जल्पन।

रत्यारम्भ भयाइ पिम्म सरसा, गेहस्स बुध्याइनो।
धीर जे इत्य माय चित्त हरण, गुह्यस्थल शोभन।
शील नीर सनात नित्य तन, सा दून आभूषण ॥१३-१६

और पृथ्वीराज-भवरा सयोगित-मजरी का रसास्वादन करने लग जाता हैं—

रस घुटिय लुट्टिय मयन, दुट्टि नत जरि जाइ।
भर भगत कच्छह सुमी, अलि-भरि मजरियाह ॥१३-१८

और भवरा भवरी हर समय रस-सरोवर मे डूबे रहते है—

अलि अलि एक्त मिलि, रस सरवर सयोग।
ते कवि चिन्निय वर सरस, पट्ट प्रगटित रति भोग ॥१३-१६

शिशिर ऋतु मे उत्तेजक घनसार कस्तूरी आदि मिश्रित सुवासित सुरा का प्रयोग भी होता है। इससे रति क्रीडा मे लज्जा "भज्जित" हो जाती है और शरीर मे एक प्रकार की कपकपी उत्पन्न होने से बोला भी नही जा सकता —

घनसार मगम्मद पान किय,
छिन भज्जित लज्जित लोचनय,
तन कपत जपत मोचनय, १३-६३
तन कपत जम्पत मोचनय। १३-६३

रति क्रीडा मे सयोगिता के गले का हार टूट गया। मोती श्रम बूदो की तरह उसके वक्षस्थल पर लुढक रहे हैं—

रति विछुट्टित पति चग। श्रम बुदिनि मुत्ति भर उरन ॥

और साथ ही रति प्रसग म कटि मेखला की क्षुद्र घटिकाए भी भनभना रही हैं —

कटि मण्डल घट रवन्ति रव, सुर सज मजीर अमत श्रवैं,
रति उज्ज अमोज तरग भरी। हिमवत रीति रति राज करी ॥१३-६६

शीत ऋतु की समाप्ति पर वसन्तागमन के साथ साथ भवरा-भवरी (पृथ्वीराज-सयोगिता) के मन मे आनन्द छा गया और सहकार वक्ष पर कल कठी कोयल की कुहू २ के साथ ही अन्त पुर (सुधाम) मे भी काम क्रीडा (धमारि) का उधम मचने लगा।—

पव भगति सीत सुगध सुमद। लगे भमरी तन मन्न अनन्द।

जगि जगि सवनि लता भई दार= (विकसित)
मुनि कन्नि कठोय कठ सहार। कुहु कुहू काम सुधाम धमारि ॥१३–१०३

और भवरा सायकाल होते ही नलिनी रूप अलिनी-सयोगिता का रसास्वादन करने के लिये नलिनी मे जा बैठा –

उदे नलिनि अलिनि रद मझ।
मधुव्रत मद्धि वसौ जिमि सझ॥ १३–१०५

और प्रात काल होने पर भवरा नलिनी का सग विवश होकर छोडता है –

तज्यौ तन कत दसत प्रभात। १३–११७

सयोगिता के पीन नितबो पर लटकती हुई मेषला, काम देव के वाणो को लटकाने के लिये तूणीर का काम दे रही है—

रस नेव रज नितबिनी, कुसुमेष एप विलबिनी। १४–२१

और फिर उराजो के भार से पतली कमरिया लचकती जा रही है, अत स्थूल नितव कुच कुम्भो के भार को सहन करने के लिये मानो खम्भ लगे हुए हो—

उर भार मद्धि विभजन, दियय उरोज जु थम्भन। १४–२१

ऐसे कुच-कमलो को जगली, राव (पृथ्वीराज) स्पर्श करता है तो कलिकाल के दोष (पापा) मे मुक्ति मिल जाती है—

कुच कज परसत जगली मुप मोप दोप कलक्कली। १४–२३

इस के अतिरिक्त रासो मे करुण, वीभत्स, अद्भुत तथा भयानक रस का चित्रण भी कवि ने यत्र तत्र किया है विस्तार भय से यहा उन सब का वर्णन कठिन है।

११ अलकार–"अलकरोतीति अलकार" अलकार शब्द की इस व्युत्पत्ति के अनुसार अलकार काव्य सौन्दय की वृद्धि के साधन हैं न कि साध्य। अलकारो की अधिक ठूस-ठास से काव्य सौन्दय मे चमत्कार की अपेक्षा भाव व्यजना मे क्लिष्टता उपस्थित हो जाती हैं। अलकार काव्य के लिये है न कि काव्य अलकारो के लिये। महा कवि चद ने रासो मे अलकारो का प्रयोग स्वभाविक रूप से किया हैं। शब्दालकारो मे कवि का झुकाव अनुप्रास तथा यमक की ओर अधिक है और अर्थालकारो म सादृश्यमूलक

अलकारो की ओर, और वहा भी उत्प्रेक्षा उपमा आदि का अधिक प्रयोग मिलता है। कुछ उदाहरण देखिए—

(१) शब्दानुप्रास—

मधु रिपु मधु रितु मधुर सुष, मधु सगत कति गोप।
मधु रति मधुपुर महल सुष, मधुरित नोनन ओप। १—१४६

(२) वर्णानुप्रास— झर झ्झर सेन झकिय सार।

धर प्पर लुत्थिय ढरे घन धार॥ ११—१६

अयच्च—नद रोर ददुर मोर सदधुर वनसि वनवन वद्दय। १३ ३०

(३ यमक— गोरीय रत्तौ तुव धरनि, तू गोरी अनुरत्त। १४—३८

"गोरी" शब्द मे यमकालकार के साथ साथ अर्थ गभीय भी दर्शनीय है। (गोरी—सयोगिता गोरीय— शहाबुद्दीन गौरी)

(४) लुप्तोपमा—मगल बुध गुर शुक्र शनि सकल सूर उद दिट्ठ।

आतप ऊ धुवत तम, सुभ जचन्द वइट्ठ।

यहा मगल तथा बुधादि नक्षत्रो मे चद समान प्रतापी जयचन्द अपने दरबारियो के मध्य विराजमान हैं। यहा जयचन्द उपमेय है और "चद" उपमान समान धर्म वाचक शब्द के न होने से लुप्तोपमा। "चद" शब्द से कवि ने दो काम लिये हैं—जयचन्द और चन्द्रमा, अत श्लेष भी हो सकता है।

(५) उत्प्रेक्षा - उडु मध्य विराजित जानि दुज। ० ३७

अपने राज दरबार मे सिंहासनासीन पृथ्वीराज सामतो के मध्य विराजमान मानो तारागणो मे चन्द्रमा हो।

(५) रूपक—मनो मयक फद पासि, काम काल वल्लिए। ६-१३६

मयक पृथ्वीराज का काम काल ने अपने फदे मे आवेष्टित कर लिया। यहा कवि ने रूपकालकार की व्यञ्जना के साथ साथ सयोगिता के प्रेम पाश म फास कर पृथ्वीराज के भावी पतन (मृत्यु) की सूचना दे दी है।

हाथियो के "पापर" (लोहे के झूल) मानो बादलो मे बिजली की चमक हो—

पापरा झलक गज एम झलप्पे।
मनौ बीज चमक्कति घन मेघ पप्पे। १० ८८

हाथी के आग लगने से उसने सूंड उठा कर चिंघाडा तो कवि की उत्प्रेक्षा देखिए—

लगि मुषि आगि गयद गिहेरी। मनौ गजराज बजावत भेरी। ११-१५

एक और उदाहरण देखिए—

धवलह चढी निरषहि नारि।
गौषनि रन्ध्र राजकुमारी।
मानहुँ तडित अभ्र समाज। २-५२ ३

महल के वातायनो मे बैठी हुई राजकुमारियां तथा अन्य रमणिए बादलो मे मानो बिजली की झलकारें हों—सम्भव है कवि की ऐसी उत्प्रेक्षात्मक कल्पना बिलकुल निराली ही हो।

रमणियो के कानो मे पहने हुए ताटक मानो पूर्णिमा-रात्रि मे दो चाद चमक रहे हो—

राजत श्रवन रवनि ताटक। राका मानो उभय मयक।

(७) अपह्नुति—स्त्रियो के भाल पर रत्न जटित तिलक दीपक ज्वाला की झलक है—

तिलक नग रग जटित भाल, हुबहु झलक दीपक जाल।

(८) उल्लखालकार—की एक झलक और देखिए

कन्नौज मे गगा तट के समीप पृथ्वीराज पग सेना से युद्ध कर रहा है। गगा तटस्थ महल मे सयोगिता की परिचारिकाओ तथा अन्य सुन्दरियो के मन मे युद्ध-रत पृथ्वीराज को देख कर कई भाव उत्पन्न हुए—

"दिष्षित सुदरि दल वलनि, चमकि चढत अवास।
नर कि देव किधु कामहर, किधु कन्द्रु गग विगास॥
इक्क कहहि दुरि देव इह, इकु कहि इद फनिंद।
इक्कु कहै अस कोटि नर, इक पृथ्वीराज नरिंद ॥६-१२६

और विचारी सयोगिता तो शृङ्गार रस के अनुभावो मे भीग गई—

सुनि रव पिय पृथिराज कौ, उभय रोम तन रग।
स्वेद कप स्वर भग भौ, सपत भाय तिहि अग॥ ६-१३२

इसके अतिरिक्त भ्रातिमान्, तद्गुण, अनवय, दीपक तथा विभावना आदि अलकारो की व्यन्जना प्रस्तुत प्रति मे सर्वत्र अभिव्यजित हुई है।

छद

सस्कृत साहित्य मे अधिकतर वर्णिक छदो का बाहुल्य है, क्योकि

सस्कृत छद वैदिक साहित्य से विकसित हुए हैं। फिर भी उक्त साहित्य मे मात्रिक छदो का सवथा अभाव नही कहा जा सकता। इमी प्रकार अपभ्र श साहित्य के छद प्राकृत साहित्य के छदो से विकसित हुए हैं। प्राकृत छद प्रारम्भ काल से ही मुख्यतया मानिक रहे हैं। अत अपभ्र श साहित्य मे अधिकतर प्राकृत छदो का प्रयोग हुआ है। इस के अतिरिक्त यहा सस्कृत के वर्णिक तथा सयुक्त छदो को भी अपनाया गया है। क्योकि अपभ्र श साहित्य का विकास चारण परम्परा से हुआ माना जाता है। चारण कवि अपनी आजीविकाथ राज दरबारो म तथा रण क्षत्र मे शृ गार तथा वीर रस की उद्भावना के निए अथवा विशेष नत्य और लय ताल आदि के लिए छदा का विशेष ढग से उच्चारण करने थे। एतदथ उन्हे अपनी सुविधा के लिए नूतन छदो की कल्पना भी करनी पडी। अत अपभ्र श साहित्य मे मात्रिक वर्णिक तथा सयुक्त तीनो प्रकार के छदो का प्रयोग हुआ है।

पृथ्वीराज रासो मे वर्णिक मात्रिक तथा सयुक्त तीनो प्रकार के छद प्रयुक्त हुए मिलते हैं। रासो मे अधिकतर प्रयुक्त तथा प्रसिद्ध छद गाथा पद्धडी कवित्त तथा दोहा हैं। रासो की प्रस्तुत प्रति मे यत्र तत्र छदो भग दोष को सुधारने। Amend का प्रयत्न नही किया। प्रस्तुत प्रति मे प्रयुक्त छदो की तालिका निम्नोक्त है —

मात्रा छंद	वर्ण वृत्त	सयुक्त वृत्त
१ गाथा	१२ अनुष्टुप	२३ कवित्त
२ त्रिभगी	१३ साटक अथवा शाटका	२४ कु डलिया
३ दूहा	१४ भुजगी	२५ सोरठा
४ पद्धडी	१५ मोतीदाम	२६ रोला
५ अरिल्ल अथवा अडिल्ल	१६ विराज	२७ वार्ता
६ हनुफाल	१७ त्रोटक	२८ मालती
७ चौपई	१८ रसावला	
८ मुरिल्ल	१९ नाराच अथवा नराज	
९ रासा	२० भ्रमरावली	
१० ऊधो अथवा उधोर	२१ मोदक	
११ रड्डा	२२ प्रवानिक, प्रमानिक नमानिक	

उपयोगिता की दृष्टि से उपयुक्त छदो के लक्षणो पर सक्षिप्त विवेचन उचित होगा।

मात्रा छद

१ गाथा—प्राकृत काल का यह प्रसिद्ध छद है अपभ्रश रचनाओ मे भी इसका प्रचुर मात्रा मे प्रयोग मिलता है। कई छदकारो के मतानुसार सस्कृत के "आर्या" छद को ही गाहा, अथवा गाथा कहा जाता है।

लक्षण—४+४+४√४+४+ISI (अथवा I''II)+४+४
४+४+४√४+४+I४+S

२ आर्या—जैसा कि ऊपर कहा गया है प्राकृत काल मे इसका नाम 'गाहा", अपभ्रश मे 'गाथा" तथा सस्कृत मे "आर्या" नाम से प्रसिद्ध है।

लक्षण—इस के पहिले और तीसरे चरण म १२, १२ और दूसरे तथा चौथे मे १८ तथा १५ मात्राए होती हैं। पूर्वार्ध मे चतुष्कलात्मक ७ गण और एक गुरु (S) तथा इन सात गणो मे से विषम गण (ज०) का निषेध होता हैं। छठा गण ज० अथवा (IIII) होना चाहिए। उत्तरार्ध मे छठा गण एक लघु मात्रिक हो, शेष पूर्वार्धवत्।

३ दोहा अथवा दूहा—२४ मात्राओ का छद है १३, ११ पर यति तथा चरणान्त मे लघु।

४ पद्धड़ी—पद्धरि पद्धरी, पद्धडिया—छद अपभ्रश-साहित्य का एक प्रसिद्ध छद हैं, वसे तो छदकारो ने पृथक् पृथक् रूप मे इस पर विवेचना की हैं परन्तु रासो मे इसका रूप-प्रत्येक चरण मे १६ मात्राओ, चार चौकल और जगणात वाला ही मिलता है।

५ अरिल्ल अथवा अडिल्ल—रासो मे प्रयुक्त इस छद के प्रत्येक चरण मे १६ मात्राए तथा चरणात मे दो लघु पाए गए हैं।

६ हनुफाल—यद्यपि प्राप्य छद ग्रन्थो मे इस नाम का कोई छद उपलब्ध नही हो सका। रासो मे इसका रूप-१२ मात्राओ, ३ चौकलो और अन्त मे जगणात्मक है।

७ चौपइ—प्रत्येक चरण मे १६ मात्राए, अन्त मे ग०ल०, चौकल का कोई क्रम नही, अत मे ज० अथवा त० नही होना चाहिए।

८ मुरिल्ल—नामक छद भी उपलब्ध छद ग्रथा मे दष्टिगोचर नही हुआ। प्रत्येक चरण म १६ मात्राए तथा इन १६ मात्राओ म गु० अथवा ल० तथा चौकलो की स्वतन्त्रता हैं। वर्णों का भी कोई क्रम नही।

९ रासा—प्रति चरण मे २१ मात्राए तथा अन्त मे एक नगण कभी प्रत्येक चरण मे २३ मात्राए भी मिलती हैं और अन्तिम चरणो मे २१, २१,

१० ऊधो अथवा ऊधोर—सहायक छद ग्रथो मे ऊधो नाम का भी कोई छद नही मिला, ७, ७ मात्राओ के विश्राम से प्रत्येक चरण मे १४ मात्राए तथा अन्त मे एक ल० और एक गु०।

११ त्रिभगा—८+६ पर यति विराम से ३२ मात्राए, प्रत्येक चरण मे तथा अन्त मे ल० तथा ज० नही होनी चाहिए।

सयुक्त वृत्त

१२ कवित्त—पिगल परीक्षा मे इस छद का नाम पट्पद अथवा छप्पय है, "प्राकृत पैंगलम्" के अनुसार इस के प्रत्येक चरण मे ११, १३ मात्राओ के यति विराम् से चार चरण होते हैं और अनन्तर 'उल्लाला' के दो चरणा के मेल से दो चरण जोड दिए जाते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ मे इसी रूप मे इस छद का प्रयोग हुआ है।

१३ कुडलिया—'प्राकृत पगलम्' के अनुसार "दोहा" और रोला के योग से इस छन्द का निर्माण होता है। रासो म इसका यही रूप अधिकतर प्रयुक्त हुआ है। कई अन्य छद ग्रथो के अनुसार 'कुण्डलिया" का निर्माण दोहा तथा "उल्लाला" के योग से होता है।

१४ रड्डा, रड्डा प्रस्तुत सस्करण मे इस छद का प्रयोग दो तीन स्थानोर पहुआ हैं, परन्तु कही पर भी इस का रूप स्पष्ट नही हो पाया। प्रत्येक चरण मे भिन्न भिन्न मात्राओ तथा वर्णों की खिचडी सी है। "सदेश रासक" मे भी इस का प्रयोग मिलता है। वहद सस्करण मे इस का "वथुआ" नाम से प्रयोग हुआ है। "रूप दीप पिंगल" नामक ग्रन्थ मे इसका नाम रिडडुक है और इसका लक्षण निम्न प्रकार से दिया गया है—

कीज कला प्रथम तिथ मान,
दश एको दूसरे, तीजे गिन दश पाचाराए,

फिर चौथे दश एक, परस्यन मे पाच करिए।
गेडा सत सठ मत्त है, कीनो सेस बखान।
तामे फिर दाहा मिले, रिड्ड छद पहिचान।

"प्राकृत पैंगलम्" मे रड्डा छन्द का निम्न लक्षण मिलता है—

पढम विरमइ मत्त दह पच, पअ-बीअ-बारह ठवहु,
तीग ठाइ दह पच जाणहु, चारिम एगारहहि।
पचमोहि दह पच आणहु,
अठ्ठासट्ठी पूरवहु अग्गे दोहा देहु।
राअ सेण सुप्रसिद्ध इअ, रड्डु भणिज्जइ एह।

वर्ण वृत्त

१५ साटक—मस्कृत छन्द ग्रन्थ मे इसका नाम 'शादू ल विक्रीडित" है। यद्यपि कुछ छन्द ग्रन्थो मे "साटक" का रूप कुछ अन्तर से पाया जाता है परन्तु प्रस्तुत सस्करण मे प्रा० पैं० के अनुसार ही इसका लक्षण घटित होता है। प्रा० पैं० के अनुसार इस म चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में १६ वण हैं तथा म०स०ज०स०त०त०गु० योजना पाई जाती है।

१६ भुजगी प्रत्येक चरण मे १२ वर्ण तथा चार यगण होते हैं। छन्द ग्रन्थो मे भुजगी नाम का कोई छन्द उपलब्ध नही है। "वृत्त रत्नाकर" मे इसका नाम "भुजग प्रयात" है। "छन्द प्रबन्ध' ग्रन्थ मे एकादशाक्षर जाति समूह म इसका नाम "छद" भी मिलता है।

१७ मोतीदाम—मोतियदाम 'वृत्तरत्नाकर" मे "मौक्तिक दाम" चार जगण, द्वादशाक्षर, "चतुजगण वद मौक्तिक दाम"

१८ विराज इसके प्रत्येक चरण मे ६ वर्ण, ८ मात्राए और २ सगण। प्रा० पैं० मे इसे "तिल्ल" भी कहा गया है। और कही कही ६ वण १० मात्राए तथा २ यगण।

१९ त्रोटक—चार सगण, पदान्ते यति, ११ वण।

२० रसावला—उपलब्ध छद ग्रन्थो म इस नाम का कोई छद दृष्टि गोचर नही होता। प्रस्तुत प्रति मे इसका रूप—६ वण तथा २ रगण हैं। प्रा० पैं० मं ६ वण, २ रगण वाले छन्द को "दिजोहा" कहा गया है।

२१ नाराच, नाराज, न ाज – १६ वण, ज० र० ज० र० गु० व० ग्ला० म इसकी सज्ञा पचचामर है। "जरौ जरौ जगाविद वदति पच चामरम"।

२२ भ्रमरावली—प्रत्येक चरण म ५ सगण, २० मात्राए और १५ वण हैं।

२३ मोदक – १२ वण, १६ मात्राए, ४ जगण, तथा कही कही १२ वर्ण, १६ मात्राए ४ सगण।

२४ प्रमानि, प्रमानिक प्रामणिका—"जरा लगा प्रमाणिका"

(अष्टाक्षर जाति वणवत्त)

२५ वार्ता – सहायक छद ग्रथो मे "वार्ता" नामक किसी छन्द *का उल्लेख नही मिलता। प्रारम्भ मे वार्ता से गद्य का ही बोध होता था।* परन्तु कालान्तर मे लिपिकारा के भ्रम से "वार्ता" भी छद रूप मे प्रयुक्त होने लगा। प्रस्तुत प्रति म वार्ता के नीचे दो स्थानो पर गद्य भी दिया हुआ है और अयत्र छद भी।

२६ रोला (मात्रिक)— २४ मात्राओ का छन्द हैं। सम पदो मे १३ – ३+२+४+४ या ३+२+३+३+३+२ तथा विषम पदो मे ११ – ४+४+३ या ३+२+३ मात्राओ का क्रम है।

२७ सोरठा – दोहा का उलट सोरठा कहलाता है।

२८ श्लोक—अथवा अनुष्टुप्—चारा पदो मे पचम वण लघु और छठा वण दीघ होता है। सम पदा मे सप्तम वण भी लघु होता है।

मालती—इस छद मे २२, २२ अक्षरा के चार चरण होते हैं। ६, ७, *अथवा ८ पर यति है। प्रस्तुत प्रति म यह छद,* "छन्द" नाम से भी पयुक्त हुआ है।

उदाहरण–दिगभरि घुम्मिल, हरित भुम्मु ल, कुमुद निभल साभिलम्'

—— ० ——

छठा अध्याय

भाषा और व्याकरण

पृथ्वीराज रासो का भाषा विषयक प्रश्न एक कठिन समस्या तथा भाषाविज्ञ विद्वानों मे वाद-विवाद का विषय रहा है। इस विषयक लेख यथा समय सामयिक पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित होते रहे हैं। इस मे कोई सदेह नही कि रासो की भाषा म इतनी दुरूहता तथा अव्यवस्था है कि उसपर ठीक ढग से व्याकरण के नियम लागू करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। स्व० डा० श्याम सुन्दर दास जी ने रासो की भाषा को पिंगल माना है। डा० ओझा जी ने इसे न पिंगल और न राजस्थानी ही कहा है। और किसी ने अनुस्वारात, टवर्गादि तथा द्वित्व वर्णबहुला देख कर डिंगल नाम रख दिया, तो किसी ने अपभ्र श अथवा विकृत अपभ्र श। इस प्रकार के भाषा वैविध्य तथा वर्ण और स्वरों की अव्यवस्था को देखकर स्व० शुक्ल जी ने झुभला कर रासो की भाषा को "ठिकाने की तथा भाषा के जिज्ञासुओ के काम की चीज नही है" कह दिया था और इस विषयक अपना निर्णय देते हुए कहा कि —"कही कही तो भाषा आधुनिक साचे मे ढली दिखाई पडती है, क्रियाए नए रूपो मे मिलती हैं, परन्तु साथ ही कही २ भाषा अपने असली प्राचीन साहित्यिक रूपमे भी पाई जाती है जिस मे प्राकृत और अपभ्र श शब्दो के रूप और विभक्तियो के चिन्ह पुराने ढग के हैं।" शुक्ल जी का यह कथन किसी सीमा तक सही है। शुक्ल जी के समय मे रासो के वृहद तथा मध्यम सस्करण ही प्रकाश मे आ सके थे। वास्तव मे रासो को एक बहुत प्राचीन रचना माना जाता है। इस की भाषा मे अव्यवस्था तथा प्रक्षिप्त अशो की बहुलता है। अत एव रासो गत भाषा का स्वरूप निश्चित करने म पर्याप्त कठिनाइयाँ रही हैं।

वास्तविक रूप मे रासो मे भाषा वविध्य तथा विकृति का कारण भाटो तथा चारणो द्वारा राजदरबारो तथा समगगण मे प्रशस्ति रूप मे गायन अथवा उच्चारण और लिपिकारो का प्रमाद है। आचार्य शुक्ल जी के कथनानुसार, वीर गाथा काल में राज्य श्रित कवि और चारण जिस

प्रकार नीति, शृंगार आदि के फुटकल दोह राज सभाओं मे सुनाया करते थे उसी प्रकार अपने आश्रय दाता राजाओं के पराक्रम पूर्ण चरितो अथवा गाथाओं का वर्णन भी किया करते थे। पृथ्वीराज रासो भी इसी युग की रचना मानी गई है। आल्हा ऊदलवत यह काव्य भी "श्रव्य काव्य" रहा है, विशेष कर राजपूताने मे। यही कारण है कि रासो की भाषा का न कोई स्थिर रूप है और न ही कोई स्थिर शैली। इस मे कही तो भाषा सर्वथा आधुनिक प्रतीत होती है, कही पर प्राकृत, अपभ्रंश तथा संस्कृतानुकरणात्मक है और कही पर पिंगल (प्राचीन व्रज) तथा डिंगल (प्राचीन राजस्थानी) रूपो मे पाई गई हैं। शब्दों की बनावट म स्वरों के दीर्घ अथवा ह्रस्व होने का कोई ध्यान नही रखा गया। व्यंजनो म अपनी इच्छानुसार अथवा उच्चारण की सुविधा के लिये परिवर्तन कर लिये गये हैं। वास्तव मे रासो की भाषा को यदि हम चारणी भाषा कहें तो अधिक उचित रहेगा। क्योकि चारण कवियो की अपनी एक विशेष शैली है और ये चारण कवि अपनी आजीविका के लिए इस शैली का १८वीं[1] शताब्दी तक दृढता से पालन करते रहे हैं। इसी बात को ध्यान मे रखकर रासो के प्रसिद्ध विद्वान् जोहन बीम्स ने[2] रासो की भाषा के विषय मे अपना मत देते हुए लिखा है —It must be remembered that many of these poems were impromptu productions and most, if not all, were written to be sung, and any deficiency of syllable could be covered by prolonging one sound over two or three notes, as often happens in English songs, or on the other hand two or more syllables could be sung to one, not as in our chanting, where so much license could be sung We cannot use the metrical argument except with great precaution We

---

1—"पिंगल भाषा" लिखित गजराज ओझा, का० ना० प्र० पत्रिका भाग १४, संवत् १९९० नवीन संस्करण।

2—See studies in the grammar of Chand Bardai, Bengal Asiatic society Journal, Vol XLI, 1873, Part I Page 165

are, therefore, driven back to the conclusion that in chand's time the form of words and their pronunciation was extremely unfixed It removes out of the way the necessity of attemping to establish a fixed set of forms for words and inflexions We take all Chand's words for the present as they stand, we take each word in four or five different forms if need be, and do not trouble overselves to find out which is the right form for Chand's period, simply because we do not believe there was any right form that is more used and more generally accepted than any other In fact we recognize thoroughly transitional character of the language " अत यह कहना उचित होगा कि रासो के दृहद् तथा मध्यम सस्करण एक कवि की रचना नही कहे जा सकते।

रासो के प्रस्तुत सस्करण मे भी उक्त दोनो सस्करणो की तरह भाषा विषयक वही समस्या है। यहा पर भी विभिन्न भाषाओ तथा अनेक बोलियो के दर्शन होते हैं। यदि कही पर विभिन्न प्राकृतो तथा अपभ्रश के विकृत शब्द बिखरे हैं तो कही पर भाषा सर्वथा विकसित, नव्यतर तथा आधुनिक प्रतीत होती है। जैसा पहिले कहा जा चुका है कि १३ वी शताब्दी मे रचित सदेश रासक की भाषा के साथ तुलना करने पर प्रस्तुत प्रति की भाषा को हम १३ वी शती की नही मान सकते। डा० नामवरसिह ने अपने नव प्रकाशित प्रबन्ध[1] "रासो की भाषा" मे इस विषय मे अपना मत[2] दिया है कि रासो की प्राचीनतम प्रति (लघुतम सस्करण) की

1 "रासो की भाषा" प्रकाशित—सरस्वती प्रेस बनारस, जनवरी १९५७ सस्करण। (लघुतम सस्करण के आधार पर ही इसमें रासो भाषा विषयक विवेचना है।

2 (क) "उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि पृथ्वीराज रासो के जितने रूपान्तर हुए हैं उनमे से प्राचीनतम की भाषा भी अपभ्रश से अधिक विकसित तथा नव्यतर है।"

(ख) "इस प्रकार रासो की भाषा "प्राकृत पैंगलम्" के बाद की प्रमाणित होती है।"

(अगले पृष्ठ पर)→

भाषा १४ वी शती म रचित प्राकृत पगलम् की भाषा से अधिक विकसित तथा नव्यतर है, और इसे हम अकबर समकालीन नरहरि दास तथा गग भट्ट भणत परम्परा मे स्थान दे सकते हैं। प्रस्तुत प्रति की भाषा मे कुछ आधुनिक हिन्दी रूपो के अतिरिक्त सस्कृत, सस्कृतानुकरण, प्राकृतो के प्राचीन रूप, अपभ्र श तथा अपभ्र शाभास व्रज (पिंगल) राजस्थानी (डिंगल), फारसी, पजाबी और दिल्ली के आस पास हिसार तथा रोहतक आदि प्रदेश के देशी शब्द मिलते हैं। परिणामत सामूहिक रूप से हम यदि इसे 'चारणी भाषा" की सज्ञा दे दें तो अनुचित न होगा। इस चारणी रूप मिश्रित भाषा तथा शैली के कुछ उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

१ सस्कृत—प्रस्तुत प्रति के नाराच शाटक अनुष्टुप तथा कही कही दोहा छदो मे अशुद्ध सस्कृत अथवा सस्कृतानुकरण रूप मे भाषा के दर्शन होते हैं। जसे—

(क) जौवनेन विनय विनति सपिना मगन म ल।
सपि आग्रह मान ग्रहन पिय छड तिहि काल। ३ ३७
(ख) त्वमेव इष्ट दिष्ट मुष्ट, जुष्ट रुष्टय पतिपते।
त्वमेव सत्य सत्यवाद गापिकामह गते। (३-७७)
(ग) चरणस्य मड मनौ हेम दड। (१-११४)

→(ग) पृथ्वीराज रासो का भाषा म ध्वनि और रूप की दृष्टि से एक ओर नवीनता मिलने के साथ ही, दूसरी ओर प्राचीनता मिलती है। इसका कारण तब स्पष्ट होता है जब हम राजस्थान क अन्य भट्ट कवियो की रचनाएँ देखते हैं। प्राकृत अपभ्र श की तरह व्यजन द्वित्व वाले शब्दो क प्रयोग नरहरि गग भट्ट आदि भट्ट कवियों की रचनाओ में भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ये कवि १६ वी शता क उत्तराध में थे। पृथ्वीराज रासो के अन्तिम सग्रह और संकलन का समय भी लगभग वही बताया जाता है और उसकी प्राचीनतम प्रतिया भी इसी के आस पास की हैं। ऐसी हालत में तत्कालीन "ठट्ट भणत" के रूप में भी रासो की भाषा नरहरि तथा गग की भाषा परम्परा में आती है। पृष्ठ १४

२ प्राकृत—कुछ ऐसे शब्दो की सख्या भी हैं जिन्हे हम शुद्ध प्राकृत शब्द कह सकते हैं। जैसे —

दिट्ठ, तिट्ठ, पिट्ठ, विब्भल, अप्प, वच्छ अच्छरि, जुज्झ, जार, रूव चाव, चउक्क आदि।

गाथा छन्दो मे प्राकृताभास है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक शब्दो को प्राकृत रूप देने का प्रयत्न किया गया है।

गिद्धीण जाइ कहणौ, रहणो कविचन्द मूर सावत।
प्राची हय रह वहणौ, रहणो गत नै दावत। ११-१६०

यहा रेखाकित शब्द - गिद्ध, कहना, ग्रहण करना, राह, वहना, रहना, आधुनिक हैं जिन्हे प्राकृत रूप दिया गया है। "दावत" शब्द फारसी का हैं।

३ अपभ्रंश—कुछ शब्दो की सख्या एसी है जिन्हे हम अपभ्रंश अथवा विकृत अपभ्रंश कह सकते हैं। परन्तु ऐसे शब्द १६ वी शताब्दी मे जायसी आदि कवियो ने भी अपनी रचनाओ मे प्रयुक्त किए हैं। जैसे —

त्रिलायन, दिनियर, वयन, वैन कन्ह न्हान, हानु, नेह, नेहु, पुय, जुव्वन, सायर आदि।

इसके अतिरिक्त निम्नोक्त शैलो के, पद्धडी, नाराज, शाटक, तथा कवित्त आदि छन्दो मे आधुनिक शब्दावली मिश्रित कृत्रिम अपभ्रंश—चारणी रूपात्मक शब्द मिलते हैं —

कलि अत्थ पत्थ, कनवज्जराव। सब सील रत, धर धम चाव।
वर अत्थ भूमि, हय गय, अनग्ग। पड्या पग राजन सुरग्ग।

यहा रेखाक्ति शब्द अपभ्रंश भाषा के समझे जाते हैं, परन्तु वास्तव म ऐसे शब्द चारणी वनावट के हैं।

४ अपभ्रंशाभास—आचाय शुक्ल जी के मतानुसार विक्रम की १४वीं शताब्दी मे एक ओर तो प्राचीन परम्परा के कुछ कवि अपभ्रंश मिश्रित खडी वोली मे वीरता का वर्णन कर रहे थे —

चलिअ वीर हम्मीर, पाअ भर मेइणि कपई।
दिग मगणाह अन्धार, धूलि सुर रह अच्छाइहि।

ओर दूसरी ओर खुसरो मिया दिल्ली मे बैठे बोल चाल की भाषा मे पहलिया कह रहे थे।

रेखांकित शब्द आजकल पंजाबी बोल चाल में पर्याप्त प्रसिद्ध है। जैसे "सद्दा दे आउ—" अर्थात् निमंत्रण दे आओ। परन्तु यह शब्द प्राकृत के शुद्ध रूप—सद्द/शब्द—से शुद्ध क्रिया के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

कप्पियौ वीर विजपाल पुत्त। (१०-७)

यह "कप्पियौ" क्रिया आजकल भी मुलतान तथा सरगोधा आदि प्रदेशों में साधारण बोल चाल में प्रयुक्त होती है। यथा—"ओहने ओहदा सिर कप्प् छड्या=अर्थात् उसने उसका सिर काट दिया। कप्पियौ" क्रिया "क्लप छेदे" धातु से शुद्ध प्राकृतिक रूप है। इसी प्रकार—नप्पिय=नप्प लिया, दबोच लिया, संस्कृत "नप्तृ छदे' धातु से है। टोर=तोर=(संस्कृत त्वरा) चाल गति। गुज्झ, (संस्कृत गुह्य) उग्गाह—प्रसिद्ध (सम्कृत-उदगम)। तथा

१ जु कछु सद्द मन मे भई (१६७८, सद्ध=इच्छा=साध।
२ गहिय चन्द रह गज्जने १६ २। रह=(फा०) राह=मार्ग।
३ इम अष्षै चन्द वरदाई ६.१६६, अष्ष = सम्कृत आख्या। कहता है।
४ अत असि तुमि (सस्कृत-युष्मद् अस्मद्) १० ६८)
५ तक्क वह पृथिराज (१६ ३७, तक्कै=देखता है।
६ जि या वे जिया (४ ७८ जित—सस्कृत, जि' धातु से क्त प्रत्यय।
७ जे हुदे दर हाल (४ ३)—(होते हिन्दी) आदि पंजाबी भाषा के शब्द प्रस्तुत प्रति मे प्रयुक्त मिलते हैं।

६—फारसी अरबी—के शब्द भी कुछ मात्रा मे यहा प्रयुक्त हुए हैं। परन्तु कवि ने इन शब्दो को भी अपनी चारणी भाषा के ढाचे मे ढालने का प्रयत्न किया है। यथा —

१ नागौर नरेस नृसिंह सहा (७-४३)।
२ सालह विहालह ७-६५)।
३ अभोरुह मानन्द ६ १६)।
४ रोस के दरिया हिलोरे (६ ३५)
५ विय मीर वजा (६-३५)।
६ वस छत्तीस आबेह कारे ६ ३६)
७ धर हल्लै मौजे=(मौजम, आनद मे) (६ ५)

८ जिरह जजीर (१० ६)	
६ साहिब बाग गट्ढे जिलारा (६-११४)	पवास (१७ १)
१० मुक्कम मुकाम सु हिंसार कोट (१३ ४३)	मरद (१७-२४)
११ पूब पूब सुरतान कहि (१३-६०)	फुरमान (१४ ७)
१२ इबह दीपक जाल (७ ५७)	कुरान (१५ ५१)
१३ लटी लच्छी नूर (१ १२)	सिलहदार (१६-४६)
१४ गुमान जिनि करहु (१५-८	आलम्म फौज ४ ७०)
१५ मिस्तहि गयौ (१६ २०)	मिहिमान ६ १७)
१६ दये मालिया आनि सो दाम दाम (१ ४४)	अदब्बु (१६ ४०)
इसी प्रकार —	फरजद (१८ ८४
अजब्ब (७ १४)	उम्मेद (१५-४७)
वजीर (५ ७)	हसम (१३ ७)
गिरिवानह (१७ ८८)	मालूम (१५ ७४)
बे अदवी (८८ १)	निमान (१३ ६६)
सायरी जिहाज (११ ६४)	दोजक (१५ ४८)

मसूरति (१८ ५१)
मुजक्क सु ताजी (१८ ८०)
मुमाफ (१५ ७८)
कहर ५-७७
अवाज (५ ८)
हजूर (६-१६)
नजीक (१३ ६८)
पैरीद दुसमन (१४ १४)
हूर (१५ ८६)

१०—यहा कुछ ऐसे अनुरणनात्मक अथवा ध्वन्यात्मक शब्द भी हैं जो कि विशेष रूप से चारणी भाषा के द्योतक कहे जा सकते हैं —

(क घर घार घमकि घमकि रन (८ ८८)

(ख) डह डहति डम्मर डकिनिय (१८ ७७)

(ग) हय गय थन घसमसहिं, सेमु सलमलहि मलवकहि (६ १०८)

(घ) रणाक भक्ति नूपुर । ८८८)

११—एक ही शब्द अनेक रूपो मे मिलता है। अर्थात एक ही विभिन्न रूपो मे हैं। कुछ उदाहरण देखिए —

१ पुहुमि, पथिमी
२ सोवन्न, सुवन्न, सोवन
३ भीन, षीन, छीन (भीन = जीण पीन अथवा छीन = क्षीण मे है)
४ सीह, सिंग, सिंघ।
५ असु, अमु, अस्सह अस्व, अश्व।
६ सेत स्वेत, श्वेत।
७ छन, पन, पिन, पिन छिन, छिनकु।
८ सेद, स्वेद, श्वेद।
९ गन, गयन, गगन।
१० रवनि, रवन्नि, रमणी।
११ रष्छस रष्पस, राक्षस।
१२ नैर, नइरा, नयर, नगर।
१३ दीग्घ दीह।
१४ मुद्ध, मुग्ध मुगद्ध, मुगद्धह मुग्ध।
१५ अष्पर, अच्छर, अक्षर।
१६ सद्द सबद्द, सबद्दह, सबद, शबद, शब्द।
१७ विहु, विद्धु, विधु।
१८, तूर, तुरिय, तूर्ण।
१९ दिट्ठ, दिट्ठि, डिट्ठ, द्रष्टि, दृष्टि।
२० वाय, वाइव बाव वा।
२१ गैवर, गयद, गयदह।
२२ गम्भ, गब्भ, गब्भह, गभ।
२३ लद्ध लब्भ, लम्भ, लभ।
२४ पुहु, पुह पुहुप, पुहप।
२५ सहार, सहारु सहकार।
२६ दुज, दुज्ज, द्विज।
२७ गेह, ग्रिह घर, ग्घर, घरह।

२८ परतष्प, परतिप्प, परतच्छ प्रयक्ष।
२९ समुह, सम्मु, सम्मुह।
३० सम्मुहि सामुहि, सुमुह।
३१ महल, महिल, महिल्ल, माहिल महिलह, महलह।
३२, जुद्ध, जुध, जुद्धह।
३३ अन्छत, अच्छित, अप्पत अक्षत
३४ तिट्ठ, तिष्ठ, थित।
३५ पप्प, पच्छ, पप्पह, पक्ष।
३६ भट, भट्ठ, भट्टह, भर, भरह।
३७ भुम्मि, भुम्मिह, भुइ।
३८ पायाल, पायालह, पाताल।
३९ दुलह, दुलब्भ, दुलभ।
४० सब, सब्व, सब्बह, सबै, सभ, सभौ सभै।
४१ अपुव, अपुब्ब, अपूरव।
४२ इय, इम, इमि, एमि।

प्रस्तुत प्रति मे तीन चार स्थानो पर गद्य का प्रयोग भी हुआ है। इस गद्य मे ब्रज भाषा है। फारसी के शब्द हैं तथा हिसारी बोली का लहजा है। यह गद्य १३ वी शती का नहीं माना जा सकता। यथा—

"बहुत रोज भये, ढिल्लिय त पवरि न आइ। तब तत्तार पा बोल्या। सिरजनहार करे तौ जिहि हिन्दू पातिसाह सू बे अदबी करी हैं। भी एक बेर दूत भेजिए। तवहिं दूत गज्जने कू धाए। केतेक रोज दरवारि जाई परे हुवे।" (चतुदश खण्ड)

१३ षटभाषा—चद वरदाई ने प्रस्तुत प्रति मे कई[1] स्थानो पर छ भाषाओ का जिकर किया है। जसे कविवर कालिदास को छ भाषाओ का समुद्र कहा गया है —छद कालिदास छ भाषा समुद्र। १ १९६

नवम खण्ड मे जयचद का दरवारी कवि दसौधी भाट चन्द कवि को कह रहा है —

क—रस नौ छ भाषा, सुभाषा उधारौ। ६ १६

ख—नव रस भाष छ पुच्छन तत्ते।
कवि अनेक भाषा गुन मत्ते ॥६-१७

1 षट् भाषा पुरान कुरान च कथित मया० आदि छद इस प्रति में नहीं है।

कवि ने सरस्वती देवी की स्तुति करते हुए उन्हे छ भाषाओ की ज्ञात्री देवी कहा है —

इन्दौ मद्धि सुवद्दिमान विहनौए रस्स भाषा छठो। ६ १६

जयचन्द भी छ भाषाओ का ज्ञाता है और वह उसी को उत्तम कवि मानता है जो छ भाषाओं का विद्वान हो —

नव रस मुनि अदिट्ठ रस भाष छ जपि नृपाल।

वास्तव म बात ऐसी है कि मध्ययुग मे छ भाषाओ का प्रयोग कवि जनो म साधारण रूप से प्रचलित था। और जहा कही भी षटभाषा प्रसग उपस्थित हुआ वहा सस्कृत तथा प्राकृत के पश्चात अपभ्र श का नाम भी लिया जाता है। लाण्ठ देव-कवि की प्रशसा म मख ने कहा[1] था कि छ भाषाए उसके मुख म निवास करती हैं। १४ वी शती में रचित हम्मीर महाकाव्य के प्रथम सर्ग म छ भाषाओ का वर्णन मिलता है। सम्राट पृथ्वीराज की प्रशसा करते हुए जयानक कवि ने 'पृथ्वीराज विजय" काव्य में छ" भाषाओ का निर्देशन किया है। मख कवि रचित श्री कठ चरित टीका से भी यही ज्ञात होता है कि छ भाषाओ मे सस्कृत, प्राकृत शौरसेनी मागधी पशाची और अपभ्र श हैं। चन्द कवि ने भी इसी प्रकार उपयुक्त छदो तथा खण्ड ६ के १६-२ छदो मे भारती सरस्वती तथा विष्णु की दासी लक्ष्मी के मुख से उक्त छ भाषाओ की उत्पत्ति बतलाई है। अत इस युग म षट[3] भाषा का प्रचार कवि गण मे सवत्र प्रचलित था। कवि चन्द ने पृथ्वी राज रासो मे उक्त छ भाषाओ को प्रयुक्त करने का प्रयत्न किया है। परन्तु इस प्रयास मे उन्हे सफलता प्राप्त नही हुई। यद्यपि प्रस्तुत प्रति मे

1 देखो—का ना प्र पत्रिका, वर्ष ५८ सवत २०१० अक ४ "अवहट्ट और उसकी विशेषताए" लेखक—शिवप्रसाद सिंह।

2 प्राकृत सस्कृत मागध पिशाच भाषाश्च शौरसेनी च। षष्ठोऽत्र भरि भेदो देश विशेषादपभ्र श। ।

3 पुनु कइसन भाट, सस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी, छहु भाषाक तत्वज्ञ, शकारी, आभारी, चण्डाली, सावली, द्राविली औतकलि विजातिया सातहु उपभाषाक कुशलह। वर्ण रत्नाकर, ज्योतिरीश्वराचार्य द्वारा रचित, रचनाकाल सवत १४८०। डा० सुनीति कुमार चैटर्जी द्वारा सम्पादित।

सस्कृत, अपभ्रश, तथा प्राकृतो (मागधी, पैशाची, शौरसेनी) के कुछ विकृत शब्द जहा तहा बिखरे पडे है परन्तु इस शब्दो की सख्या अधिक नही है। यहा तो व्रज (पिगल) राजस्थानी (डिंगल), अरबी फारसी तथा आधुनिक खडी बोली का बाहुल्य है, और कुछ मात्र मे पजाबी तथा हिसार प्रातीय भाषा देखने मे आई हैं। अत इस लघु सस्करण की भाषा को यदि हम चारणी अथवा विविध भाषाओ का मेला कहे तो अनुचित न होगा।

रूप रचना

सज्ञा

लिंग—सिद्ध हेमचन्द्र ने अपभ्रश व्याकरण मे "लिंगमतत्रम्" कह कर अपभ्रश मे लिंग विषयक अनिश्चितता प्रकट की है। प्राकृत मे भी साम्यारोप द्वारा इकरान्त आदि विविध शब्दो के समान रूप देखे जाते है। रासो की प्रस्तुत प्रति मे नपुसक लिङ्ग ना लुप्त प्राय हैं। आधुनिक विभक्ति चिन्हो तथा सस्कृत की विभक्तियो को छोड यहा उपर्युक्त सिद्धान्त ही लागू हो सकता हैं। एक और विशेषता यहा यह है कि अकारात इकारात आदि शब्दो के आगे 'ह' प्रत्यय जोडकर उन्हे पुलिंग रूप दे दिया गया है। यथा —भुम्मिह रतिपत्तिह, मग्गह पग्गह, आदि। इसके अतिरिक्त व्रज भाषावत आकारान्त शब्द उकारान्त बना दिये गये हैं, परन्तु अकारान्त शब्दो की भी कमी नही है।

उकारात—छिनकु मनहिं धीरजु करहु। ७-७१

आदस करि आप्पनु दियो। ६-५

एव—थानु (१५-१) तप्पु (७-५०) आजु (८-४८), हत्थु (६-३१) दीपकु (७-७) सिरु (१६-२३) फारसी-अरबी के शब्दो को भी उकारान्त रूप दे दिया गया है दिलु (१६-७८) आलमु अदब्बु (६-४०)

अकारान्त दस तीनि बबध उठत लरे। (१७-४६) लुट्टि लिए पायट सब। (५-३३) कचन मुहाल करि मज्झि वग्ग। (१६-५६)

एव—दीपक (१५-१०) सुवन (१६३८), हत्थ (१६-४६) तिमिर तेज (१६ ५१)

1 देखो—अध्याय ४, सूत्र ४४५।

फारसी शब्द—हज्जूर (१६-७०, असम्मान (१६ ४०) कम्मान (१६ ४३) अरज (१६-७६) फक्कीर (१६ ४०)

अकारान्त इकारान्तादि शब्दो के आगे "ह" प्रत्यय लगाने की यहा विशेषता है, परन्तु "ह" सम्बन्ध तथा अधिकरण विभक्ति चिन्ह का भी द्योतक है। यथा

१ जुग्गिनि पुरह (७ १)

२ तर ताल तमालह सात टटी। (८ ४४)

३ सुनि सद्दह (६ २७)

४ दासि कर क्तह (७ ६)

एव—वीरह (१४ ६६) ओनह (१४ ४६) चहुवानह (७ ५) सस्कृत के अक प्रत्यान्त समस्त शब्द पुलिङ्ग मे हैं —

दप्पक (१४ ४४, कधक (१४ ७२) कगूरक (१४ २४) सस्कृत के इनि" प्रत्यान्त शब्दो को छोड शेष समस्त ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग म है —

१ मुष चन्द रवनी (६ ४२)

२ भीन लंकी (६ ४४)

३ युद्ध वत्तरा सपत्ती (६ २०)

४ रगी रग भूमी (१६ १८)

५ मिली मत्थ मत्थे अनी एक्मेक (१६ ४)

० —वारुनी (१६ १, मुत्ती (१६ ३४, जोगनी (१६ १७) नट्टिनी बहिनी, सचनी (६ ४३)

अपवाद—वदी (१६-४७), अनदी (१६ ४७) सस्कृत इन ' प्रत्यान्त।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इ—पगु पुत्ति (६ ७०), गत्ति (१४-४८), कित्ति (१४ ६४)

अपवाद—असपत्ति (१४ ५६ नरपत्ति (१४ ६८) वाजि (१६-३८)।

कदाचित ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो को 'इय" "इह" तथा "ईह" रूप दे दिया गया हैं —

इय—पुनिय (११ ८४ अच्छरिय (१०-३७), कनक लट्ठिय (८-८१) सु दरिय (६ ६४) देव्रिय (१४ ३६, धरनिय (१६ ५८)

अपवाद—छत्रिय (१६४), स्वामिय (१६५), गोरिय=शहाबुद्दीन-गोरी (१६-१४)

ऋ जो छडे सी सुत घरनिह (७ ५६)

इ ह – थावर गत्तीह (६-५६)

पुंलिंग उकारान्त शब्द वकारान्त रूप मे प्रयुक्त हुए हैं —
विधुव (७-७७), मधुव (६-७७), गन्व (१३-६६),

परन्तु शुद्ध उकारान्त शब्द भी जहा तहा मिलते है —

विधु (१६ ४६), मधुर मधु (१५-७४), अश्रु (१५ १४, समस्त ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिंग मे हैं —

राज वधू (१७-४३) आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग मे हैं —

१ कहे काया यह गदी (१५-४७)

२ राज । तू आया अवनि मेव (१६ ५)

एव—विया १५ ४, माया (१५ २), कला (१५ २, नज्ज ॥१५-६॥ अपच्छरा ॥१६ ७५॥

अपवाद—गोवच्छा ॥१६ ५१॥ पिया पिय ॥१५-३१ अकारान्त शब्दो को स्त्रीलिंग बनाने के लिए "इनि" प्रत्यय —

१ कुरग कुरगि कोकिल कीर ॥१-८८॥

२ मब ग्वारिनि हु ढै फिरि ॥१-८४॥

३ दुत्तनि उत्तरु दिय । ॥६ ६७ ।, सुलप्पिनि ॥८ १५७॥

स्थावर वस्तुओ का लिंग निर्णय वस्तु के आकारानुसार है —
(आधुनिक हिन्दी म भी एसा ही नियम है)

१ तार (स्त्री०) वज्जी हर ॥१३-३३॥

२ ढाल (स्त्री०) दुढी सुरतानह ॥१६ ८८॥

३ उठी श्रोन छिछा ॥१६ ५६॥

४ बडी जग (स्त्री०) लग्गी ॥१६ ७॥

५ हम दिय धुम्र (पु०) जु छाह कौ । ॥१६ ४१॥

पशु पक्षियो का लिंग प्रकरणानुसार ही ज्ञात हो सकता है —

१ सुनौ तुम चपक चद चकोर ॥१ ८६॥

२ कहो कह स्याम सुनौ घग मोर ॥१-८६॥

यहा "चकोर" तथा "मोर" का लिंग स्पष्ट नही है ।

वचन

रासो की भाषा मे दो ही वचन हैं। साधारणतया व्रजभाषावत वहुवचन के लिये "इनि' और "अन" प्रत्यय जोड दिया जाता है, और कदाचित् वहुवचन सूचक विभक्ति लुप्त प्राय है —

इनि—१ थके अग अगनि ताहि ॥१८ ७॥

२ दुरे अवहि इनि कु जनि माहि ॥१ ८७॥

३ लियो दधि दुधू त्रियानि प दान ॥१-८३॥

अव—दस मासनि ॥१-८८॥ हस्तीनि ॥१४-११४॥ शत्रुवनि ॥१६-८१॥ अपिनि ॥१५-१॥

अन १ सामतन सूरन हुन्नह ॥२१ ८१॥

२ कवियन मन रजहु ॥४-७०॥

३ नृपतिन छत्रन लग न पारि ॥१० ७॥

४ महिलान कमलान ॥१३ ६॥

विना विभक्ति —(निर्विभक्तिक शब्द आधुनिक हिन्दीवत् हैं)

१ सुर विक र्थि असपि वसहिं ॥३ ३६॥

२ सट्ठ लक्ष परवक कोटि दस वार पटवर ॥३ ३॥

रासो भाषा मे प्रत्येक प्रकार के शब्दो के आगे "ह" जोडने की विशेपता है। "ह' केवल एक वचन सूचक है, 'ह" एक व० तथा वहु व० दोनो का सूचक है —

एक वचन	वहु वचन
१ अति सु दर सु दर तनह ॥१ ८१३॥	२ दस तीन गयदह ॥३ २॥
	३ वर वरस पच दपति दिनह ॥३ २

विशेषण—विशेषण शब्दो का लिङ्ग चिन्ह अनियमित है। कदाचित् विशेषण-लिङ्ग विशेष्यानुसार होता हैं और कभी नही —

(हिन्दी आधुनिक मे भी ऐसा ही नियम है)

१ या र गत्तिह ॥६ ८६॥ २ रत्तल दिसह ॥२-१५४॥

३ जहा सेत दतिनि ॥१८ ४॥ ४ कालीय साप ॥२-६०॥

५ रत्तिय नन पिगिय कुच नगिय। ६ कना सच्छ सीपै ॥२-८॥
॥१८ २॥

७ फिटा पिरती ॥१८-२५॥ ८ अ छा सु रैन ॥१८ ७॥

कारक—डा० तगारे के कथनानुसार[1] अपभ्रंश मे कारक चिन्ह आठ की अपेक्षा तीन ही शेष रह गए, और कही पर दो विभक्तिए पाई गई हैं। अर्थात् कर्ता और कर्म का एक ही चिन्ह है। इसी प्रकार करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बंध, अधिकरण का भी एक ही विभक्ति चिन्ह है। रासो की प्रस्तुत प्रति मे संस्कृत तथा आधुनिक विभक्ति चिन्हों को छोड कुछ उपयुक्त ढग के ही विभक्ति चिन्ह हैं —

कर्ता—कर्ता सदा विभक्ति रहित है —

१ हम कहि उरह दहत ॥२-१०॥
२ चाइ चवे चातुक्काउ ॥८-२॥
३ जा सु हाउ चंदराज गोरी गुर बध्या ॥३-१॥

कर्म — १ मल्ल मारि पच्छारित कमदि ॥८ १७॥
२ तह मावत मारि, दच्छिन कघर धुक्कियौ ॥१० ६॥
३ सखिन सुनाइ सुनाइ ॥६ २६॥
४ कूरम्मा कूँ परै ढाग, ढिल्लिय उच्छरिय ॥१४ ११३॥

करण — १ नागौरे गुम्बे गुनहि ॥२ २६॥
२ भट्ट वचन सुनि सुनि, नप मानहि ॥७ ६०॥
३ चढिग सूर या न सह ॥१० १॥

पृथक विभक्ति चिन्ह -- (भारतेन्दु युगीय खडी बोली के विभक्ति चिन्ह भी ऐसे ही हैं)

१ पुर मौं पुग पु दइ ॥१२ १३॥
२ परि अरारि हिंदुवान स्यो ॥४ ६०॥

सम्प्रदान— यह कारक अधिकतर पृथक विभक्ति चिन्ह के साथ प्रयुक्त हुआ है —

१ काहे लगि जुज्झे ॥१४ ३१॥
२ सुद्रन हेत ॥६-८॥
३ नृप तिहिं रप्पन काज ॥१२-२॥

[1] See—Historical Grammer of Apabhramsa, by Dr Tagare-Published Daccan College Poona

अपादान—पिभक्ति चिन्ह —तै, ते, सो, सु ।
त—आइ दत ढिल्लिहु त ।।७ ७४।।
ते—मनो देवता स्वग त मग्ग भुल्लै ।।८ ४८।।
सौ—सावता मै यौं कह्यौ ।।१४ ६४।।
सु—बोल्यौ जु बोल चहुवान सु ।।१३ ५४।।

निर्विभक्तिक—सैरध्री उर जम, नाम वीरम रावत्ता ।।११-११८।।

सम्बन्ध— १ गगह उदक ।।८ ५८।।
२ पु डीर राइ च ह तनौ ।।६ १८।।
३ पयान जल उच्छलत ।।६ ११।।
४ परनि पुत्ति जयचद का ।।६ १७८।।

अधिकरण— १ चपे अग्गि छइ ।।१ ६।।
२ कध अरोहण मग्गि ।। १ ८३
३ छिनकु मनहि धीरजु करहु ।। ७ ७
४ अगुलि मुषह फनिंद ।। ७-८७
५ एक थान दच्छिन दिसहिं ।। ८ ३२
६ पुच्छन चद गयो दयवारह ।। ६-८

निर्विभक्ति —१ तुव हाथ दत्त ।।१ ३०
२ चढि विमान जय जय करहिं ।।६ ८२
३ भावति सखिसु ।। ६-१३५

पथक् विभक्ति चिन्ह—
मैं—उर मैं चित्त लज्जे ।
म्म—व्रज म्मैं विहार ।।१-२७
माहि—कु जनि माहि ।। १-८७
महि—सर महि द्रव्य अदिट्ठ ।। २ ३८
मध्य—रैनि मध्य ।।२ ४१
मज्झि—रजनि मज्झि नराह ।। ७-१५
मज्झु—महि मज्झु ।।६ ५।।
मज्झार झझ मझ रह ।। ८-५१

सर्वनाम

उत्तम पुरुष—मैं (अहम्)

एकवचन	बहुवचन
हौं—(व्रज) हौं लज्जाकरि का कहौं । ॥६ ६७	हम—हम गुरुजन तैं कहहिं । ६ ४५
हा—हा पुडीर नरेस होत । १३-५०	हमहिं हमहिं गोरी घर लग्गि । १४-५०
हुँ हुँ जड तू वड गिद्धिनि । १७-५५	वय—वय मेच्छ मत्त । १-१८७
मैं—मैं श्रम काज रिसाविय । ६-७	
मैं न मैं पग्ग सग्रह्यौ ॥ १३ ५५	
अहं—अहं वदिन देवि तो पास सेव । ५ ४३	

अन्य रूप

मुझ करौ मुझ आप ॥ ८ १०६

मुहि—दूपन मुहि न विशेष ॥२ ३४

मोरे—मोरे दलिद्द तिनि कियो होम ॥ ७ ७८

मोर—सगर मोर सिर मोर देह रप्पी अजमेरी ॥ १२ ६६

मो—मो पितु जुग्गिनि पुर धनी ॥ ११-८८

मेरी—पचनद मेरी मेरी ॥ १५ ३०

मध्यम पुरुष "तू"

एक वचन	बहुवचन
तू—तू क्यो राज अरत्त । ७ १६	तुम—अप्पिय ढिल्लिय तुम । ७ ४७
तू—तू कवि देत असीसहि छुट्टहि ।	तुमू—तुमू गल्हा लगं बुरी । १५ ३३
त—तैं झूठ जु कुन्नो । १३ ५०	तुमुहि—तुमुहि वचन समान वन । २ ११
तो—तो भुज उप्परि पिल्लिय ।१४-७६	तुम्ह—हम तुम्ह दुसह मिलग्गि । १०-१७
तौ—तौ वुज्झहु अप्पन घरहु । ११-१०५	तुम्हह—हम सु देपि तुम्हह अरति । १५ ७५
तुहि—तुहि अप्पौ ढिल्लि तखत । ६ ६६	तुम्हारि—कहे जैत पवार परी वग्गरी तुम्हारी ॥ १४ १७६
तव—तव पुत्रह पुत्रवधू उरण । २ ७७	
तुव—तुव हाथ दत्त १-३०	

तुम्र—मो तुम्र तात दन दव नित्ती। ६-१८
तोहि—नहि रप्पु कवि ताहि। ६ ६१
तुज्झ तुज्झ विरद इमि कहहि। १३ ५४
तासो=ताते तो मो कहुँ। १४ ११७

प्रथम पुरुष—वह

एक वचन

वह—वरस छत्तीस मास वह। ६ ४८
वौ – जानि पगु चहुवान वौ
मुप जपौ यह वैन। ६ १०३
वा दैव कान वा तून मिनि। १५ २०
सो सो सुनत सामत मत। १५ १७४
उहि—इह उहि दुहुँ मन इक्क है।
उस—उस पिनि॥ १७ ४३
ता- ता उप्पर तिहि दिवस गान। १४ ८४
त—नप त बरनह सजाग। १४ १८
ताम -दिय मुद्रि ताम॥ १ ७३
ताम—रजु ताम नन॥ १४ ८७
तिहु – तिहु समाधि॥ १७ ६८
तसु—तसु कटक॥ १६ ३४
तास—अगन ताम सहाग॥ ६ १६
ताहि—धीर मिहारो ताहि। १३-८६

बहु वचन

वे—धर अजुलि जल उठि॥ १७-१
उन—तज्यो उन मग॥ १ ८७
उन—उनै हस्ति ठेल्यो, इनै सीह दीनौ। १३ ८-
उनहि—उनहि गनि तुज्झ गनि। ६ १३
त—त कवि बरनि मत्ति॥ १४ ७७
ते— त बत्तीस हजार॥ १४ ६०
वै – व निसान समरत्थ रथ। ४ ५६
उह उह बार रज्जी॥ ८ ८६
तिहि नमित किया तिहि सीस। १४ ६४
तिहि—तिहि दिवस पृथिराज कर। ११ ४८
तिनि—मोरे दनिद्द तिनि किया होम ७-७८
तिन—अस तिन बोलहु। ६ ७
तिनह—तिनह दतन तिन मडिय। ४ १
उहा उहा रहि॥ १५ ३०

निर्देशवाचक सर्वनाम "यह" (इदम्)

एक वचन	बहुवचन
यह—कवियन यह कहै ॥ ८ ६२	इनि—दुरे अब हि इनि कु जन माहि । १ ८७
इय—इय जुद्ध हद्द ॥ १८ २	इन—इन पूजन जामन ईस गन । ३ ७४
इय इय कहि दासिय अप्पि वर । १८-४७	,, इन मैं को पथिराज ॥११ १३७
इअ—इअ अग्गे तरी ॥ ५ ८०	
इह—इह उहि दुहुँ मन इक्क है । ६ ६०	

यह (एतद्)

एक वचन	बहु वचन
एह—कहन एह कविचंद मुरत्ते । ॥६ १८॥	ए ए लच्छन छिति हैं न । ॥६ ५३॥
एहि - एहि बानि चंद सुनि, धुनिग सीस । ॥१६ ६७॥	
एम—एमि-एम नाद उच्चरयो, एमि एमि सूर चढयो । गयदह ॥८ १०८॥	
एपह—एपह सुप सहाय कुंभ सहिता ।	
एहा—एहा मत्त परट्ठयो । ॥ ४ ६	
एन—अम्मिय एन लच्छि मु रत्य ॥ १० ८	

सव (सव)

एक वचन	बहु वचन
सव्व सव्व कुरवंस राय ॥८ ६८॥	सवैं—सव सैन चंद ॥८ ७॥
सव्वह—वेर मत्ति सव्वह अग्गिले ॥६ ५३॥	सव्व—असी मत्त सव्वैं । ॥८ ७॥
सम्भ—सम्भ धीर रत्ते सरस । ॥११ ८७॥	सव्वैं—सव्वै मुसाफ तुम । ॥१५ ४८८
सभ—सभ धरा धाम निधाम । ॥१ १७५॥	सवरे—सवरे सो सग्राम राजनह वा राजनि ॥१८ ११३॥
सव्वु—सव्वु मन । ॥१० ६०॥	सव्वन—सव्वन तव विचार करि । ॥६ १७६॥

अनिश्चय वाचक सर्वनाम कौन (किम्)

एक बचन

को -को तू पठान अगवल पति ।
को को मातु पिता, को त त तुम ।
।१४ ८७॥
केहु—केहु ना घर जरौ हत्थ ॥१२ १२७
कौन कौन सिंघ स्यौ ससा पेलि
जीवत घर आयौ । ॥१४ ५७॥
कौनु - सहै कौनु मार ॥४ १७॥
कौनि—घरै कि लज्जि कौनि ।
॥१४-७० ।
कुण—अरि असि नप्प कुण मग मैं ।
काइ—कोइ तप्पु इत्तउ मह ।

बहु वचन

के के कोन गए महि मज्झ ॥६ ६॥
किन—किन साइर-थाह्यो ॥१३ ५७॥
किनि—गवण किनि गह्यौ ॥७ ६७॥
किन—किनै न निरप्पहि राज ।
२४ ३३॥
केवि—केवि रट रठनि ॥६ ७४॥

प्रश्न वाचक सर्वनाम क्यो (किम)

क्वन—क्वन काज कवि अत्थया ।
७ ६०
किमि—किमि जग्ग होइ ॥ ६ १५
किम— गोरी किम रक्ख ॥ १३ ५६
किहँ—किहुँ वध अध्यौ ॥ १ ३६
किधु—किधु रत्न सु कनक मिलि
कज कोरे । ॥ ८ १४३
किम किम- किम किम सेस सह भार
डहिय ॥ १० ७

काहे—कहा काहे ते हल्लौ ॥ १४ ८
किन—अवि किन्न न कहता १० ८
क्यो—क्यो तुमहि सुहायौ ॥ १२ १०८
क्यौ —क्यौ करै आज ॥ ८ ४०
काइ—धम्म न काइ थप्प ॥ ४ ४०
काइ - ज काइ जुइयौ ॥ १४ ४४
केति—सामत मत केति कहा ।
॥ १२ ४४

एक वचन

सबंध वाचक जो (यत)

जु - जु इह रट्टै । ॥ ४ ६४
जौ—जौ घन सघन मिलत । ॥ १३ ५८
ज— ज काम सुर मद्धन करै । ॥ १५ ३०
जाके —जाके जक्कि ब्रह्मा न ब्रह्मा ड लहिय ॥ १० ३
जिहि —सब्ब हत्थ जिहि हनहि ॥ ६ ४३

जिह—जिह सावत सजि ॥ ७-६८
जेन—जैन सिर धरि छत्र ॥१४-६३
जसु—जसु जुग्गिनि जय जय करहिं ॥ १७-२६
जासु—भुजाइ जासु तु वर ॥ ७-२६

बहु वचन

जे—जे समार आदि साइ ॥ १६-७
जिहिं—जिहिं सत्त फेर ॥ १३ ४६
जिने—जिनं विश्व राप्यो ॥ १ १६६
जि नै—जिन्नै नाम एक ॥ १ १६६
जिने—जिने हेम परवत्त ते सव्व ढाहे ॥ ६ ३१
जिनके—जिन के मुप मुच्छह मुच्छरिया ॥ १५ ७१

निजवाचक आप

अप्पु—निज अप्प लाहौर लुट्टी समाह ॥ १३-७६
आपु—आपु कवि पत्त ॥ ६-१७
आप न लघुव आप ॥ १ ४१
अप्पहि—अप्पहि अप्पा जुरिग ॥ ५-७
अप्पु—अलस नैन अलसाइत अप्पु किय ॥ ६ ५३
अप्पन—आप आप्पनै भाग ॥ १४—७२
अप्पनु—गहि साहि हत्यु अप्पनु करचौ ॥ १३—५५
अप—अप आप गेह ॥ १—६०
अप्पनि—अप्पनि सुप ॥ ३—१५
अप्पनो—मरण अप्पनो पिछान्यो ॥ १२—२५
आपने—घर वैठे आपने, वोल तुम बड्डे बोलह ॥ १३—२०
अपु—अपु अपु इच्छ साज ॥ ११—२६

संबंध वाचक सर्वनाम

जेम—चद जेम रोहिनि उनहारि ॥ ३—६
किहिव—किहिव सूर सग्रह्यो ॥ १ —५७
जिविं—जरे जिविं ॥ ८—१०१
इसौ—जिसौ—इसौ राज पृथिराज, जिसौ हत्थहि अभिमानह ॥ ६—५३

इमि— इमि भार अट्टार, वच्छ सुहाय ॥ १–२६
जिम-तिम—जिम जिम सु सीह सिव, तिम तिम सिव सिव जप्पो ॥ १२–५८
इमि-जिमि—अभिलाष नृप इमि चद, जिमि रुकमिनि र गोविंद ॥ ३–४३

परिमाण वाचक सर्वनाम

इत्तनै—इत्तनै सहित भुवपति चढयौ ॥ ४–२५
इते— इते सकुन अति सच्छ ॥ ८–२८
इतो—इतो भूठ न तू कहै ॥ १२–५७
इत्तन—कवि इत्तन उत्त सुनै सुभवै ॥ १४–७५
इत्त — व्रज) इत्त चारु चरित्त ते गग तीरे ॥ ६–४७
एति—दरवार भइ एति पुकार ॥ ६–७७
एतो - एतो वर मति हीन करो ॥ २–५०
इत्तउ—जो न सूर इत्तउ करत ॥ १८–४८
जित्त (व्रज)—जित्त ग्वाल सत्य ॥ १–५४
जत—जतै नयर सु दरी कहि ॥ ८–७०
जित तित–जित रुधिर वु द थल परहि, तित वदल हल उट्ठहि भिरन १४–६३
जिके-तिके—जिके छैल सघट्ट वेशा सुरते
तिके द्रव्य के हीन हीनेति गत्ते ॥ ८–८६
तिते—तिते सज्जिए सूर सव्वै तुष्पारा ॥ १८–१२८
इत्तनै—ति इत्तनै सहित सोर वाजित्र वज्जइ ॥ १०–११
केतन—निरपे तन केतन अच्छरिपा ॥ १ –७१

अव्यय

यहा प्राचीन तथा आधुनिक दोनो प्रकार के अव्यय देखने मे आए हैं

अवर—अवर सावत्त कियो ॥ २–४१
अर—सामदान अरु भेद दड ॥ ४–१०६
औरे—नृप वरु औरे निमवे ॥ ६–५१
आपुब्व—आपुब्व कवि चद पिप्यौ ॥ ३–११६
अपुब्व—प्रभु अपुब्व ठट्ठह अदिलु ॥ ४–६
अब्ब—करि जग्गु अब्ब ॥ ६–१७
अद्भुत—अद्भुत रस वीर रस ॥ १२–६२
अब—अब उपाउ सुझ्यो इकु सचौ ॥ ७–७४
जहा-तहा—जहा तहा अकुरि परिय ॥ ४–२१

जह-तह —जह अजमेरि वन ॥ २-१६
तह लब्भते ॥ १-६४
जहिं-तहिं जहिं जहिं दृष्टि तिह तहि
सो ॥ ३-२३
जब-तब—जब जब दिप्पहि ताहि,
तब तब राज विराज मन
॥ ११-६७
तब्ब—परधान तब ॥ ६-१७
कब—जिहि लहहि कब्ब ॥ ६-३
कब्बु—कब्बु प्रमानिय ॥ ६-१४
कबहु —कबहूँ न होइ ॥ ६-१७
निय—निय नद गेही ॥ १-१३८
निजु —निजु आवन ॥ १५-३
निउ—निउ बध तजो ॥ ३-२१
सय—सय सेसने एस कैंवास अग्गै
॥ ५-४७
सुकीय सुगीय सुकीय जिय स्वामि
जान ॥ ८-८३
आज-आज घने दीह आज ॥ १-११०
अज्ज—अज्जु कह्यो नृप अत ॥
१७-४४
अजहु —अजहु हत्यौ नहि चल्यौ
॥ ६-१६४
बहोरी— दिय अब सत्य बहोरी ॥
१५-३८
ह्या—ह्या न बटनी देस ॥ १४-७३
अचरिज—जन अचरिज घेरी ॥
१२-६६
अचरिज्ज—अचरिज्ज नर ॥ १२-४१
अचिज्ज—अचिज्ज सुपेष्यो ॥ १-४०

अच्चिज्ज—अच्चिज्ज मूढ मत ॥
७-५३
अनेय—कवि अनेय वहु विधि गुन
मत्त ॥ ७ ५३
अनेव —जिहि अग राजन अनेव ॥
२-१
अनेक—राजन अनेक ॥ ६-२८
जादि—थान निरष्पिय राज जदि ॥
२-४०
जौ—जो न सूर इत्तउ करत ॥
१८-४८
जस—जस हम जस हसिनि ॥
१४-४६
परसपर—सावत सूर हसि परसपर
६-६०
पुनि पुनि जपौ जद्दौ भुवाल ॥
१४-१०६
पुनहिपुन—निमि जपहि पुनहिपुन ॥
६८३८
पुनर—पुनर पुहुप प्रजावति ॥
८-६३
सवत्त—सर्वत्त वर्तमानए ॥ ६-७६
विनु— विघ्दु सहित विनु भान ॥
१०-४
मनौ—मनौ हेम नार ॥ १-१३८
मनहु— मनहु धनु गह्यो हत्थु ॥
६-३१
सत्य—सत्य सलष्य ॥ ८-६
सय—कैंवास सय ॥ ५-७७
सह— सामि सह ॥ ७-४१

इमि— इमि भार अट्ठार, वच्छ सुहाय ॥ १–२६
जिम-तिम—जिम जिम सु सीह शिव, तिम तिम शिव शिव जप्पो ॥ १७–७४
इमि-जिमि—अभिलाष नृप इमि चद, जिमि रुकमिनि रु गोविंद ॥ ३–४३

परिमाण वाचक सर्वनाम

इत्तन—इत्तनै सहित भुवपति चढयौ ॥ ४–७४
इते— इते सकुन अति सच्छ ॥ ८–२८
इतो—इतो झूठ न तू कहै ॥ १३–५७
इत्तन—कवि इत्तन उत्त सुनै सुभवै ॥ १४–७५
इत्तँ — व्रज) इत्त चारु चरित्त ते गग तीरे ॥ ६–४७
एति—दरबार भइ एति पुकार ॥ ६–८७
एतो - एतो वर मति हीन करो ॥ २–५०
इत्तउ—जो न सूर इत्तउ करत ॥ १८–४८
जित्तँ (व्रज)—जित्तँ ग्वाल सत्थ ॥ ९–४४
जतै—जतै नयर सु दरी कहि ॥ ८–७०
जित-तित–जित रुधिर बु द थल परहि, तित कदल हल उट्ठहिं भिरत १४–६३
जिके-तिके—जिके छल सघट्ट वेशा सुरते
तिके द्रव्य के हीन हीनेति गत्ते ॥ ८–८६
तिते—तिते सज्जिए सूर सब्बे तुष्पारा ॥ १८–११५
इत्तनै—ति इत्तनै सहित सोर वाजित्र वज्जइ ॥ १०–११
केतन—निरषे तन केतन अच्छरिया ॥ १ –७१

अव्यय

यहा प्राचीन तथा आधुनिक दोनो प्रकार के अव्यय देखने मे आए हैं

अवर—अवर सावत कियो ॥ ७–४१
अरु—सामदान अरु भेद दड ॥ ४–१०६
औरे—नृप वरु औरे निमवे ॥ ६–५१
आपुब्ब—आपुब्ब कवि चद पिष्यौ ॥ ६–११६
अपुब्ब—प्रभु अपुब्ब ठट्ठह अदिलु ॥ ४–६
अब्ब—करि जग्गु अब्ब ॥ ६–१७
अद्भुत—अद्भुत रस वीर रस ॥ १२–६२
अब—अब उपाउ सुझ्यो इकु सचो ॥ ७–७८
जहा-तहा—जहा तहां अकुरि परिय ॥ ४–२१

तह् —जह अजमेरि वन ॥ ७–१६
तह् लब्भते ॥ १–६४
ह-तहि जहि जहि दृष्टि तिह तहि
सो ॥ ३–७३
व-तव—जब जब दिप्पहि ताहि,
तव तव राज विराज मन
॥ ११–६२
ब्ब—परधान तब्ब ॥ ६–१७
व—जिहि लहहि कब्ब ॥ ६–३
ब्बु—कब्बु प्रमानिय ॥ ६–१४
कबहु —कबहूँ न होइ ॥ ६–१२
निय—निय नद गेही ॥ १–१३८
निजु – निजु आवन ॥ १५–२
निउ—निउ बध तजो ॥ ३–७१
सय—सय सेसने एस कवास अग्गे
॥ ५–४७
सुकीय सुगीय सुकीय जिय स्वामि
जान ॥ ८–८३
आज–आज घने दीह आज ॥ १-११०
अज्ज—अज्जु कह्यौ नृप अत ॥
१७–५४
अजहु —अज्हु हयौ नहि चत्यौ
॥ ६–१६४
वहोरी— दिय अब सत्य बहोरी ॥
१५–३८
ह्या—ह्या न बटनौ देस ॥ १४–७३
अचग्जि—जन अचरिज घेरी ॥
१२–६६
अचरिज्ज—अचरिज्ज नर ॥ १७–४१
अचिज्ज—अचिज्ज सुपेप्यौ ॥ १–४०

अच्चिज्ज—अच्चिज्ज मूढ मत ॥
७–५३
अनेय—कवि अनेय बहु विधि गुन
मत्त ॥ ७ ५३
अनेव —जिहि अग राजन अनेव ॥
७–१
अनेक—राजन अनेक ॥ ६–२८
जादि—थान निरप्पिय राज जदि ॥
२–४०
जौ—जौ न सूर इत्तउ करत ॥
१८–५८
जस—जस हम जस हसिनि ॥
१४–७६
परसपर—सावत सूर हसि परसपर
६–६०
पुनि पुनि जपौ जद्दौ भुवाल ॥
१४–१०६
पुनहिपुन—निमि जपहि पुनहिपुन ॥
१८–८
पुनर—पुनर पुहुप प्रजावति ॥
८–६३
सर्वत्त—सर्वत्त वत्तमानए ॥ ६–७६
विनु— विप्पु महित विनु मान ॥
१७–११
मनौ—मनौ हम नार ॥ १–१०८
मनहु—मनहु घनु गह्यो [illegible] ॥
[illegible]
सत्य—सत्य [illegible] ॥ ८–६
मथ—[illegible] मथ ॥ [illegible]
सह—[illegible] ॥ [illegible]

समेव—गौ नप वलह समेव ॥ ३-४

समान– दानो समान ॥ ६-३०

सम – सम विज्जराज ॥ ८-६

तत्र—सुविहान तत्र ॥ ६-२६

जत्र—सु जत्र जत्र धाम वाम ॥१-७२

इत्थ—इत्थ पुच्छे कहो जो गुद्दरे सुरतान ॥ ९६-२६

एवत्थ – एवत्थ परदार दिट्ठ ॥ १८-२३

ज्यौ—ज्यौ भौरे अव धाइ ॥ १४-११८

यौं—दुह राइ महाभट यौं मिलिय ॥ १५-६७

सख्या वाचक (Cardinals)

१ तूँ ही एक आदी ॥ १-६३
एकह ॥ १०-५५ इक १—८०
एकु ॥ १० २३ यक ॥ १५ ५०

२ वाचिज्जे बीअ नारद जेहा १६-६३

३ त्रै वार ॥ ३ १७ तीनी ॥ ११ ६६
तीनह ॥ २ ४३ तीन ॥ १६ १०३

४ चारि ॥ १ ५ च्यारि ॥ १०-५६
वर वरस पच दपति दिनह ॥ ३ २७

६ छ छत्रिय छत्र ॥ १४ ११

७ सत्तइ समय ॥ २ ४१

८ अट्ठ ॥ २ ४२ अट ॥ २ ७०

९ एव-वीस तीस ॥ १६ ५६
त्रीस ॥ २ ४२
तेरह तीस ॥ १२-७४
पट्ठवीय वरस ॥ ६ २४
वत्ती सै लप्पन सहित ॥ ६ ४३
अठताली स चत्र मास ॥ ४ १७
चवसट्ठि सद् जय जय करहिं ॥ १८ ३०

१० दस मासनि ॥ १ ८६ दह ॥ ११ २१

११ एकदह ॥ २ ४२ एकादस ॥ २ ४३

१२

१३ तेरह ॥ ११ ४२ तेर १४ ८

१४

१५ दह पच २ ५१

१६ सोरह ११-७१

१७ सत्रह २ ११

१८ अट्ठारा १७ ३६
अट्ठार १-३६
पचसत ॥ १५ २७ सहस ॥ ६-८६
पच हज्जार
दस सहस्र दुहं भुजा । ४ ७६
सु पची हजार ॥ ५ ४३
पच हजार ५ ४३
हजारहा ॥ ४ १२
वेद लप्प तरवारि ॥ १३-८७
सवा लाख सेना ॥ ५ ६५
डेढ हजार ॥ १४ ६८
सुवण भार लप्प एक । ६ २५

सख्या वाचक (Ordinals)

१ भिरयौ अकिल्लौ ॥ १०-१३	२ इकल्लौ पुज्जे ॥ १३ ४०
३ जानहु पहिलूना ॥ १५ ३०	४ तुच्छे सहदे पहिल्लौ ॥ ७-६६
५ वियौ घट्ट थप्पं ॥ ५ ७१	६ सज्जिया बभ कैलास वीय ॥६ ७०
७ इक्क राउ सभरो वियो ॥ ३ ८५	८ दुवौ पप्प गभीर दुह ॥ १० ४४
६ ग्यारहु ससि तीजौ ॥ १६-११	१० तियौ जाव जद्दौ ॥ ५ ३८
११ नियत दिवस त्रिय जार्मिनि ॥ ८-३८	१२ चवै सुक्क देव ॥ १-१६८
१३ नले रूप पचम्म ॥ १-१६६	१४ छठ कालिदास ॥ १ १६६
१५ सत दडमाली ॥ १-१६६	१६ सवसर वावना ॥ १३-३५
१७ ग्यारह सै इक्कावना ॥ ८ १	

क्रिया —

अपभ्र श मे सज्ञा तया सवनाम शब्दो की तरह क्रिया को भी वहुत सुगम वनाने की प्रवृति रासो मे दिखाई देती है। कुछ अनियमित से रूपो को छोडकर सस्कृत के दस गणो मे स एक ही शेष रह गया है यहा द्विवचन तो रहा ही नही। एक वचन वहुवचन दोनो का काय एक ही प्रकार की क्रिया रूप से चला लिया है। कही एक आघ रूप को छोड लड् लिट् और लुड लकारो के रूप दृष्टिगोचर नही होता वैंतान्त रूप का प्रयोग पर्याप्त रप मे मिलता है। आत्मनेपद का सर्वथा लोप है। लट् के रूप तुमुन्नन्त, त्वान्त आदि कृदन्ती रूप शेष रह गए। नामधातु क्रियाओ के रप भी पर्याप्त सख्या मे प्रयुक्त हुए मिलते हैं।

वर्तमान काल

१ अधिकतर वतमान कालिके क्रियाए 'ह' प्रत्यान्त हैं। एकवचन तथा वहुवचन के रूप प्राय समान रूपात्मक हैं। परन्तु कही कही वहुवचन रूप "हिं" प्रत्यान्त भी देखा गया है —

एकवच०	वहुव०
नर वीर दिवा दिव सु पुच्छह घूमग घूप डवरि किनकिनि-डवर वग्गह ॥ ५ १६	वेद लप्प तरवारि नेजा पसरतह। अट्ठ लप्प घोर घार, मेघ जिमि-सर वग्गतह ॥ १३ ८७

२ एक वचन मे "इहि" तथा बहुवचन मे "हिं"[1] प्रत्यय जोडने से —

एकवच०	बहुव०
पुंडीर चद इम उच्चरहि ॥ २ २७	धवल चढि निरप्पहि नारि ॥ २ ५४
लज्जहि वहल वज्जन भार ॥ २ ५३	द्विजवर ववहिं आसिप वेद ॥२ ६१

३ "ऐ" अन्तक क्रियाए एकव० तथा बहुव० मे समान हैं —

इम जपै चन्द वरद्दिया ॥ ७ ५६	जगन्नाथ पुज्जै दिनहिं ॥ ३ १
चाइ चवै चालुक्क राउ ॥ ४-१	तह टोप टकार दीसै उत्त गा ।१० ६

४ 'औ" तथा "उ" अत वाली वतमान कालिक क्रियाए केवल मध्यम पुरुष मे एक वचन की द्योतक हैं —

सीसह धरौ ॥ १४ १२१	जे न जु इत्तौ करौं ॥ १४-१७
सामत मत केतो कहौ ॥ १४ ५५	ल आउ जालधराइ ॥ १५ १७

५ "इ" अन्त वाली क्रियाए सदा एक वचन की द्योतक हैं ,—

क —विथा विथ कपित, जपइ सोई ।
    क इक पुच्छइ, क इक उत्तरु देइ ॥ १५ ५

ख—धर ढुब्बइ पुर तालन ॥ १७ १६

ग—दीपक जरइ सुमदा ॥ ७ ७

घ—सस्त्र छत्तीस करि, कोइ सज्जइ, ति इत्तने सोर वाजित्र वज्जइ

च— निब्भइ ॥ ७-७२, सिर टुट्टइ ॥ १२-२८ कोल करक्कइ ॥ १३ ५६, कुल रप्पइ ॥ ११ १०६ गज कु भ उपट्टइ ॥ १७ २५, निट्ठरइ ढाल ॥ १२ ६

६ स्त्रीलिंग मे आकरान्त एक वचन द्योतक क्रियाए —जीता, पीता ॥ १५ ११५, और कदाचित् "ई" "न" तथा "न्नी" प्रत्यान्त हैं —

क—दुव जग लग्गी ॥ ४ १४ | ख—जुद्ध वत्तरी सक्ती ॥ १६ ७०

1 जायसी के पद्मावत से तुलना करिए ——
   धर्महिं (खण्ड ४२-२२) टूटहिं दांत माथ गिरि परहिं (४३ १)
   लोटहिं कपहि कच निनारे (४३-११) लोटहिं दरहिं (४३ ११)
   आगे चल कर "रामायण" में तुलसी दास ने भी ऐसी क्रियाए प्रयुक्त की हैं ।

ग–मनो मेनका नृत्ति ते ताल चुक्की ॥ ८ ६७

ङ–किलकार गज्जी ॥ ४-८६

छ–जगूरी विट्ठन्नी ॥ १८-६

झ–मनिषी मही छीनी, तिस उप्परि- कीना ॥ १८ १०

घ–चक्की चमक चौकी हुइ जोर सोर ४-१५

च–घर धक्की ॥ ५-६०

ज–मुट्ठी मिन्नी ॥ १८ ६

७ संस्कृत के "शतृ प्रत्यय वत्" पुलिंगी क्रियाए —

क—पुच्छत चन्द गयौ दरवारह ॥ ८ १६८

ख—झलकत कनक दिप्पियहिं नारि ॥ ८ ८०

ग—दिपत तुच्छ दिट्ठुए ॥ ७-११

वर्तमान काल में .—

१ दासी निशि विलसत ॥ ७-११

२ सुहत जासु तु घर ॥ ७-२७

३ विहुरत रत्त विहुरत छाति ॥ ६-३६

घ— कहत, दहत ॥ २ २७, धरकत ॥ ४ २५, तुच्छत ॥ ६-७४ चाहत ॥ ४८ ६० उलत्यत ॥ ५ ६५

८ क्त प्र यान्त —(शतृ प्रत्यान्त क्रियाए क्त प्रत्यवत् प्रयुक्त हैं)

१ कुच कज परसत जगली ॥ १४ २१

२ भुव कपत ॥ ४ २३

३ विहरत विच्छुटित ॥ १२-६४

४ ससा हरत ॥ १५ ४०

६ वर्तमान काल बहुवचन मे "द" अन्त वाली क्रियाए पजाबी क्रिया—कहदे, जादे, खादे, आदि की तरह हैं —

१ नीमान दिपदे ॥ १७-२५

२ तुप्पार चढद ॥ १७-२५

३, वम्तर वासदे ॥ १४ १२

४ उप्परि गासदे ॥ १४ १२

५ आज हुनदे पाप ॥ १४ ६

६ कहवद ॥ ८-६०

भूत काल

१० सामान्य भूत कालिक "ओ' "औ' तथा कदाचित् "उ" अन्तक

क्रियाए एक वचन की द्योतक हैं —

१ कनकनायो वड गुज्जर ॥ १२ ७
२ भयो तेन वाद ॥ ५ ७८
३ वल्यो कु भ कलक्कल वानी ॥ ५ ४
४ थाप्यो मत कैवास सो ॥ ७ ४८
५ गन जग सिसिर जीत्यो वसत ॥ ६ ३८

अव— कीन्हो ॥ १५ ३३, गरब्बियो ॥ ८-७, वयट्टयो, परट्टयो ॥ ३ ६ निम्मों ॥ २ २८, बज्यो ॥ ४ ८

औ —

१ हुँ हुकार हुँक्यौ ॥५ ७६
२ लग्यौ ग्रह कारी । १८ ८६
३ साकर पय दिन्नौ ॥६ ७६
४, गुन अग्थह दिन्नौ ॥ १४ ५७

अ०— परलायौ ॥ १२-२५, मडयौ, पडयौ ॥ १-१०७ धरयौ ॥ १ १३०, किनौ लिन्नौ ॥ १६ १००

"उ"—

१ तह जाउ जाउ ॥ २ ५ (लोट् ल०)
२ अचलेसर भिथउ ॥ ७-३६
२ जियन मरन मिति मन रह्यउ ॥१७ ५०
४ सच्चउ ॥ १७-५७

कदाचित् ऐसी क्रियाए उपसग सहित प्रयुक्त की गई हैं — सपेष्यो ॥ ७ ३७ सुपेष्यौ, प्रज्जरयौ, सहन्यो आदि ।

११ "ए" अन्त वाली सामान्य भूत कालिक क्रियाए एक वचन तथा बहुवचन की द्योतक हैं । कदाचित "ने" भी —

१ रहे वेद निंद दया देह वदे ॥१-७५
२ सब देव सद्दे ॥ १ ७
३ रथ आप रुद्दे ॥ १ ७८
४ वटो पच वत्ते,मगे चाप हत्ते १ १७६
५ दिपत तुच्छ दिट्ठए ॥ ७ ७६ बिबी अनार फट्टए ।
६ सजोगि सपन्ने, ॥ १५ ५७ नग मुत्ति दिन्ने ।

अव— जित्ते, मुक्के, निक्स्से, विकस्से, ॥ १ १४७, विहरे ॥ ६ ३५ हुलिए ६ १३५ उन्नए ॥ १५-५७, वतमानए ॥ ६ ७८ वित्ता, अप्पए ॥ ६ ७६

१२ "ग" अन्त वाली क्रियाए सामान्य भूतकाल की द्योतक हैं —

१ घग फोरिंग विय चदह ॥ १३-६६

२ हह हकारिग ॥ १ १६४

३ पाणि ग्रह उत्तिम करिग ॥ ३ २

ब – गविग, भरिग, धरिग, धु धरिग, हरिग, उद्दिग, परिग, भरिग ।

कदाचित् उपसर्ग के साथ —सचग्गि, मघरिग सकिग, विछडिग, मन्नमिग । ४ १६

१३ सभव है आधुनिक सामान्य भूत कालिक क्रिया "गया" का आदिम रूप "ग" गोन अथवा "गौन" हो । "गया" के अर्थ मे यहा ये ही तीन रूप प्रयुक्त हुए हैं —

१ गौ नृप बलह समेव । सुनि सुनि नृप अग्ग गौ ॥ ७-५०

२ अप्प राउ चलि वन हि गौ ॥ ७-२६

३ पुहपजलि अम्मर गोन ॥ १७-७०

४ सुर गौन वैन ॥ १५ ५५

१४ भूतकाल में क्तान्त क्रिया कदाचित् आधुनिक पजाबी की क्रिया— "चन्या" "जित्या" आदि के समान प्रतीत होती हैं —

जित्या वे जित्या चहुवान ॥ ४ २८, अन्य रूप "इय" प्रत्यान्त हैं — मुलप्पिय ॥ १ ३४, जित्तिय ॥ १-७५, भम्मिय ॥ १० ४ डहिय, वहिय ॥१० ३ चपिय ॥ १० २ पूजतिय ॥ १ १४६, लिय ॥ ७-४०, कसिय, घसिय ॥ १४ ६६ कदाचित् विना "इ" के —

सुभागय, लागय ॥ १-७४, मनोहरय ॥ १ १४१, हहनय ॥ १-४१ नत्यतय ॥ १ ४२, सम्मरय ॥ १ ४२ बूहानय ॥ १३ १३, पहिचानय ॥ १४ २१ (वास्तव म ये "नाम धातु" क्रियाए प्रतीत होती हैं । "आन" प्रत्यान्त — तुटितान, मल्लान ॥ १७ १२, विरुझान, रिसान ॥ १७-१२

१५ "इय" प्रत्यान्त क्रियाए सामान्य भूत काल की द्योतक हैं —

१ सौंपिय पुत्ति पुत्त नरेस ॥ ६ ३०

२ अति आदर आदरिय ॥ ३ २

३ तात अप्पिय ढिल्लिय सुम ॥ २ ४

४ तव पुच्छिय यह वत्त ॥ २-१६

ब— फुल्लिय ॥ १ ३२, दिय ॥ २ १६, डडिय ७-३४, चंपिय ॥४-२३

कभी "आइया" प्रत्यय के साथ —

१ सिंघनी सिंघ जु जाइया ॥ १४ ६३ | २ सु ठट्ठा जु सुहाइया ॥ १४ ६३
३ राजन पौरि पधारिया ॥ १४ ५६ | ४ चाहर वीर विचारिया ॥१४ ५६
पव— अइया, जुझाइया ॥ १४ ११५

क्त प्रत्यय (Past Participal) भूत कालिक क्त प्रत्ययान्त क्रियाए संस्कृत के क्त प्रत्ययवत् —

१ मधु नैर दिष्ट, सुप स्याम तिष्ट ॥ १-१३२
२ हुदे प्रीति रात ॥ १ १०७
३ राजस तामस वे प्रकट्ट ॥ १२ ८

पर— लिद्ध ॥ १४ ३, सुलग्ग ॥ १० १०७

क्रियार्थक संज्ञा

१७ मूल धातु के साथ "न" न, ण, "न्न" प्रत्यय जोड कर हिंदी म खेलना, "मरना" आदिवत क्रियाओ का निर्माण किया गया हैं।

१ हदफ पिल्लन चढचौ ॥१४-१३ | २ सयोगि जोवन जमन ॥ १४-१८
३ तुम लिय छत्र मरन्न ॥ १६-४१ | ४ सुनि धुनि राज गवन्न मवन्न। १५ १६
५ उप्पारण गज दंत ॥ १५-६३ | ६ पति अन्तर विच्छुरण विपति। ६-१५२

१८ सहायक क्रियायें—'भू' तथा "अस"

वर्तमान काल—
१ है हेम हेल ॥ १४-१८ | २ न को लोपि हो० (है) १४-१८
३, तिलु होइत भौन ॥ १२-१३ | ४ हो पु डीर नरेश होत। १३ ५०

भूतकाल —
भौ (१२-१३), भयो (१०-७१), भयौ (१२ १२२)
भउ (१२ ३२) हुत (१३ २८) हुव (१० ७२) हुव (११ ८०)
हेय (११-१६)

स्त्री लिंग मे भूत काल —
१ *तव प्रसन्न गिरिजा भइ* (११ ६०)
२ घट घोर सनमक भइय (१४-७४)

भविष्यत् —कुल चदेल न होहि (११ ८०)

अस – वर्तमान काल मे —राजन अथि अवास। (७-४)

भूतकाल मे —

१ जदिन वस पुडीर वानी मुपहि त्थ ॥ १३ ४६

२ थे गोरी सहावदीन ॥१४-३२

३ ब्रह्म कमडल थी जल गगे ॥८-५१

१६ सामान्य भूत काल मे आधुनिक हिन्दी क्रियाए भी दखिए -

दीन (२-४६), कीन (२ २८), दीन्ह (१६-४८) कीह (७ १८) कीन, लीन (१४ ८५)

भविष्यत काल

२० भविष्यत् कालिक क्रिया निम्नलिखित प्रत्यय लगा कर बनाई है —

१ इहैं—अब न होइहै सहु कहै ॥१८-६३॥

२ इहि—होइहि सुरतानह ॥१६-६१॥

३ हो—जै आज भाग, भूपति चढैहो ॥१४-७६

४ हिं—हुइ होहिं आदि हिंदुव तुरक ॥ १७ १८

५ आहि—हम माया पुज्जाहि ॥ १४-३७

६ हुगे—दिष्षहुगे कारिह ॥ ६-७

अवधिवत् विधि सूचक (लोट्)

२१ विध्यथक क्रियाए प्राय एकवचनान्त हैं तथा 'हु' प्रत्यान्त हैं,

१ रष्षहु इह सत्य २-४०

२ सुवर विचारहु वत्त ॥ २-१०६

३ कहहु भट्ट धरि-ध्यान ॥ २ ६७

४ कवियन मन रजहु ॥ ६ २०

एव—धरहु (६ १६), कहहु (६-७३) करहु (२-४२) वोनहु (६-१२)

प्रेरणायक—दिपावहु (१ ८५)

कर्मवाच्य

२२ कमवाच्य क्रियाए, ये, यैं, ज्ज, "ज्जइ" प्रत्यय जोड कर बनाई गई हैं। कभी कभी एसी क्रियाए विध्यथक भी होती है —

१ मनो दिष्ष्ये चद किरनीन मदा (८-३६)

२ मनौ विग्गिये रूप रव एराव इदा (८ ८४)

३ ते तो पास न मिल्लिये, तो भुज उप्पर विल्लिय ॥१४ ७८

४ दरै दानु दिज्जै, सुलाज्जै फकीर ॥ १६ १४

५ भृकुटि रवि मडल लीज्जै ॥१६ १४

६ सो सहि अम्बर जु गलिज्ज ॥१६-१४

प्रेरणार्थक क्रिया

२३ साधारणतया प्रेरणाथक क्रिया "आए' अथवा 'आइ" प्रत्यय जोड कर बनाई गई है —

१ ढिल्लीय पठाए ॥ १४-२	२ कहि कहि समुभाए ॥ ११२
३ तै नो पीर बिबाइ ॥ १४-६२	४ मिक्कार धडाइ । १४ ११
३ अम्मह मुच्छन दुत्ति पतावहि । गुन अच्छे पच्छे करवावहि ॥६-१२८।	६ सु चित्त बिच्चरो, छ भाषा— उघारौ ॥ ६-१६
७ बुल्यो बयठारिय (बठालना) १४ १२१	८ दिप्पि थवाइत थिरु नयन । ६-२

सयुक्त क्रिया

२४ साधारणतया सयुक्तक्रिया पूवकालिक क्रिया के योग मे बनी है -

१ सावत परि रह्यौ ॥ १० ६	२ पठि दिन्नौ ॥ १४ ३८
३ घालै फिरै १६-४६	४ करि रप्पौ ॥११-८६
५ रहि ठट्ठे घट तीन ॥११ १८६	६ लिन्ने रहे ॥ ११-१०७
७ दिप्पौ वदत ॥ १४ ४५	८ होत दीस ॥ ०५ ५२
६ कटि हु देपि रिहान ॥१४ १२८	१० बोलि रहैं ॥ ११ १०७

२५ पूवकालिल क्रिया "इ" "इव" "इवि" प्रत्यान्त हैं —

इ—१ अभिनव विरह बिलग्गि ॥ ११ २१

२ बंधि बिचारि ॥२ ३६ ॥

३ समप्पि (३ २२) चपि ॥ ४ ८

इव—गहिव साहि गो धीर धर ॥ १३ ८८

इवि—बधिवि भिरहि ॥१५ ४६

मातु गभ वस करिवि जेम ॥ ७-६५

एव चितिवि (१८ ३८), लग्गिवि (१४-४६)

२६ ब्रज भाषा की तरह "काज" पर सर्ग पूर्वक "वे" तथा "वै" प्रत्यय लगाने से तुमुन्तत क्रिया बनती है —

१ पुनै काज टारहि ॥ ६-११९

२ सामत सिंघ राव रचवै सुमति ॥ १६ ४

३ एस भय पचिवे काज, जाइ गौरी गुनहि ॥१५ १६

२७ सस्कृत की अनुकरणात्मक "ति" प्रत्यान्त क्रिया एक वचन तथा बहुवचन मे पाई गई है —

एक व० — नट्टयति जाम इक ॥ ७-६

वहुवचन — प्रकति मद्धि, दुहूँ दल पगार ॥ ११ ३०

हाक वज्जति राजन्ति सूर ॥ १२ ५६

एव — किलकति (५-३१) चवति (४ ३२। चमकति (१० ७२)

कभी कभी ऐसी क्रियाए स्त्रीलिङ्ग शतृ प्रत्यय मे प्रयुक्त हुई हैं—

१ सवै राग छत्तीस कठे करति ॥ ६-६२

२ झरहि मनि मुत्ति गच्छति लष्यै ॥ ६ ४१

३ केवि (कोऽपि) रट रटति पिय पियहि जप ।

४ उड्डति टुट्टै ॥ ६ ४२॥

२८ सस्कृत की अनुकरणात्मक नाम धातु क्रियाए अधिकतर साटक तथा अनुष्टुप छदो मे प्रयुक्त की गई है --

दामिन्य दामायत, सलिता स समुद्रायते ।
सरदाय दरदायते, प्रावृट सुप-स्यामिते ।
विरहन्नि तीरायते ॥१३-१११

उपर्युक्त उदाहरणो तथा विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रासो के प्रस्तुत सस्करण की भाषा मे विभिन्न शैलियो तथा भाषाओ का मिश्रण है। कुछ विद्वान् अभी तक रासो भाषा को अपभ्र श अथवा विकृत अपभ्र श की सज्ञा देते रहे हैं। परन्तु ऐसी भाषा को हम रूप तथा शैली की दृष्टि से अपभ्र श अथवा विकृत अपभ्र श नही कह सकते। हा इतनी बात अवश्य है कि अपभ्र श तथा विभिन्न प्राकृतो के शब्दो की कुछ

सख्या यहा मिलती है। गाथा छन्दो की शैली अपभ्रंश मिश्रित प्राकृत शैली के समान है।

रूप तथा शैली की दृष्टि से इस प्रति की भाषा अधिकतर ब्रज है। एसी शली मे जहा तहा खडी बोली का भी आभास मिलता है। ऐसी भाषा के उदाहरण विशेषकर कृष्ण लीला वर्णन, धनुष भग यज्ञ, प्रकृति वर्णन शृङ्गार तथा करुण रस के चित्रण तथा सामन्तो के विचार विमर्श म दृष्टिगोचर होते है। समरांगण म वीर योद्धाओ की वीर रस पूर्ण हुँकृतियां, शस्त्रास्त्रो की खनखनाहट म तथा वीर रस के चित्रण म भाषा उग्र रूप धारण कर लेती है। ऐसे स्थलो म शब्दो की विचित्र तोड मरोड हैं, विकृत अपभ्रंश आभास हैं तथा पश्चिमी राजस्थानी का पुट है। इस शली को हम डिंगल अथवा विशेष चारणी भाषा कह सकते हैं।

संस्कृत अनुकरणात्मक भाषा विशेष तथा भाटक, अनुष्टुप, नाराच तथा कदाचित दोहा छंदो म प्रयुक्त हुई हैं। इस शली के विशेष प्रकरण हैं, देवी देवताओ की स्तुति नतिक उपदेश तथा शकुनादि विचार। अरबी तथा फारसी शब्दो का प्रयोग अधिकतर यवन पात्रो के मुख से करवाया गया है। इसके अतिरिक्त गजनी वर्णन तथा अन्य यवन पात्रो के चित्रण मे कवि ने उर्दू फारसी के शब्दो का प्रयोग किया है। "हज्जार" वरष्प, नजीक" आदि शब्द जो कि १६वी शती मे अन्य कवियो द्वारा भी प्रयुक्त किए गए हैं, समस्त स्थलो मे पाए गए हैं।

सक्षेप मे यही कहा जा सकता है कि प्रस्तुत लघु सस्करण की भाषा अपनी चारणी विशेषताओ को लिये, रूप और शली की दृष्टि से खडी बोली मिश्रित प्राचीन ब्रज है। हम भाषा के कोमल रूप को पिंगल[1] तथा उग्र

---

1 Tessitary says —It is a well known fact that there are two languages used by the Bards of Rajputana in their political composition and they are called Dingal and Pingal The former being the local Bhasa of Rajputana and the latter the Braj Bhasa (Vide Journal of Asiatic society of Bengal, Vol X Page 75
George Grierson says —The writer sometimes composed in Marwari and sometimes in Braja Bhasa, in the former case the language was called Dingal and in latter Pingal Vide Linguistic survey of India Vol IX, Part II Page 19

रूप को डिंगल कह सकते हैं। और कहीं कहीं हिसार प्रान्तीय तथा पंजाबी भाषा का प्रभाव भी देखने में आया है।

चन्द वरदाई

चंद वरदाई की जन्म भूमि तथा जीवन-सम्बन्धी वृत्तान्त के लिए बाह्य तथा आन्तरिक ठोस प्रमाणों के अभाव मे किंवदंतियों के आधार पर साधारणतया यही धारणा चली आ रही है कि महा कवि का जन्म लाहौर में हुआ और ये पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे। परन्तु निश्चित तथा प्रामाणिक तथ्यों के अभाव में यह कथन अत्यंत संदेहास्पद है।

कुछ समय पूर्व डा० व्यूहलेर तथा ओझा जी ने अपनी ऐतिहासिक खोजों के आधार पर इस बात को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया था कि चंद वरदाई सम्राट् पृथ्वीराज के दरबारी कवि नहीं थे अपितु १६वीं शती मे इनका अस्तित्व माना जा सकता है। परन्तु रासा के प्रति एक विशेष मोह के कारण कुछ विद्वानों (डा० श्याम सुंदर दास तथा मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या आदि) ने इस मत का अनुमोदन नहीं किया। रासो के लघु सस्करण की पाण्डु लिपियों के अध्ययन से मेरा यह अनुमान है कि चंद वरदाई न तो पृथ्वीराज का समकालीन था और न ही लाहौर में उसका जन्म हुआ। अपितु वह दिल्ली के आस पास हिसार प्रदेश का निवासी एक साधारण चारण कवि था।

इस बात की पुष्टि के लिये रासो मे एक कवि कल्पित घटना है— "जत खम्भ भेदन' समारोह। यह समारोह सम्राट् पृथ्वीराज द्वारा अपने सामंतों की बल-परीक्षार्थ किया गया है। इस 'खम्भ" का भेदन अन्य प्रबल योद्धाओं के होते हुये एक धीर पुण्डीर नामक युवक से करवाया गया है। यह युवक देवी का अनन्य भक्त है। (कवि चंद भी देवी का अनन्य उपासक है)। इसी युवक ने शहाबुद्दीन गौरी को युद्ध मे जीवित पकड लाने की प्रतिज्ञा भी की। संक्षेपतः इस धीर पुण्डीर ने विधिपूर्वक देवी की आठ दिन तक पूजा करके शक्ति प्राप्त की और उस "खंभ" का छेदन भेदन किया। पृथ्वीराज ने प्रसन्न होकर इस युवक को "हिसार कोट" तथा हिसार कोट से सम्बंधित पांच हजार गांव और मुलतान प्रदेश का कुछ भाग पारितोषिक रूप मे दिया -

क—मुहम्म मुकाम सु हिसार कोट।

ख—पच हजार ग्राम सु स्थानम।

ग—गौ धीर घर गोपिनि मुलितानम।

यह युवक चन्द पुडीर नामक सामत का एक मात्र पुत्र है। ऐतिहासिक तथ्यो की खोज से यह ज्ञान नही हो सका कि यह चन्द पुण्डीर कौन है। इस चद पुण्डीर का पृथ्वीराज के मुख्य सामतो मे एक महत्वपूर्ण स्थान है। जयचद पृथ्वीराज युद्ध मे (सयोगिता हरण के समय) इस सामत की मत्यु हो जाने पर धीर पुण्डीर अपने पिता की पदवी ग्रहण करता हैं। रासो के प्रस्तुत सस्करण मे इस युवक को अधिकतर "चन्द पुत्त" लिखा है। और वह स्वय भी अपने आप को बडे अभिमान के साथ चन्द का पुत्र घोषित करता है —"हौ सुत चन्दह तनौ"

मेरे विचार मे उपर्युक्त चन्द पुण्डीर स्वय चद वरदाई है जिसने अपने नाम के साथ 'वरदाई" उपाधि जोड कर रासो की रचना की। यद्यपि इस चन्द वरदाई ने एक भाट होने के नाते कुल क्रमागत चारणी भाषा मे रासो की रचना की परन्तु फिर भी वह अपनी जन्म भूमि हिसार की स्थानीय बोल चाल की भाषा के प्रभाव को अपनी रचना मे दवा नही सका। चारणी भाषा तक सयत रहते हुए भी रासो मे हिसारी बोली का प्रभाव सवत्र पाया जाता है। जसे—

१ "तवरलत '=तब तक। "पाच हजार घाटि सौ ।

२ तेह रज्जे रपट्टे निझिल्ले, चपिए पानि ते मेरु ठिल्ले"।

रज्जे=रज गए-तप्त हुए। रपट्टे=रपट गए फिसल कर गिर पडे) इसी प्रकार ररले=रल गये, जा मिले। भल्ली=भली, सुदर। झल्ली= पगली। घणो=अधिक, तथा "जदिन" "तदिन" आदि शब्द ठेठ हिसार प्रांतीय बोल चाल की भाषा के हैं। इसके अतिरिक्त हिसार बोली मे प्रयुक्त सज्ञा तथा सवनामो का प्रयोग भी रासो म स्थान स्थान पर मिलता है। जैसे—

१ "पौंडी गुड मिट्ठो"। यह समस्त वाक्य ठेठ हिसारी बोली का है। वैसे भी "पौंडी" शब्द हासी हिसार प्रदेश मे गन्ना के लिये प्रयुक्त होता है और यह वहा का देशज शब्द है।

२ छगल' =जल एकत्रित करने के लिये एक भारी बतन।

३ "तै भुठ जो कन्नी"। यहा "त"=तूने, हिसार तथा बागर प्रदेश का प्रादेशिक सवनाम हैं। "कुन्नी"=कान मे धीरे से कहा, ठेठ हिसारी क्रिया है। इसी प्रकार हिसारी बोली का लहजा तथा देशज शब्द प्रस्तुत सस्करण मे सवत्र उपलब्ध होते हैं।

हिसार प्रदेश अविभाजित पजाब का (और अब विभाजित पजाब का भी है) एक जिला था, अथवा कवि समस्त पजाब मे घूमता होगा। अत पजाबी भाषा के शब्द भी पर्याप्त सख्या मे प्राप्त हुए है। यथा –'कप्पिउ ∠कप्पना–काटना सस्कृत कराप् छेदे), नप्पो∠नप्पना=पकडना, सद्दें=सद्दा देना बुला भेजना आदि। १६वी शताब्दी मे उर्दू का भी भारत मे पर्याप्त प्रचलन था। अत "मलूम" "फवज्ज" सेना, सहर=शहर, हूर, नूर, मुहम्मद, मुकाव आदि शब्दो की रासो मे पर्याप्त सख्या है।

उपर्युक्त कथन से ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द पुडीर नामक व्यक्ति ने "वरदाई" उपाधि धारण कर यश प्राप्ति के लिये तथा रासो के अन्तिम छन्द–"लोकवेद कीरति गमर" के अनुसार अपने भाट वश की ख्याति के लिए १६ वी शताब्दी के लगभग रासो (ल० स०) की रचना की होगी और यह चन्द हिसार निवासी था।

साहित्य लहरी में एक पद है :
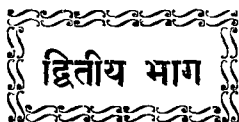
प्रथम ही प्रभु यज्ञ ते, भे प्रकट अद्भुत रूप,
ब्रह्मराय विचारि ब्रह्मा, राखु नाम अनूप।
पान पय देवी दियो शिव आदि सुर सुख पाय।
कह्यो दुर्गा पुन तेरो भयो, अति अधिकाय॥
परि पायन सुख के सूर, सहित अस्तुति कीन,
तासो वस प्रथम मे, भौ चन्द चारन बीन।
भूप पृथ्वीराज दीन्हे, तिन्ह ज्वाला देश।
तनय ताके चार कीनो प्रथम आप नरेश॥
दूसरे गुलचन्द, ता सुत, सील चन्द सरूप,
वीर चन्द प्रताप पूरन, भयो अद्भुत रूप।
रणथभौर हमीर भूपति, सग खेलत जाए,
तासु वस अनूप भौ, हरिचन्द अति विख्यात॥

आगरे रहि गोपाचल मे, रह्यौ ता सुत वीर,
पुत्र जनमे सात ताके, महा भट गभीर।
कृष्ण चन्द उदार चन्द, उदार चद सुभाइ,
बुद्धि चद प्रकाश चौथे, चद भे सुख दाई॥
देवचद प्रबोधचद, सुतचद ताको नाम,
भयो सप्तो नाम सूरजचद, मद निकाम॥

इस वश वृक्षावली के अनुसार सूरज चद को सूरदास समभ कर साहित्य लहरी को सूरदास की रचना समझा जाता है। और इसका च द बरदाई का वशज मान लिया गया है। परतु सूरदास जी की प्रसिद्धतम रचना सूर सागर म सूरजचद का कही नामोल्लेख नही मिलता। कई कारणो से जिनका यहा उल्लेख करना सम्भव नही। साहित्य लहरी की रचना सूरजचद भाट ने सवत १८५५ मे की हैं। क्योकि साहित्य लहरी के एक पद की टिप्पणी मे भाषा भूषण ग्रथ का उल्लेख हैं। और टिप्पणी रहित कोई भी साहित्य लहरी की पाण्डु लिपि प्राप्त नही हुई। भाषा भूषण ग्रथ की रचना स० १८५५ मे जसवत सिंह द्वारा हुई हैं। अत साहित्य लहरी का रचना काल भी यही हैं। इस पद के अनुसार सूरजचद च द बरदाई से छठी पीढी म बैठते हैं। हरिचद कोई "वीर सुत" गोपाचल तथा आगरा निवासी है। इस गोपाचल का वणन रासो के प्रस्तुत सस्करण मे भी मिलता है–'गुरावये गोपाचले' अत प्रतीत एसा होता है कि चद बरदाई सूरज चद से लगभग ढाई अथवा तीन सौ वर्ष पहले हुआ है। इस दृष्टि से भी च द का समय १६ वी शती के लगभग बठता है, और वह पजाब के हिसार का निवासी था, लाहौर का नही। लाहौर से च द बरदाई बरदाई का सम्बध जोडना क्लिष्ट कल्पना है। और न मालूम किस विद्वान ने यह कल्पना किस आधार पर घडी।

❀ इति शुभम ❀

द्वितीय भाग

पृथ्वीराज रासो

प्रथम खण्ड

ओं नमः

श्री कृष्णाय परमात्मने। जय जय देवेश।
छनजा मद गय घ्राण लुब्धा, अलिभोर आच्छादिता।
गुंजा हार विहार सार गुणजा, रुंजापया भासिता।
घमेजा श्रुति कुण्डला करि करा, उदार उदारया।
मोय पातु गणेश सेवित फल पृथ्वीराज काव्ये कृत ॥१॥
मुक्ताहार विहार सार सबुधा, अबुधा बुधा गोपिनी।
श्वेत चीर शरीर नीर गहरो, गौरी गुण योगिनी।
वीणा पाणि सुवाणिजा निदधिजा, हंसा रसा आसनी।
लम्बज्ना चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नाशिनी ॥२॥

छंद विराज

जटा जूट बंद । ललाटेय चंद।
भुजंगी गलेंद । शिरे माल लंद ॥३॥
मरोजाइ छंद । गिरीनाय नंद।
उगे मिंग नंद । शिगे गंग हंद ॥४॥
रणों वीर मंद । करी चर्म छंद।
जरे काल मंद । जय योगि मंद ॥५॥
प्रलेयंद जंद । हरे तंद मंद।
पचे अग्गि छंद । जरे काम तंद ॥६॥

जटा जाणि भद्द । वचे दूरि दद्द ।
नटे भेष रिंद । नमो ईश इंद्द ॥७॥
करे मच्छ रूप । मरे नार रूप ।
वधे सप धूप । धरे वेद रूप ॥८॥
धरा पिट्ठ तिट्ठ । कणाजे गरिट्ठ ।
जले धार दिट्ठ । नमो ते वसट्ठ ॥९॥
सुव देव ठाराह । रम्मे इलाह ।
शशी शेष राह । हिरण्यच्छ दाह ॥१०॥
प्रहल्लाद पीर । उठे षभ चीर ।
मृगाच्छस्य ऊर । नष तोरि चूर ॥११॥
बजे दद्ध पूर । छुकषी समूर ।
धपी भपी धूर । लटी लच्छी नूर ॥१२॥
स्तुती पाणि जूर । दया दद्धि पूर ।
नमो सिंह सूर । ॥१३॥
वलेराय अग्गे । छले भूमि मग्गे ।
लुके षभ लग्गे । मुरे वेद जग्गे ॥१४॥
ठगे रून ठग्गे । अजद्देव अग्गे ।
त्रिलोक त्रिडग्गे । नपे गग लग्गे ॥१५॥
सुलोके सुभग्गे । ।
पिता वच्च मान । हते गर्भ थान ।
सहस्र भुजान । रुधिरा धरान ॥१६॥
निछत्रि छितान । दई विप्र दान ।
हरे राम ज्ञान । सुराम समान ॥१७॥
रघुब्बीर राय । दया सुद्ध काम ।
सु वैदेहि राय । सुमित्रे सराय ॥१८॥
विश्वमित्र मप्प । परे दुख रप्प ।

मु पत्नी सहाय । तडिक्काति हाय ॥१८॥
पटी पच पत्ते । मृगे चाप हत्ते ।
रिछे वानराय । भये सो सहाय ॥२०॥
दधी सीमि आय । पपान तिराय ।
हनुमान रुद्री । सुमुद्दे सुवद्दी ॥२१॥
तिनै वीर हत्थ । सदेश सुकत्थ ।
जहा लक गड्ड । तहाँ वग वड्ड ॥२२॥
उहा सीय दिष्पी । हुती दुष्प सुष्पी ।
लिय मुद्रि ताम । मह दान राम ॥२३॥
दसानन आद । मये मेघनाद ।
कथा कुम्भ पूरे । भरे बाण भूरे ॥२४॥
मत सीय लभी । लिय काज सभी ।
त्रिकूट मनाये । निभीषन हाथे ॥२५॥
प्रसूने निमान । चढा वेगी यान ॥
अयोध्या सपत्ते । नमो राम मत्ते ॥२६॥

कृष्ण लीला वर्णन

वसुदेव अहनी । धरी कम वहनी ॥
लिय पाणि वद्धे । मनै दैव सद्दे ॥२७॥
जय जोगधारी । दिय दान भारी ।
रथ आप रूढे । सम कम मूढे ॥२८॥
अकामे सुवाणी । अवरणे सुज्ञानी ।
उठे पम्मा भारे । अपुत्त प्रहारे ॥२९॥
धर पाणी धये । सुपाले अरथे ।
इय गभ पुत्त । सुर हार दत्त ॥३०॥
मिला स्याम दिष्ण । भये दन कृष्ण ।
प्रथम्म सुभह । निधि पद्म अद्ध ॥३१॥

नच्छत्र सुरोही । बुध जन्म सोही ।
चतुर्बाहु चार । किरीटी सुहार ॥३२॥
सत पत्र नैण । श्रुति कुण्ड लैन ।
निय मुक्ति वासी । श्रय अविनासी ॥३३॥
मुखे मद हास । चतुर्वेद भास ।
भृगु लत्त गात । प्रभासी प्रभात ॥३४॥
मणि न्नील सीत । कटि प्पट्ट पीत ।
सदा लच्छि वासी । चरत्र निवासी ॥३५॥
स्वय ब्रह्म देही । निय नद गेही ।
विप पूतनाय । पिय धूतनाय ॥३६॥
सकट्ट प्रहार । ब्रज्ज म्मै विहार ।
तृणावर्त तानी । उदै आसमानी ॥३७॥
प्रभु ग्रीव लग्गे । तन ताम भग्गे ।
नवनीत चोर । किय गोप सोर ॥३८॥
गहि दाम पानी । यशोदा रिसानी ।
शिसू उप बध्यौ । किहू बध बध्यौ ॥३९॥
स्वय ब्रह्म लप्यौ । अचिज्ज सुपेप्यौ ।
लघू दिग्घ इद । कला की गुविंद ॥४०॥
ऋषि श्राप ताप । न लघूब श्राप ।
दिय देह दार । ब्रज ज्जाई धार ॥४१॥
ऋषि रोस त्रासी । मुकत्ति सुवासी ।
सुत जत्त राज । किय उद्ध काज ॥४२॥
द्रुम कृष्ण पची । परे ग्राम वची ।
स्तुती[1] वद्ध पान । पुरुष्य पुराण ॥४३॥
वरन्ने[2] अवासी । गृहे नन्द गासी ।

---

1 BK2 स्तुति । 2 BK2 वरन्ने ।

निते लोक पाल । ब्रज ज्वाल[1] जाल ॥४४॥
बक धेनु भारे । प्रलयै पच्छारे ।
मुरे व्याल काल । शिशू[2] बच्छ पाल ॥४५॥
काली उत्तवग[3] । किय[4] नृत्य रंग ।
ब्रज वारी[5] लोप । मधुम्मेघ[6] कोप ॥४६॥
परे ब्रज्ज धाई[7] । गिरे[8] धार न्हाई ।
नपै सैल सार । त्रिभगी त्रिमार ॥४७॥
पुलद्री[9] पुलान । बजे वा निमान[10] ।
निसा अन्न[11] घोर । किय गोपि सोर ॥४८॥
धरा[12] नील रैन[13] । तज्यो दैव सैन[14] ।
कच चक्र वेनी[15] । भमी भमर[16] सेनी ॥४९॥
श्रुति कुंडलीन । दुति काम लीन ।
चपे पुंडरीक । वपे मेघ लीक ॥५०॥
जसी मुक्ति[17] सारे । निसा मेघ तारे ।
धरा मुद्द[18] द्रव्य । करे देव वध्य ॥५१॥
रद छद मुद[19] । नग कोस नद[20] ।
ग्रीवा कंबु रेष । भुजा कीट[21] शेष ॥५२॥
वयन्नति[22] माल । उच्छारे सुलाल[23] ।
लिय[24] चेतसल्ल[25] । वने नाम[26] वल्ल ॥५३॥

---

1 BK2 जले जाल जाल । 2 BK2 शिशु । 3 BK2 उत्तमंग । 4 BK2 कीय । 5 BK1 वारी । 6 BK1 मेघ । 7 BK2 धाइ । 8 KK2 गारे धार धाइ । 9 BK2 पुलंदो । 10 BK2 निमन । 11 BK2 अन । 12 BK2 धरे । 13 BK2 रैन । 14 BK2 सेन । 15 BK2 वैनी । 16 BK1 भमर । 17 BK2 मुति । 18 BK2 सुध । 19 BK2 सुद । 20 BK2 नद । , 21 कीट । 22 BK2 वयनती माले । 23 BK2 सुलाले । 24 BK2 लीय । 25 BK2 सलं० । 26 BK2 नान कलं ।

जमोदा[1] जगाये । मृगे शृग चाये ।
जिते[2] ग्वाल मध्य । दधिप्पात[3] हथ्थ ॥५४॥
वनेना विरागी । मु गो वच्छ पारा ।
अगू कन्न[4] मु दे । दिय हरि मद्दे ॥५५॥
निय नेह चारी । हमै गोप भारी ।
मत पत्र पूत । अचिज्ज मद्दूत ॥५६॥
निय ताप गच्छे । हरे मच्च[5] वच्छे ।
रनय माम चित्त । धनो[6] धन्न दित्त ॥५७॥
निय नन्द पुत्त । मलान सुजुत्त ।
निय मोन कोप । वहा वच्छ गोप ॥५८॥
हरे ब्रह्म ग्यान[7] । पुरुष्प[8] पुराण ।
रचे कृष्ण सोची । तप तेम रोची ॥५९॥
तिनै रग नेह । अप अप्प गेह ।
तन शग चक्र । चतुबाहु वक्त्र ॥६०॥
पिय पट्ट वधे । सह ग्वाल नधे ।
अचिज्ज विहारी । नवो ब्रह्मचारी ॥६१॥
अभै लोक पाल । वियापै[9] सुकाल ।
स्तुति[10] ममुरारी । सु ब्रह्मा विचारी ॥६२॥

छद भुजगी

न रूप न रेप , न भेष न शापा ।
न चद्र न तारा , न भूमा न भापा ।
अविद्या न विद्या , न सिद्ध न साधी ।

---

1 BK जशोदा जगाये । 2 BK2 जित । 3 BK2 दधिपात । 4 BK2 कन सु दे । 5 BK2 सब । 6 BK2 धरन । 7 BK2 ज्ञान । 8 BK2 पुरुषं । 9 BK2 वियापं । 10 BK2 सुस्ती ।

तूही[1] ए तूही ए , तूही एक आदी ॥६३॥
अनभ न रभ , न दभ न दान।
न शत्रु[2] न मित्र , न जग्य[3] न ज्ञान।
न गेह न देह , न मुद्रा न माया।
न रुद्र न क्षुद्र , न तद्रूप आया ॥६४॥
न शील न गील , न ताप न छाया।
न गाहा न गीय , न श्रोता न माया।
न पच्छे न पाल[4] , अजाद न माद।
न तारी न वारी , न हारी न नाद ॥६५॥
निमेष न रेष , न भूरी न भारो।
न तू[5] ध्यान मान , न लग्गै[6] न तारो।
न लोक न सोक , न मोह न मोद ॥६६॥
तूहीं ए तूहीं ए , तूहीं एक सोद।
तहा[7] तू न तार , न दार न पार।
नय दट्ठ डिट्ठ , धरान धरान।
न ह जोति हस्त , न वस्त न रूप ॥६७॥
तहा[8] तू तहा तू , तहा तू पुरुष्प[9]।
प्रकृति प्रथम्म , तु त[10] तत्व चौई।
तह लम्भते[11] ता , सरोज सुसोई।
प्रलै अभ[12] अन्भ , जहाह निबोध।
तमा मोहि अज्ञा , सु सृष्टि समोध ॥६८॥

---

1 BK2 तू। 2 BK2 शत्र। 3 BK2 जग्य। 4 BK2 प्रति में "पालं" शब्द के पश्चात् ∠चिन्ह देकर "न वृद्ध न वाल" पाठ हाशिए पर लिखा है। परन्तु यह पाठ प्रति BK2 में नहीं है। 5 BK1 तू। 6 BK1 लग्गौ। 7 BK2 तहा। 8 BK2 तहा। 9 पुरुष। 10 BK2 तु ततत्व। 11 BK2 लम्भत। 12 BK2 अभ।

छंद शाटक

कि सम्मानम मेव देव रजिय, दुग्ग निकुत्माशय।
किं सुपानि दुपानि सेनित फल, आयास भूमीमय।
किं ईस न सुरेमन[1] ननु क्य, ब्रह्मा न ध्यान लह।
कि रत्न क्षितयाच्छित न कमल, बिंदू मदा विप्पय ॥६६॥

दोहा

नद किसोर किसोर मग, निशि पुर्यो[2] शशि अस्त।
ब्रह्मा अस्तुति ब्रह्म की, गोनि मिलै गुन वच्छ ॥७०॥
काली[3] उत्तमग । किय नृत्य रग।
ब्रन वारि लोप । महा मेघ कोप।
परि ब्रन धाई० ।

दोहा

छिद उद्दत मरद उद , मुद आनद अनद
नदन नद सुवृद ब्रन , वमी वस सुचद ॥७१॥
नव रवनी[4] सुधुनि सुनत[5] , श्रुति श्रुत[6] रुचि भेद।
निरपि निमेप विवेक विधि , असम सरन[7] मन पेद ॥७२॥

छंद नाराज

त्रिभगि[8] वसिय वर , श्रवन लगिगए वर।
रती रतेन[9] तेन , नीचती जहा मनोहर।
सु जत्र जत्र[10] धाम वाम[11] , काम कामिनी मन।

---

1 BK2 सुरेसन क्य ननु। 2 BK2 पुन्यो। 3 इस पाठ की प्रति BK2 में भी आवृत्ति हुई है। यहा पाठ देखो खण्ड 4 BK2 रमणा। 5 BK2 सुनित। 6 BK2 श्रुतिरिव। 7 BK2 सरण। 8 BK2 तृभनी वसीय लय। 9 BK2 रतेव तेव। 10 BK1 यत्र यत्र। 11 BK2 धाम।

तत तत सुरे सुरेसु , सुत्र[1] ज्यों मनि गान ॥७३॥
सुकुट्य मयूर चन्द्र , शीसय सुलप्पिय ।
सुगोपिका हि गोप[2] वाल , पाल सुमप्पिय[3] ।
पति व्रत सुधर्म धाम , भामनी सुभागय ।
आपत्ति इच्छ[4] इच्छिय , मपात कम्म लागय ॥७४॥
समोह मग्ग काम मग्ग , कामिनी वल्लप्पिय[5] ।
अमोह[6] मग्ग ओ अमग्ग , लोक नर्क जित्तिय ।
सुपत्ति मुपत्त छड्डि , धाम वाम मारगे ।
कहत वेद भेदयो[7] , अकज्ज विप्प मारगे ॥७५॥

गोप्योवाच, छंद नाराज

त्वमेव धर्म धर्मय , स्वधर्म धामय सुन ।
त्वमेव काम कामय , सुकाम कामिनी मन ॥
त्वमेव देह देहय , सदेह हंस हंसन ।
त्वमेव सर्व सवय , जु[8] सर्वदा सुभेदन ॥७६॥
त्वमेव लोक लज्ज भज्ज , भजन सदा हरी ।
त्वमेव सुप्प दुप्प सुप्प[9] , माधवे अहंकरी ।
त्वमेव दृष्ट[10] दिष्ट मुष्ट[11] मुष्ट रष्टय पती पते ।
त्वमेव सत्य सत्यवाद , गोपिका सह गते ॥७७॥

गाथा

इत्त सुताण गहण[12] , गिच्च पती[13] मिक हण कारणय ।
पत्ते पतग[14] दीवह , जय माधव माधवे देव ॥७८॥

---

1 BK1 सुन ज्योति मग्गन । 2 BK1 गोपि । 3 BK1 स भुप्पिय । 4 BK2 अपति इच्छि इच्छय । 5 BK1 कलप्पय । 6 BK2 मार्गों ओ अमोह लोक नक्क जत्तिय । 7 BK2 मेदयो । । 8 BK1 हु 9 BK2 सुप्पि । 10 BK2 इष्टं । 11 BK2 मुष्ट । 12 BK2 गृहण । 13 BK2 पत्ती । 14 BK2 पत्त ग यह माधवे देव । यहां, "दीवह जय" । धारा छूट गया ।

छंद त्रोटक

ततथे　ततथे　ततथे[1]　सुरय।
तत धुग मृदंग धुनि धरय[2]।
उघट त्रिघटा हरि विक्रमय।
भ्रमरी रम रीति अनुक्रमय॥७६॥
व्रज वल्लिनि[3] वल्लिनि अल्लिनिय।
इक इस्वति कन्ह विच व्रनय।
निज नित्य निवर्तित कन्ह मन।
द्रग पाल मिले कल कौतुकन॥८०॥
पुह पञ्जुलि[4] अजु सुर गगन।
वर बज्जत छंद निन घनय॥
निशि निर्मल चंद मयूख चय।
घन घंटिक[5] नूपुर हुहनय[6]॥८१॥
धरनीधर निर्त्तत[7] निद्धरय।
नव नाग कुली कुल सम्मरय।
षट मास निशा निन नृत्यतय।
तब गोविंद अन्तर ध्यान किय॥८२॥

दोहा

गच्छ गविग गोपिक मांह, कथ अरोहण[8] मग्गि।
द्रुम द्रुम वल्लिनि अल्लि मिलि, तौ हरी पुच्छे[10] अच्छि लग्गि॥८३॥

छंद मोतीय दाम

सुनि केरि कदम्बु[11] कइथ्थ करीली[12]।
।

---

1 BK2 थे। 2 BK1 दरय। 3 BK2 मे 'वल्लिनि" शब्द छूट गया। 4 BK1 पुह पञ्जली। 5 BK1 घंटि। 6 BK हन हनय। 7 BK1 नृतित। 8 BK2 अरोह। 9 BK2 त। 10 BK2 पुचे। 11 BK2 कम्ब। 12 BK2 करीला।

कर्तोंध्य केवट मोह।
करि कै सब ग्वारिनि, द्रु द्वै फिरि। } प्रक्षिप्त
एक परस्पर अप्पत }
करोंदिनि कान्ह, कहा कहों सोइ॥८४॥
सुनि स्सुनि शोक, समीर सुगय।
मधु ज निकु ज, निरप्पति रघ।
कहुँ[1] वल वधु, बिजारिनि जानि[2]।
कहुँ[3] वट हम, दिपावहु ध्यानि[4]॥८५॥
मुनौ तुम चपक, चद चकोर।
कही कहु[5] स्याम, सुनौ[6] पग मोर।
लही ललिता चन, लोचन चग।
कहौ कहु[7] कान्ह, जिहा[8] तुम सग[9]॥८६॥
क्रियो[10] हम मान, तज्यो उन सग।
सह्यो नहीं गर्ब, रह्यो नहीं रग।
दुरे अब ही इनि, कु जनि[11] माहि।
गए हौ कर कर, छीनि सुनाह[12]॥८७॥
चली मिलि पुच्छति, पच्छिनी भीर।
कुरग कुरगिनि, कोकिल कीर।
परी धर मुच्छि, गहै कर एक।
तिनै लगि[13] स्याम, उठै उठै[14] केन॥८८॥
लीभ्र लोभ्र सुधारस, सगि निवड्ढि[15]।
गहै दस मासनि, प्राणि निगड्ढि।
डिगे डिग चालि, गिरे[16] गिर धाई।

---

1 BK2 कहुँ। 2 BK2 जानि। 3 BK2 कहु। 4 BK2 ध्यान
5 BK2 कहु। 6 BK2 सुनै। 7 BK2 कहा। 8 BK2 जिहे। 9 BK2 सग। 10 BK2 कियो मान कियो उनमन्न हम सग। सह्यो नहीं गर्ब तज्यो हम सग। 11 BK2 कु जनि माह। 12 BK2 सुनाह। 13 BK2 लिगि। 14 BK2 उडे। 15 BK2 निवड्ढि। 16 BK2 गिरिधर धाइ।

गहै इक साहम , लेहि[1] उचाइ ।।८६।।
गइ जमुना जमु , जानि कै तीर ।
करे सब कामिनि , स्याम सरीर[2] ।
करे[3] तन पूतन , नृप सु श्राप ।
गहै कर कन्हर , कालीय साप ।।६०।।
धरै कर पच्छय , गोप[4] सहाय ।
परै जल[5] पार , तडित्त निहाय ।
धरै[5] त्रिय ध्यान न लग्गहि नैन ।
परे पति पत्र , सुनै श्रुति बैन ।।६१।।
कहै नाउ कृपा निधि , भक्त सहाइ ।
भयै[6] तहा आनि , प्रगट्ट दिखाइ ।
कियो फिरि रास , सु सुन्दर स्याम ।
बिचे बिच कन्ह[7] , बिचे बिच वाम ।।६२।।
भयो[8] श्रम अंग , कलिंदीय तीर ।
छिरक्कति स्याम , कहै भुज भीर ।
करि जल केलि , चरित्र सुजान[9] ।
लियो[10] दधि दुधू , त्रियानि पै दान[11] ।।६३।।
कियौ[12] रस रास , अकास प्रसून ।
अनदीय अंबर , अंबुज सून ।।६४।।

दोहा

वशी वट विश्राम किय, सुरभी गोप बुलाइ ।
मन वच्छित दीनौ सु तिनि, सुर सु दरि[13] सुष पाइ ।।६५।।

छंद विराज

मप विप्प भक्त , सुय स्याम पत्त ।

---

1 BK2 लैहि । 2 BK1 2 शरीर । 3 BK2 कर ।
4 BK2 गौप । 5 BK2 धारे । 6 BK2 भए तहा आनि प्रगटि दिषाय ।
7 BK2 कान्ह । 8 BK2 भय । 9 BK2 सुजान । 10 BK2 लयो ।
11 BK2 दान । 12 BK2 कियो । 13 BK2 सु दर ।

लिय ग्वाल सथ्थ , मघूनैर[1] तथ्थ ॥६६॥
सुनि योपि[2] कथ्थ । गृही नत्य पथ्थ ।
परी भुम्मि तथ्थ । मिलि[3] कृष्ण सथ्थ ।
ओच्चिचन्न सुकथ्थ । ।
ब्रज धाम धारी । सपत्ते बिहारी ॥६८॥
सुजे भड ओप । वृषव्भे[4] सकोप ।
किय केसि मद्द[*] । सुनि कस नद्द[5] ॥६६॥
मत मत्त सादी । धनुर्याग आदि ।
स्वय साल मडी । ब्रन साल दडी ॥१००॥
गयंदी सपूत । अक्रूर पवीत ।
कह कन्न[6] लग्ग । सम सोच भग्ग[7] ॥१०१॥
रथ हेम मज्जी । ।
सिर कीट रज्जौ[8] । उर माल पज्जौ[9] ॥१०२॥
नृप वच्च[10] मानी । यहै जीय ठानी ।
जहा नद रानी । तहा जाइ आनी ॥१०३॥
पिय पूत दीन । वसुदेव[11] ईन ।
सित स्याम गात । ब्रन ग्राम जात ॥१०४॥
अजदेव[12] अत्त ।
हृदे जह्न नह्न । लै[13] आयौ विवध ॥१०५॥
करौ मुभ्भ आय । तुरन्त तुमाय ।
रथ जाति जाय । चित चितिताय ॥१०६॥
भले भाग मात । हिदे[14] प्रीति रात ।
ब्रजे ब्रज्ज[15] मग्ग । अक्रूर सुलग्ग ॥१०७॥

---

1 BK2 नेरि । 2 BK1 योप । 3 BK2 मिल । 4 BK2 वृषभे । 5 BK2 निद्दं । 6 BK2 कन लग । 7 BK2 भर्ग । 8 BK2 रडौ । 9 BK2 पडौ । 10 BK2 वच । 11 BK2 वसदेव । 12 BK2 अजदेव आत्त । 13 BK2 लै । 14 BK2 हदे । 15 BK2 ब्रज ।

बने वृद् पथ्थ । सपत्त समथ्थ ।
चित चिह्न कृष्ण । मृगे तृष्ण दिष्ण ॥१०८॥
तल्यौ रथ्थ भूमि[1] । मिरे रेणु भूमी ।
धने वल्ली[2] वल्ली । चरित[3] मुरल्ली ॥१०९॥
धने दीह आज । धने विद्ध काज ।
धने वृच्छ भार । धने[4] पच्छि[5] सार ॥११०॥
धने गोप लच्छी । मुरारी सुवच्छी ।
उडी रेणु सभ्भ । अजुद्देव मभ्भ ॥१११॥
वृषब्भान पुत्ती[7] । गव दो दुहत्ती ।
कसु भीय चीर । तन हेम भीर ॥११२॥
कर हेम दोही । निकद्द सुसोही ।
सिरे[8] स्याम सेली । गऊ दोही सेली ॥११३॥
दिठी दिट्ठि लग्गी । तत[9] कठ भग्गी ।
निधी रक रासी । लही ब्रज्ज वासी[10] ॥११४॥
चरण्णस्य मड । मनो हेस दड ।
उठे कठ लाए । मधु म्माधु[11] पाए ॥११५॥
चले नेह गेह । जसोमत्ति[1] जेह ।
कहे सुष्प दुष्प । जदुद्देव[13] रुष्प ॥११६॥
असुधार नन्द । चरन्नस्य चन्द ।
कहे कस जेह । मह धर्म छेह ॥११७॥
उतप्पात[14] पत्ते । ब्रज लोक जित्ते ।
भय[15] सभ्भ मौज[16] । न्रं[17] भोग भोज ॥११८॥
रथ चार देष्यौ । गम्यौ गोप तोष्यौ[18] ।

---

1 BK2 भूरमी । 2 BK2 वल्लि वल्लि 3 BK2 चरश्र । 4 BK2 यह चरण इस प्रतिन स छूट गया । 5 BK2 पक्षा 6 BK2 लक्षा । 7 BK2 पुत्रा । 8 BK2 सिर । 9 BK2 उत । 10 BK वास । 11 BK2 माउु । 12 BK2 जसामात । 13 BK2 जद्दव । 14 BK2 उतप्पात । 15 BK2 भयां । 16 BK2 मौन । 17 BK2 कर । 18 BK1 सेप्यौ ।

विलप्यौ[1] सुमुग्यौ । दम्यौ[2] देह सुख्यौ[3] ॥११६॥
निसा[4] यग्य छडी । उव[5] चड चडी ।
रथ जोति न्त्र । विय वधु मत्त ॥१२०॥
दधि[6] ग्वाल अल्ली । सभे नद हल्ली ।
कियो वल्लभी चार । चाय विचार ॥१२१॥
मनी[7] चित्त पुत्ती । निरत्ति[8] निहार ।

दोहा[9]

अभिनव विरह विलप्पि त्रिय, दिष्पन नद कुमार ।
निरगुन[10] गुन[11] बधिय सकल, शुभ[12] पेष्विय परिहार ॥१२२॥
टग टग नयन सुमग्ग मग्ग, विमग सुमुल्लिय भग ।
रथ हित मुहित मुस्याम सम, चित्त लिय जनु सग ॥१२३॥
व्रन[13]जन हीय नहीं कुशल हुव, जसु तन कुशल न धाम ।
विच्छु[14]रत नद कुमार[15] वर, मभ[16] भये धाम निधाम ॥१२४॥

छंद विराज

व्रज नाभि नैनी । चित चाप वैनी ।
जमू नीय कूले । चित चाप वेनी ॥१२५॥
अय[17] क्रूर न्हान । रथगू विहान ।
चित्त चित्त चढ्ढी[18] । दिपे बाल वढ्ढी[19] ॥१२६॥
वधे एम वस । लगै[20] दोष वस ।
जल केलि ज्ञान । लपे कृष्ण ध्यान ॥१२७॥
रह्यो जोति साई[21] । भये भेष धाई ।
चतुर्बाहु चार । किरीटी सुहार ॥१२८॥

---

1 BK2 विलप्यौ सुमृप्यौ । 2 BK2 दम्यो । 3 BK2 सुप्यौ । 4 BK2 निशा । 5 BK2 उठ । 6 BK2 दधी । 7 BK2 मनो । 8 BK2 निरति । 9 BK2 दूहा । 10 BK2 तिरगुन 11 BK2 गुण 12 BK2 विपक्षिय । 13 व्रज ही कुपल न कुशल हुव । 14 BK2 विच्छुरन । 15 BK2 कुमार विरु । 16 BK2 सव । 17 BK2 अय । 18 BK2 वद्दो । 19 BK2 वद्दा 20 BK2 लैगै । 21 BK सरइ ।

पिय कट्टी[1] पट्टी । गदा चक्र ठट्टी[2] ।
निय जानि[3] कव । मनन्नेम[4] श्र व ॥१२६॥
शिर[5] सेप साई[6] । सुलच्छी सहाई[7] ।
हसे देपि सुप्प । हरे पुव्व दुप्प ॥१३०॥
ग्रहो धीर भूप[8] । धरयौ[9] कौनु रूप[10] ।
कला कस केही । निय ब्रह्म देही ॥१३१॥
गयो[11] चित्त वीर । रथ[12] पानि तीर ।
चले क्रूर सग । हरे रास[13] रग ॥१३२॥
मथ्रनैर[14] दिष्ठ । नृप[15] स्याम तिष्ठ ।

दोहा

वारी विद्रुम द्रुम द्रिगनि[16], लगि चवि नद कुमार[17] ।
मनु विकास फुल्लिय कुसुम, इम कवि चद उचार ॥१३३॥

छद भुजगी

कहू बागवारा निहारे विहारे ।
कहू कोइला बोल सोई सहारे ।
मनो लाल पेरोज एक्त जोरे ।
किधु रत्न सु कनक मिलि कज कोरे ॥१३४A॥
कहू जाइ जमीरि ताल तमाल ।
कहू मालती सेवती पुप्प जाल ।
कहू वन्नरा[18] केलि कूदत[19] जोर ।

---

1 BK2 केट्टी BK3 केही । BK2 ठट्टी । 2 BK3 उट्टी । 3 BK2 यानि BK3 यानि । 4 BK2 सजन्नेव । 5 BK1 शर BK2 शिर । 6 BK2 शाई, BK3 शाई । 7 BK2 सरइ BK3 ससहाई । 8 BK2 भूप BK3 भूप । 9 BK2 धर्यौ, BK3 धयौ । 10 BK2 रुव । 11 BK1 गयो BK2 गये । 12 BK2 रथ । 13 BK2 राम । 14 BK2 मथुने BK3 मथुरनैर । 15 BK2 सुप, BK3 सुप । 16 BK1 द्रगनि । 17 BK2 कुवार BK3 कुआर । 18 BK2 वन्नर । 19 BK2 कूरलट योर, BK3 कुरलंत योर ।

कह् वग्ग पप्पीह् मोमत[1] सोर ॥१२४B॥
कह् मोर सावल्ल तावोल[2] पडे।
कह् दाप विज्जौर हालति[3] मडे॥
कह् नाग[4] वल्ली कह् फुल्ल भाय।
कह् मालती माल हाल्लति[5] वाय ॥१२५॥
कह् केतकी कुज[6] अरु वेल फुल्ल[7]।
कह् पूव गुल्लाव[8] केलाति हल्ल।
कह् मौर[9] झिंगोर लाग सुहाय।
इमी[10] भार अट्ठार वृच्छ सुहाय ॥१२६॥

॥ इति वन[11] वाटिका वर्णनम् ॥

अथ नगर वाटिका वर्णनम

कह् अ व विद्रुम्म[12] साधर्म्म छाय[13]।
कह्[14] वृत्त बट्ट[15] सुहट्ट सुहाय[16]।
कह् केलि कोकिल्ल कल[17] भाव मीन[18]।
कह् कीर कप्पोत कुह्कत[19] भीन ॥१२७॥
कह् विज्ज[20] विज्जौर[21] पीयूष भार।
लुठे भूमि[22] झुम्मे[23] मनौ[24] हेम नार।
कह् दाडिमी सुर[25] चाचानि[26] चपै[27]।

---

1 BK2 सोहंति। 2 BK2 तंवोल। 3 BK2 हेलंदि। 4 BK2 नारी येल्ली सुपुल्ली सुहाय। 5 BK2 हालंति। 6 BK2 कुज। 7 BK2 फुल। 8 BK2 गुल्लीव केली। 9 BK2 चोर मिरमौर। 10 यह समस्त चरण प्रात BK2, BK3 में छूट गया। 11 BK2 यह वाक्य प्रति BK2 में नहीं मिला। 12 BK2 विद्रम। 13 BK2 छाया। 14 BK2 कहो। 15 BK2 यद सुहट। 16 BK2 सुहाया। 17 BK2 "कले भाव" छुट गया। 18 BK2 मींवं। 19 BK2 सो बोल BK3 सा बोल। 20 BK3 विज्जं। 21 BK2 विज्जौ। 22 BK2 सुम्मि। 23 BK2 झुमे, BK3 झुम्मौं। 24 BK2 BK3 मनो। 25 BK2 BK3 सूर। 26 BK2 चामि। 27 BK3 चापै।

मनो[1] लाल माणिक्क पेरोज थप्पे[2] ॥१३८॥
कह सेव नैन किरन[3] कलाप।
कह पपि[4] पारेव सारो आलाप।
कह नींब नालेर[5] केली पजूर।
कह ताल तुग सुचग सुन्दर[6] ॥१३९॥
कह काम लप्पै सुदप्पै[7] विहार[8]।
कह ग्राम रम्मै वसत अपार।
कह चाप चपी र कपी सुवात।
कह जाम जभीर गभीर गात[9] ॥१४०॥
कह नाग वल्लीनि गल्ली निनेम[10]।
कह मालती[11] टोरि[12] भूरि सुवेस।
कह पडुरी डार छीपे विहार।
कह सेवती सेव कूजै[13] निहार ॥१४१॥
कह अप्परोट निहट्टे[14] ति वेली।
कह वस्त्र वदाम[15] कादम भेली।
कह केतकी[16] कोरि[17] वेली निकस्से।
कह वस विश्राम कठी विकस्से ॥१४२॥
कह चोर चन्द्रा[18] सुपपी पुकार।
कह मोर टोर[19] सुहार[20] विहार।
कह सारस[21] सारग सुभ्भ सोर।

---

1 BK2 BK3 मनो। 2 BK2 थप्पो BK3 थथ्थे। 3 BK3 किरस। 4 BK1 पष। 5 BK2 BK3 पजूरी। 6 BK सुपार। 7 BK3 सुमप्पे। 8 BK2 BK3 निहार। 9 BK3 गात। 10 BK1 निदस। 11 BK3 मालानि। 12 BK1 टोर BK2 टोरा। 13 BK2 कूजे। 14 BK2 निकस्से। 15 वदाम कादम। 16 BK3 कतुकि। 17 BK2 केरि। 18 BK2 चद्री। 19 BK2 BK3 ेर। 20 BK2 र देर। BK3 महरे। 21 BK2 BK3 स्सारसी सारग सो राम।

मनौं[1] पानमा मञ्झि सादूल रोर[2] ॥१४३॥

पह सिपटी[3] पड वन पड फुल्ली।
कद लम्भ[4] लौंगी रहै बेली भुल्ली।
इमे स्याम श्रीराम[5] अक्रूर कूली।
जहा कूबरी रूप पिप्पति[6] भूली ॥१४४॥

दये मालिया आनि सो दाम दाम।
भये[7] रजक मै हाल[8] सो सुने[9] वाम।
रची मटली[10] गोप ब्रन लोक वास।
गने[11] उग्य साला जहा धनुप त्राम ॥१४५॥

दोहा

धनुप[12] भा किन्नौ सु प्रभु, भूत भजी स्वह तोस।
विमल लोक मधुपुरी पुरीय, सहसित स्याम[13] सुदीस ॥१४६॥
मधु रिपु मधु रितु[14] मधुर सुप, मधु मगत[15] कति[16] गोप।
मधु रति मधु पुरि[17] महल[18] सुप, मधुरित नीतन[19] ओप ॥१४७॥
गोपति[20] गोप निरपि गुरु, गोधन गुन[21] निस्तार।
गो रुचि गो पति गुपित मन, रुचि[22] रोचन भरियार ॥१४८॥

छद नोटक

तवि थाल तियाल[23] तियाप तिय।

---

1 BK2 BK3 मनो पम्व से पट्टि। 2 BK1 घोर। 3 BK2 BK3 मापद्धनि पूरनो। 4 BK2 BK3 लम्ब लौं रही येलो मूल्नी। 5 BK2 BK3 येवि भद्र। 6 BK3 पिप्पवि। 7 BK1 मए। 8 BK3 मेहाल। 9 BK2 सुन BK1 सुरन। 10 BK3 मन्न। 11 BK3 BK3 गए। 12 BK1 धनु। 13 BK स्याम। 14 BK1 ऋतु। 15 BK3 मगत। 16 BK2 "कवि" छूट गया। 17 BK2 पुर। 18 BK2 महिल। 19 BK1 नैमनि। 20 BK3 गौर। 21 BK2 BK3 गुन्न। 22 BK2 BK3 रचिरराचन। 23 BK2 तियाला।

॥१६१॥

छंद

रम्मै[1] रासल्ल वानत[2] भूल्न, हस्त[3] निठुल्ल गयन[4] हूल।
नाक नुं[5] जल्ल नल्न विहल छवि हमल्न जू जल्ल ॥१६२।

दोहा

हहकारिग[6] भल्लनि सुभट[7], दल पल नेवल[8] वीर।
सुर नर नाग निरप्पि[1] वर, भई[9] कुतूहल भीर ॥१६३॥

छंद रसाला

उत[10] मल्ल भिरी । इत धारा[11] धरी।
हाइ[12] हाइ क्करी । धाइ वज्जी घरी ॥१६४॥
जु गन[13] गह्यो धरी । जानि मत्तो[14] करी।
मम फट्टे नरी[15] । घम्मधम्मा[16] धरी ॥१६५॥
मल्ल हल्ले[17] हरी । चार[18] सेद[19] झरी।
मेघ लग्यौ [20] गिरि । हिय[21] तक्कौ तरी ॥१६५॥
हैम[22] कठे[23] ठरी । प्रान पच्चे परी।
डोरि थक्के[24] थरी । श्रोन उन्न हरी ॥१६७॥

---

1 BK2 रमै। 2 BK2 वानते भूल हास्ति व विहूल। 3 BK3 हासि विकल। 4 BK[1] गय्य। 5 BK2 BK3 यूव जल्हे गल वल्जा छुत्ति हसल्ले कनि वहल्ल जू जल्न। 6 हहकारेग, BK1 हल हकारिग। 7 BK3 सुभर। 8 BK [3] वलि दिग्वल। 9 BK2 भइ। 10 BK2 उत्ति BK3 लत्ति। 11 BK[1] धारी। 12 BK2 होइ होइ। 13 BK2 गन महोधरी, BK3 गज गहोधरी। 14 BK2 मत्ते। 15 BK1 फरी। 16 BK2 धेम धेम। 17 BK2 झले। 18 BK[1] चर्यौ। 19 BK2 स्वेदे। 20 BK2 BK3 लगौ। 21 BK2 BK[3] हिय तकौ। 22 BK1 हिम। 3 BK2 BK3 कटे टरी। 24 BK[3] जरिघ कैथरा।

भूरि भूम्मी[1] हरी । मुष्टि चुक्क छुरी[2] ।
राम काम सरी । मल्ल भूमी परी[3] ॥१६८॥
कंस त्रास टरी । मच[4] मुक्कै मरी ।
धाइ ज्यौं[5] दरी । केश पचै करी ॥१६९॥

दूहा

रिस लोचन रत्त किय, रत[6] अवर व्रज पाल ।
रति रत कम उत्तसि सिप, केस[7] पचित जनु[8] काल ॥१७०॥

अडिल्ल

मल्ल मारी[9] पज्झारित[10] कसहि ।
वध वहे रिपु के रिपु नसहि ।
जो सिप[11] सिद्ध पत्ति पति[12] छडिय ।
उग्रसेन छत्रिय[13] तिर मडिय ॥१७१॥
जनम धाम[14] वसुदेव देवकिय ।
किय[15] पय पान प्रसन्न श्रम किय ।
विप्र दान गृह गान सुमडिय ।
तव कवि चद इद[16] सुप मटिय ॥१७२॥

दोहा

मधु मडित पुरिय मधु, मधु माथुर सुप योग ।
कवित्त रचौं[17] कछ स्वामी को, कह्यौ दसम कछ भोग[18] ॥173॥

---

1 BK2 BK3 भूमी । 2 BK छुरि BK3 छरी । 3 BK1 मरी । 4 BK2 BK3 मच्च । 5 BK2 जद्यौ BK जधौ । 6 BK1 'रत' शब्द के पश्चात "भुंमि" अधिक है । 7 BK2 BK3 किस । 8 BK2 BK3 जन । 9 BK2 BK3 मरि । 10 BK3 पच्छरिड । 11 BK3 सिद्ध पुत्ति पत्ति छडिय । 12 BK2 पुत्तिय । 13 BK2 BK3 छत्रह । 14 BK3 ध्याम । 15 BK3 की पपि पान प्रसनं सकीस BK2 कीय पान प्रमन । 16 BK3 पिंद । 17 BK2 BK3 रम्मौ स्वामि कै, "कछु" दोनों में छूट गया । 18 BK2 भोगु ।

क्रिय मत्य युग्ग । कलि[1] कराल भग्ग ।
कृत[2] मत्य भूप[3] । नमो तास रूप ॥१६२॥
कह्यौ[4] एम मुल्लाल । माली कवित्त ।
जिनै उच्चरी बुद्धि[5] । गंगा पवित्त ॥१६३॥
गिरा शेष वाणी । कवि कान्ति[6] वदे[7] ।
[नाम[8] वप्पाणन चद छदे] प्रक्षिप्त ॥१६४॥
प्रथम्म भुजगी । सुधारी गृहन्न[9] ।
जिन्नै[10] नाम एक । अनेक कहन्न[11] ॥१६५॥
दुति लम्भ[12] वदे । मग्गा-त्ता[13] जीन तेस ।
जिनै[14] विस्र राप्यौ । वली मत्त[15] सेस ॥१६६
त्रीती भारथी[16] व्यास । भारथ्थ भाप्यौ ।
जिनै उत्ति पारथ्थ । सारथ्थ साप्यौ ॥१६७॥
चवै सुक्क[17] देव । परिच्छित[18] राय ।
जिनै उद्धरै[19] सब्ब, । कुरुवस राय ॥१६८॥
नले रूप पचम्म । श्री हर्ष सार ।
नल[20] राज चरित । सुकठ रसहार ॥१६९॥
छठ[21] काली दास । छभाषा समुद्द[22] ।

---

1 BK2 BK3 कलि काल । 2 BK2 कत BK3 वान सत्य रूप । 3 BK2 नूप । 4 BK2 BK3 में 'कह्यो एम' पर्यात छूट गया । 5 BK2 बुद्ध । 6 BK2 कावि । 7 इस पद से आगे BK में पुरपति वाणी महाकव्वि-चंदे पाठ अधिक है । 8 BK2 BK3 में यह समस्त चरण नहीं है । 9 BK2 मेन । 10 BK2 जिने । 11 BK2 मेन । 12 BK2 लम्य । 13 BK2 में या चरण छूट गया । 14 BK1 जियै । 15 BK3 मति 16 BK3 तृति भारती । 17 BK2 सूक देव । 18 BK2 परिच्छत । 19 BK2 उधरै । 20 BK2 नलैराय कठ नैपध हार BK3 नले राय किय कठ नैषद्ध हार । 21 BK2 छुठे BK3 छुठै । 22 BK2 समुद BK3 समद्द ।

[अनेक[1] अगे अन्न । हूए अनह] ॥१६६॥
मत दण्ड[2] माली । सुलाली कवित्त ।
जिनै बुद्धिता रग । गगा पवित्त ॥२००॥
कवि[3] एम रच्यौ । जु अग्गे सुनदे ।
तिनहु[4] पुच्छि कै [कच्छु] कवि चद छदे ॥
(प्रथम खण्ड समाप्त)

यहाँ प्रथम खड समाप्ति सूचक पुष्पिका तीनों प्रतियों में नहीं दी गइ।

1 BK यह समस्त पाठ प्रति BK2 BK3 में नहीं। 2 BK[3] दण्ड। 3 BK2 में यह समस्त पाठ छूट गया, BK3 म कवि एम न चद छद तक आयें है। 4 BK2 तिनैहि।

द्वितीय खण्ड

(वंशोत्पत्ति वर्णन)

छंद पद्धड़ी

अज्ञान जग्य[1] ऊपन्न[2] सूर ।
मानिक्क[3] राइ चहुवान मूर ।
जिहि अगराजन अनेव[3] ।
कलि अल्प भाव किन्निय अछेव ॥ १ ॥
धर्माधिराज रति भोग जोग[4] ।
पटु[5] पड पच्चि पग्गह[6] ति भोग ।
तिहि तनय[7] भयौ[8] वीसल मदध ।
सो पाप रत्त दन्बौनि[8B] अध ॥ २ ॥
वामध अध सुमयौ[9] न वाल ।
हक अहक जोरि गिरि इक्क माल ।
धन मदन सदन गिरि इक्क माल ।
तिहि परत उठ्यौ[10] कृत्या कदम्म[11] ॥ ३ ॥
कृत्या वदम्म[12] उर असुर रज्ज ।
धर ढुट नाम दानव रपज्ज ।
जुग जोग नैरि जुगनि[13] सुथान ।
पुज्जइ सु आनि उग्गत विहान ॥ ४ ॥
रथ चारि चक्र उत्तग वाहु ॥

---

1 BK[1] जगा । 2 उत्पन्नो । 3 BK[3] मानिर । 3 BK2 BK3 अनेय ।
4 BK2 योग । 5 BK2 पढि BK3 पडि । । 6 BK2 BK3 पगह ।
7 BK2 BK[3] तनै । 8 BK2 BK[3] भयो । 8B BK3 दब्बानि । 9 BK2 सुभयो । 10 BK2 उब्यो, BK[1] उम्रौ । 11 BK[1] कदम्मा ।
12 BK2 वदम, 13 BK[1] जोगिनि ।

असि असिय[1] हथ्थ मुपि अग्गि दाहु।
सभरि भर धरन हियँ[2] ठार।
पुक्कारयौ नर तह[3] जाउ जाउ ॥ ५ ॥

अडिल्ल

सभरि सूर श्रवन्नह सभरि।
पथ प्रजाय सुरे[4] रसज वरि।
रम्य अरम्य करी सु धरन्निय[5]।
रहे भट काट सुफोट करन्निय[6] ॥ ६ ॥

दोहा

गो[7] रावल रण[8] थभ गिरि, सारग साचौ राह।
प्रजा पुलदी महम घर, आनल[9] भग्गौ राह ॥ ७ ॥

छद भुजगी

गृह गौरि जम्यो[10] सु आनल्ल राजा।
घमे देश ग्राम दूनी छत्र साजा।
तहा सभरी बात मुक्के सुनित्त[12]।
धरै ध्यान देपे अजम्मेरि[13] चित्त ॥८॥
चला सच्छ सीपैं, महामन्ल तीर।
गमै मग्ग आमग्ग, सो मत्ति[14] धीर॥
।
॥ ६ ॥

---

1 BK3 आसिय, 'BK1 आसि। 2 BK2 हिय ठातु, BK3 हिय ठरसु। 3 BK2, BK3 में "तह" छूट गया। 4 BK3 सुर। 5 BK2 BK3 धरनिय। 6 BK2 करनिय, BK3 कर निज। 7 BK3 गौ। 8 BK3 रन। 9 BK थाल लग्न भयौ, BK3 पन्ना नीएं है। 10 BK1 जयौ। 11 BK1 थाल। 12 BK1 सुमित्त। 13 BK3 घजमेरि। 14 BK2 मत्तधार।

छद साटक

राजा—नो दालिद्र,[1] न कुष्ट रुष्ट तनया[2], शत्रु मे धर हर।
नो[3] नारिय वियोग, दैव[4] विपदा, नो[5] भामित नो नर।
नो सन्मानस रुष्ट निष्ट जगत, विश्वामितो सगुर।
नो[6] मत्ता न सुगध रग सरसा, नालिंगिता सुदरी।

दोहा

नो दालिद्र न कुष्ट तन, न जन सुग्ध रस भेव।
न श्रन रत्त ससार सुप, तू परमेसर[7] सेव ॥२१॥

छन्द त्रोटक

सु प्रसन्न[8] देपि दाइत्त[9] मन।
नर रूप धर न कियौ[10] सुमन।
तव पुत्रह[11] पौत्र वधू उरण।
मनु मानस राज कर धरण ॥२२॥
असि[12] हथ्थ लिये असमान गयौ[13]।
सोई[14] टोडर कदल ही जुठयौ[15]।
तिहि पूजन कौ रनिवार कियौ[16]।
चहुआन सुआन हि राज दियौ[17] ॥२३॥

छन्द पद्धडी

आना नरिंद अजमेरि वासि[18]।

---

1 BK2 दलिद्र। 2 BK2 तन सामत्रानय धरा हर। BK3 नो दालिद्र " से वियोग—तक पन्ना जीर्ण है। 3 BK2 न। 4 BK3 देव। 5 BK3 न। 6 BK3 न, BK2 न माता न सूयग र ग सरिसा। 7 BK परमे BK3 पर मरतौ। 8 BK2, BK3 प्रसन्नो। 9 BK2 BK3 दैयत। 10 BK2 BK3 कीयो। 11 BK2 पुत्र। 12 BK2 BK3 असिय हथ लावे। 13 BK2 BK3 गयो। 14 BK2 BK3 सो। 15 BK2 गायो, BK3 जुठयो। 16 BK2 BK3 कियो। 17 BK2 BK3 दियो 18 BK1 वसि।

मभरि सुकीय सोवन्न रासि[1] ।
ग्रामाणि ग्राम तोरण उत्तग ।
घन[2] घाट वाट निधि रस सुरग ॥७४॥

पसु पंषि सद्द श्रुति मडलेस ।
जल ध्यान ग्यान विग्रह सुदेस[3] ।
आरम्य रम्य कीनी सु लोय[4] ।
दालिद्द दीन दीसै न कोय[5] ॥७५॥

तिहि तनै भयौ[6] जै सिंघ देव ।
निधि लई[7] वीर वीसल धनेव ।
सब दई देवता विप्र हस्त[8] ।
भटार धरी धर धर्म[9] वस्त ॥७६॥

तिहि तनै भयौ[10] आनन्द मेव ।
वाराह रूप दिप्यौ[11] सुदेव ।
धरनी विहार आकास सद्द ।
मडें सुराय पुहकर प्रसद्द ॥७७॥

सौ वरस रान पति[12] छ त कीन ।
छिति छत्र सोम पुत्र हि सुदीन ।
आनद रान नदन सुमोस[13] ।
मोरे दलिद्द तिनि कियो होम ॥७८॥

---

1 BK2 BK3 रास । 2 BK2, BK3 समस्त चरण स्थान में "घनवटहि निधि पुरग" पाठ है । 3 BK2 BK3 सुदेश । 4 BK2 BK3 सुलोइय । 5 BK1 कोइ । 6 BK2 भयो । 7 BK2 BK3 लीई । 8 BK3 हस्त । 9 BK3 धर्म—मेव—तक खण्डित 10 BK2 भयो । 11 BK2 BK3 दिप्यो । 12 BK2 BK3 पत । 13 BK2 BK3 सुमोसा ।

नइरा[1] पुर सर लगी व्योम[2]।
आनद केलि[3] अजमेरि भौमि [भौनि]
।
॥२६॥

दोहा

सोमेसुर[3] तौंवरि घरनि, अनगपाल पुत्तीय।
तिहि[4] गर्भ पृथिराज धरि, दान कुली[5] छत्तीय ॥३०॥
विक्रम राज सरीर भौ, बुधि वदन कवि चद।
भूत भविष्यत वर्तमान, कह्यो[6] अनूपम छद।
जिहि सुहाइ असुरति सुभट[7], सत सामतर[8] सूर।
तिहि कित्ति[9] प्रगट्ट करन[10], कह्यो[11] चद कवि मूर[12]॥३२॥
छद प्रबध कवित्त रस, शाटक गाह दु अथ्थ।
लहु गुर मडित पढिय[13], पिंगल भरह भरथ्थ[14] ॥३३॥
सहस सत्त नप सिप सरस, आदि अ त सुनि नेपु।
घटि वढि मत्तहि को पढै, दूषन मुहि न विशेप ॥३४॥

शाटक

राज जा अजमेरि केलि कलय[15] वृ द नृत[16] सु दरी।
दुद्धारा घर भार नीर वहनो, दहनोपि दुर्ग[17] अरी।
सो सोमेस्वर नद दग[18] गहिला, वहिला वन वासिन।

---

1 BK2 BK1 नइ। 2 BK2 BK3 धौम। 3 BK1 केसि। 3 BK1 सोमेसर। 4 BK1 तिह्यो। 5 BK2 BK3 कुल। 6 BK1 कह्यौ। 7 BK2 BK3 सुभट्ट। 8 BK1 सावत। 9 BK3 सुकित्ति। 10 BK1 करण। 11 BK3 कह्यो। 12 BK3 मूर। 13 BK3 पढिया। 14 BK भरथ। 15 BK1 कलहा। 16 BK1 नत। 17 BK1 दुर्गं BK3 दुर्गा। 18 BK2 BK3 द गहिला, 'वहिला' शब्द BK2 म छूट गया।

निर्मान निधिना सुजानि कनिना, दिल्ली पुर वासिन ॥३५॥

दोहा

पट्टु आपेटक रनन महा, मुरस्थल थान।
नागोरै[1] गम्चे गुनहि, मति निर्मल परधान[2] ॥३६॥
इहि[3] आचार आपेट नृप, पति पुर पट्टु[4] पास।
पाहल पक्व[5] पपान में, सपैच्यौ[6] कैवास[7] ॥३७॥
उरधागुल[8] मत[9] त्रिसठि, तिर्यक्कह[10] चवसट्टि[11]।
तह अच्छर निर्म्यो सु इम[12], सर महि द्रव्य अदिट्ठ ॥३८॥
वचि विचारि सुमत्र यह, सर महि सप्पिय छाह।
छडिय[13]मडि सु[14]अ गुलह, द्रव्य निरप्पिय ताह[15]॥३९॥
थान[16] निरप्पिय रान जदि, अच्छर द्रव्य सु अथ्य।
सवै[17] सूर सावत यदि निशि रष्पहु इह सथ्य ॥४०॥

कवित्त

सथ्थ तथ्य निशि रष्पि[18] दीप, वासर गृह थानह।
अवर सव्व सावत कीयो[19], पार सवे रामह।
रैनि मध्य निन चद जग्गि, मावत सामि[20] मह।
नित सयल हुव सेन पतिन, मभ राज द्रव्य थह।
पोदत[21] पुरस एकह प्रकट, सिला घात सत्तह समय।
तह[22] सुभय अक्कु लिख्यो[23] सु, पर वचि राज कैवास तथ ॥४१॥

---

1 BK3 नागौरै। 2 BK3 परधान। 3 BK1 इह, BK3 इति। 4 BK2 BK3 पट्ट। 5 BK2 BK3 पकपयान। 6 BK2 सपेय्यो BK3 सपय्यो। 7 BK2 BK3 के वास। 8 BK2 BK3 उरध अगुल। 9 BK1 सन। 10 BK1 तिरन। 11 BK3 'गद्दे' अधिक है। 12 BK1 इह। 13 BK3 छडिय छूट गया। 14 BK2 BK3 सु। 15 BK2 BK3 तह। 16 BK2 थान निरपिय। 17 BK2 सारे। 18 रेषि। 19 BK2 BK3 कीय। 20 BK2 BK3 स्वामि। 21 BK3 पोदतु परस। 22 BK2 सह। 23 BK1 लिप्यौ।

दोहा

साक सविक्कम एक दह, त्रीम सु अट्ठ[1] सपत्त[2]।
चहुवान नृप सोम सुत, पिरथीराज[3] निमित्त[4] ॥४२॥

कवित्त

वचि राज कैंवास सोइ, यतर सिल नीलह[5]।
द्रव्य ताम उहरिय तेर[6], कर हासे[7] तीनह।
एकादस गन पूरि पथ, सभरि पुर थानह[8]।
वासर सत सक्रमिग, भरिग, भडार विधाह[9]।
सचरिग राज मृगया बहुरि, पुर[10]पट्ट पारस रमन।
कर पत्र[11] आइ दिद्धो तहा, राज दूत भियौ सुजन ॥४३॥

दोहा

दिय पत्री कैंवास[12] कर, अनग पाल कहि दूत।
नर बचै सावत सौ, अच्छर निमित्त[13] अभूत ॥४४॥

साटक

स्वस्ति श्री अजमेरि[14] द्रोन दुरग[15], राजाधिपो राजन।
पुत्री पुत्र पवित्र ध्यायत[16] धनो, छत्री सव[17] साधन।
मा पृथ्याय भव तपस्वि सरन, पत्री निमित्त तन।
आभूमीय हय गय सु सकल, तावार्पित सपद ॥४५॥

दोहा

वाचि पत्री कैंवास नृप, सदि सावत सुसत[18]।
आइ दूत दिल्ली हु तै[19], सुवर विचारहु वत्त ॥४६॥

---

1 BK2 अग । 2 BK3 सुपत्ता । 3 BK2 BK3 प्रिथाराज । 4 BK2 BK3 निमत । 5 BK3 नीलहा । 6 BK2 BK3 भेर । 7 BK2 BK3 हासै तान हा । 8 BK3 थ्यानह । 9 BK3 विधानहा । 10 BK3 पुरपय । 11 BK2 BK3 पवि्त्रु ढजद जूट तह्न आइ राज भियो सुजन । 12 BK3 कौवास । 13 BK1 निमित । 14 BK3 अजमेर । 15 BK2 BK3 दुर्गं । 16 BK2 BK3 ध्याय धनो । 17 BK3 सध । 18 BK3 सु सत । 19 BK2 BK हुते ।

कवित्त

बचि पत्र सावत बैठि, मब सत्त मत्त नर।
कैमासह चामुटराइ, रामह वड गुज्जर।
हाहुलि हमीर सलष, पवार जैत सम।
वहहि रान यह बात तात, अप्पिय ढिल्लिय तुम।
पुंटरीय चद इम[1] उच्चरहि, करहु अन्व आदर सुघर।
उप्पाय[2] अनत महि लिज्जियै[3], आदि धर्म देवह असुर ॥४७॥

दोहा

थाप्यो मत कैंवाम सों[4], मन धरि घर तिय तत्त।
चढि चहुवान सु सभरि, पुर ढिल्ली सपत्त ॥४८॥
पितु मातुल भिद्यो[5] सु पहु, मिलि अति उच्छह कीन।
वासर सुर रवि इद वल, लषि वर ढिल्ली पत दीन ॥४६॥

कवित्त

अनगपाल चक्कवै बुद्धि, जोइ सिउ[6] किल्ली।
एतों वर मति हीन करी, किल्ली ते[7] ढिल्ली।
कहै व्यासु[8] जग जोति, अगम आगम हौं जानौं।
तौंवर तैं चहुवान होइ, पुनि पुनि तुरकानी।
तौंवर अवट्टि मडव घर हि[9], एक साहि महि भुग्गवै।
नव सत्ता अ त दिल्ली सवर, एग छत्र सोइ चक्कवै ॥५०॥

---

1 BK2 इमि उच्चार, BK3 इमि उच्चरै। 2 BK2 उप्पायि, BK3 उयि।
3 BK3 लिज्जिये। 4 BK2 BK3 सोइधर तिय तत्त। 5 BK3 भिद्या।
6 BK2 BK3 सीउ। 7 BK2 त, BK3 ते। 8 BK1 व्यास सज्जग।
9 BK2 BK3 हि' छूट गया।

छंद उधोर

[लहु[1] रजि अ त पय[2] दह पच । मत्त हम कल सट्टिय[3] सच ।]
[मासवि चद छंद उधोर[4] । प्रति पग कहिय पनग जोर ।]

लिपि वर घटिय महूरत मत । द्विज घन वेद चवै वरसत ।
आसनह हेम पट्टय टार । मनि गन कनक[5] मुत्तिय उज्यार ॥५१॥
मडित कलस निप्र विनोद । रानन मानित सु[6] मन मोद[7] ।
धुनि वर विप्र मडित वेव । मानिनि सक्ल सज्जित[8] गेव[9] ॥५२॥
वज्जहि बहुल वज्जन भार । गान हि मान ग्राम सु तार ।
नचति पत्र भरह सुभाव । गानहि सिद्ध विक्रम साव ॥५३॥
सज्जित सक्ल सिंधुर दति । छत्रह[10] पुहमि[11] मोहति पति ।
धवलह चढि निरषहिं नारि । गौपनि[12] रध्र राज कुमारी ॥५४॥
मानहु तडित अभ्र[13] समाज । ।
वसनह राजन रजित घोर[14] । साजित[15] धनुप वासव जोर ॥५५॥
राजत श्रवन रवनि तटक । राका मानों उभय मयक ।
सोहति लाल सु टल कति । वधुव ति इन्द्र इदु[16] मिलति ॥५६॥
मडित विप्र वेदिय[17] वेद । जाना आहुति भेदिय[18] भेद ।
पाटह पुत्ति[19] पुत्त अरोह । विजुति नृप धा भरति सोह ॥५७॥
मडि मुकुट्ट[20] उत्तम मग । रचितहु धातु सुरूप सुरग ।
दुति[21] अति दलन क्रीटिय तास । मनु मारीचि इदु[22] उहास ॥५८॥
ध्रुव समौ मडिय छत्रव जोर । मनु हरि वाल विचि सुमेर ।
तिलक नग रग जटित भाल । हुव वहु झलक दीपक जाल ॥५९॥

---

1 BK2 BK3 लहू । 2 BK3 पय । 3 BK3 सढिय । 4 BK2 उद्धारे, BK3 उद्धार । 5 BK2 BK3 'कनक' छूट गया । 6 BK2 BK3 सुमन' छूट गया । 7 BK2 र मोद, BK3 तर मोद । 8 BK2, BK3 सजित । 9 BK2 गेव । 10 BK1 छत्र । 11 BK2 BK3 पुहिमि । 12 BK2 BK3 गवपनि । 13 BK2 BK3 आभ्र । 14 BK2 BK3 'घोर' छूट गया । 15 BK2 BK3 सानित" छूट गया । 16 BK2 इद, BK3 इद । 17 BK3 विप्रे । 18 BK3 भेदहि । 19 BK3 पुत्रि पुत्र । 20 BK2 मुकुट BK3 मुकट । 21 BK3 दुत्ति । 22 BK2 यिंद ।

चरवहि मुत्ति, कुन्दन थाल । पूरित पुहप, पूजहि वाल ।
चरवहि सुन्दर, अनग पाल । सोहति क्त, मुत्तिय माल ॥६०॥
द्विजवर चवहिं, आसिप वेद । मानिनि गान, तान अपेद ।
हय गय अथ्थि, ढिल्लिय देस । सौंपिय पुत्ति पुत्त नरेस ॥६१॥
पोडश दान, पूरन मान । अप्पिय विप्र, वेदह गान ।
गहन सतप्प, तप्पिय ध्यान[1] । धरिय सुवद्रि नाथह धाम[2] ॥६२॥
तजिय सुगेह, माया जाल । सविग सुजोग[3], वचिय काल ।
रचिय सुवानु[4], प्रस्थ सरूप । क्रमित हर हित, जोवन[5] भूप ॥६३॥
हय गय तरुनि[6], द्रव्य सुदेस । तृन[7] वर तजि[8], तु बर नरेस ।
॥६४॥

कवित्त

एकादस[9] सवतह, अट्ठ, अग्गह ति तीस भनि ।
प्रथमु रितु तह हेम, शुद्ध मागसिर मास गनि ।
सेत पप्प पचमी सम्ल, वासर गुर पूरन ।
शुभ मृग सिर सम्मुही[10], यो[11] साधहि सिधि चूरन ।
इमि अनगपाल अप्पिय महि, पुत्तिय पुत्त पवित्त मन ।
छड्यौ सुमोह गृह सुप तरुणि, पति वद्रिय सज्यो सरन ॥६५॥

दोहा

जुग्गिनि पुर चहुवान दिय, पुत्तिय[12] पुत्त नरेस ।
अनगपाल तोंनर तिनै, किय तीरथह प्रवेस[13] ॥६६॥

---

1 BK2 BK3 थान । 2 BK1 ध्याम । 3 BK3 सुयोग । 4 BK1 सुवान । 5 BK2 BK3 योवन । 6 BK1 तरणि । 7 BK1 तृण । 8 BK2 चरि तप्पिय । 9 BK2 BK3 येकादस । 10 BK2 समुहि, BK3 समुही । 11 BK1 योग सिद्धि व्याधहि चूरन । 12 BK2 BK3 पुत्रिय पुत्र नरेश । 13 BK2 प्रवेश ।

अनगपाल पुच्छहि[1] नृपति, वह्हु भट्ट[2] धरि ध्यान।
किहि सवत मेवार पति, वधि लियो मुरतान ॥६७॥
सोरहि[3] से कटि गहित, चिक्रम साक अतीत।
ढिल्ली धर मेवार पति, लेइ पग्ग नर जीति ॥६८॥
सत[6] अग जिह् मावत सजि, वजि न्निघोप[7] मुनद्।
सोमेसुर[4] नदन अटल[5], ढिल्लिय[8] नृपति[1"] नरिंद ॥६६॥
एकादम[9] सै तीस[10] अठ, विक्क्रम माक अनद[11]।
तिहि पुर रिपु जय हरन कौ[12], भयौ[13] पृथिरान[14] नरिंद ॥७०॥

"इति श्री कवि चद विरचिते पृथ्वीराज राशे वशोपस्पत्ति-
द्रव्वलाभ राज्याभिषेको नाम द्वितीय षड ॥

---

1 BK2 BK3 पुच्छै। 2 BK2 BK3 भट। 3 BK1 सोरह सै तेग्सठि। 4 BK1 सोमेसर। 5 BK2 BK3 ग्रह्ल। 6 BK1 सत्र ग्रगज। 7 BK1 न्निर्घोष BK2 निरघोस। 8 BK3 ढिल्लिय BK2 ढिल्ला। 9 BK2 BK3 येकादस। 10 BK2 सय पच दह। 11 BK2 ग्रानद। 12 BK2 कु। 13 BK2 BK3 भयो। 14 BK2 प्रिथिराज। 15 BK2 सुचिर नरिंद।

तृतीय खण्ड

कवित्त

साम वश राजाधिराज, मुकुद देव प्रभु।
भरित ममुद्द मुठट्ठ[1] कटक, वाणार नैर प्रभु।
सम्म पोस तुषार लप्प, गैंवर गल गज्जहिं[2]।
सत्त लप्प पैदल पलत, दश छत्रति रज्जहिं।
दिव दिवस रीति मनहि जपै, जगन्नाथ पुज्जे[3] दिनहिं।
दिग विजय करत निनै पाल नृप, सु मप्त कोस विंयौ[4] जनहिं ॥१॥
अति आदर आदरिय महस, दस[5] दीन गयन्ह।
धन[6] असम घन सुत्ति रवन, सुमनि[7] हि मनिन्ह।
मठ्ठ[8] लच्छ परजक कोटि, दश पाट पटबर।
बहु विलास जन[9] बहुति देत, अद्ध आड अडबर।
परिपय सु पुत्त जय चद लिपि[10], सोभ[11] जुहाई[12] सुभ[13] नरिग।
नर नरस पच न्पति तिनह, पानिग्रह[14] उत्तिम[15] करिग ॥२॥

दोहा

अति ललित[16] सरूप विय , रमहि त राजन सग।
एक थाल भोजन करहिं , अति सुप नृपति प्रसग ॥३॥
पिरिग देन दच्छिण दिसह , अग्ग भयौ[17] सुभ देन।
सेतु बध अनुसरिय मग , गौ नृप[18] बलह[19] ससेन।
[तोरन[20] तिलग (तलक) सुजयि, सिवल फेरि त्रिकूट]

---

1 BK2 BK3 सुतट्ट। 2 BK2 गुनहि। 3 BK2 पुज्जे। 4 BK2 सियो। 5 BK2 दश। 6 BK2 BK3 धनु। 7 BK2 BK3 सुमन। 8 BK2 BK3 सुप्त जक रजकति। 9 BK2 जननिय बहवि, BK3 जनमिय वहति। 10 BK2 लिपे। 11 BK2 सुभ। 12 BK2 BK3 जुन्हाइय। 13 BK2 BK3 सुव। 14 BK1 पाणिग्रह। 15 BK3 उत्तिम। 16 BK2 BK3 लालित्य। 17 BK2 BK3 भयो। 18 BK2 नृपु। 19 BK3 बलहा। 20 BK2 यह पाठ लिखकर हड़ताल से काट दिया है अत BK3 म भी यह पाठ छूट गया।

छद नाराच

करणाट सकलापने , अनेक भूप राजन।
समुद्द[1] इप्प भूप[2] बद्ध , मैथली[3] सुभानन।
सुचित्र कट[4] मच्छरी , सुरग राइ छु क्न।
फिरग देस लिंग[5] वग , अ ग[6] जीति सिप्पन[7]॥५॥
असेर जीति पानन[8] , गभीर गुज्जरी[9]धर।
जमडवी मलेच्छ नत्थी , गु ड देश सो धर।
मागध मचील मुप्प , चद्रिका मुपट्टय[10]।
गोपाचले[11] गुरावय , प्रकास सोभ नट्टय॥६॥
सु पर्नते प्रकार साय , कास कग्गल[12] मिल।
अय ममत्थ[13] सिद्धि भूमि, पगु पुत्त सम्थल[13]।
।
॥७॥

दोहा

मटि जग्गि विनय पाल नृप, भत न तु ग निनास।
तव जेचद विरद्द वर, हठि लग्गौ इतिहास॥८॥

चौपाइ

अति वर जोर जुन्हाई नारि। चद जेम रोहिनि उनहारि।
अति सुप वरपहु अट्ठ प्रमानि। तिन्हि गब्भ[15] सुभ सनोगिय जानि॥६॥

दोहा

पट[16] वट फेनलि कलिग, अवर[17] देस कहुँ केत।
धनवज्जह दीपक समिति, चद जुन्हाई जोति॥१०॥

---

1 BK[1] समुद्र। 2 BK2 BK[3] भूप्प बध। 3 BK2 BK[3] मैथाली। 4 BK2 BK[3] कट। 5 BK2 BK[3] दु ग पिलंग। 6 BK2 में यह शब्द छूट गया। 7 BK3 सप्प । 8 BK2 BK[3] प नय। 9 BK2 BK[3] गुजरी। 10 BK3 नु पट्टय। 11 BK2 BK[3] गोपावले। 12 BK2 BK[3] कग्गल। 13 BK2 BK[3] सामथ्था। 14 BK2 BK[3] सथ्थिल। 15 BK2 BK[3] गभ। 16 BK2 BK[3] पटि वटि। 17 BK2 BK[3] में 'कलिंग" तथा 'अवर दस कहु कत" पद छूट गया।

कवित्त

जा जुन्हाई चद रान , गोरी[1] गुर बध्यो।
जा जुन्हाई चद तुग , तिरहुति विप्पानिय।
जा जुन्हाई चद कट्ट , कढे[2] सुभ[3] जानिय।
जा जुन्हाई चद श्रट्ठ , दिसि पर्वत[4] लिध्यौ।
जा जुन्हाई पग दल , असी लप्प हैवर पढिग।
जै चद राय जुन्हाई वर , वर वैनी अ गह[5] घरिग ॥११॥

दोहा

सुभ मजोगि[6] समप्पि नृप, दै सुभ भोजन राइ।
अति हितु नृप नित नित्त त्रिय, निय[7] रैनीन विहाय ॥१२॥
सुहठ आरि अपनी[8] करै, सरि न मीस हित तात।
पटन वेलि वलि वाल रस, सुवर अपूरव बात ॥१३॥
मन्न वृच्छ वभनिय गृह, पढन कु वारिक वृद।
बार बार लोकन करै, जिमि नच्छत्र विचि चद[9] ॥१४॥
बालप्पन अप्पनिक सुप, मृप कि जुवप्पन मैन।
सुभर श्रवनि मिसु नित रहुव, दुरि दुरि पुच्छै[10] वैन ॥१५॥
अति विचित्र मडप सुरग, अ गन तास सहार।
आद रसाल कुवारि पढि, शद्दम[11] उद्दिम मार ॥१६॥
नेवज पुहप[12] सुगध रम, बाजत सद्द सुठार[13]।
सुरति श्याम पूजा मिलै[14], एक समै त्रैनार ॥१७॥
सकल पत्ति वभन[15] सकल, सकल सुजुनति चरित्तु।

---

1 BK2 गौरी। 2 BK1 कट्टे। 3 BK2 "सुभ" छूट गया। 4 BK2 पर्वतु। 5 BK2 अगहए। 6 BK1 सयोग। 7 BK2 BK3 नियै। 8 BK2 BK3 आपनी। 9 BK2 BB3 विद। 10 BK1 पच्छै। 11 BK3 शद्दश। 12 BK1 पुप्प। 13 BK2 BK3 सुगार। 14 BK2 मिले। 15 BK2 BK3 वभनि।

विनय विनय बभनि वहै,[1] विनय सुमगल चित्त ॥१८॥
मुगध मध्य प्रौढा प्रकृति, सुवर वसीकर चित्त।
सुनि विचित्र वाला विनय, श्रवन[2] सवद्दह जित्त[3] ॥१९॥

छंद त्रोटक

प्रथम उठि प्रात, मुष दरस।
उत्तमग सुमग, पय परस।
विनया गुन तुच्छ, विसुच्छ मन।
हरह जय काम, सुताम तन ॥२०॥
गृह नियरेण[4], पिय दरस।
प्रकृति प्रति चार, चप दरस।
भय कामिनि काम, मन[5] व्रत लो।
मपिना मपिया, निज वच्छ तजो[6] ॥२१॥
मन वृत्ति सुगत्ति, मन गहन।
रह रत्त सुवृत्त, वन वहन।
जिय जीय रसे[7], रसन रसना।
भय भार उवृत्त, निए वसना[8] ॥२२॥
परि प्रेमहि प्रेम, मबक्कि[9] सुको।
जहीं जहीं दृष्टि, तहीं तहिं सो।
भुगत जल श्रन्न, वर विनन।
पथत निज काम, गृह गमन[10] ॥२३॥
भव भूपति भूप, तन लहन।

---

1 BK2 वेहै। 2 BK1 श्रवण। 3 BK2 भित्त, BK3 भित्र। 4 BK2 निर्थरण पथ, निया रण पय। 5 BK2 मन, BK3 मत्त। 6 BK1 तला। 7 BK2 BK3 रसं। 8 BK2 वसन, BK3 वसनां। 9 BK2 BK3 सबकि। 10 BK2 BK3 गगन।

इन ईसनि सीस, सम[1] चढ़न[2]।
इन पूजन जापन, ईस गन।
पति पूजि मनोरथ, बद्ध मन ॥७४॥
पिय देषहि[3] देषि, सुगद्ध[4] सुध।
वय वधिय ताम, सुनाम बुध।
वसन रुचि पीय, सुरूप अघ।
तन मंडन भूषन[5], ताम कर ॥७५॥
गहन रस सार, सिंगार वन।
गति गठिय गथ, सुनाम मन।
इति गत्ति[6] चरित, सुधाम धरै।
जीतैति कथन, अधीन करै ॥७६॥

दोहा

नौननेन विनय विनति, मधिना मंगल माल।
मधि आग्रह मानै ग्रहन, पिय छुटैं तिहि काल ॥७७॥
उच निशि वसि द्वुतिय गृहन, मिथिनि विग्रनन लज्ज[7]।
प्रिय प्रियनि अन्तरन करि[8], है[9] दिति सुभग अभग्ग ॥७८॥

रड्डु

प्रथम सचरिग[10] दृष्टि दव भग।
रग नेह निज निति[11] हितान्ति। अनहित सहचरि चरित्त[12]।
मन[13] कि सन्नद्धह विभप।

---

1 BK3 ससम। 2 BK2 BK3 बहन। 3 BK1 दप। 4 BK2 BK3 सुगध। 5 BK1 भूपण। 6 BK3 गति। 7 BK2 लम्म। 8 BK2 कारहि। 9 BK2 में है" नहीं है। 10 BK2 BK3 सचरि। 11 BK2 BK3 नित्य हित अनहित—रेखांकित पाठ के स्थान में इतना ही पाठ है। 12 BK3 चरित्त। 13 BK सम्म।

धवीर जु धीर जु जहन । आत मैति अप मिद्धि ।
तत न मन मानहि धरै । करहि सुकामहि नधि ॥२६॥

छंद मोदक

तू धनय मनय तुन पत्तिय, तू हियय जियय तुन[1] गत्तिय ।
तू वरय धरय तुन मत्तिय, तू पियय तियय[2] गृह[3] रत्तिय ॥३०॥
तू गृज्य नरय नृप नत्तिय, तू गतय[4] जपय जग जत्तिय[5] ।
तू हमय वसय घन घत्तिय, तू न्यिय छियय[6] छुवि हत्तिय ॥३१॥
तू सुह्य पुहय[7] दुह कत्तिय[8], तू विनय दिनय दिन गत्तिय[9] ।
तू तपय अपय[10] अपनत्तिय[11], तू नथय हथय मथ सत्तिय[12] ॥३२॥

कवित्त

निवसि भाय भामिनी अवर, मामिनि न जानै ।
विलसि काम कामिनि ताम, लामस अप्रमानै ।
हौं सु बम बभनी रम, रभनी सिपावन[13] ।
है सु दमक दामिनी जामिनि, जामिनी जगावन[14] ।
तनु तुग उग्र दुस्सह हिम सु सुनि, सुवाल वल्लह रजन ।
अम[15] हासु चद चन्न कुसुम, तनु त्रिगान त्रिगुनह पवन[16] ॥३३।

छंद रासा

सुनि सजोगि सिपावन सावन मभ्क हिय ।
तत्तानी पीरन[17] पावचैई झरिय ।
गुरु गुह्य ति कनन माथ[18] निजु गुभ्कन ।

---

1 BK1 तुवि । 2 KK2 'तियय" छूट गया । 3 BK2 BK3 ' गृह" शब्द के पश्चात् "तिज" अधिक पाठ है । 4 BK2 BK3 गनय । 5 BK2 BK3 जद्दिय । 6 BK3 "छियय" छूट गया । 7 BK2 BK3 दुहय । 8 BK2 BK3 कत्तिय । 9 BK2 BK3 गतिय । 10 BK2 BK3 "अपय" छूट गया । 11 BK2 BK3 अपनत्ति । 12 BK2 BK3 सत्तिय । 13 BK2 सेपावन, BK3 मिपावन । 14 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया । 15 BK2 BK3 अमह सुचह । 1 BK2 BK3 पवन । 17 BK3 "पी" छूट गया । 18 BK1 माप ।

अच्छर अच्छ प्रमान विरामहि मद[1] धुन ॥३४॥
सिंधुल सिंधुतात रन रत्तिय।
दुज्जन[2] दुज्जानिय बत्तारि मान्तय।
प्रयोग प्रिया रन राजन मडिय।
जहा[3] जहा जाम उभै निशि पडिय ॥३५॥

कवित्त

मदन धृद्ध बभनिय मार, मानिनी मनो वस।
काम माल सजोग विनय, मगल तिय पट[4] रस।
सह[5] सहार तरु इक्क अग, अ गनि घन मौरिय।
सुक पिक पपि अमपि वसहिं, वासर निसि घरिय[6]।
इक बात[8] द्विजी द्विज मों[7] कहै सुनह कत[9] सु अपुव्व कथ।
उत्कठ वढै मनु उल्लसे[10], रहमि निंद आवे सु तथ ॥३६॥

दोहा

सज्जन[11] अ पि निरप्पि जह, तह[12] तरु इक्कु[13] सहार।
गध्रब गध्रवि[14] केलि सुनि, जिहि रस उद्दिम[15] मार ॥३७॥

कवित्त

मति प्रमान गधर्व[16] देव, न्रिव राज बुलायौ।
वलि इक्कारयौ[17] भरथ[18] मन्ति, अप्पनी[19] बढायौ।
भुम्मि भार[20] उत्तारि कलह, किती बिस्तारै।
चाहुआन कमधुज[21] वीर, विग्रह जग्गारै[22]।

---

1 BK2 BK3 मद्दि। 2 BK2 BK3 दुज्ज। 3 BK3 जेहा जाम उभै निशि पडिये, BK2 पडिये। 4 BK2 BK3 पटय। 5 BK3 तह। 6 BK2 BK3 घेरिय। 7 BK2 BK3 बार। 8 BK2 BK3 सा। 9 BK3 कुत सो अवु कथ। 10 BK2 उल्लासे, BK3 उल्लस। 11 BK2 BK3 सज्जनि। 12 BK3 "तह" छूट गया। 13 BK3 इकु। 14 BK1 गंध्रव। 15 BK2 BK3 उद्दिम। 16 BK3 गधर्वं। 17 BK3 इकारौ। 18 BK3 मारथ्य। 19 BK3 अप्पनिय। 20 BK2 BK भारि। 21 BK1 कमधज्ज। 22 BK1 नगोर।

धरि रूप कीर कनउज्ज गौ[1], दिवस उभय दिष्षी[2] पुरी।
बभनिय मत्न अ गन सु तरु, निसि[3] चामर तहं उचारी ॥३८॥

अनुष्टुप

सत्य युगे कासिका जुद्ध[3] त्रेतायाच अयोध्यया।
द्वापरे हस्तिना वास, कलौ कनवज्जिका[4] पुरी ॥३६॥

छन्द पद्धरी

सयोगि नाम सुवानि जिहि, तात विनय त्रि आनि[5]।
इय लच्छिने तव तीर इह, पष्प छत्र निद्दार[6] ॥४०॥
तव[7] दिट्ठ गेह[8] समान भू, राह नीच नयान।
इह काम राज सुनग्य मिलि, राय महस विभाग्य ॥४१॥
कलहंत काज सरूप छिति, रत्त श्रोनित भूप।
इह[9] द्विजनि विन कहि व्याह दुद, नयर[10] मगल धाय ॥४२॥
अभिलाप सुष इमि चद[11] निमि, रुक्मिनि[12] र गुंविंद।
सुक सुकिय केलि विभाग मुनि, श्रवन[13] भौ अनुराग ॥४३॥
चित निलपि तलपि[14] कु वारि लगि, पटन केलि धमारी।
अस[15] सिसर रितु जु अतीत, पतिता ग्रहे[16] छिति जीत ॥४४॥

कवित्त

इच्छु राउ[17] सभरो वियो, जुग्गिनि पुर भूपति[18]।
तेज मौज अमजेज उर, उद्दार[19] अनूपति।
बाण मध्य वय मध्य महीय[20], नन दुष्प विमोचन।

---

1 BK3 गो। 2 BK2 दिग्पिय BK3 दिप्पेय। 3 BK2 BK3 निशि। 3 BK2 BK3 जुद्धे। 4 BK2 BK3 कनवर्जिका। 5 BK3 अनि। 6 BK2 BK3 निदीम। 7 BK2 BK3 तव दिट्ठ" छुट गया। 8 BK2 BK3 ग्रेह। 9 BK3 इहि। 10 BK2 BK3 नैर। 11 BK2 BK3 चिंद 12 BK2 BK3 रुक्मिनि। 13 BK1 श्रवण। 14 BK2 BK3 तउलप। 15 BK2 BK3 अस सिरति तु जु अतात। 16 BK2 BK3 गृह। 17 BK2 BK3 राज। 18 BK2 BK3 भुपिति। 19 BK3 उद्दारति। 20 BK2 माह्वायन BK3 महीय जन" छुट गया।

[सूर वीर गभीर धीर, त्रिय मन राचन[1]]

नर देव दिवस मडली[2], सभा, इपु अदिय[3] अपडलिय।

रत्तान सुद्धि पुरसान मिव, पपि अल पिसि मडलिय ॥४५॥

अनुष्टुप

अन्यथा नैव पिप्पति, द्विजस्य वचनं यथा।

प्राप्ते च जुगिनि नाथे, सयोगिता तत्र गच्छति ॥४६॥

दोहा

सुनत[4] कथा अच्छि वत्तही, गइ[5] रत्तड़ी विहाय।

द्विजी कहै द्विज सभरै, जिहि सुप श्रवन सुहाई[6]।

इति कवि चद विरचिते पृथ्वीराज रासे सयोगिता उत्पत्ति सकल कला पाठनार्थं द्विज द्विजी गधर्व गधर्वी सवाने नाम तृतीय षड ॥

1 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 2 BK3 मडलि। 3 BK3 "अदिय" छूट गया। 4 BK1 सुनित। 5 BK2 BK3 गयि। 6 BK2 BK3 सुनाइ।

चतुर्थ खण्ड

कवित्त

अठताली सै चैत्र मास, पप्पह् सु उनारी।
भोरे राइ भीमग सोर, शिव पुरी प्रनारी।
आरजराइ[1] सलप्पराइ, सभरि सभारिय।
चाहुनान सामत मत[2], कैंमास पुकारिय।
घर जात पमारह पट्टनह, बोले बच कै सुदृत बल।
कै वार कथन इत्थह् तनी, पडोराइ क्रियवान[3] पल॥१॥
सो[4] निगरो सघरीराउ[5], सामत सीवानो[6]।
[होला राइ हमीर धीर कहि, कहूँ वपानो[7]]।
चाइ चरै चालुक्कराउ, भोरो भुवपत्ति[8]।
कवि अपी पम्मारि[9] जग, छडी[10] इह[11] मत्ती।
आइ लग्यौ[12] धाइ सुमटली, गुज्जर राइ गरज्जियो।
प्रिथिराज[13] सभरि[14] तपै, तरै[15] तुरक्क सुनधियो॥२॥

दूहा

चालुक्क चहुवान सौ, बद्धा तोरन माल।
ते कवि चद प्रकाशियो, जे हुने दर हाल॥३॥
सलप सु वरि जैतह अनुन[16], मगै भोरो[17] राउ।
अच्चुतर उप्पर करौं, कै इच्छनि परनाउ॥४॥

---

1 BK1 अरज। 2 BK2 BK3 मति। 3 BK1 कियवान। 4 BK1 सौ 5 BK3 सघरो। 6 BK2 सिवानौ, BK3 सीवानै। 7 BK2 BK3 कोष्ठ गत पद छूट गया। 8 BK3 भुवपत्ती। 9 BK2 पुमारि। 10 BK1 छड्डा। 11 BK2 BK3 इहि। 12 BK2 लग्यो। 13 BK1 पृथ्वा रान। 14 BK2 BK3 अभर 15 BK2 BK3 तरै" छूट गया। 16 BK2 अनुजि। 17 BK3 भैराराउ।

कवित्त

जरिय जेत पम्मार[1], मलप नदन यह कथिय[2]।
रे भोरा भीमग राज, प्रिय जन सुप पथिय[3]।
हम सुभोज भुवपत्ति, कुलह कु टल कल मडिय।
सत्र मत्थ करि नरन तिनह, स्तन[4] तिन पडिय।
गुज्जरिय गच्छ गोप्प रहगे, हरि गन्नू[5] नच न कहे।
च्यालुक्क भग्ग[6] गन्वह तनौ, किम प्रकट्ट[7] इछनि गहे ॥ ५॥
मील अनीनी जूह धाइ, लग्यौ[8] चालुक्का।
हक्कारि हाकत सत्त, मत्तरि[9] विभुक्का।
गोम[10] गज्ज उच्छरिय धोम[11], धर कपि धर्रक्किय।
नाग भाग मत जीह नीय, कूरम्म सलक्किय।
प्रज्जाल माल हम चाल हलि, कलि[12] कलाप कलि उल्लटिय।
चिहुराय पथ छूत्र गच्छत, तीनि थ्य ग सु अच्छरिय ॥ ६॥

दोहा

जीति[13] धर चहुँवान की, ताई ताइ तुपार।
पट्टी[14] पट्टनवे परत, मग्गा दान सचार ॥ ७॥

कवित्त

चहुँवान सामत मत, कैयाम उपाई।
सामता हक्कारि बुद्धि, बधान उचाई[15]।
दह[16] गुना दल दिप्पि, सिप्पि सद्धनह सुधगह।
दुह मुप्पाही लगि चपि, बज्यो सु मदगह।

---

1 BK2 BK3 पमार। 2 BK3 कथिय। 3 BK3 पथिय। 4 BK2 BK3 स्तनि। 5 BK2 BK3 गच्छ। 6 BK2 भग्गाग्वह। 7 BK2 त्रिपद्दं। 8 BK2 BK3 लग्गो। 9 BK2 KK3 सत्तिरि। 0 BK3 गाम। 11 BK3 घाम। 12 BK3 कला। 13 BK3 जाना 14 BK2 पट्टा पट्टान। 15 BK3 उचाइ। 16 BK1 देह।

गोरी दल गुज्जर धर्णा, दुहुँ वीचि[1] सभरि परिय।
हज्जार उन द्वादश भरह, मनहु वज्जि[2] दुदु टिमि घरिय ॥ ८ ॥
सारौ[3] लै साहाबदीन, सुरतान[4] विलग्गो।
सोमती भर भीमराउ, लप्पण[5] सो जग्गौ[6]।
नागोरै[7] सावत[8] भत[9], कैवास पियाई।
असपति गुज्जर पतिय, जानि मृदंग[10] बजाई।
दुहु वीचि[11] हजारह अट्ठविय, एहा मत्त परट्ठयो।
कैंवास राव चामुंड[12] मिलि, पीची पग्ग वयट्ठयो ॥ ९ ॥
पहिलै[13] भज्यो भीम बोल, वग्गरी विचारी।
महन सीह परिहार देव, गुज्जर कर भ्मारी[14]।
रा जद्दौजा[15] जाह थीय, जद्दौजा[16] मानी।
अट्ठा[17] ही सगदेव, पट्टो परमानी।
चालुक्क चपि धूनी धरा, सो सुरतानह[18] सभरी।
[जो चढत दलह बद्धयौ सुबल, धरा धु धु मिलि धर[19] हरी] ॥१०॥
रा प्रिथीराज[20] प्रसगराउ, बौलै[21] बड़ गुज्जर।
तिहिं तोली तरवारि, साहि उप्पर दल दुज्जर।
कैंवाह गढ सौंपि, वही कोटरा रप्पन।
तू मत्री तू शस्त्रधार, भारी भर भप्पन।
आलोकि अचारी सभरी, भत्त विहत्त[22] जुवत्त हुव।
आरीह हजारी पच सै, चाहुवान पलवत्त लुव ॥११॥

---

1 BK3 वीच। 2 BK1 वज्ज। 3 BK3 सारो। 4 BK2 BK3 सुरितान। 5 BK2 BK3 लष्प। 6 BK2 BK3 जगौ। 7 BK3 नागोरे। 8 BK1 सामत। 9 BK2 BK3 मति। 10 BK2 BK3 मद ग वाजाई। 11 BK2 BK3 वीच। 12 BK2 BK3 चावड। 13 BK1 पहिले। 14 BK2 BK3 भ्मारै। 15 BK2 BK3 जदोजा। 16 BK2 BK3 जद्दोना 17 BK2 अद्धा। 18 BK2 BK3 सुरितानह। 19 BK2 कोष्ठ गत पद नहीं। 20 BK1 पृथ्वी राज। 21 BK3 बोले। 22 BK3 रेखांकित पद्यांश के स्थान पर दृष्टि विभ्रम से तृतीय चरण का 'कहीं कोटरा रप्पन' लिखा गया। और चौथे पाचवें चरणों की आवृत्ति हो गइ।

लौहानौ भय अग्ग सुतौ, सै पच हलक्किय[1]।
पज हजारह[2] सोम पूत, कटि तो न पलक्किय।
गो डडानी सान एक दह, अट्ठह भेरिय।
उच्छगी[3] सन्नाह[4] फौज[5], चहुवानह फेरिय*।
[गय थट्टह हया हेपारवा, पालियार हज्जारहा[6]]।
उत्तग ढाल की बैरखह, पज राग[7] सुढारहा ॥१२॥

दोहा

उनगी सुरितान[8] दल, सारो लै चतुरग।
देह दु घट्टिय रन[9] मिलि, सो सावत किय जग ॥१३॥

छद भुजगी

दुव जग लग्गी, हलक्की स सूर।
डलक्के सुनेजा, चढ्यौ[10] साहि पूर।
निय नद नीसान, वज्जै विहान।
परी ऐल[11] आलम, हुव जान थान ॥१४॥
चढी चक्क चौकी[12], हुई सोर[13] जोर।
मनो मेघ घोर, करै मोर सोर।
कहै पान आले, अवस्सो[14] विहान।
चढ्यौ साहि सज्जै, अरे चाहुवान ॥१५॥
भरक्के वराह, उनाहं[15] सुनद्द।
भए चद हीन, घने मेच्छ अद्ध।
असुरा अच्छेह, भगे मेच्छ फौज।

---

1 BK3 हलक्किय। 2 BK2, BK3 हजारह। 3 BK2 BK3 श्रोच्छंगी। 4 BK2 BK3 सन्नाह। 5 BK2 BK3 फोज। * BK2 BK3 फरिय। 6 BK2 कोष्ट गत चरण छूट गया। 7 BK3 राग। 8 BK1 सुरतांण। 9 BK2 रेन BK1 रान। 10 BK3 चढ्यो। 11 BK1 BK2 पैल, BK3 पेल। 12 BK2 BK3 चोकी। 13 BK3 सार। 14 BK2 BK3 अलसो। 15 BK2 दो बार "उनाहं" है।

मिल्यौ[1] आय सूर, सलष्य सु गौन ॥१६॥
उत्तगति[2] गात भर वाथ घात।
मनेह सम्भिट्टे[3], मनो सिंघ सात।
अलग्ग सुलग्गो[4], उच्चारे सुमेच्छ।
उडे पत्त गात, बब्बूरे सपच्छ।
कला एक सूर, असूर सुचौकी।
महे कौनु मार विसूर सुमाकी ॥१७॥

कवित्त

ढढोरिय हित[5] ढाल, मुरहि गोरिय दल आविद्दर।
आविद्दर[6] दल चालत मह्रो, मिल्लो नर असि हर।
असिहूर[7] भौ[8] भग्गियौ, मलिकु दावानल लग्यौ[9]।
दावानल प्रज्जल्यौ[10], पीठि सूरिवा विलग्यौ[11]।
सूरि वाहक्क सभरिग[12] ता गिनित सुदल[13] प्रलय[14] जु हुव।
दल प्रलय[15] हु तन हि अगनै, पष्पर इक्क सलष्य तुव ॥१८॥
तिं गिनि तास पावार भिरिग, चौकी[16] चक्काइम।
चक्रावूह अभिमन्न मनहुँ[17], जैद्रथ सौदाइम।
धर[18] धारा धर धार, धार वारह आवट्टिय।
आरुट्टा मनु सिंघ[19] एक, एका मन फट्टिय।
नज्जरिग गात आघात उठि, प्रभु अपुन्व ठट्टह[20] अदिलु।
धर[21] एक स्यामि सम्मर[22] सुभर, नर विग्र[23] तन विय नट्टिलु ॥१९॥

---

1 BK2 BK3 मिल्यौ। 2 BK3 उत्तग। 3 BK[1] समिट। 4 BK2 BK3 सुलग। 5 BK2 BK3 हित। 6 BK3 दो वार है। 7 BK2 BK3 असिर 8 BK2 BK3 भा भग्यों। 9 BK2 BK3 लग्यो। 10 BK3 प्रज्जल्यो। 11 BK2 BK3 विलग्यो। 12 BK2 BK3 ससभरिय। 13 BK3 सदल। 14 BK2 प्रलव। 15 BK2 BK3 प्रलव। 16 BK2 BK3 चौका चक्काइम। 17 BK2 BK3 मनहु। 18 BK2 BK3 धर धार धारार धारह। 19 BK2 दो बार है। 20 BK3 ट्टह। 21 BK2 BK3 घर। 22 BK2 BK3 समर। 23 BK2 BK3 विग्रातन विनय ट्टिलु।

लोहानौ आजान बाहु, वाहनि हिं बिलग्यौ[1]।
ति गिनि तास त्रासियो, सनाह[2] भारी भर भग्यौ[3]।
तब जपै सुरितान षान, पग्गह पगारी।
चाह नाह आलम्भ फौन[4], भग्गिय कहि सारी।
बिस्तारिग वहसि हिंदुव तुरक, करिय कर भजन करिग।
सचरिय चरिय मम्मर तनिय, मसि कवि मुष अस्तुति[5] धरिग ॥२०

दोहा

जहा[6] तहा अकुरि परिय, तहा तहा पृथिराज।
मेच्छ सयन इस्सत करिग, जनु कुलह किरकिट्टिय[7] बाजु ॥२१॥

अडिल्ल

नागोरह मत्रिय मनु मिल्यौ[8]। मोरे राइ भुयगम भिल्यौ[9]।
सारी[10] लै सम्मुह सुरतानह। चच्चरि पग्गु कियौ[12] चहुवानह ॥२०॥

छन्द दुमिला

चहुवानउ डिंटिम चडिम चपिय, माहि सु सधिय[13] बधि धरे[14]।
हास्त हनत सु मोम सुनदन, वदिन बदित दुरि धरे।
भुव कपत[15] सपत गोरिय लुत्थि, उलत्थि पलत्थि भरथ्थ[16] भरे।
पल एक द्द जात किये तिलमद, भरिपानस भुम्मिह[17] भूम्मि[18] ढरे ॥२३॥

---

1 BK2 लग्गो, BK3 वहि लाग्यो। 2 BK2 BK3 सिनाह। 3 BK2 BK3 भाग्यो। 4 BK3 फोज। 5 BK[1] असुत। 6 BK2 BK3 जाहा ताहा। 7 BK2 BK3 किर्किट्टिय। 8 BK2 BK3 मिल्यो। 9 BK2 BK3 किल्ल्यो। 10 BK3 सरौ। 11 BK[1] पग्गु। 12 BK2 BK3 कियो। 13 BK2 BK3 मथिय। BK2 BK3 थरे। ध, थ मे अभेद प्रतीति है। 15 BK2 कपत के पश्चात् 'जपत" अधिक है। 16 BK2 BK3 "भरथ्य' छूट गया। 17 BK3 भुम्मिह" छूट गया। 18 BK2 "भुम्मि' छूट गया।

सामत सि तुग तुरग[1] तुरावध, आवध आवध अग हरे[2]।
धरक्त सुमीर गभीर[3] गह ग्गह, भ्रममान गुमाननि वीर परे।
नर वीर दिवादिव देव सुपुच्छह, गच्छ गुह्य वनि तुग टरे,
जय पत्तज मपत भ्रमतिय, जुग्गिनि श्रोन सुपप्पर चपिकरे ॥२४॥
तुर आतुर तान प्रमान प्रमान, न मुहिय[4] न भान अरे।
जुध जित्तिय पत्थ सुमाइय, अत्थनि[5] बात निय दलबधि लरे।
जित्यौ[6] चहुवान गह्यौ सुरतान, हयौ[7] तुरकान कृसान[8] जरे।
॥२५॥

कवित्त

छत्रधार भुविहान तत्र, पारिय लौहानौ[9]।
पत्र धार जुग्गिनिय कलि, लग्गिय आसन्नौ[10]।
मत्र धारि पावार सलष[11], भज्यौ मेच्छानौ।
ज्यौं[12] गुवाल गो डड सेन, हक्यौ[13] सुरितानौ।
जित्यौ[14] सु आन चहुआन करि, सुरिग बैर बलि वड बल।
धरि[15] गवरि नाह रप्पिय रहसि, गह्यौ[16] साहि मझि सुपल ॥२६॥
कहि जित्यौ[17] चहुवान, गरव गोरिय दलु[18] भज्यौ।
कहि जित्यौ[19] चहुवान, ईस सीसह ग्वर रज्यौ[20]।
कहि जित्यौ[21] चहुवान, चद नागौर सुनतौ।
कहि जित्यौ[23] चहुवान, सूर सामत दुमतौ।
जित्यौ[23] सुसोम नदन[24] कहिय, महिय[25] सह सुर लोक हुव।

---

1 BK3 तुरग छुट गया। 2 BK2 झरे BK3 दूर। 3 BK2 गभीराह ग्गाह गत्त BK3 गभीर गह गत्त। 4 BK1 सुहीय। 5 BK2 BK3 अथ्थनि। 6 BK2 जित्यो। 7BK2 BK3 यो। BK3 कृसान दो बार है। 9 BK2 BK3 लौहानै। 10 BK2 BK3 आसानै। 11 BK1 सलध। 12 BK2 BK3 ज्यौ। 13 BK3 हक्यो। 14 BK3 जित्यो। 15 BK3 घर। 16 BK2, BK3 गह्यो। 17 BK2 BK3 जित्यो। 18 BK1 दल। 19 BK2 BK3 जित्यो। 20 BK2 BK3 रज्यो। 21 BK2 BK3 जित्यो। 22 BK2 BK3 जित्यो। 23 BK2 BK3 जित्यो। 24 BK2 नद। 25 BK2 BK3 सहि।

पावार परप्प सलष्पनह, धरनि काज धर कपि धुन ॥२७॥

अरिल्ल

जित्या वे जित्या चहुवान, भाग्यौ[1] सेन सुन्यौ[2] सुरितान।
तेरहि[3] पान परे मुलितान, सारौ लो[4] तोरयौ[5] तुरकान ॥२८॥

दोहा

भै[6] भग्गा[7] सुरतान दल, लै लग्गा[8] चहुवान।
ताप तेज तुगिय भिरन, प्रिथीराज[9] फिरि आन ॥२९॥

कवित्त

साहि डड डडियौ[10], नेटु मड्यो[11] नागौरी।
भट्टारा भटनेरी रान, सिद्धा तन तोरी।
जारानी जग हत्थ मडि, मडोवर पासह।
जै जै जै प्रिथिराज[13] देव, सह कोहै अयासह।
आरज्ज वज्ज सुरितान[14] गहि, करि मिलान[15] ढिल्लिय पुरह।
जो वत्थ सत्थ कैंवास किय, चालुक्का सोहत घरह ॥३०॥

इति श्री कविचद्द रचित पृथ्वीराज रासे सामत सलष पामार हस्तेना
गोरी सहाबद्दीन निग्रहो नाम चतुथ षड ॥४॥

---

1 BK2 BK3 भाग्यो। 2 BK2 BK3 सुन्यो 3 BK2 BK3 तर 4 BK1 ल्यौ। 5 BK2 BK3 तोन्यौ। 6 BK3 सौ। 7 BK2 BK3 भगा। 8 BK2 BK3 लग्या। 9 BK1 पृथ्वीराज। 10 BK1 डिडियो। 11 BK2 BK3 मड्यो नागोरी। 12 BK2 मडोव। 13 BK1 पृथ्वाराज। 14 BK1 BK2 सुरिताहि करि। 15 BK1 मिल्यानही।

पंचम खण्ड

चौपाइ[1]

भिन्यो[2] भट्ट, सु बभण[3] लीला। चारण चन्द्रा, नद सनीला।
महात्मा अमरमी ज्ञाता। साम दान करि[4], भेद विधाता ॥१॥
मावस चदा इनो[5] प्रकास्यौ। जैनै जैन धर्म अभ्यासौ[6]।
सींगी हेम जरयो नग जास्यौ[7]। लच्छि प्रसन्न जुदा रिपु नास्यौ[8]।
भोरे राइ भीमग वजीर[9]। साई[10] प्रसन्न सरस्वती नीर।
वादी[11] जीति सिर विप्र सु डाए[12]। कुंभ थापि जिहि[13] साथि भराए[14] ॥२॥
बोल्यो[15] कुंभ कलकल वानी। नीर मध्य दुर्ग जु समानी।
इष्ट गठि तिहिं दृष्टि पसारी[16]। उथपे वेद करी[17] अवीचारो ॥४॥
रथ पट्ट[18] धातु हेम सिर छत्र। चढि नागौर गयो इहि मत्र[19]।
वर चौरासी सत्थति अस्स[20]। छौनन राज[21] मति कैमस्स[22] ॥५॥
दुरि दुज रित लील[23] पढि मजर। रत्न हेम नग स्तुत्ति[24] सु पजर।
रघुट कै कुम्भ कीर प्रकाशै[25]। सुनतह वीर धर्म वर[26] नासै ॥५॥
जै धर भर चातुक्क पजाए[27]। ते अस महातम बुद्धि रजाए[28]।
इह विधि नर नागौर सपत्ते। रैनि दीह करि दिन दिन रत्ते ॥७॥
छल छदे बदे करि भूप। लच्छि करी वरनी कर रूप।
दल कैमास भई[29] सु अवान[30]। भोरा राय[31] वसीठनि साज ॥८॥
चटक[32] चचल सुनै जु कान। सो सुभट्ट देपे[33] महिदान।
भिटि[34] भट्ट कैमास कलाप। आदर अधिकु कियो सु अलाप[35] ॥९॥
मुत्ती लाल माल कठ बानिय। भोरे[36] राय इहै मह दानिय ॥१०॥

---

1 BK2 चोपइ BK3 चउपइ। 2 BK1 भिन्यौ। 3 BK2 BK3 सो षभणु। 4 BK2 BK3 कर। 5 BK2 BK3 यनि प्रकास्यौ। 6 BK3 अनभास्यो। 7 BK2 BK3 जन्यो। 8 BK2 BK3 नास्यो। 9 BK2 BK3 वजीर। 10 BK2 मै। 11 BK1 बाद। 12 BK3 सु डावो। 13 BK2 BK3 जिह। 14 BK3 भराये। 15 BK1 तोल्यौ। 16 BK3 पसारी। 17 BK3 धाप्यौ निरकारी। 18 BK1 मट। 19 BK2 BK3 मत। 20 BK2 BK3 अस। 21 BK1 रात। 22 BK3 कोमस्स। 23 BK1 लल। 24 BK2 सुति। 25 BK2 BK3 प्रकाशे। 26 BK2 BK3 धर नार नासे। 27 BK2 BK3 बनाये। 28 BK3 रजाये। 29 BK2 BK3 भयी। 30 BK2 BK3 आवाज। 31 BK3 राइ 32 BK2 चेटक। 33 BK1 देप। 34 BK2 BK3 भिग। 35 BK2 BK3 आलाप। 36 BK3 भोरिराय इइ।

श्राटक

स्वस्ति श्री भीमग भूपति, भय भीम भुव वर्त्तते।
पायाल वलिवर्त्ती देव पनय[1], मत्राणि महि वर्त्तते।
हेम कूट कुठार पग्ग पलय, पग्गा सुप वधये।
दारिद्द[7] मदयानन सु मस्ल, स्त्रष्टा न सा श्र धय ॥११॥

गाथा

इदो वारिधि वध, वारिधि मथयोसि अधन।
इन्द्रा वारिधि अचवन, इभो सा भीम भूमय भूय ॥१२॥

छंद नाराज

कलप्पि केलि मेलि मत, चारु चार पट्टन[3]।
तमेव दुर्ग सुर्ग सुभ्र, उभ्र वध पट्टन।
नरिंद निंद साल सच, वचय भुवप्पती[4]।
[गज थट हय थट, नर थट नरप्पति[5]] ॥१३॥

छंद त्रिभंगी

सचारी नेस, कुंजर भेस, करि षेडस [षोढस्स] सिंगार।
आर्म्यो[6] मंत्र, राक सुवस्त्र, दर्प्पन वर्त्त कत्तार।
कर्बरि कत्तार, कज्जल सार, हार सुवार निवरि।
सुप मंडन नील कर[8] नव, कीज, नेवर नाल मुदार ॥१४॥
घन घट स्मिोर[9], सुप तम्मोर, कल अ भोर जू जोर।
आवर्दा[10] लना, सम्मर[11] रजीन ननन्नी[12] अनघोर।
चल चचल नैन, मधुरति वैन, भमर तैन[13] वनि पन।

---

1 BK2 पनाय। 2 BK2 BK3 नखद। 3 EK2 BK' पट्टन। 4 BK3 'भुवप्पती" शब्द के पश्चात "छंद त्रिभंगी" लिखा है। 5 BK2 BK3 कोष्ठगत समस्त चरण छूट गया। 6 BK3 अकर्पी। 7 वृहद् संस्करण में यहां "हरत" पाठ है जो कि ठीक बैठता है। 8 BK1 लील कमंध की रत्न घरनल मुदक। 9 BK2 BK3 क्मोरं। 10 BK2 आवादा। 11 BK3 समर रजाम। 12 BK1 ननन्नी। 13 BK2 B3 मेन।

पर्यंक गध, नव नव गध, सविता वध हरि होर ॥१५॥
अद्विज[1] रमय, किंकनि वसय, ह ह हमय- हुय दोर।

अडिल्ला

सापि भरे घर, सोइ प्रकासे[3]। सुर नर नाग सु कौतिग हासे[4]।
सव भूत सिहरि सिहरि सिर मिल्यौ[6]। नटवत एक अचभम पिल्यौ ॥१६॥

छद त्रिभगी

घननकि घटतो[8], भजि भजि मतो, यह कलि ततो गुननतो।
सा क्रिस तनि[9] मु दरि अमरनि सचर, मे सुनि मजरी[10] रति भ्र तो।
लव ले पहु पजुरी[11] फरकिय पजरी, मिलि मिलि ननरि जुग जतो।
वैकुत सिर[12]-मडिय[13], हो प्रभु मडिय, जग[14] जस मडिय सुभ सतो॥१६॥

दोहा

वहु सदि वदि वर विप्र सौ, जैन धर्म अभिलाप।
श्रवण मडि कैंवास सुनि, अमर मत्र तन लाग ॥१८॥

कवित्त

आन फिरि भीमग नैर, नागौर घर घर।
वसह करिग दाहिमो धरनि, हुव क्प थर[15] थ्थर।
सुपन वीर वरदाइ[16] भरकि, उठि सुठि सचग्गिह।
जह मत्रिय कैमास, अमर वस करिग देव जह।
धूमग धूप डबरिय, किलक्लति[17] टवरू करह।

---

1 BK3 अद्विज। BK2 BK3 हस्यय। 3 BK2 BK3 प्रकासै। 4 BK2 हासै। 5 BK2 BK3 सिहर सिह सिर। 6 BK1 मिल्लौ। 7 BK2 पिल्यो। 8 BK2 BK3 घट्ट तो 9 BK2 BK3 तन। 10 BK2 मनरि। 11 BK1 पजरी। 12 BK1 सिरि। 13 BK2 BK3 पडिय। 14 BK2 BK3 जग जस मडिय सुभसतो पद्याश का स्थान रिक्त (त्रोटक) है। BK2 BK3 घरद्धर 15 BK2 BK3 वरदायि। 17 BK3 किलति।

दानवन देव नग वस करन, त्रिति वात वुद्धिय नरह ॥१६॥

छद भुजगी

कहै चद चडी, अहो भट्ट भैरों।
तुम अखिए, विप्र लहै लच्छि जैरों।
अहो वारन चद, वहै निसान।
घट[1] मडि काली, घटा[2] किलकिलान ॥२०॥

मृनमय[3] घट, तुम मडि जोर।
पुलै देव बोल, दुवै होइ सोर।
वियौ घट्ट थप्पे[4], थर थर हरान।
जय जैन भग्गे[5], भये भर हरान ॥२१॥
घन थापि थान, विय घट्ट मडे।
वजे सद दोनौ[6], जिनै[7] अस्त्र छडे।
दुगे घम्म घम्म[8], घट पट्ट पानी।
मिली जैन धर्म्मं, सकल राजधानी ॥२२॥
फिरै[9] मत्र[10] अस्त्र, महामत्र मत्री
हरे[11] सैव पापडनै, सव सस्त्र छत्री।
मिटि[12] रान मरजाद, नै लाज छुट्टी।
उमा सत्ती मावत, की मच्चि पुट्टी ॥२३॥
निरालव लवी, विय वीर वाह।
त्रिपा सद्ध पूजी, नही रत्त राह।

B2 1 घरा। 2 BK2 BK3 घटे। 3 BK2 BK3 'मृन" छूट गया। 4 BK3 थप्पे। 5 भगये। 6 BK2 दोनों। 7 BK3 जिने। 8 BK2 BK3 घमाघाम। 9 BK फिरे। 10 BK3 अस्त्र मन्त्रं। 11 BK2 BK3 हरि पट पाडव सव सव सस्त्र छत्री। 12 BK2 BK3 मिट्टी रानज्जादरज्जाद।

विथा जत्थ लग्गी, तथा त प्रमान।
कथा काल[1] जैन, भयो तेन वाद ॥२४॥
जहा देव ।वानी, सती सत्य पाट।
जहा जैन जपै, सु कपै सुथाट।
कहै कौन[2] आरभ, नित्यो[3] सुजैन।
वजी हाक चद, गल्यों[4] सद गैन[5] ॥२५॥
हु हुकार हुक्यौ[6], घट[7] घाट उच्यौ[8]।
छल छेद भेद, धुव चोम पुग्यौ[9]।
धर धार हार, धरा कप ठानी।
मिटी जुद माया, सु आनास वानी ॥२६॥
दुव नोइ उड्डे, छुट[10] सग्ग[11] भग्गे।
घट[12] घट्ट फुट्टे[13], भ्रम धाम भग्गे।
छद छत्र मोह, महा मुल्ल टुट्यो।
पर[14] वैषि कै जैन, ते धर्म लुट्यौ ॥२७॥
महा मत्र देवी, दिठी माव मानी।
कवि[15] चद मत्र[16], समिद्धि समानी ॥२८॥

शाटक

चामु डा वर पग्ग[17] मडित कर, हुकार सद्दावरा।
प्रभा[18] सा सह सथ सप्तलरा, मु डाल माला उरा।
लग्ना [19] हस्त मुषी प्रचड नयना, पायातु दुर्गेश्वरी।

---

1 BK1 कोल। 2 BK3 कोन। 3 BK1 जातु। BK1 गिल्यो। 5 BK3 गेन। 6 BK2 BK3 हुक्यो। 7 BK2 BK3 घट। 8 BK2 BK3 उद्या। 9 BK2 BK 3 पुद्यो। 10 BK3 छुद। 11 BK3 सुगा। 12 BK2 BK2 BK3 घाट। 13 BK2 BK3 फुट्टे। 14 BK3 BK2 परा पेप मै जैन धी धम लुट्यो। 15 BK3 कवी। 16 BK1 मत्री। 17 BK3 वरगा। 18 BK1 प्रभामर। 19 BK1 लग्नो।

घाली काल कराल कन बदना, अगानि अगाजया ॥२६॥
मातगी अरविंद माल कलया, जाता नया प्रञ्जनो[1]।
माया त्व ही महेश्वरी जह रह, अगोचर गोचर।
सग्रामे सुप वेष्टन चतवसा, हिंगोलि हुहुक्र।
सा हु हु हुकार हक सुनय, दुर्यात दुर्जन दल ॥३०॥
पगी ह्रामति ह्राम हम मह्रा[2], मह की जस्यासि मत्र सुप।
सा मत्र उच्चार धार धरम, भय भग भगा अरिं।
जगान जय जोग पत्र सक्ल, जा पड पडायन।
कालील किलकन्ति तिंति तिपुरा, जस्या विधान वन ॥३१॥
तस्या बाहु चवति चार कमल, मतुष्न सा धुन।
जैन बद्ध[3] सनद्धजा हि चरण, जै जै सुजैन[4] घन।

चूणिका

अथ मत्र स्तुति ममम काले जयाय भुपाल द्वारे, विजयाय स्मरण कृत्वा गच्छेत्।

दोहा

बद्धा[5] जैन[6] मु जैन लगि, अम्मर[7] चद चरित्त।
भामी भट्ट[8] सुमित्त करि, जीवन मरनह[9] हित्त ॥३२॥
लुट्टि लिए[10] पापड सन, छुटि मत्रा कैनाम।
हर हरति आयाम लगि, चदु, न छडे पाम ॥३३॥

छद भुजगी

मह[11] देवि देवान, चालुक चपै।
करतु सहाय, भर राज जपै।

---

1 BK1 प्रज्ञणा। 2 BK1 मम ह्राह कीज मत्र सुप। 3 BK2 BK3 वध। 4 BK2 सुनै भाप न, BK3 सुनै भापन जैन। 5 BK1 बद्दे। 6 BK2 BK3 जेनि। 7 BK2 BK3 जिग्या चदि चरित्त। 8 BK2 BK3 भट्टु सुमित्त। 9 BK 1 मरयह। 10 BK1 लियो मिथ्यात। 11 BK3 देव।

निसा एक रत्ती, अर्जौ मग धावो[1]।
पल श्रोन[2] वे वीर, भुवि अघावो ॥३४॥
हुँ हुँकार मद्दो, मयमत[3] मत्थै[4]।
मदा दुर्ग[5] देवी, अनाथानि नत्थै[6]।
मचा लाप सेना, गज वानि[7] पूर।
अगैवान कम्मान, मन्नति जोर ॥३५॥
हम हढ[8] नेजा, सिता छत्र पत्र।
महा गर्व्व मर्व, वल मत्र जत्र।
घरा धार बड्डे, सुमड्डे[9] विशेषे।
परी धार पाइक, काइक लेषे ॥३६॥
विना स्वामि सेना, सुपची हजार।
तिनै माहि सावत, पच्ची मभार।
नुपे मत्री कैंबास, देवी सुधीर।
वियौ[10] धग्गरी राइ, स्वामी सवीर ॥३७॥
तियौ[11] जाम जद्दौं, लहू बधजा[12]जा।
धरें लज्ज गुज्जर, घरा राम राजा।
पट्ट पग्ग[13] रत्तो[14], न जय जैत मत्त।
गरूराय[15] गोइद, सत्त सरत्त ॥३८॥
स्वय सिंघ सन्नाहियो, अष्ट काली।
जिने दुर्ग देह, सम तेक हाली।
दम गोर[16] गाजीव, साजीव स्वामी।

---

1 BK1 धावौ। 2 BK1 श्रौन पे वीर। 3 BK2 BK3 मात। 4 BK3 सथै। 5 BK2 दुर्गा। 6 BK3 नथै। 7 BK2 BK3 वाजि। 8 BK3 हाड। 9 BK2 सुमेडे। 10 BK3 वियो। BK2 BK3 तियो। 12 BK2 BK3 बधे। 13 BK3 पग। 14 BK2 BK3 रतो। 15 BK1 राइ। 16 BK3 गार।

मुनी सभरी देव, स्वामित्त स्वामी ॥३६॥

अपाराव हाडा, वचै चद देन।
जिनै द्वादसी[1] थाल, एकाह्[2] सेन।
तन तुङ्ग लग्गा[3], अभगा विचार।
जिनै भेरिया[4] सेन, गगै[5] पच्छार ॥४०॥
वली राइ वकी, विरद्दाति वके।
जिनै डाहिय ढाल, मै मत ह्र्क[6]।
कहर राइ कूरम्म[7], राजग सूर।
जिने पत्ति पातक्क, माहे[8] लगूर ॥४१॥
निय राइ नाहर, तनौ[9] रत्थ[10] सत्थी।
जिसौ राइ सजम, तनौ भीप रत्थी[11]।
महा मल्ल मज्जै, वियौ[12] मल्ल भीम।
चढो राइ चपे, न को तास सीम ॥४२॥
अह वदिन देवि, तो पास सेन।
स्तुति मत्र मुप्पे, ततू देहि देव।
हु हुँकार हुकी, सती सा निचार।
चढे सत्त[13] अग्गे, सुपचै हनार ॥४३।
महा सेन सत्तरि, तनौ लाप साइ।
सुनी राइ कित्ती, दियौ[14] रत्ति वाइ ॥३४॥

---

1 द्वाञ्शी। 2 BK2 BK 3 एकाह। 3 BK BK2 BK3 लगा। 4 BK2 BK3 भोरि। 5 BK3 जंग। 6 BK2 KK3 हको। 7 BK2 BK3 कूरम। 8 BK2 BK3 महे। 9 BK2 तनो। 10 BK3 रथ मथी। 11 BK3 रथी। 12 BK2 BK3 वियो। 13 BK2 सत आगे सुपच। 1' BK2 BK3 दियो।

कवित्त

वधे जेन वसीठ ढीठ[1], पापड निनारे।
धारे हरे[2] मामानि मेन, सन्नाह सभारे।
बीती रैनि तिजाम जाम, बोलैं जहौती[3]।
हो जा जारन राइ गस्त, चौकी[4] भीमानी।
हिला हलकि मैं[5] पच दति, सनाम हिंदु[6] रान रण।
से लपने जु नेजह भिरै,, वजी[7] जानि क्रिसान[8] वन ॥४८॥

छंद भुजगी

महा सेन भामग, भीमग रज्ज
मनौ मेघ माला, सु कालाय रज्ज।
हुम हाम हामति, हालानि[9] जानि।
चढि[10] चकि चोकी[11], चवट्टी सुप्रानी ॥४६॥
सय सेसने एम[12], कैंवास अग्गै[13]।
सय तीनि मथ्थो, छय जानु[14] लग्गै।
सय पच जद्दी, सुजामानि नाच्छे[15]।
सय अट्ठ सज्जे, रय राम पच्छे[16] ॥४७॥
दुहू बाहु सेना, वर व्वीर बाही।
मनौ[17] जु डली छाछी, मासुद्र थाही।
अहम्मेव सामत[18], स्वामित्त लग्गौ।
मनौ[19] सेनिका देव, दानाति भग्गो[20] ॥४८॥
भए उन[21] दूनौ, दिठा नट्ठ चौकी।

---

1 BK1 धीठ। 2 BK1 हरे। 3 BK2 BK3 जहोना। 4 BK2 BK3 चोकी। 5 BK1 सैन' अधिक है। 6 BK2 BK3 हुदु। 7 BK1 वसा। 8 BK1 क्रियान। 9 BK1 हालान। 10 BK3 चढा। 11 BK2 BK3 चोकी। 12 BK2 BK3 येम। 13 BK3 अग्गौ। 14 BK2 जानु। 15 BK2 BK3 ताच्छै। 16 BK2 BK3 पच्छै। 17 BK2 BK3 मनो। 18 BK2 BK3 सामित्त। 19 BK2 BK3 मनो। 20 BK2 BK3 भग्गो। 21 BK2 BK3 उन दूनै।

मनौ अकुरी दष्ठि, उभै आरि सौकी।
मनौ घरे हत्य पग्गे[1], भिरे हल्ल मल्ले।
घरी एक भग्गी, नह दोइ हल्लै ॥४६॥

कवित्त

चलत् अग्ग सामत काम, कैमास कुसल्ली।
गजू अनुना[3] जु अजुनु, भिरि पत्यो दुसल्ली।
हालानीधर फुट्टि छुट्टि, छक्का[4] सामता।
परि पहार पारा रिंघोग, लगो[5] घायता।
अ सुमान हल्लि भूमी डरिय, थाइ धमकि धमकि घर।
वदियै[6] चाहु चाहुर्य दल, प्रिथिराज[7] रानग भर ॥५०॥

दोहा

भिरि भिरि चौरी चपति बलि, ििलि ढिलि जह दल राइ।
समर जुद्ध दरबार मौ[8], चढि चालुक[9] रिमाइ ॥५१॥

छद भुजगी

घमं[10] घाम धम्म, निधाम निमान।
निसा[11] मज्जि वज्जी, सुभेरी भयान।
त्रिग तथ्थ तानी, द्दिन द्दिन द्दिनान।
तुटी अदु हत्ती, मदजा जुरान ॥५२॥
हुय द्याइ हाय, हल हिंदु रान।
महा वीरू जग्यो न्रु, दुर्गं हमान।

---

1 BK2 पग्गो। 2 BK1 न हिंदे लहल्ले, BK2 नह दोइ हल्लं। 3 BK1 अनु जा अजु सु। 4 BK3 छका। 5 BK2 BK3 लग्गो घायत। 6 BK2 BK3 BK3 "व दियै" से छन्द सख्या 71 "चालुक" तक पाठ प्रति BK1 के अनुसार छडे खण्ड में मिला। यहाँ प्रति BK2 में पत्र गलत लग गये। 22, 21 चाहिए था और 21, 22 प्रति BK2, BK3 का नकल है अत BK3 म भी यहा अशुद्धि पाइ गई। 7 BK1 पृथ्वाराज। 8 BK2 मौ। 9 BK3 चालुक। 10 BK1 घम। 11 BK2 निस्सा।

गिरे रत्त गवत्त, टुट्टे वितान।
परी हूल हक्क[1] जु मामत पान ॥७३॥
कथा कच्चभारी, सुभारथ पुरान।
सुनै धर्म वट्टै, सु मर्म विहान ॥७४॥

कवित्त

चडी देवी पमाई हस्ति, तोरै मदमत
चढयौ राइ भीमग, चौर[2] मोरह सिलहता[3]।
का आपानी रारि काइय, हवाइय[4] टड्डरी[5]।
के छुटयौ मग्राम सिंह[6] मकर निड्डरी।
कै धीर धाम धूजी धरा, कै उलाल[7] कलपत हुव।
यौं जपि जपि राजन कहै, कपि राइ भीमग भुव ॥७५॥
मा अप्पानि रारि नाइय[9], हवाइ डड्डरा।
ना छुटयौ सग्राम सिंघ, मक्र निसहूरी[10]।
है[11] हका धर कप चप, उत्तर तै लपी।
चोकी[12] गस्त गुराइ कोट, ओटह[13] इत अप्पी।
सा दुर्ग[14] देव सत्तरि पती, पती पुहार पिल्यौ[15] करी।
आहन्न हन हते वहत, निसि निसान सद्द भरी ॥७६॥

दोहा

मद मद सुह द्दद[16] हुव, जब जाव ज्ञान लग्ग।
जूना जजरिं वैरवर, भई[17] सुरा सुर लग्ग ॥७७॥

---

1 BK2 BK3 हक्के। 2 चोर मारह। 3 BK2 सिहलता। 4 BK3 हवाइ। 5 BK2 BK3 डडरा। 6 BK2 सिंघ। 7 BK2 BK3 उलाल। 9 BK2 नाइय। 10 BK2 निहरी। 11 BK3 हि। 12 BK2 चोका। 13 BK[1] BK[3] आग्ह। 14 BK2 BK3 दुग्गर। 15 BK2 BK3 पिल्यो। 16 BK2 BK3 द्दद। 17 BK2 BK3 भइ।

कवित्त

नट गुज्जर गजेत, छत्र ते पै पट्टनवै।
वे निमान[1] समरत्थ रत्थ, गै धर घड़न वै।
अधरा[2] पडन पम्ग रक, टोरी पावारह[3]।
जनु सारोली जग पान, कड्ढ़ै गावारह[4]।
रा राम देव दे नित पति, जा जा[5] जोर जु[6] तुरथ किय[7]।
नर नाग देव नैना विहसि, ध्र जुलि पु ज[8] प्रसाद दिय ॥५८॥
निनि थक्या नरन्दि मार, थकी[9] मातगा[10]।
वर थक्की[11] धर भार भार, थक्यो शिर सगा।
कर थक्या तुरियाना[12]
थक्या न जेत जैजरिबला, भलै न राम गुज्जर परै।
चालुक राई गुज्जर पती हाइ हाइ अप्पनु करै ॥५६॥

दोहा

परि अरारि हिंदुवान रयौं, मो मोमती वाह।
दिल लग्गा वरदाइ वर, जो हुदे हथनाह ॥६०॥

छंद भुजगी

हुव रारि सेरग, सारग मोर।
प्रजाल सुवीर, निमान थि भोर।
मय मत्त कैंवास, नै भज्जि भीर।
कहीं चद चडा, वरजा सु पीर ॥६१॥

छंद (मोतीयदाम)

प्रमाद प्रमाउद आधव मवरि। वीर वर भिरि भुवि रनचरि[13]।

---

1 BK3 नासाना मारथ गै घर घड़नवै। 2 BK2 अधरा। 3 BK2 BK3 गाआरह। 4 BK2 BK3 पावारह। 5 BK2 BK3 जा जजोर। 6 BK2 BK3 तु दथ्या। 7 BK3 किया। 8 BK1 सुज। 9 BK3 थकी। 10 BK2 BK3 मातगी। 11 BK3 थक्यो। 12 BK2 BK3 'तुरियाना' शब्द के पश्चात्—करि थार थाया थक्या कम्माता। शुद्ध थक्या सुद्दमार प्राया थक्या तुरियाना॥ पाठ अधिक है। 13 BK1 वरि।

पच सो पच, मन्हें[1] मिलै[1] धरि। सिद्धियराई सुधार सुधभिरि ॥६२
ढिल्लिय फौज भिरे दल सुदर। दृष्टि अलग्ग भए[2] समि सुन्दर।
आपुहिं आपु मिले[3] भरि भिभर। पार अपार निसाधर धुधर ॥६३॥
रूप निपेध बनी हर मौहर। चत्रिय राज रति पिय बहर।
सौं[4] हथवाह सयभर[1] सिभिय। गोहिल जूट परे पेरभिय ॥६४॥
तुडति मुड परे दर वाग्गिय। जान[5] कि कूर किकट्टक[6] वारिय।
लुत्थ[7] उलत्थत नप्पिय मत्थिय। हुक्कति देवि सिर प्पर पथिय[8] ॥६५॥
हथिय हकि भिरजी प्रभुभीमिय। लप्पु मचाउ जिहिं दल जीपिय।
उत्तरि[9] उत्त तुरगति[10] छडिय। नद्दौ[11] पग्ग विथौ[12] कर मडिय॥६६॥
सै[13] हथि हत्थजु[14] पग्ग पारिय। जानु कुपाइ चल्यौ[15] पग्ग कारिय।
गै[16] गुर मत्त सुना महि चपिय[17]। सौं[18] दल राम सु गुज्जर नपिय।६७॥
तो निसु तुग किए तुर कुजर। मडित अस्त्र मिले भुज पत्तर।
तीनि निमेष जग्यो नदु सुच्छिय। जय जय मद्द पटी कर तिच्छिय ॥६८
चपिय[19] पाव हयो गज पुप्पिय। राइ समेत परयो[20] धर धुक्किय।
प्रान उड्डे[21] गज गुजि दहारिय। स्वामि गुर जन[22] चद्र पहारिय ॥६९॥
भुम्मि परे गय भीम भयानक। भीम कि भीम गना धरि जानक।
पग्ग टुटे कर कान्हि कटारिय। मै कैनास भरयौ[23] अद्धवारिय ॥७०॥
राइ धनो निरयो निज चालुक[24]। कठह दत लग्यो जनु कालुक[25]।
कध धरयौ कैंनास उचाइय। पट्टन राइ सु सिद्ध दुहाइय ॥७१॥
कान परी सुर गुज्जर रामहिं। जैत पवार तुमो हिल रान हि।

---

1 BK3 मिलधरी। 2 BK2 BK3 भयो। 3 BK1 सले BK3 सिले। 4 BK3 भर भभर। 5 BK2 BK3 जानि। 6 BK2 BK3 किं क्टक। 7 BK2 लुत्थि उलत्थित। 8 BK1 पथिय। 9 BK1 उत्तर। 10 BK3 तुरत गति। 11 2K2 BK3 यद्दौ। 12 BK2 वियो। 13 BK1 हथि। 14 BK2 हथ्य। 15 BK2 BK3 चलयो। 16 BK3 गे। 17 BK3 बपिय। 18 BK2 सै। 19 BK2 BK3 वचिय। 20 BK2 BK3 पर्यो। 21 BK2 BK3 उड। 22 BK2 BB3 जन। 23 BK2 भर्यो। 24 छद सख्या 50 के "वदिये" शब्द से 'चालुक' शब्द तक पाठ BK2, BK3 के छुठे खड में मिला। 25 BK2 BK3 कालकु।

तीनि लगे तन चालुा पान हि ॥७२॥
हकि हमीर हस्यौ[1] मुप दिट्ठिय। तुम मानत किने मुप पट्ठिय[2]।
फिरि कर[3] चाहि नरिंद कटारि। सै मुप मल्ल हमार निवारि ॥७३॥
गो भजि भूप जहार जपत्तिय। श्रोनहरै पल ज्यौं गिरि गत्तिय[4]।
5 ॥७४॥

दोहा

दरिसि राज पतनी सुपति, गति फिरि फारम लग्गि।
मानहुँ[6] इंदिय दिय चरन[7], मुप मुप भकन लग्ग ॥७५॥
दस सहस[8] दुहुँ भुजा[9], परित[10] रहि दरबार जुहार।
इह सम सहित है वर भमित, वानक तिन[11] निसि राइ ॥७६॥
लुथि रही दरबार गुथि, घरिय पच[13] असि रीस।
तिन महि कहि[14] कैवास सव, रहिय अग्ग[15] रह वीस॥७७॥
अप्पा ही अप्पा जुरिग, भग्गा धर भर धाइ।
मुपान मृत को जा कहर, कट्टी कट्ठ नपाइ[16] ॥७७॥

कवित्त

आयो कट्टी स्वामि काय[17], साहव मानता।
चारह सै वानैत सु भृति, दुढन[18] धावता।
हैं वा लग्गी हत्थ पग्ग, भोरे रा कज्जै[19]।
जो चित्त सुविचित्तिया[20], देव दरवार सु छज्जै[21]।

---

1 BK2 हस्यो। 2 BK2 BK3 वक्र। 3 BK2 BK3 ज्यो। 4 BK2 BK3 गतिय। 5 BK2 BK3 गहि गाल भीम हमकि हिलोम्यो। श्रव चरित्त ज्यो नानि कहोम्यो। अधिक है। 6 BK मनहु। 7 BK2 BK3 चरन। 8 BK2 BK3 सहस्र 9 BK2 BK3 भुज। 10 BK परि हि परि, BK3 परि परहि। 11 BK1 तिनि। 12 BK1 राई। 13 BK1 BK3 पंच। 14 BK कहि' दो बार है। 15 BK2 BK3 अग 16 BK1 नपाइ। 17 BK1 काइ। 18 BK2 BK3 दुढन। 19 BK3 कज्जौ। 20 BK2 BK3 यो। 21 BK3 छजै।

समाम लगै सस्ट म पट्ट, पट्टप[1] हाम पिंगिय पहरु ।
टुट्टिय जु मस्त्र छत्रिय सिर, नु गनत[2] होइ ब्रह्मद[3] गहर ।।७८।।

छंद रासावला[4]

हिंदु न्दु रवी, लोह उड्डी[5] हरी ।
मुप्प उक्कै चरी, मुक्क मासै मरी ।।७६।।
इभ्भ[6] ऽग्गै तरी, भीर भग्गौ परी ।
हल्ल हल्लै टरी, ढल्ल वेलि हुरी ।।८०।।
चढी चोट फरी, अम्म[7] अम्मर अरी ।
भीम लग्गौ धरी, राइ तुग प्परी ।।८१।।
गोम[8] गो हिल्लरी, श्रा इच्छा उन्बरी ।
फज चूर भरी, दत भग्गौ धरी ।।८२।।
हाय मानै घरी, जट्टु[11] कट्टे करी ।
पेरि वज्जै घरी सेन सेन टूरी ।।८३।।
लुत्थि[12] पाथत्थरी[13], कोन जभै जरी ।
केनि केनि छरी, जैत बोप भरा ।।८४।।

कवित्त

कर वड्डी जुज्झयो[14] रह्यौ, रानिग देव हर[15] ।
जेन सिर ढुरि छत्र मत्र, छुडयौ[16] जु मंडि सिर[17] ।
गम्च राव पेरभ रह्यौ, ग्यारह सै सभर ।
पहरिय[18] राइ पवार नेट्ट निव्वह्यौ[19] मुनि व्वर[20] ।

---

1 BK2 BK3 पट्ट' अधिक है । 2 BK3 घ गनत । 3 BK2 BK3 ब्रह्महि । 4 BK1 साला, BK3 रसाला । 5 BK2 BK3 उडा । 6 BK2 BK3 इ अग्गैं । 7 BK2 BK3 भ्रम भ्रमर । 8 BK2 BK3 गोम । 9 BK2 BK3 भग्गौ । 10 BK3 ˜बरि । 11 BK2 BK3 जट्टु । 12 BK2 BK3 लुथि । 13 BK2 BK3 थरा । 14 BK3 जुझ ह्यो रह्यो । 15 BK2 BK3 दर । 16 BK2 BK3 छुह्यो । 17 BK2 BK3 सिर । 18 BK2 पहरिया । 19 BK3 निव्वह्यो । 20 BK1 वार ।

नानी नंचन्द आनद मन, महम तीनि तेरह परिग।
गुज्जरि गेह सनेह मन, मह मावत दह निव्वग्गि ॥८५॥

छंद भुजंगी

परी अग्गि अप्पर, हय[7] हाहु[1] पडी।
लरी लोह भीम, निनै छत्र[2] मडी।
परी[4] पथ मारा, उसो गउ[3] पाली।
निनै ब्रह्मचारी, चित्त निति चाली ॥८६॥
परयौ[5] माह मोहिल्ल, माही नव्वल्ली।
जिनै नेह रत्ता करी, मस्त्र ठिल्ली।
निभै जैत बध, परयौ[6] धार नाथ।
मही राउ भोगै नही जासु हाथ ॥८७॥
महदेव[7] सोनिंग, चाहत्थ[8] मत्थे।
रही रभ ढिल्ली, गनै[9] कौनु गत्थे।
असारी अमभी, नय नोग[10] ध्यान।
कवी चद किती, कहैं कै वषान ॥८८॥
रति धाह बीत्यौ, नय जीति पूर।
बहे गेह मावत, तत्तै ति सूर।
गज व्वाजि लुट्टे सुलुट्टे पचार[11]।
दियो राज आनू, सुदुग्ग अधार ॥८९॥

---

1 BK2 हहु। 2 BK1 छत्त। 3 BK2 BK3 "मारा"—के पश्चात् "उ" लिख कर "सो राउ पाली" का स्थान रिक्त है और यह पाठ छूट गया। 4 BK2 BK3 परौपंथ। 5 BK2 परयो। 6 BK2 BK3 परयो। 7 BK3 सहदव। 8 BK2 BK3 चौहथ्थ, सथं। 9 BK2 गन कौन। 10 BK1 जोग। 11 BK2 पचार।

परै स्यामि कज्जै जि, सावत सत्थी[1]।
प्रकासे सुचद, दसा मुत्ति पत्थी[2]।
जय अच्छरी जैति, सोमेस पुत्त।
धन्यो सभरी राज, ति सिर छत्र हित्त ॥६०॥

दोहा

बोला बध नियाह धन, पावार[3] चहुवान।
[धर धक्यौ लीनी धरा, जित्यौ भीम परान[4]] ॥६१॥
अरिसु आरज सलप हित, इच्छनि इच्छा पूरि[5]।
भुव मडल मडिल[6] हि सिर, दधि अच्छितह[7] हजूरि ॥६२॥

इति कवि चद विरचिते पृथ्वीराज रासे कैवास मन्त्रिणा भीम देव पराजयो नाम पंचम षड ॥ ५ ॥

1 BK3 सथी। 2 BK2 BK3 पथ्थी। 3 BK2 पावारा। 4 BK3 म कोष्ठ गत चरण छूट गया। 5 BK1 पूर। 6 BK2 BK3 'दिनह" अधिक है। 7 BK3 जु 'हजूरी" छूट गया। 8 BK1 पृथीराज।

छटा खण्ड

छंद पद्धडी

कलि अत्थ पत्थ[1], कनवज्ज राव।
मत सीलरत, धर धर्म्म[2] चाय।
वर अत्थ भूमि, हय गय अनग्ग।
पट्टया पग, राजन सुजग्ग ॥१॥
मो थिग[3] पुरान, वलि वस वीर।
भुव वोल[4] लिषित, दिष्षे सहीर।
छिति छत्र बंध, राजन समान।
जित्तिया सकल, हय वल प्रमान ॥२॥
पुछ्यो सुमति, परधान तत्थ।
अव करहि जग्गु, निहि लहहिं कव्व।
उत्तरु तदीय, मन्त्रीय सुजान।
कलि जुग्गु नहीं, अरजुन समान ॥३॥
धरि धर्म देव, देवर अनेव।
षोडसा दान दिन, देहु देव।
मो सीप मानि, प्रभु पग जीव।
कलि अत्थि नही, राना सुधीर ॥४॥
हकि पग राइ, मन्त्रिय समान।
लहु लोभ अवुल्यो नियान ॥५॥

गाथा

पे को[5] न गए महि मभू, ढिल्ली ढिल्लाय दीह हो हाय।

---

1 BK1 BK3 रथ्य। 2 BK3 धानग्ग। 3 BK2 BK3 भुजंगा। 4 BK1 बोलि। 5 BK2 BK3 कन। 6 *Emend* सो थिग *for* सोधिय, *ed*।

बिहुरत[1] जासु त्त्ती, वग[2] यान हि गया हुँति ॥६॥

छन्द पद्धडी

पहु पग राइ, रात सु जग्ग ।
प्रारभ अङ्ग, कीनो सुरग्ग ।
जित्तिया राइ, मब सिंघरार ।
मेलिया कठ, जिमि मुत्तिहार ॥७॥
जुग्गिनि पुरेस, सुनि भयो[3] पेद ।
अवै[4] न माल, मम्फ इन अभेद ।
मुक्ने दूत, तब तिहिं समत्थ ।
रिसाइ[6] उतरे अग्गि[7], दरवार तत्थ ॥८॥
बुल्यौ न वयन[8], प्रिथिरान[9] ताहि ।
सकल्यौ मिघ, गुर जन नियाहि ।
उच्चारिय गरुव[10] गोविंद रान ।
कलि मध्य जग्ग[11], को करै आन ॥९॥
सति जुग्ग कहहि[12], वलि राज कीन ।
तिहि कित्ति काज, त्रिय लोक दीन ।
त्रेता तु किन्ह, रघुनन्द राइ ।
कुव्वेर[13] कोपि, वरप्यो[14] समाइ ॥१०॥
धन धर्म्म पूत, द्वापर सुनाइ ।
तिहिं पत्थ[15] वीर, अर अरि सहाइ ।
कलि मझि जग्गु, को करण जोग ।

---

1 BK3 BK3 बिहूरति । 2 BK2 BK3 तग यान ही गये हुति । 3 BK2 BK3 भयउ । 4 BK2 BK3 अव न । 5 BK2 BK3 असमत्थ । 6 BK2 BK3 रिसाइ के पश्चात् 'कै' अधिक है । BK2 BK3 अग्नि । 8 BK2 BK3 वैयन । 9 BK1 पृथ्वीराज । 10 BK2 BK3 गरुव । 1 BK2 BK3 जग । 12 BK2 BK3 कहिहि । 13 BK2 BK3 कुबेर । 14 BK1 वरप्यौ । 15 BK2 BK3 पथ्य ।

विग्गरै[1] बहु विधि[2], हसइ[3] लोग ॥११॥
दल दब्ब गब्ब, तुम अप्रमान।
बोलहु त बोल, देवनि समान।
तुम्ह जानु नही, त्रिय हैंब कोइ।
निव्वीर[4] पुहमि, कबहुँ[5] न होइ ॥१२॥
हम जगलह वास कालिंदि कूल।
जान हि न राज, जैचद मूल।
जान हि न एक, जुग्गिनि पुरेम।
जरासिंध वस, पृथ्वी[7] नरेस ॥१३॥
तिहुँबार साहि, बधिय जेन[8]।
भजिया भुनप्पति, भीम सेन[9]।
सभरि सुदेस, सोमेस पुत्त।
दानव ति रूप, अवतार धुत्त ॥१४॥
तिहि कधि[10] सीस, किमि जग्य होइ।
पृथिमी[11] नहीय, चहुवान कोइ।
दिप्पि हि सब्ब[12], तिहिं[13] मघ रूप।
मान हि न जग्गि, मानि आन भूप ॥१४॥
आदरह मद, उठि गो वसिट्ठ[14]।
गामिनी सभा, बुधि जन उविट्ठ।
फिरि चलिग सब्ब, कनवज्ज मझ।
भए मलिन कमल, जिमि मक्लि[15] सझ ॥१६॥

---

1 BK2 BK3 विगरइ। 2 BK1 विधि। 3 BK1 हसै। 4 BK3 निब्बीर। 5 BK2 BK3 कबहु। 6 BK3 जुग्गिन। 7 BK1 पृथ्वी। 8 BK2 BK3 जेनि। 9 BK2 KK3 सेनि। 10 BK1 कध। 11 BK3 प्रिथी नरेश। 12 BK2 BK3 सब। 13 BK2 BK3 तह। 14 BK2 BK3 गयो। 15 BK2 BK3 सक्किलि।

तिहिं दुरित दूत, एक हि वयन्न।
अति रोस कियै[1], रकते नयन्न।
बुल्यो सुमत, परधान तब्ब।
कनवज्ज नाथ, करि जग्गु अब्ब ॥१७॥
जव जग्गि गहहि, चहुवान चाहि।
तव लग्गि तहा, ढरि काल जाहि।
तसु आ-समुद, नृप करहिं सेव।
उच्चरहु धाम, मो करहि देव ॥१८॥
मोवनी[2] प्रतिमा, प्रिथिराज[3] थान।
थप्पहु ति पौरि, वरि दारवान।
स्वयवर मग, अनु जग्य काज।
विद्वजन बोलि, दिन[4] धरहु आज ॥१९॥
मन्त्रियनि[4] राज, परबोधि जाम।
घुम्मिया वार, नीसान ताम।
सुनि मद्दनि[5], बधि बदनवार।
कट्टहि सुहेम, गृहि गृहि सुनार ॥२०॥
भूपनह दान, सुर सम अचार।
आनंद इद्र सम, किय विचार।
धवलेह धम्म, देवर सुवीय।
तम हरहिं कलस, कल बिंबलीय ॥२१॥
धज मगनि सोभ, मनु मधुव छीय।
सज्जिया बभ, कैलास वीय ॥२२॥

---

1 KK3 केयै। 2 BK1 सोवन। 3 BK1 पृथि। 4 BK2 निनि, BK3 दिने धराहु। 4 KK1 मन्त्रीय वीरज। BK2 BK3 सद्न।

अनुष्टुप

प्राप्त च पग गेहे[1], जग्य जापाय मोहन ।
तत्र वधि डड देहा, राज मेधा महा तव ॥२३॥

छद नाराज

हियत सोधि राज सू, जु राज[2] जोग्य जग्यय ।
सकल राइ माम दड, भेद वधि भोगय ।
सर्वत्त वर्तमानए, अनेक निद्धि सोधय ।
सुवर्ण भार लष्य एक, मुत्ति भार सच्चय हु२४॥
तुरग लष्य, लष्य एक, इद गेह हष्यय ।
रजक भार कोटि एक, धातु भार भद्रय[3] ।
पटबर सु अबर, सजे अवास सबर ।
सुगधने सु वघए, सु धूप धूम डबर ॥२५॥
सत्रत्त रचि चारु वास, दाम नेस[4] अतर ।
समत्रिना मनोदरे, प्रना प्रससि[5] सीसन ।
पटान अस माग चिप्र, सझने सुतर्पने[6] ।
विरम्म गर्व्व दव्वने सुमत्र मत्र भग्गए ॥२६॥
विचारि वीर राज सू, जयत जोग जग्गए[7] ॥

छद रासा

नव अगुरि करि पानि, चरावै वच्छ मृग ।
मनु मानिनि मिस इद, अनदित[8], देपि दृग ।

---

1 BK2 BK3 मेहे । 2 BK2 BK3 योग्य जग्य । BK2 BK3 नद्दय । 4 BK1 'नेस' दो बार है । 5 BK1 केवल 'प्रससिन" है । 6 BK2 BK3 सुतर्पनं । 7 BK2 में 'जग्गये' के पश्चात्—आय जाय आरम्भ किय, सवर सहित संजोग । मिलि मंगल मंडप रचिय, जिहि विधइ विधि जोग ॥ दोहा अधिक है जो कि प्रक्षिप्त है । 8 BK2 अनंदे ।

मद्दचरि चरित[1] चरित्त, परस्पर वत्त किय।
सुभ सजोगि सजोगु[2] मनौं, मनमत्थ किय ॥८७॥

छंद पद्धडी

राजन अनेक, पुत्रिय संग।
पटु वीय वरप, नय सत्त अंग।
कवि जन जुवत्ति, सगह सुरंग।
मिलि पिलहिं भूप, भामिनि अनंग ॥८८॥

सजोगि संग, जुवती प्रवीन।
आनद गान, तिनि कंठ कीन।
भ्रु वंक लंक, अति मंस सपीन।
अधचपन लिपन, छिति नपट् कीन ॥८६॥

कोमल कुरंग, किंचित किसोर।
अधरनि अदिष्ठ[3], अरथइत मोर।
सुभ सरल वार, वलया सुथोर।
जुव जन जुवत्ति, रचि कहहिं वत्त।
श्रवनन्नि सीर, नकु नैन रत्त[5]।
मुक्के न लीव, लज्जा सुरत्त।
विद्धनिय मनहुँ, धनु गह्यौ[6] हत्थु[7] ॥९१॥

अधर रत्त, पल्लव सुवास।
मंजरिय तिलकु, मंजरिय पास॥

---

1 BK1 छूट गया। 2 BK2 सजोगि, BK3 'सजोगु' शब्द दो बार है।
3 BK1 अदृष्ट। 4 BK2 मध्य। 5 BK3 रत्ता। 6 BK1 BK2 BK3 गह्यो।
7 BK3 हथ्य।

अलि अलक कठ, कलयठ[1] मत ।
मनोगि जोग वरु भी वमत ॥३२॥
परमप्पर पीयति[2], पियनि[3] कत ।
लुट्टहिं[4] ति भवर, सुभ[5] गध याम ।
मिलि चद चु द, फुल्यौ[6] अनाम ।
तनि तग्ग मग्ग, अलि अब मौर ।
सिर ढहहिं[7] मनु हुँ, मनमत्थ[8] चौर ॥३३॥
तर[9] झरहिं फुल्ल, इह रत्त नील ।
दलि चलहिं मनहु, मनमत्थ[10] पील ।
धुहु धुहु करत, कल अट्ठ जोटि ।
दल मिलहिं मनहु, आनग कोटि ॥३४॥
कुसुमेषु कुसुम, नव धनुति सज्जि ।
भृ गी सुपती, गुन[11] गरव सज्जि ।
रज्जर सुवान, सुव नाह नेह ।
विद्दरे[12] धीर, जुर[13] जननि गेह ॥३५॥
चप्पिलिय कलिय, चपक समीप ।
प्रज्जलिय मनहु, कदर्प दीप ।
करवत्तु केतु, किय[14] रिंसुकाति ।
विहुरत रत्त, विच्छुरत छाति ॥३६॥
मवुलिय मल्लि, अभिराम रम्य ।
नहि करहिं पीय, परदेस गम्य ।

---

1 BK3 कलयट्ठ । 2 BK1 पीयाति । 3 BK1 पियन । 4 BK2 लुट्टिहि 5 BK2 BK3 सुगधवाम । 6 BK2 BK3 फुल्यो । 7 BK2 BK3 ढहि । 8 BK3 मनमथ । 9 BK2 BK3 तर पल्लहि रत्तहि रत्त नील । 10 BK3 मनमथ । 11 BK1 गुण । 12 BK1 विड्डुरे । 13 BK2 हुव । 14 BK2 BK3 'किय' छूट गया । ।

परि अत अनिल, कदलो ममान ।
मिर घुनहि सरिस, सुनि जानि तान ॥३७॥
दिप्पिय हि पथ, निनि कत दूरि ।
थकि बोल लोल, जल रहे पूरि
फुल्लिग पलाम, तजि पत्त रत्त ।
रन रग सिसिर, जीत्यो[1] वसत ॥३८॥
रवि नोग पुप्पि, ससि तीय थान ।
दिनु धरिग देव पचमी प्रमान ।
पर उच्छह दिपन, कौ भय मिलान ।
विग्रहन देश, चढि चाहुवान ॥३९॥

छद पद्धडी

चपि[2] रिपु सीस, बैठ्यौ नरिंद ।
प्रथम अरि जूह[3], पडे पिपद[4] ।
बालुक्क[5] राइ, दानों समान ।
गजिया इक्क, घट चाहुवान ॥४०॥
गज्जनै[6] देस, विच्छोह जोरि ।
तजहिं पिय कठ, एकत गोरि ।
नीर[7] नीचाल, उच्छाल[8] हुप्पै ।
झरहिं मनि मुत्ति, गच्छति लप्पै[9] ॥४१॥
वीर मम्मीर[10], उड्डु ति[11] टुट्टै ।
मनहु ऋतु राज, द्रुम[12] पत्र छुट्टै

---

1 KK1 जीत्यौ । 2 BK1 चपि । 3 BK2 BK3 जूह । 4 BK2 पिपद ।
5 BK3 वालुका राइ । 6 BK2 BK3 गुज्जनै । 7 BK2 वीचाल । 8 BK2 उच्चाल BK3 उचाल । 9 BK3 लप्पौ । 10 BK3 समीर । 11 BK2 BK3 उडति । 12 BK1 द्रुम ।

ग्रीन नग ज्योति, रहि फुट्टि[1] पब्बै[2]।
मनहु गिरि शिषिर[3], दव दीट[4] लग्गै ॥४२॥
धूम प्रज्जार[5], मिटि मग्ग गमनी।
चलहि तिट्टि[6] तेन[7], सुप चद रमनी।
बिंब[8] फल जानि, घन कीर धावो।
दसननि[9] भय वाल, वमननि छिपावै ॥४३॥
सबद सी रोस, सोहै सशक्ती।
थरहरित थकि रही, भ्मोन[10] लकी।
वेवि रट[11] रटति, पिय पियहि जपै।
एम[12] रिपु रवनि, पृथीराज चपै ॥४४॥

दोहा

गय मदा चप चचला, गुर जघा कटि रच।
पिय[13] प्रथिराज जु रिपु कियो, विपरीत कीन विरचि[14] ॥४५॥
जीति जगतु जय पत्त लिय, दिसि मुर घर उपदेश।
छिति रच्छन[15] छिति परसपर, सुनि पगु[16] नरेस ॥४६॥

छद पद्धडी

कर पग्ग मग्ग, अगह सुमार।
सुर मुक्कि मुक्कि, सहमन[17] पहार।
सुनि येन[18] सद्द, नीमान[19] भार।
दरबार भई[20], एति पुकार ॥४७॥
थकि वेद भेद, विप्रनि सुजान।

---

1 KK2 BK3 फुटि। 2 BK1 पब्बै। 3 BK1 शिषरि। 4 BK1 दीह। 5 BK3 पज्जा। 6 BK2 BK3 तिह। 7 BK3 दो बार है। 8 BK2 बिंब। 9 BK2 BK3 दशननि। 10 BK7 कीन। 11 BK2 रटि। 12 BK2 BK3 एमि। 13 BK1 प्रिय। 14 BK2 BK3 विरच। 15 BK2 BK3 रच्छन। 16 BK2 पगुर, BK3 पगुरे। 17 BK2 BK3 सहमन। 18 BK1 यैन। 19 BK1 निरमान। 20 BK2 BK3 भर्यो पना।

आनद सकल[1], सुनियै न कान[2]।
वर चपि राई, गुरूके उसास।
विगरयौ[3] उगय[4], मत्री विसास ॥४८॥
सुनियै न पुत्रि, सभ मडराइ।
युवती जन जुव[5] जन, करिग माइ।
सजोगि[6] जोग, वर व्रतमु आजु।
व्रतु लियौ[7] वरन, पृथिराज काज ॥४९॥

दोहा

तिह पुत्री सुनि गुनय इत, तात वचन तनि काज।
कै वहि गगहि[8] सचरों, कै[9] पाणि गहूँ प्रिथिराज[10] ॥५०॥
सुनत[11] राइ अचरिज्ज[12] किय, हिय मान्यौं[13] अनुराउ।
नृप वर औरे[14] निर्मवे, देवहिं अवर सुभाउ ॥५१॥

छद नाराज

परट्ठि पग राइ[15] दुत्ति पुत्ति, आलि सुक्कनै।
ति साम दान भेद दड, सार[16] मैं विचछनै।
सुग्रीव ग्रीव कठ ताल, नैन सैन मडहीं।
वचन्न विद्धि निद्धि सव्व, ईस ध्यान पट्ठही ॥५२॥
अनेक बुद्धि विद्धि सव्व, काम मूर्च्छि[17] जग्गयैं।
ते प्रचारि वारि जाइ, अ गनास मज्झनै[19]।

छद रासा

अलस नैन अलसाइत, आदर अप्पु किय।

---

1 BK2 BK3 सकल। 2 BK1 BK काल। 3 BK2 BK3 विगर्यो। 4 BK2 BK3 उगिय। 5 BK2 BK3 जुग। 6 BK2 BK3 सयोगि योग। 7 BK2 BK3 लीयो। 8 BK2 गगैह, BK3 गगेहि। 9 BK2 BK3 'कै' दो बार है। 10 BK1 पृथ्वीराज। 11 BK2 BK3 उनति 12 BK2 BK3 अचिरज्ज। 13 BK2 BK3 नान्यो। 14 BK1 अरे, BK2 औरै। 15 BK2 BK3 राधि। 16 BK2 सारासे। 17 BK2 BK3 मुर्च्छि। 19 BK3 मझवे।

किम चुद्धी अय तात सक्किल्लिव, इक्क[1] जिय।
हे वाले! तव तात सकिल्लिय, राइ लिय।
किहिँ वर वर उत्कठ सुपुच्छै, अच्छ तिय ॥५३॥
मो मन मज्झ[2] गुज्ज न गुज्झ[2] जु, तुम कहै।
जपत लज्जै जीह न अच्छर, लहु लहै[4]।
पट्टु दह जिहिँ सावत पृथ्वी, प्रिथिराज[5] कोइ।
दान पग्ग भय मानि न मुक्कइ, तात सुइ[6] ॥५४॥

दोहा

अथवा राजन राज गृह, अथवा माइलु हानि।
विधि बधिय पट्टल सिरह, मुष कहि मद्दो[7] जानि ॥५५॥

शाटक

आरन्मि[8] अजमेरि, धुम्मि धवनी, कए मडि मडोवर।
मोरी रा मुर, मुड दड दवनो, अग्गी उचिष्ट कर।
रन थभ[9] थिर, थभ सीस अद्दर, निजल जुष्ट कलिंजर।
क्रिपान चहुवान जानि[10] धनयो, धर्नापि गोरी धर ॥५६॥

गाथा

माणीय देहि वाले! पुत्तलिका पाणि गहणाय।
एकत सेन सहवास लज्न, विया आसि विमुहाय ॥५७॥
वज्जाह गाह श्रवण[11] नयणा, चित्तेहि[12] दिट्ठि लग्गाय।
प्रामाणि घाम लज्जा, अनगना अ सुरि वाला ॥५८॥
चचल चित्त प्रचारी, चचल नयणाइ चचल वैंणी[13]।

---

1 BK2 BK3 इक। 2 BK3 मम्झ। 3 BK2 BK3 गुम्झ। 4 KK3 लहो। 5 BK1 पृथिराज। 6 BK2 BK3 प्रतियों में "सुइ" शब्द के पश्चात् एक गाथा छंद—[प्रक्षिप्त] असुद्ध रसाइ उच्चरिय, वयण भिन रसगाय। लहु बाल हुवाय पुत्त, स पुत्ति राज घर आय॥ अधिक है। 7 BK2 BK3 मदो। 8 BK2 म्भी। 9 BK3 थंभ। 10 BK1 जान। 11 BK2 BK3 श्रवण। 12 BK1 BK3 ति। 13 BK3 वयणी।

थावर चित्त सजोइ, थावर गचीह गुज्भ[1] गामाहि ॥५६॥

शाटक

जा पुत्ती मरहट्ट थट्ठ मबले, निद्धीय[2] नैरागरे।
कर्नाटी कर नीर चींर गहनो, गु डीं गुर गुज्जर।
निर्माली हथ मेलि मालव धरा, मेवार मडोवर।
जाता तस्य मर्दन सेव नृपय, आन मत निवर ॥६०॥

अनुष्टुप

न मे राजन ! सवादो, न मे गुर जन नागरे।
नर येक स्वय देह, मर्वथा प्रिथिराजए[3] ॥६१॥

शाटक

इदो कि इन्दो लिए न अमिए, चक्की भुजगा मिरे।
चच्छी[4] छीर विचार चामि[5] भवरे, बिंबान बका करे।
तस्थाने कर पाद भुव पल्लव, रसावल्ली घसता हरे।
चतुरे किं चतुराइ जानतु रमा, मा नीव मदनावरे ॥६२॥
जेने मजरि दारु[6] चार पक्स्य कलया, कदर्प दीप प्रभा।
भनारे[7] भवरा उडति बहुला, फुल्लानि फुल्लट्टया।
माय तोइ सञोगिताहि सुभरे, पत्तो वसतोत्सवे।
॥६३॥

दोहा

मा जीवन रप्पै वयन, वयन गए[8] मृत होइ।
जो थिर रहै सु कहहु[9] किन, हौं पुच्छौं[10] तुम मोइ ॥६४॥
थिरु वाले ! वल्लभ मिलन, जो जुव्वन दिन होइ।

---

1 BK2 BK3 गुम्म। 2 BK2 निन्वीय। 3 BK1 पृथिराजए। 4 BK1 चच्छी वीर, BK2 वत्थी छीर अथवा चत्थीच्चीर। 5 BK1 वामि। 6 BK2 BK3 दातु चातु—वातु। 7 BK2 BK3 भकार। 8 KK3 गयें। 9 BK1 हु। 10 BK2 BK3 पुछ्यौ।

गै जुव्वन[1] कुव्वन तनह, को मढै रति जोइ ॥६८॥
तुव सम मात न तात तन, गात सुर भरियाहु।
जुव्वन[2] धन थिर ना रहै, अमुकि अगुरियाह ॥६६॥
ताहि अनुभर[3] तुम करहु, जो तुम मथी समान[4]।
हौं लज्जा करि धा कहौं, तुम्ह[5] मो तात प्रमान ॥६७॥

गाथा

हा हत सा मयिना, हे सु दरिय ! कथ वर वरय।
बालीय विद्धि विहिणा, सजोइ जोगिना पाणि ॥६८॥

दोहा

पुच्छन हारि सुपुच्छियो, धाइ सु उत्तरु देइ।
जिमि द्विज वृद्ध सुपजरै, घट घट उत्तरु लेइ ॥६६॥
स्वस्थ राज सु स्वस्थ चित्त, स्वस्थ विलबन धीर।
पुरपु[6] जु क्रम क्रम सचरै, नयन सु तप्पन पीर ॥७०॥

अनुष्टुप

सयादेय विनोदे च, देव देवति रच्छति।
अन्य प्रानैव प्रानेस, सो मे दिल्लीस्वर ॥७१॥

दोहा

दुचिनि उत्तर आनि दिय, पगु पुच्छि परवानु[7]।
नृप आग्या वदिय न कछु, मानु न मुस्कै आन ॥७२॥
तब मुकि किय गगा तटह, रचि पचि उच्च अवास।
ताहि गहहु चहुवान कहुँ, मिटै बाल उर आस ॥७३॥

---

1 BK2 BK3 जुवन। 2 BK2 BK3 जुव वव्वन थिर न रहै। 3 BK1 तनुभइ। 4 BK3 समार। 5 BK3 तुम। 6 BK1 पुरप। 7 BK2 BK3 परवांन।

अडिल्ला

सुनि सुनि वचन, राइ जब जपै।
थर हरि घर ढिल्लिय, पुर कपै।
सूर तेज तुच्छत, जल मीनह।
पग भयय दुर्जन, भए[1] पीनह ॥७८॥

इति श्री कविचद विरचिते पृथ्वीराज रासे यज्ञ विध्वंस पृथ्वीराज वरणार्थं सयोगिता कृत नियमो नाम षष्ठ षड ॥६॥

1 BK3 भये पीन।

सप्तम खण्ड

दोहा

तिहिं तप आपेटक भयौ[1], थिर न रहे[2] चहुवान।
घर प्रधान जुग्गिनि पुरह[3], धर रष्षै परधान॥ १॥

कवित्त

जिहिं कैंमास सुमत[4] पोहि, पट्टुव धनु कढयौ।
जिहिं कैंमासु सुमति[5] राज चहुवान चढयौ।
जिहिं कैंमास सुमति पार[6], परिहार मुरस्थल।
जिहिं कैंमास सुमत मेच्छ[7], बध्यौ[8] सबल ब्वल।
भीमग राइ गुज्जर धणी रा, तिहिं[9] जित्यौ रिण[10] [रण] सुभर।
बाराह[11] जेम दुहुँ वाघ बिच, सुनस वाम जगत सुधर॥ २॥

शाटक

रान जा प्रतिमा स वोन[12] धरमा, रामा रमा सा मती[13]।
तिनीरे[14] कर काम ताम वसना, सगेन सेज्या[15] गती।
अधारेन[16] जलेन छिन्न[17] तडिता, तारा विधारा रती।
मत्रो सा कैंमास बुद्धि हरनों, देवी[18] निचित्रा गती॥ ३॥

दोहा

कन्नाटी दासी सुरन, राजन ! अथि[19] अवास।
काम रत्त कैंमास तनु, दिट्ठिय तुट्ठिय अवास॥ ४॥
निसि भद्दव कद्दन[20] कहल, आपेटक प्रिथिराज।
दाहिम्मौ दहि काम रत, काल रैनि किय काज॥ ५॥

---

1 BK3 भये। 2 BK1 रहे। 3 BK1 पुरई। 4 BK2 BK3 सुमति। 5 BK2 BK3 मति। 6 BK2, BK3 पारि। 7 BK1 म्लेच्छ। 8 BK2 BK3 बध्यो। 9 BK2 BK3 तिरि। 10 BK2 BK3 'रिण' छूट गया। 11 BK2 KK3 बाराह काम्व वायह विचै। 12 BK2, BK3 वीन। 13 BK2 BK3 सा मतो। 14 BK2 नितारे। 15 BK1 सिज्या। 16 BK1 अंधारेण। 17 BK3 छिन्न। 18 BK2 दैवो, BK3 देवा। 19 BK3 अथि अवास्त। 20 BK3 कद्दन" छूट गया।

कवित्त

चल्यौ महल कैमास रैनि, नट्ठियति जाम इक।
त बोलै[1] सपि साप पट्टर, गिनि उलघि[2] सिक।
दिय दिपकु सपूरि भ्रमिय, भय रत्ति पत्तिह[3]।
अति सरोस लिपि भेज[4] दियो, दासी कर कतह।
पल अस्वह[5] कित पिन पत्तरि, अवधि दीन दुइ घरिय कह।
पल गयनि वयन वत्त[6] सचरि, नैन सैन प्रिथिराज[7] जह ॥६॥

गाथा

भू भृत सुचित सुनिंदा, सगे सारयनि जग्गि जिय वद्धा।
दीपकु जरइ सुमदा, नूपुर सद्द भानि यजते ॥७॥

शाटक

भू कपै[8] जयचद राइ कटकेश, कापि न ज्ञायते।
तादकू साहि साहावदीन सकल, इच्छामि जुद्धाइने।
सिद्ध चालुक राइ मत्र गह्ने, दूरे सु जानाइते[9]।
अग्यान चहुवान जानि[10] रहिय, दैयोपि रच्छा[11] कर ॥ ८ ॥

अनुष्टुप

पग जग्गे[12] जितो वैरी, ग्रहि मोच्च सुरितानयो।
गुज्जरी गेह दाहानि, देव देवानि रच्छतु[13] ॥ ६ ॥

छद रासा

छत्तिय हत्थ धरत नयन, निवाहियउ[14]।
दासिय दच्छिन हत्थ[15] तव, बिसुनाइउ।
वानावरि दुह बाह रोस रिस, दाहयउ[16]।

BK1 बौलौ, BK3 बोलौ । 2 BK2, KK3 उलघ्वि । 3 BK2 BK3 पतह । 4 BK3 भोन । 5 BK1 अस्थह । 6 BK1 वचन । 7 BK1 पृथिराग । 8 BK2 कापे । 9 BK3 जानइत । 10 BK1 नान । 11 BK1 रक्षा । 12 BK3 जगो । 13 BK3, BK2 रच्छितु । 14 BK2 निवाहियउ । 15 BK1 हथि, BK3 हथ । 16 BK1 दाहयौ ।

मनौं नागपति नारि सु अप्पु, जगावयउ[1] ॥१०॥

दोहा

अह निसि मैं[2] अच्चै मुरसु, अहिर समै रस कत।
वनु कि देव गधर्व जक्ख, दासी निशि विलसत ॥११॥

छद रासा

मग सयनन सत्थ नृप, तिन जानयौ[3]।
दुहु विच है इक दासि, सु सग समानयौ[4]।
इद फनिंद न चदन, अत्थि सुभानयौ[5]।
धरी इक्क दुहु मज्झि[6] त, तच्छिन जानयौ[7] ॥१२॥

दोहा

नव तन वै निसि गलित, घन[8] घुम्मौ चहु पास।
पानिर अ पिन मचरै, महल मह्ल कैनाम ॥१३॥
देव जु मै देवर अथै[9], प्रभु मनुष्य बल चिह्न।
मुरस पयारिग वारिकह, प्रौढ मुगध मति कीन्ह ॥१४॥
रमण पिष्पि रमणि विलपि, रजनि[10] मझि नर नाह।
चित्र दिपावत चित्रीणी[11], मीन विलग्गी वाह ॥१५॥
निमिष चित्र दिप्यौ[12] दुचित, सलप तरुणी लपि[13] नैन।
मुहवम्थ कीय सु सुदरी, दुहुथ पयपि[14] सवैन ॥१६॥
नज जुवानिनी चह जनी, विहत अभग्ग[15]।
मुगुण[16] रूप सुमुत्ति कर, दानव रावत्त क्रग्ग ॥१७॥

---

1 BK1 जगायौ। 2 BK1 नै। 3 BK2 BK3 जानयउ। 4 BK2 BK3 समानयउ। 5K2 BK3 सुमानयउ। 6 BK1 मज्ज। 7 BK2 BK3 जानयउ। 8 BK2 BK3 धन थम्यौ। 9 BK2 BK3 अच्छै। 10 BK2 भयानक, BK3 रत्तनीक नाह। 11 BK1 चित्रणी। 12 BK3 दिप्यो। 13 BK1 लपा। 14 BK2 पर पिय वैन। 15 BK3 अभग। 16 BK2 BK3 सरप सगुण सरूप।

त वह्नरि[1] को वड छिन, निमरै दानव नोइ।
चरि सु कग सर वर वमै, हमन हम कहुँ होइ ॥१८॥
रवि पति मुच्छि अच्छि तन, तरणि पान वय कानि।
तटित[2] करिग अगुलि करह, वाण भरिग पृथियान ॥१६॥

अनुष्टुप

अर्जुनो नाम नास्त्येन, दशरथो नैव दृश्यते।
स्वामिनो आपेटक[3] वृत्ती, तीन वाण चतुर नर ॥२०॥

कवित्त

भरिग वाण चहुवान जानि, दुरि देव नाग नर।
सुद्दि दिट्टि रस हुलिग चुक्कि[4], निक्करि गइ इक्क मर।
उभय आनि दिय हत्थ पुट्टि, पनारि पचारयौ।
वनि[5] वरत्त वर कत्त छुट्टि, घर घर आधारयौ।
इय कव्व सत्तु मरसै गुनित, पुनित कनौ कविचद मति।
इम परयौ अयाम अवास[6] तैं, जिम निमि[7] घसित नछत्र[8] पति ॥२१॥

गाथा

सुदरि गहि मार गो दुज्जन[9], त्वनोपि पिप्पि साइक्क।
किं किं विलास करिन, किं किं दुप्पाय[10] दुप्पाय ॥२२॥

दोहा

पनि गडयौ[11] नृप अनुधरह, मम दासी मुर याति।
दैव घरनि जल घन अनिल, कहिग चद कवि प्रात ॥२३॥
अप्पु राउ चलि वन हिगौ[12], सुदरि सोंपि सुहाइ[13]।

---

1 BK2 BK3 तव करि कर। 2 BK3 तडित्त। 3 BK1 आखेटकस्य। 4 BK1 चुक्किगइ प्रथम इक्क मर। 5 BK2 वानि वरत्तर, BK3 वनिवरत्तर। 6 BK3 अत्वास। 7 BK2 BK1 नमि। 8 BK2 BK3 क्षत्रपति। 9 BK2 BK3 -य। 10 BK1 दुप्पाइ। 11 BK3 गड्यो। 12 BK2 BK3 वनह। 13 BK3 सुहोइ।

सुपनतर कवि चद सों, सरसै वदि (देवी) आइ ।।२४।।
जोतिक तप गति उपय विनु, सुनिय न दिष्षि[1] अ पि ।
तौ मानौं स्वामिनि मकल, जो सु होइ परतिप्प[2] ।।२५।।

अडिल्ल

भइ परतष्पि, कवि मन आई ।
उकति कठ[3], सुद्दिहिं समुहाई ।
वाहन हस, ग्रस सुषदाई ।
तब तिहिं रूप, चद कवि गाई ।।२६।।

छद नाराच

मराल वाल आसन, अलित्त छाइ तासन ।
सुहृत जासु तु बर, सुराग राज धुम्मर ।
क इद केस मुक्करे उरग्ग वास विट्ठरे ।
विधूव जून पचए, कलक राह वचए[4] ।।२७।।
कपोल रेप गातए, उठत इद प्रातए ।
श्रवन्न तट्ट पिक्कए[5], अनग रत्थ[6] चक्कए ।
उच्छाहि धारि रजए तिरत रुन[7] रजए ।
सुवाल कीर सुद्धए त किंत निंब रत्तए ।।२८।।
दिपत तुच्छ दिट्ठए निंबी अनार फट्टए ।
सु मीव कठ मुत्तए, सुमेर गग पत्तए ।
भुजाइ[8] जामु तु वरं, सुरत्ति लागि अ तर ।
निपाध आध रंच्छिन, धरति सीस लच्छन[9] ।।२९।।

---

1 BK2 BK3 दिष्पिय । 2 BK2 BK3 परतिप्पि । 3 BK2 BK3 कट्ठ ।
4 BK1 BK3 वचए । 5 BK2 BK3 पिक्खए । 6 BK3 रथ । 7 BK1 तुच ।
8 BK1 भुमासुमास सु बर । 9 BK2 BK3 लच्छिन ।

कनक सा विट्टया, सुराग मीस रट्टया।

विचीच रोव रिंघयें, मनौ पिपील रिंगये।
सुसोभितानि रूपये, अनगजानि कूपये।
हरति छिन्नि जामिनी, कटित्त हीन कामिनी ॥३०॥

अभाप होय बबही[1], सुमत देव सबहि।
अपुन्न[2] रभ जातुए, अदेव बभ मातुए[3]।
सुरग चग पिंडुरी, कली मु चप अगुरी।
सवद बद नूपुग, चलत हस अकुरा ॥३१॥
बहति चद रेहुऐ कलस हीन सोहए।
सभाइ पाइ रगुजा जु अद्ध रत्त अबुजा ॥३२॥

अडिल्ल

अबुज विगसि[4], वासु अलि आयौ[5]।
स्वामि वचन, सुदरि समुझायौ।
निसि पल पच घडिय, दुइ धायौ[6]।
आपेटक झपै, नृप आयौ ॥३३॥
मध्य पहर[7], पुच्छे, तिहि पडिय।
कहि कवि विजय साहि, जिहिं ढडिय।
सकल सूर बोलिब, सभ मडिय।
आसिप दियौ[8], जाइ कवि चडिय ॥३४॥

छद रासा

कनक दड पृथिराज विराजै, सीस पर।
राज सिंघासन शासन सूर, सावत भर।

---

1 BK2 बचहि। 2 BK2 आपुव्व। 3 BK2 KK3 मानए। BK1 BK3 विगसि। 5 BK2, BK3 आयो। 6 BK2 BK3 धायो 7 BK2 BK3 पहर। 8 BK2 दियो।

राजस तामस सत्त त्रयो गुण, किन्न वर।
मनु मडी सम बभ, विच, छिन अप्पु कर ॥३५॥

छंद त्रोटक

भुज दच्छिन लच्छिन, काह हुव।
रण भूमि विराजति, जानि ध्रुव।
विहि मीर महम्मद, मान हन्यो[1]।
अरि अन्बुव छत्र, पवार घर्यो[2]॥३६॥
हर सिंघ नृसिंघ, सु[3] वाम भुज।
उड्डु मध्य विराजित जानि दुज।
नर नाह सनाह सु[4], स्वामि हुव।
जब चालुक भीम, गयद भुव॥३७॥
वर निंज विराजित, राज दल।
चालुक्क चरित्त, नछत्र हल।
धर माल चदेल, मु सच्च चवै।
रिपु जाइ पुकारत, होइ[6] परै॥३८॥
वर वीर सुबाहर, राइ तन।
अचलेसर[7] भिग्रउ, जाइ रन।
कर वीर[8] सिंघा[9] रस, जासु चपै।
नर नीडर एक, निमक तपै॥३९॥
धर विग्रह जास, जिहान जपै।
जिहिं झुप्पत गउनन, देस[10] कंपै।
लरि लप्पन देस, चदेल[11] लिय।

---

1 BK2 BK3 हन्यो। 2 BK2 BK2 घयो। 3 BK2 BK3 सु। 4 BK3 स्व। 5 BK3 सच्च। 6 BK3 होइ। 7 BK[1] अचलेस भिग्रौ। 8 BK2 नीर। 9 BK2 सिघार जासु। 10 BK3 'देश' दो बार है। 11 BK2 BK3 चदेल।

मुह मारि मुरस्थल, हत्थ किय ॥४०॥

सनमान मवै दिन, चद लहै।
पुच्छै जुध बात सु आनि बहै।
चावंड रिसाइ मुलोह जुरयो[1]।
मद गध गजेन्द्रनि[2], सों जु लरयो ॥४१॥

गुहलोत गरिच्छ[3], जु राज वर।
भुज वोट सु जगल, देस धर।
मुह मुच्छति अल्ह, नरिंद मुध।
सह[4] पट्टिय साहि, सहाव रुध ॥४२॥

वड गुज्जर वीर, कनक वली।
जिहिं षोडस जुग्गिनि[5] वीर मली।
नागौर नरेस, नृसिंह सही।
जिहिं रिद्धि सावत्तनि[6], मद्धि लही ॥४३॥

पवार मलष्पण लष्प गण।
इक पुट्टिय[7] पु गल, देस जन।
दस पुत्तनि[8] मानिक, राइ तन।
कहि को तिन की उतपत्ति भन ॥४४॥

जिहि जुष्ट विराजित[9], वीर हिय।
सर सभरि जिहिं, उतपन्न किय।
नव निक्करि के, नव मग्ग गए।

नव देस अपुब्ब लजाइ लए ॥४५॥
तिहिं पाट पृथीपति, राज तपै।

---

1 BK3 BK3 जस्यो। 2 BK2 BK3 गजिंद्रनि। 3 BK2 BK3 गरिष्ट।
4 BK2 BK3 स। 5 BK3 जुग्गिन। 6 BK1 सावतन। 7 BK2 पट्टिय।
8 BK1 पुत्तित। 9 BK3 विराजत।

चलह[1] हिन जो निमि, जाप जपै।
करि मिंगिन टक, पचीस गहै।
गुन च्चनी तीस, जनीर लहै ॥४६॥
सर मधि सवै[3] तनु, तेज लहै।
मब दच्छल[4] होत, अनन्त बहै[5]।
गुन तेन प्रजापति, वर्नि कहै।
दिन पच प्रजपिन, अतु लहै[6] ॥४७॥
मभ मटन मटित, चित्र मिय।
नृप अग्गै अप्पु, हकारि लिय।
॥४८॥

गाथा

हक्कारि चन्द कवी वेनी वरदाइ, वीर भट्टाय[7]।
तिहि पुर पराग गवनी अग्गे, आएम आएम[8] ॥४६॥

दोहा

आइ सुनि सुनि सु[9] अग्ग गो, दियौ मानु कर अप्पु।
महि न जाइ कविचद पहि, निम्ट नृप तिहिं[10] तप्पु ॥५०॥

अडिल्लु

पृथिमि सूर पूच्छै चहुवानह।
है कैमास[11] कहा कहु जानह।
तरनि छिपतु[12] सम मिन नायौ[13]।
प्रता वेव हम महल न पायौ ॥५१॥

दोहा

उद अगस्ति रितु रवन दिन, उज्जल जल समि कास।

---

1 BK1 चल हट्टिनि। 2 BK2 BK3 कर मिन गिन। 3 BK2 BK1 मवे। 4 BK2 BK3 दच्छर। 5 BK3 बहै। 6 BK2 BK3 लहौं। 7 BK1 महाय। 8 BK2 BK3 अएेस। 9 BK2 'सु' छूट गया। 10 BK2 BK3 तिहि। 11 BK2 BK3 कइमास कहहु कहु जानहु। 12 BK2 छिपत। 13 BK3 नायो।

मोहि चद इह विनय मन, कहहु कहा कैंनास ॥५२॥

गाथा

कहा[1] नामि चद चित्त नर भर सह, राज जोइय नयण।
अच्चिउन मूढ मत्त प्रगस्यो[2] अदिठ्ठ सरिष्ट[3] ॥५३॥

दोहा[5]

नाग प्पुर नर प्पुर सकल, कथि सुदेव पुर साज[4]।
दाहिम्मो दुल्लह भयो, कवि न जाइ प्रथिराज ॥५४॥
कहि[6] भुजग कह देन नर, कर न कछू कवि पढि।
कै[7] बत्तावहु[8] कैनास मुहि कै[9] हरि सिद्धी वर छढि ॥५५॥
जो छडे स्री[10] सुत धरनिह, तु[11] छडे[12] विष कदु।
रवि छडे तप ताप कौ, वर छडै कवि चदु[13] ॥५६॥
हठि लग्यौ चहुवान नृप, अगुलि मुषह फनिंद।
तिहुँ पुर तुन मति सचरे, कहै बनै कवि चद ॥५७॥
सेस सिर प्पर सूर वर, जौ पुच्छहि नृप एस।
दुइ बोलह मडन मरनु, कहहु त कन्तु कहेस[14] ॥५८॥

कवित्त

एकु वान पुहमी नरेस, कनासहि मुक्को[15]।
उर उप्पर सर ह्यौ[16], वीर[17] कष्पतर[18] चुक्कौ।
वियौ वान सधान ह्यो[19] सोमेसुर[20] नदन।
गह्यौ करि निग्रह्यौ[21] षयौ, रज्यौ सभरि धन।
घर छाडि न जाइ वप्पुरौ, गारै गहै गुन परौ।
इम जपै चद वरदिया, कहा नविट्टै यह प्रलौ ॥५९॥

---

1 BK2 कह। 2 BK3 प्रकट्या। 3 BK2 BK3, भारह। 4 BK3 साजा
5 किसी भी प्रति में दोहा शब्द नहीं लिखा। 6 BK2 कहे। 7 BK2 BK3 'कै' छूट गया। 8 BK2 BK3 बतावहि। 9 BK3 'कै' छूट गया। 10 BK2 BK3 सै। 11 BK1 तुह 12 BK2 छाड। । 13 BK1 चद। 14 BK2 हेस। 15 BK2 BK3 मुक्कउ। 16 BK2 हन्यो। 17 BK2 वीरु। 18 BK2 BK3 कप्पहतर चुक्कउ। 19 BK2 BK3 हन्यो। 20 BK1 सर-मर। 21 BK2 BK3 निगहौं।

अडिल्ल

भट्ट[1] वचन सुनि सुनि, नृप धानहि[2]।
अप्पु अप्पु गए[3] गेह, परान हु।
जुग्गिनि पुर ज भ्यौ, चहुवानह।
भइ निमि चारि जाम, इक[4] थानह॥६०॥

कवित्त

रान महल सप्रति[5] उपट्टि, दरवान परट्ठिय[6]।
बहुरि राउ[7] सावत मनहु, लग्गिय सिर लट्ठिय।
रह्यौ[8] चद वरदाइ विमुष, मुष गुन सरस्यौ[9]।
गिंभ तेन वर भट्ट रोस जल, पिन पिन मुस्यौ[10]।
रत्तरी पत जागत रह, चल्ली घर घर वत्तरी।
दाहिमौ दोसु[11] लग्यौ परौ[12], मिटै[13] त कलि सौ उत्तरी॥६१॥

गाथा

झम्मा मम्मार लग्गि मम्मा, चन्ताणि जाणि वचनाय।
वुज्झामि[14] हाणि कोइ पिम्मा, दम्भ रष्यिय राजन ! ॥६२॥
उग्गिया[15] भान पायार पूर, बज्जिय देव दर सप्प तूर।
कल्लत कैंयास चढिन रन साला, देइ[16] वरदाइ वर मग्गि थाला॥६३॥

कवित्त

जा जीवनु[17] कारणहिं[18] धर्म पारि, मृत टालहिं।
जा जीवन कारण हिं अत्थि, सो[19] चितु उतारहिं।
जा जीवन कारणे दुर्ग रपे, स्त्रबु[20] अप्पे[21]।
जा जीवन कारणे दुर्ग होम करि, नव ग्रह जप्पे।

---

1 BK1 भट। 2 BK2 BK3 कानह। 3 BK2 BK3 गय। 4 BK2 BK3 जम। 5 BK2 BK3 सप्रत्य उप्पट्ट। 6 BK3 परिट्ठिय। 7 BK2 BK3 राउ। 8 BK2 BK3 रह्यो। 9 BK2 BK3 सरस्यु। 10 BK2 BK3 सुसयउ। 11 BK2 BK3 दोस। 12 BK2 BK3 परउ। 13 BK2 BK3 BK2 BK3 मिट्टै। 14 BK3 बुज्झामि। 15 BK2 BK3 उग्गिय। 16 BK2 BK3 देवी। 17 BK1 जावन। 18 BK2 कारने, BK3 कारने। 19 BK2 BK3 सौ। 10 BK3 स्त्रउ। 21 BK3 अपै।

जा जीवन मैं अप्पने नृपति बहुत, जग्गहिं सभो।
सुरयो[1] सरोरुह[2] सुगौ[3] चलि, बुट्टई[4] अंधियार भो ॥६३॥
मातु गर्भ वस नरिनि जेम, मुक्कइ[5] सुर भालन।
पन लग्गइ[6] घन रहइ, पन पग हम निहालन।
वपु विसेष चट्टियउ[7] अंत, चट्टइ डर डरियौ[8]।
निंचित चद जु रार धार करि, किम उच्चरयो[9]।
मनु भम्म गम्म हक्कइ सकल, लिषतनि सुप्पुनन चिहइ।
पर कज्ज अज्ज मग्गौ[10] नृपति, मक्कइत[11] प्रमानप मुक्किहइ ॥६४॥
रषि सरनि सह गननि, मरण मगल अपुव्व किय।
दारुण पिषि दरवान रुक्कि, सक्यउ[12] न मग्गु दिय।
दिष्पि जलन[13] पृथिराज नयन, नयननि उच दिप्पौ[14]।
अतक चर चर धम्मु कम्मु निय, गुन सम लिप्पौ[15]।
बुल्लियौ वयन तब दीन हुइ, कवन काज कवि अत्थयो।
तबहिं देव किंत्तिय कलिय, धरनि तरुनि[16] तन मुक्कयौ ॥६६॥

गाथा

वाला सग सिवग्यो को आवास ति, भट्ट मिर आइ।
ना सुप गति सभरइ सभरि, वेराइ[18] राएस ॥६७॥

दोहा

बढिय किंत्ति बुल्लिय वयन, दिल्लिय पुरह[19] नरिंद।
दाहिम्मो दाहन गहर, को कहै कविचद ॥६८॥

---

1 BK2 BK3 सुरयउ। 2 BK1 सरोव रुह। 3 BK3 सगौ। 4 BK2 BK3 बुड्डे अंधियार। 5 BK1 मुक्के। 6 BK1 लग्गै। 7 BK1 चट्टियौ। 8 BK2 BK3 डरियउ। 9 BK2 BK3 उच्चरयउ। 10 BK2 BK3 मग्गउ 11 BK1 सक्त। 12 BK1 सक्यौ। 13 BK2 BK3 ज्वलनी। 14 BK2 BK3 दिप्पउ। 15 BK2 BK3 लिप्पउ। 16 BK1 तरनि। 17 BK2 BK3 श्रोवास। 18 BK2 BK3 वराय रायेस। 19 BK3 पुरह।

कवित्त

रावण किनि गड्डयौ, क्रोध रघुराय बान[1] दिय।
बालि किनै गडिड्यौ[2], सुनि[3] सुग्रीव तीय[4] लिय।
चद किनै[5] गड्डियौ, गुनह गुरदार सम्मिल्लौ।
रवि न पङ्ग गड्डयौ[6], तुच्छ सहदेव पहिल्लौ।
गड्डयौ न इद्र गौतम रिषाह, वह सराय छड्यो नहि।
इह दोस रोस प्रुथिराज सुनि, नन गड्डुहि सभरि धनि ॥६८॥

दोहा

तौ अप्पौ कैवास[7] तुहि, मिट्टहि उर अदेस।
दिप्पावड पट्टु पगुरी, जइ जइचद नरेस ॥७०॥
छिनदु[8] मरहि[9] धीरजु[10] करहु, अरि दिप्पत[11] तिहि काल।
अति वर वर बुल्लहु वहुत, क्रिय चल्लहु भुपाल ॥७१॥

अडिल्ल

चलौ चद सत्थह[12] सेवक तुअ[13]।
जो चल्लउ त अत्थि डुल्लइ[14] ध्रुव।
जब वह जानि मोहि सम्मुह हुइ।
तव अगनउ समर मह नित्थइ ॥७२॥

दोहा

दुवे कठ लग्गै गहन, नयन गल गल न्हानु[15]।
अब जीवन वछहि अधिकु, कहि कवि कोनु[16] सयान[17] ॥७३॥
अब उपाउ सुझौ इकु सचौ, सुनि कवि मरनु मिटै नहि रचौ।

---

1 BK3 बान। 2 BK2 BK3 गड्डयौ। 3 BK2 BK3 सुन्निय। 4 BK2 BK3 जाव। 5 BK2 कियो BK3 किनै। 6 BK2 गड्डयो। 7 BK2 BK3 कइवास। 8 BK3 छिनक्क। 9 BK2 BK3 मरह। 10 BK3 धीरज। 11 BK2 BK3 दिप्पित। 12 BK3 सत्थइ। 13 BK2 BK3 तुव। 14 BK1 डुल्लइ। 15 BK1 न्हाइ। 15 BK1 न्हाइ। 16 BK2 BK3 कौन। 17 BK2 BK3 सयानु।

सम रति या गगा जल पच्यौ[1], अवसर अवनि पग वृहि नच्यौ[2] ।।७४।।

दोहा

आनद्यौ[3] कवि सुनि वयन, नृप किय संच विचार ।
मरम गरूव मिर हरव हर, जीवन हर सिर भार ।।७५।।

छंद रासा

अत्थौ कवि कैंवास सती, मर सवर्‌यौ[4] ।
मरन लगन विधि हत्थ तत्थ, कवि उच्चर्‌यौ ।
घर वर पग प्रगट्ट तुछ, कवि हुढहिं[5] ।
इत उपहास विलासन[6], प्रानन छुड्डहिं[7] ।।७६।।

अनुष्टुप

गमनाय कृत राज्ञा, दूर[8] मामत मेव च ।
प्रस्थान काले सप्राप्ते, राज मध्ये[9] गत तदा ।।७७।।

(यहां सप्तम खण्ड समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं दी गई)

1 BK3 पच्य, BK2 पच्यो । 2 BK2 BK3 नच्यौ । 3 BK2 BK3 आनंदउ । 4 BK3 सवस्यो । 5 BK2 BK3 हुडिहै । 6 BK2 BK3 विलासत । 7 BK2 BK3 छुडिहौं । 8 BK2 पूर । 9 BK2 मध्य ।

अष्टम खण्ड

दोहा

ग्यारह मे इक्कावना[1], चैत तीज रविवार।
कनवज्ज दच्छिण कारणै[2], चल्यौ सु सभरिवार ॥१॥

छंद भुजंगी

गुरू ब्रत मंतापयं पाय पायं।
असी मत्त मत्तै, जगन्न सुठाय।
लहू षोडस गो, चवरसट्ठि माय।
वदै[3] चद छद, भुजग प्रयाय ॥२॥
क्रम्यौ जगली राव, कन्नौज वत्थ[4]।
चले सूर सामंत, छ सौ सु सत्थं।
चल्यौ सत्थ मावत, कान्ह समत्थ।
जिनै वदिया सूर, सग्राम हत्थ ॥३॥
विरुद्ध नर नाह, उग्गाह साह।
कुल चाहुवान, चप पट्टरोह।
गुरू राव गोविंद, वदति इद[5]।
सुत मडलीक, सवै[6] सैन[7] चद ॥४॥
धर धर्म स्वामित्त, साराइ लग्गा[12]।
सुत राइ सजम्य, रम्मं अभग्गा।
चल्यौ स्वामि सन्नाह, सादेव राज।
जुझ्झ[8] वागरी राइ, सामत जाज ॥५॥
रनधीर[9] झुम्फार[10], सत्थ सलप।
चल्यौ जैत[11] सग, सु कर अलप्प।

---

1 BK2 इक्यावना। 2 BK3 कारणि। 3 BK2 BK3 वद वद। 4 BK2 वथ। 5 BK1 वददि इद्द। 6 BK3 सवौ। 7 BK2 सेन, BK3 सन। 8 BK2 जुज्झ। 9 BK1 रणधार। 10 BK3 "झुम्फार" छूट गया। 11 BK1 ज्यौत BK3। 12 BK2 लुग्गा।

भर जाम नद्दौ र, षीची प्रसग ।
सर कछवाह, सु पज्जून सग ॥६॥
बलि भद्र कूरम्भ[1], पालन्ह भट्ट ।
कर कच्छवाह, सुजुद्ध अकत्थ ।
मदा ईस सेवै, सुर अत्तताई ।
चले हट्ठ[2] हम्मीर, गभीर भाई ॥७॥
नरसिंह दाहिम्म, जघ.र भीम ।
नही को सु चपै, वर तासु सीम ।
सज्यौ[3] वाह पागार, उदिग्ग सत्थ ।
चल्यौ[4] चद्र पु डीर, सग्राम पत्थ ॥८॥
वर चाहुवान, वर सिंह वीर ।
हर सिंह सग, सु सग्राम धीर ।
सज्यौ[5] राउ चालुक्क, सारग सग ।
सम विज्ज[6] राज, सु वध अभग ॥६॥
सथ जागरा सूर, सागौर गौर ।
वर वीर रसींह, सादूल धौर ।
चल्यौ[7] माल चदेल[8], भट्टी सुभानं ।
सम मीम[9] उल्ल, सामल सूर रान ॥१०॥
वलि वारन रैन, रावत्त राम ।
दल[10] दाहिमा रूव, सग्राम ध्यान[11] ।
वड्गुज्जर कक्कराज कनक ।
सह सूर सायत, वदै सु अक ॥११

---

1 BK1 कूरम्ह । 2 BK3 हट । 3 BK2 सज्यो । 4 BK2 BK3 चल्यो ।
5 BK2 संज्यो, BK3 सेज्यो । 6 BK2 BK3 विम्क । 7 BK2 BK3 चल्यो ।
8 BK2 चंदेल । 9 BK2 BK3 "सीम उल्ल" शब्द छूट गये । 10 BK2 BK3 दोल । 11 BK2 धान ।

निरन्वान वीर, सु नारैन वार[1]।
सम सूर चदेल, सोहैं सुधीर।
वर मैंगर वीर, मोहिल्ल वग्घ।
नृप राइ वध, सु रत्न सु सिंघ ॥१२॥
दल देव रा, देवराज ससोह।
महा मडली राइ, साथे अरोह।
धर धावर धीर, पावार सघ।
चल्यौ तोंवर पार, सौं साहि वत्थ ॥१३॥
सज्यों[2] ज्यावलौ[3] जाल्ह, चालुक भारौ।
लप वाघर बाम्भ, पैतं पगारौ।
वलिराइ वीरम, सरग गाजी।
परिल्हार राना, दल रूव राजी ॥१४॥
वर वीर नहो, भर भोज राज।
मम सावरा रुप, मावल्ल माज।
क्रमयुज्ज[4] विक्रम, सादूल भोरी।
नय टाठरी[5] टाक, सारम्म तोरी ॥१५॥
नय सिंघ चदेल, चासू कठेर।
भर भीम जहो[6], अरी गौड जेर[7]।
सुत नाहर, पारिहार महत्त।
सम पीप सग्राम, साह गहन्न ॥१६॥[8]

---

1 BK2 वार। BK1 सऱ्यौ। 2 BK2 BK3 ज्यावलो। 4 BK1 क्रमधुन्क।
5 BK2 BK3 डाट्ठरी। 6 BK2 BK3 जद्दो। 7 BK2 जीर, BK3 जा।
8 BK1 गहत्त।

घर वार मडानय[1], देवराज।
रने अच्चल राइ, अचल्ल्य[2] साज।
चल्यों कचरौ राइ, चालुक वीर[3]।
॥१७॥
गन लप्पन लप्प, वघेल एक।
सुत पूरन सूर, वड़ै सुतेक।
परिल्हार तार न, तेनल्ल ढोड[4]।
अचलेस भट्टी, अरि स्साल सोढ ॥१८॥
वड गुज्जर, चद्रसेन सधीर।
सुत कट्टिया सेन, सग्राम वीर।
विजै राज वाघेल, मोहिल्ल[5] वच्च[6]।
लषन्न पवार, नल क्रूर सच्च[7] ॥१९॥
भर रघर धर्म्म, स्वामी पुडीर।
भिरै सूर भग्गे, नही सूर भीर।
कमधज्ज जैसिंघ, पड पहार।
भर भारथ राइ, भारत्थ भार ॥२०॥
सुत सागर केहरी, मल्ह्नाथ।
विध तोरवा[8] कट्ट, सग्राम वास।
चल्यौ टाकु चाय, मु रावत्त राज।
हरी देव ती राइ, जादव्न जाज ॥२१॥

---

1 BK2 BK3 मडन। 2 BK2 BK3 अच्चल्ल। 2 BK2 में इस चरण के पश्चात् अधिक पाठ—"सुत भीम सग सदा सेव सिभ। कमधुज्ज आरज्ज, आहु कुमार। भर भीम चाउक्क वार च वीर। ये तीन चरण अधिक हैं और प्रक्षिप्त है, BK3 ये तानों चरण नहीं हैं। प्रतीत ऐसा होता है कि इस प्रति के लिपिकार की दृष्टि सख्या १७ के तृतीय चरण 'वार" शब्द से वार च वीर" पर जा अटकी अत दृष्टि विभ्रम से ये तीनो चरण छूट गये। 4 BK2 ढोड। 5 BK2 BK3 मोहिल। 6 BK3 बघाच। 7 BK2 कूर राच, BK3 सच। 8 BK2 BK3 न्तोरवा।

चली राइ कथ, सुहड्ड हमीर।
हुय हाहुली राइ, सग्राम भीर।
पट्टनर[1] राइ[2], कनवज्ज राज।
दल दाहिया, जगली राइ साज ॥२२॥
मुष पच पचाइन चाहुवान।
सुत पारिहार, रणन्वीर रान।
रस सूर सामत, सच्च सुलष्प।
नर लिष्पियै एक, एक सुलष्प ॥२३॥

कवित्त

कनवज्जह ज्यचद चल्यो[3], दिल्लियसुर दिष्पन।
मरथ चन्द नरदाइ बहुत, सावत सूर धन।
चाहुवान राठाड जरख[4], पु डरी गहिल्ला।
वट गुज्जर पावार चले, कूरम्भ मुहिल्ला।
इत्तनै महित भुव पति चल्यौ[5], उडी रेनु छिन्नी नभौ।
इक्क ट्रुक लष्प नर लिष्पिए, लिए साथ सामत[6] सौ ॥२४॥

[दोहा[7]]

अतिलक बभन स्याम असु, जोगी हीन विभूति।
सनमुष रान निरष्पियै, गवन वरज्जै[7] नीति ॥२५॥
रासभ उभै बुलालक्कर, सिर विध नारि सवारि।
नामु दिसा सम्मुहि मिलै, अगसि होड प्रभु रारि ॥२६॥
सिर पच्छी दच्छिन रचै, वाए[8] रचै सियाल।

---

1 BK2 BK3 पट्टकर। 2 BK1 राज। BK2 BK3 चल्यो। 4 BK2 BK जरखो। BK2 BK3 चल्यो। 6 BK2 BK3 रजपूत। 7 किसी भी प्रति म 'दोहा' शब्द नहीं लिखा। 8 BK2 BK3 बायें उग शृगाल।

मृतक[1] रथी समुह मिलै, कीजै गमन[2] नृपाल ॥२७॥
कलस कमल[3] उज्जल नमन, दीपक[4] पावक मत्थ[5] ।
मुनि राना वरदाइ कह[6], इते सकुन अति मत्थ[7] ॥२८॥
सून वधि भूपति उभै, अग्र कवि चद अनूप ।
नमन उतरि नावहिं निकट, मिलि इक महिल सरूप ॥२६॥

कवित्त

पाणि[8] नालि दाडिमी हाम[9] मुष, नैन रोसु निय[10] ।
उरमि माल जा फूल कमल, कणयर सिर सिरनिय ।
वाम हेम आभरण[11] लोट, दाच्छन दिस मडिय ।
अर्द्ध वेस सल वधि अर्द्ध, मुक्लत ति छडिय ।
विय रत्त पीत अम्वर[12] पहिरि, निरिव रान अचिन[13] करि ।
किहिं महिल किहिं सुघर, किहि[14] सुनर निहि सुरान अग्धग
घरि[15] ॥३०॥

दोहा

इह विधि नारि पयान मिलि, मुष कलयत्त फनिंद ।
उहिम आदर वलिय नृप, तव हि न वुज्झि नरिंद ॥३१॥
वन विडाल घुग्घू[15] घरह, परत परेव पडुक ।
एक थान दच्छिन दिसहि[16], हिनह सौन सस मुक ॥३२॥
सुनि कराल सद्यौ[17] समूह, हसि नृप वुज्झयौ चद ।
इक रवि मडल भिदिहैं[18], इक करहि गृह दद ॥३३॥
रत्त सीम सारस सवद, उभय सवद्दल भान ।
परनि भजि प्रतिहार सौ, करहुत कज्ज प्रमान ॥३४॥

---

1 BK1 मृतक रवी । 2 BK2 गवन BK3 गवना । 3 BK2 BK3 केसर । 4 BK2 BK3 दीवक । 5 BK 1 मच्छ । 6 BK2 BK3 कहि । 7 BK2 अच्छ । 8 BK2 BK3 पानि । 9 BK2 BK3 हासि । 10 BK3 निया । 11 BK3 भालरण । 12 BK2 पहरि । 13 BK2 अच्चिजु । 14 रेखाकित पद्याश छंद की दृष्टि से अधिक है । 15 BK1 धर । 15 BK1 घुघू । 16 BK2 दिसह कहहि नसौ नल मुक्क । 17 BK2 BK3 सवउ । 18 BK1 दिमि दिहै ।

राज सकुन सम्मुह हुवौ, ध्रु नतर सिंह न्हार।
मृग दच्छिन दच्छिन[1] परह, चलहि न मभरिवार ॥३५॥
त्रियत दिवस त्रिय जामिनी, त्रियत जाम चलजुन।
जोजन इत इक[2] मचरिग, पृथीय[3] राज मपन्न ॥३६॥

छंद पद्धडी

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस, विस्तरहिं सूर सुरलोक देस।
इक करहिं सूर अस्नान दान, वर भरहिं सूर सुनि निसान ॥३७॥
इक करहिं लेहु[4] वर इंदिराज[5], जम जियन मरण प्रथिराज काज।
मनरिय सल्ल बछहि ति भान विधु बाल जेमि गगहि विहान ॥३८॥
गुर दयित उदित मृग मुदित अत्त, झलमलिग तार[6] तह हलिग पत्त।
निप्पिये चद किरनीन मद, उद्दिमह हीन जिम नृपति चद ॥३९॥
ढर हरिग सीत रस मद मद, उगज्यौ[7] जुद्ध आवद्ध दद।
पहु फटिग घटिग सन्वरि सरीर, मलनत कनक[8] दिप्पियहि नीर ॥४०॥
नृप भ्रमण जानि पहु पुन्न देस, अरि नैर नीर उत्तर कहेस।
नर सिंघ हिंदु कनवज्ज राउ, तह चढयौ[9] सुर्ग धरि धर्म चाउ ॥४१॥

दोहा

रनि नम्महि सम्मुहि उयो, है नहि[10] मग्ग समुज्झि[11]।
भूलि भट्ट पुव्वहि[12] चल्यो, कहि उत्तर कनवज्ज ॥४२॥
कचन फुल्लिग[13] अर्क सम, रतननि किरण प्रकार।

---

1 BK2 BK3 दक्षिन। 2 BK1 इग। 3 BK3 पृथीव। 4 BK2 लेहि।
5 KK3 इंदाराज। 5 KK3 तारत हलिग। 7 BK2 BK3 उपज्यउ।
8 BK3 कनदिप्पियम नीर। 9 BK2 BK3 चढ्यउ। 10 BK2 BK3 नहि। 11 BK2 BK3 समुझ। 12 BK2 BK3 पुव्वह BK1 चल्यौ।
13 BK1 फुल्लिक।

उदय कलस जयचद गृह, सभरि सभरिवार ॥४३॥

छद भुजगी

कहू मभरे नाथ, उठै गयदा।
मनौ दिप्पियै[1] रूप, ऐराव इदा।
कहू फेर ही फेरहि भूप, अच्छे[2] तुरगा।
मनौ पिप्पियै[3] चाड, चढ्ढे[4] कुरगा ॥४४॥
कहू माल भू डडने, सार सधै।
कहू पिप्पि पाइक्कने[5], नैति बधै।
कहू विप्र ते उट्ठिहि[6] प्रान चल्यै[7]।
मनौ देवता स्वर्ग ते, मग्ग मुल्लै ॥४५॥
कहूँ जग्य ते[8] पुन्य ते[9], राज काज[10]।
कहू विप्र ते[11] उट्ठि, कुरग[12] साज।
कहँ तापसा तापते, ध्यान लग्गे।
तिनै देपते रूप, [पाप] समार भग्गे ॥४६॥
कहूँ षोडसा गाइ, अप्पति दान।
कहूँ हेम सन्मान पृथ्वी प्रमाण।
इते चार चारित्तु[13] ते, गग तीरे।
तिनै[14] देषते[15] पाप, नट्ठे सरीरे ॥४७॥

दोहा

हो चातन सु मतु कहुँ[16], सुहर चित तनि वाजि[17]।

---

1 BK2 BK3 दिप्पिय। 2 BK2 अच्चे। 3 BK2, BK3 पिपिय। 4 BK3 चढू। 5 BK2 BK3 पाइयानैति। 6 BK1 उट्ठे। 7 BK2 BK3 चल्लें। 8 BK1 तै। 9 BK1 तै। 10 BK3 काज। 11 BK1 त। 12 BK3 म 'कुरग साज" छूट गये। BK2 म "कहू विप्र०" आदि समस्त चरण छूट गा। और—"कहू दर देवाल ने क्रित्ति साज" चरण प्रक्षिप्त कर लिया है। 13 BK1 चारित्त। 14 BK2 BK3 तिन। 15 BK1 सा। 16 BK3 कहू। 17 BK1 वाज।

त्रिपथ लोक पृथि राज सुनि, नमसकार करि[1] आजु[2] ॥४८॥
कहा महत्तु दरिसन तन्ह, कहा महत्तु[3] त न्हान।
कहा महत्तु गम्भीर तन, कहि वनि चद गियान ॥४६॥

मुडिल्ल

त त न्हान महत्तु न जानौ। दरिसन तत्तु महत्तु वषानौ।
सुमिरन पाप हरै हर गगा। दरसन राज भयो दिठि सगा।
ब्रह्म कमडल थी जल गगे। सो प्रभु आजु परस्पह अगे ॥५०॥
तामस गज धर्यौ उर पारह[4]। सत्त उदिक्क[5] गग मज्भारह ॥५१॥

शाटक

बभे कमटले[7] कलि मले, कांति हरे क बहे।
सतुष्टे त्रय लोक तु ग गवने[8], त्वगीय सेसाभवी।
अर्घे[7] विश्व समागते सुविमले, अस्पृष्ट कोलाहले।
जजाले जगतीर पार करनी, दर्शाय मा जान्हवी ॥५१॥

छद त्रोटक

त्रिपथ गति गगति अगसिता। मनु मज्जन नीरजु[10] अग हिता
टट कमडलजा भमर[11] भमर। भव भग करे[12] अमरा[13] अमर ॥५३॥
गण गध्रव[14] नीति[15] सुनी निमुनी[16]। दिवि भुम्मि[17] पयालह दिव्य धुनी
तरु ताल तमालह साल टटी[18]। विच अबज भीर गभीर वटी ॥५८॥
कल केलि[19] सु जबु वनि ववरा। गत पाप सताप समै सियरा।
सुभवारि तरग सुरग धरै। उर हार सुमुक्तिय जानि हरै ॥५५॥

---

1 BK2 करे। 2 BK2 BK3 आजि। 3 BK2 BK3 मतु। 4 BK1 धरि उत्तर पारह। 5 BK1 उदिक्क। 6 BK2 BK3 मज्भारह। 7 BK1 कुट मल्ले। 8 BK1 भवने। 9 BK2 BK3 अर्घ विश्व। 10 BK1 नीरन। 11 BK2 KK3 भमरे भमरे। 12 BK2 BK3 करै। 13 BK3 अमरै। 14 BK3 गध्रुव। 15 BK2 "वि सुना" छूट गए। 16 BK3 'नि सुना" छूट गए। 17 BK2 भुमि। 18 BK1 टरी। 19 BK2 BK3 केल।

निन दुल्लभजा जगन जरन। भइ थभ कमटलु आभरण।
सुर ईस म दीस सु मादरन। मिलि अभ मुरग सु सागरण ॥७६॥
सुभ उद्दिर[1] मग्ग[2] जु मग्ग जन। जसु[3] दरमन चतुर दीप मल।
॥८०॥

दोहा

रहम केलि[4] गगह उत्थ, सम नरिंद किय केलि।
तिरन त्रिभगी छद पढी, चद सु पिंगल मेलि ॥८८॥

छद त्रिभगी

हरि तरल तरगे, अब हत भगे, कृत चगे।
हर सिर परसगे, जटनि निलबे, अरधगे।
गिरि तुग तरगे[5], विन्नरति दगे, नल जगे।
गन गध्रव छदे, जय जय बन्दे, सुप छदे[6] ॥८६॥
मति उच[7] गति मदे, दरमित नन्द, गति दुन्दे।
वपु अपु विलमदे, जम भृत जदे, कहकदे।
छिति मति उर माल, मुकति विसाल, सय माल[8]।
सुर नर टट बाल, कुसुमित लाल, अलि नाल।
हिम रिम प्रति पाल, हरि चरणाल[9], विधि बाल।
त्रसन[10] रस राज, जय जुग काज, भय भाज।
अमरच्छरि[11] करज, चामर वरज, सुभ साज।
अमलत्तनि[12] मजरि, जनम पुनकरि, सासकरि[13] ॥६१॥

---

1 BK2 BK3 दुट्टिय। 2 BK3 मग्गा। 3 BK2 जस दरिमन। 4 BK2 BK3 किलि। 5 BK2 BK3 तिरगे। 6 BK2 BK3 चद। 7 BK3 BK3 उच्च। 8 BK2 शाल। 10 BK2 BK3 दरिसन। 11 BK1 अमच्छर। 9 BK2 BK3 चरनाल। 12 BK2 BK3 अमलचन। 13 BK2 BK3 में—निय तन जनरि चवथ जरि, करुना रस ननरी अधिक पाठ है जो सदिग्ध है।

कलि मल हरि भञ्जन, जन हित रंजन, अरि गंजन ।
1 ॥६२॥

[मालिनी[2]]

उभय कनक सिंभ, भिंग, कठीय लीला ।
पुनर पुहप प्रना, वदति[3] ति विप्रराज ।
उरसि मुत्तिहार, मध्य घटीय शप्ट ।
मकति भीर अनग, अग त्रिवल्ली ॥६३॥

छंद रासा

त्रिपि तनै रस भावित[4], कवियन यह कहै ।
है मनु अच्छि[5] पुरन्दर इंद जु इह रहै ।
चप चंचल तनु सुद्धति, सिद्धनि[6] मनु हरै ।
कंचन कलस झकोरति, गंगा जल भरै ॥६४॥

छंद नाराज

भरति नीर सुन्दरी, तिपा तिपत्ति अंगुरी ।
कनक बक जेनुरी ति, लगि कट्टि जेजरी ।
महज्ज सोभ पिंडुरी[6], ति मीन चित्त ही भरी ।
मरोल लोल जंघया, ति पीन कच्छ[7] रभया ॥६५॥
कटित्त सोभ सेपरी, वर्योंत[8] जानि केसरी ।
अनेक छंछि छत्तिया[9], वहत चद रत्तिया ।
दुराइ कुच्च उच्छरे, मनौ अनग ही भरे ।

---

1 BK[1] BK2 BK[3] तीन चरण न्यून हैं। 2 BK1 BK2 BK3 में नहीं दिया। 3 BK2 प्रना वदति रति विप्प्रराज, BK[3] प्रजा वद तिनि विप्रराज। वैसे भी इस छंद के अन्तिम तीन चरणों में छंदो भंग है। 4 BK[1] भवित। 5 BK2 BK[3] अच्छि। 6 BK2 सिद्धनु। 6 BK[1] पिंडरी। 7 BK2 BK3 कच्छ। 8 BK2 BK[3] वर्योत। 9 BK[3] छत्तीया। 10 BB1 उच्चरे।

रुरत हार सोहए, विचित्त चित्त मोहए ।।६६।।
उठत हत्थ अञ्चले, रति मुत्ति मुञ्चले।
कपोल उत्थ उज्जले, हयत[1] मोह मिघले।
अधर रत्त रत्तए[2], मकीर क्रीड बद्धए।
सुहत दंत दामिनी, कहन्त बीन दाडिमी[3] ।।६७।।
महग्ग कंठ नासिका, विना न राग सारिका।
सुभाइ मुत्ति सोहए[4], दुभाइ गज लग्गए।
दुराइ कोइ लोचने, प्रतप्प काम मोचने।
अबद्ध[5] ऊंच भोंह ही, चलति ऊँह[6] सोंह ही।।
लिलाट आड लग्गये,, सरद चंद लज्जए ।।६८।।

दोहा

ढिल्लिय गुहि अलकैं लता, श्रवन सुनहि बहु बान।
जनु भुजंग समुह[7] चढै, कंचन पंभ प्रवान ।।६९।।
रहहिं चंद मत गन्धु[8] करि, कहहिं न कछु विचार।
जितै नयर सुंदरी कहि, सब दिष्षिय पनिहारि[9] ।।७०।।
जाह्नवि टट पिष्षियै, रूअ रासि ते दासि।।
नगर ति नागर नर घरनि, रहहिं अवास[10] अवास ।।७१।।
दिनियर[12] दरसिन दुल्लहि, तिन मंडन[13] भरतार।
सुप कारन विधि निम्मइ[14], दुप कत्तरि करतार ।।७२।।
कुवलय रवि लज्जह रह, न रहि न भजि भृङ्ग मरग।
सरस बुद्धि वर्णन कियौ, दुल्लह तरुणि तरन्न[15]।।७३।।

---

1 BK2 BK3 हत। 2 BK[1] रत्तद्। 3 BK2 BK3 दाडमा। 4 BK2 BK3 साभए। 5 BK2 BK[3] अबद्धि। 6 BK2 BK3 औंह। 7 BK1 सम्मु। 8 BK2 BK[3] गन्धु। 9 BK2 BK[3] पनीहारि। 10 BK2 BK[3] एक "अवास" छूट गया। 12 BK2 KK3 दिनियर। 13 BK3 मंडल न। 14 BK2 BK3 निम्मइ। 15 BK[3] तरन।

छंद [पद्धडी]

पुनर्जनमे जते, जानि जग्गे।
रहे सप सेपते, (सत्र सेत्रते) पुट्ठि लग्गे।
मान मोहन्न लय[1], मुत्ति थानि।
मनौ[2] थार आहार कै, दुद्ध तानी ॥७४॥
तिलक नग निरपि, जग जोति जग्गी।
मनौ[2] रोहिणी रूव[3], उर इंद लग्गी।
रत्र भुव देषि, अवरेषि दग्यौ।
मनौ काम करवाय, उडि आपु लग्यौ ॥७५॥
पगुरे नैन ते, ऐन दीस।
वचै जोति सारग, निर्वात दीस।
तेज ताटक्ता[4], अवन[5] डोल।
मनौ अर्क राका, उदै अस्त लोल।
जल जनमी हीर, मय मध्य लोल[6]।
दिव्य दरसी तहा, दिलवल[7]।
अधर आरत्तता, रत्त साईं[8]।
मनौ चद वधीय, अस्नै वनाई ॥७७॥
कपोल कलगी[9], कलि दीय मोह।
अलक्क अरोह, प्रवाहेति मोह।
सिता स्वाति बुंद, सिता हार भार।
उभै ईस सीस, मनौ गग धार ॥७८॥
कर कोन कट्टन, कवू समज्झ।

---

1 BK1 मे "लय" छूट गया। 2 BK1 मानौ। 3 BK2 BK3 रूप।
4 BK1 भारकता। 5 BK1 श्रवण। 6 BK2 लोल। 7 BK2 BK3 दिलवल्लं। 8 BK2 BK3 साइ। 9 BK1 वलिगा।

मनौ तित्थ राथा, तृवल्ली उरज्भ[1]।
उप्पमा पानि, अगूनि लम्भ[2]।
लज्जि दुरि येलि, वुल मद्धि गम्भ ॥७६॥

नप निम्मल दर्प्पण, भाव दीस।
समीप सुकीय[3], किय मान रीस।
नितंब उतंग, जरेवे गयंद।
मघे[4] रिप्पु पीन[5], रप्पी है[6] मयंद ॥८०॥
साप सोवन्न, मोहन्न थंभ।
सीत उर येह रति, दोप रंभ।
नारिंग रंगीय, पिंडी छुछंडी।
मनौं वनक लट्टीय, कुकुम्म लुट्टी ॥८१॥
रोहि आरोहि, मंजीर सद्द।
मद मृदु तेज, प्राकार वद्द।
पिंडिया[7] डबर, श्रोन बाणी।
मनों कच्च[8] रच्चीनि, भै रत्त पानि ॥८२॥
अंबर रत्त नीलत पीत।
मनौ पावसे[9] धनुष, सुरपत्ति कीत।
सुगीय सुकीय, जिय स्वामि जान।
पग रव हंस, अरविंद मान ॥८३॥

दोहा

हय गय दल सुंदरि सुहर, जै वर्नंउ बहु बार।
यह चरित्त अब लगि कहै, चलि मदेह दुबार ॥८४॥

---

1 BK2 BK3 उर । 2 BK1 लज्भ । 3 BK2 स्सुकीय । 4 BK2 BK3 मद्धि । 5 BK2 BK3 क्षीन । 6 BK2 BK3 'है' छूट गया । 7 BK2 BK3 पडिया । 8 BK1 कच्च रच्चोनि । 9 BK2 BK3 पावसै ।

छंद [पद्धडी]

दिष्पिय जाइ, सदेह टोह[1]।
अर्क साकोटि, सम्पन्न देह।
मडप जासु, सोवर्न सोह।
मुत्तियन[2] छित्त[3], दीसै न छेह ॥८५॥
महिप सत एक, वहु श्रोत रत्ती।
प्रतव्वे[4] जतन्नैर, नै नैन मत्ती।
पिंडे[5] भार रछौ[6], उहे वार रज्नी।
देषि चाहुवान, किलकार गज्जी[7] ॥८६॥
वयन आकास, सहलौं[8] विराज।
होइ जय पत्त[9] पति, प्रथिराज राज।
वछिन अङ्ग, करि नमसकार।
मध्यता नैर,[10] किय[11] ही विचार ॥८७॥

छंद [अडिल्ल]

जिलगरी जूथ, जिनकै प्रसगा।
दिष्पियहि कोटि, कोट निनगा।
तिजू[12] एक चौपै, सुवे पैजवारी।
ति उच्चरे सोंह[13], आनन्न[14] पारी ॥८८॥
जिके साधि सभारी, पेलत लष्षे।
तिके दिष्पियै भूप, दानव्व पिष्षे[15]।
जिके छैल सघट्ट, वेशा[16] सुरत्ते।

---

1 BK2 BK3 गेह् । टोह–ढु ढना। 2 BK1 मुत्तियान। 3 BK1 छित। 4 BK2 BK3 प्राप्त जत नर नैर मत्ती। 5 BK2 BK3 पड। 6 BK2 BK रच्छउहि। 7 BK2 BK3 गजो। 8 BK2 सहभौ। 9 BK1 पत्तिपति पृथ्वाराज। 10 BK1 नैन, BK3 नै। 11 BK2 कीनौ, BK3 म समस्त पद स्थाने "मध्यता नै विचार" है। 12 BK2 तिजू पकै चौप ,वो पेजुवारी, BK3 तिजू एकै चौप वो दैहुवारी। 13 BK1 सौंह। 14 BK2 BK3 आनन। 15 BK3 पिष्पौ। 16 BK2 BK3 वेश्या।

जराय जरत कनक कसत[1] । मनौ भय[2] वामर जामिनि जत ॥९८॥

कसि क्कसि हेमहिं, दिनेस कढ्ढति तार।
उवत दिनेस, किरन्नि[3] प्रकार।
करि कर[4] ककरण, अकहि लोभ।
मनों द्विज हीन, सद्दहि[5] मोम ॥९९॥

जरे इमि नग्ग, प्रकारति लाल।
मनौ[6] ससि तार, रवि बिंब रसाल।
तुलत जु तनु, तराजु न जोप।
मनौ घन मद्धि तडित्तह ओप[8] ॥१००॥

जरे जिविं नग्ग, सुरग सुघट्ट।
ति सुदरि सोभ, पुहा वहि पट्ट।
दु अगुलि नारि, निरप्पहिं हीर।
मनौ फल बिंबहि, चपै[8] कीर ॥१०१॥

नथ नग बाहड[9], मुत्तिय असु।
मनौ भपु[10] छडि, रह्यौ गहि हसु।
दिसि दिसि पूरि, हय गय भार।
स पुच्छत चद, गयो[11] दरबार ॥१०२॥

इति श्री कवि चन्द विरचित पृथ्वीराज रासे[12] जय चन्द
द्वारे सम्राप्तो नामाष्टम पद ।

---

1 BK1 कर्सन । 2 BK1 नय । 3 BK1 BK3 किरत्ति । 4 BK1 क्कर । 5 BK3 सदहि । 6 BK2 BK3 समस्त पद स्थाने—"मनौ ससि तार विसाल । 7 BK2 BK3 वोप । 8 BK2 BK3 चपइ । 9 BK2 KK3 बाहहि । 10 BK1 नपु । 11 BK2 BK3 गयो । 12 BK2 BK3 रासौ ।

नवम खंड

दोहा

कौतूहल दिग्यौ सकल, अफल अपूरब चट्ट।
पत्तयार छगगल छलह, राज नही वर भट्ट ॥ १ ॥
निसि नौपति गत[1] भात मिलि[2], हय गय दिष्यो साज।
निरचि सुद्दर करि वर गह्यौ, किनिम[3] कह्यौ पृथिराज ॥ २ ॥
चहहि[4] चद्दु ददु न करहु, रे सावत कुमार।
तीनि लच्छि निमि दिनु रहहि, इह[5] जयचद दुवार ॥ ३ ॥

मुडिल्ल

पुच्छत चद[6] गयौ[7] दरवारह। जहा हेजम[8] रघुवस कुमारह[9]।
जिहि हर[10] सिद्धि मदा षरु[11] पायौ। सु कवि चद्दु ढिल्ली हु तैं आयौ[12] ॥४॥

दोहा

आदर करि आसनु[13] दियौ, पालक पगु[14] नरिंद।
छिनकु विलव सुहितु करि, जब लगि कहि कवि चद्दु ॥ ५ ॥

अनुष्टुप

मगिधान[15] कि वारता, मधिवान फनि[16] महात्।
युद्ध[17] वानक पगु राजेन, न भूतो न भविष्यति ॥ ६ ॥

दोहा

अम तिन[18] बोलहु हेजमन[19], गन्त्रू करहु जिनि आलि।
जु वत्तु सुमर चित्तै वरनयहु, दिष्पहुगे[20] काल्हि ॥ ७ ॥

---

1 BK1 गति। 2 KK2 BK3 मिलित। 3 BK2 BK3 किनि। 4 BK2 BK3 कही। 5 KK2 BK3 इहि। 6 BK2 BK3 चट्टु। 7 BK2 BK3 गयो। 8 BK1 नहि। 9 BK1 कुमारहि। 10 BK2 BK3 हार। 11 BK2 BK3 वर प्पायो। 12 त आयो। 13 BK3 आसन। 14 BK3 पग। 15 BK2 BK3 मगधान। 16 BK2 BK3 फिनि। 17 BK2 BK3 युद्धवान। 18 BK1 तम। 19 BK2 BK3 हेजमनि। 20 BK2 BK3 दिष्ष गे कालि।

सुनन हेत हेजम उठित, दिपित चद वरदाइ ।
नृप अग्गे[1] गुद्दर गयौ, जहा पगुरौ सुराइ ॥ ८ ॥
आदरु करि हेजम कविहिं, नयो[2] सु जहा नरिंद ।
ढिल्लिय पति चहुवान का[3] कहि असीस कवि चद ॥ ६ ॥

छद रड्डा[4]

तव सु हेजम सुजसु जपि कहि, सीस नाइ दस वार,
से तुच्छ भूपति नहि, सु दिट्टउ ॥ १० ॥
तव सु कियौ परिणाम तह, यह कहि तिहिं प्रतिहार ।
जिहिं प्रसन्न सरसे कहहि, सु कवि चद दरवार ॥ ११ ॥

गाथा[5]

सिर नवाइ बुल्यो[6] वयन, अवसर पसाव राज राजेस ।
कवि जु जुग्गिनि पुरा सौ, सोई उट्टो[7] द्वारि नरेस ॥ १२ ॥

दोहा

वैन सुन्यौ रघुवस को, भौ साहस भा अनद[8] ।
तिन दसबधि[9] सौं कह्यौ, बोलि विप्पह चद्दु ॥ १३ ॥

मुडिल्ल

आयस भय गुनियन तन चाह्यौ[10] । तिन परिणाम कियौ[11] सिरु नायो ।
किधों डिंभ कवि, कव्वु प्रमानिय । सरसै वरु उच्चारहु[12] जानिय ॥१४॥

छद भुजगी

डडिया डबर भेष धारी । सु कव्वी[13] कु कव्वी प्रकार विचारी ।
सुनै राय पग मुनौ कव्वी सरुची । परय्यौ सु पत्त कु पत्त गुनच्ची[14] ॥१५॥
अहित्त सुहित्त सुचित्त विचारो । रस नौ सु भापा सुभापा उधारी ।

---

1 BK2 BK3 अग्गइ गुदर । 2 BK3 गयो । 3 BK2 BK को । 4 BK2 BK3 रड्ड । यहा रड्डा घटता नहीं है । दोहा के लक्षण घटते है । 5 यहा 'गाथा' के लक्षण भी ठीक नहीं घटते । 6 BK1 बुल्यौ । 7 BK1 सोइ उठ्यौ । 8 BK1 आनद । 9 BK2 BK3 दसवधा । 10 BK2 BK3 चाह्यउ । 11 BK3 कियो । 12 BK3 उच्चरहु । 13 BK3 कुकव्वी । 14 BK2 BK3 गुनग्गी ।

पर मान ग्यानो वि·यानी विरूर। लहो बुद्धि विद्या त आजौ हजूर ॥१६॥

अडिल छंद

तिह ठा आनि आपु कवि पत्ते[1]। गुन व्याकरण कहहिं रस रत्ते।
थकि प्रवाह गगा सुप भत्ते। सुर नर श्रवण मडि रहि यत्ते ॥१७॥
नव रस भाष छ पुच्छन तत्ते। कवि अनेय[2] वहु बुधि गुन मत्ते।
इक कवि भाष छत्री सह सुवत्ते[3]। षहन एह कवि चद सुरत्ते[4] ॥१८॥

नाटकु

अभोन्ह मानद जोइल रिमो, दाडिम्म लोचीय लो।
लोयनु चलिचालु [चचलु] भ्रम कलउ, विबाय की योग हो[5] ॥
की मीरी को साइ[6] चीनी रसो, चौकी[7] मृगी नागवी।
इन्नो मद्धि सुचिह्मिान विहनोए, रस्स भाषा छठो[8] ॥ १९ ॥

सुडिल्ल

मद रूपक हि षहि षहि, कवि नित्ते[9]। नव रस भाष छ, पुच्छन रत्ते।
गन पति गम्च गेह, गुन गजहु। सत विधि मत्र कवियन मन रजहु ॥२०॥
श्रीपति श्रीधर, श्रीकर सुदर। सुमिरत किय[10], कवि चद गोपिवर।
रवि[11] तल विमल वैन, वसु धावन। दुपद[12] पुत्ति चिरु, चीर बधावन ॥२१॥
प्राह गरव गयनं गयन्द। रप्पन मान, सुमान गयदह[13]।
तुव चिंतति सत्तह, मत मित्तिय। विप नातहि[14] निर्विप[15], जिह् कित्तिय ॥२२॥
अर्जुन नर कोवट, धरिय कर। तब मधरिय सकल, पोहिनि सर।
नर पडव मन, मोह उपायौ। भत भारथ सुप, मद्धि दिपायौ ॥२३॥

---

1 BK2 नि कवि आइ कवि पहि पत्ते BK3 नि कवि आइ कवि पत्ते। 2 BK1 अनेक भाषा। 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया, और दोनों प्रतियों में यहां त्रोटक है। 4 BK1 इक याइते कहन चंद सुरत्ते। 5 BK2 BK3 लोयनु चलु चालु भ्रारा विघारि कीयो गहो। 6 BK1 की सी राइ। 7 BK2 BK3 चको। 8 BK2 छयो, BK3 छठयो। 9 BK1 सत वहुँ कहि सत, रूपह नित्ते। 10 BK2 BK3 कीय। 11 BK2 रवी। 12 BK2 द्रुपद। 13 BK2 BK3 गयदहि। 14 BK2 BK3 दानवि। 15 BK2 विप तिय लद्दिय।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारति प्रिय दासी।
सा भारति सुष मद्धि प्रसन्नी। नव सह साटक भाषा[1] छन्नी ॥२४॥

साटक

सीस साच वरेन सेव छत्रुजा', किं किं न अदोलिता।
सस्त्रै सस्त्र समस्त मत्त दहिय, सिंधु प्रजा ता पल॥
कठ हार रलत आनि अलक समो, पृथीराज हालाहल।
॥२५॥

मुडिल्ल

गुन उचार[3] चार तिनि किन्नौ[4], जनु सुष्यै सास्र पय दिन्नौ[5]।
कवि देषत चवि की मनु रत्तौ[6], न्याय नयर कनवज्ज सपत्तौ ॥२६॥

दोहा

नव रस सुमिरु अदिट्ठ रस, भाप छ जपि नृपाल।
सुनि सहह भल[7] पच्च लिपि[8], त्रिगुन[9] दरसि त्रिकाल ॥२७॥
पगु पयप्पौ[10] कवि कमलु, अमल सु आदर दैन।
पुछ्छ प्रवेस निवेस दिठि, सभ जपिया[11] नृपेन ॥२८॥
मगल बुध गुरु शुक्र शनि[12], सकल सूर उद दिट्ठ।
आतपत्र ध्रुव[13] तमतमै, सुभ जैचद[14] वइट्ठ ॥२९॥

छद [अडिल्ल]

आसन सूर वट्टै[15] सनाह। जीति छिति राइ किन्नै सुराह।
धर्म दिगपाल धर धरनि षड। ढरहिं सिर सोभ छुति कनक दड ॥३०॥
जिनै सज्जनै सिंधु गाही सु पग। तिमिर तजि नेज[16] भज्यौ कुरग।
जिने हेम परवत्त तै सब ढाहै। इक्क दिन अट्ठ सुरतान साहै ॥३१॥

---

1 BK2 BK3 भापया। 2 BK1 सेवछ रुजा। 3 BK2 BK3 उचारु। 4 BK2 BK3 किन्नउ। 5 BK2 दिन्नउ। 6 BK2 BK3 रत्तउ। 7 BK2 BK3 "भल" छूट गया। 8 BK2 BK3 लपि। 9 BK1 त्रगुण। 10 BK2 BK3 पयप्पो। 11 BK2 BK3 जपियौ। 12 BK2 BK3 सनि। 13 BK7 ध्रुवं तमै, BK2 ध्रुव तमै। 14 BK जयचंद। 15 BK2 टट्टे। 16 BK2 तिमिर तजि नै नेज।

जपियौं सच सो चद चड । थप्पियो[1] जाइ तिरहुत्ति पड ।
दच्छिन देस अप्पे विचार । उत्तरयां[2] सेतु बधे पहार ॥३२॥
कर्णाटा हाल दुहु वान वे यउ । जिनै सिंधु चालुक्क कइ[3] वार पेद्यउ ।
तीनि दिन जुद्ध भीर रु ड मु ड । तोरि[4] तिल्लिग गोपाल मु ड ॥३३॥
छडियो चपि इक गु ट जीरा । जिनै[5] लिये[6] वैराग रा[7] सब्ब हीरा ।
गज्जने[8] सेन सा वाव माही । मेवर्ते वधिनि सुरत्ति पाही ॥३४॥
भूलि भभीषन[9] जाइ रोरे । रोम के रोस दरिया हिलोरे[10] ।
वधि पुरसान किय मीर बदा । सुती[11] राठौर विजै पाल नन्द ॥३५॥
वस छत्तीस आवेह कारे । एक चाहुवान पृथिराज टारे ।
॥३६॥

दोहा

सुनि नृपत्ति रिपु कौ मवद[12], तम तम नैन सुरत्त ।
दर दलिद्द मगन सुपह, को मेटै[13] विधि पत्त ॥३७॥

कवित्त

प्रथम परसि मदेह भयौ, आनद सन्न उन ।
अरु गगा जलु[14] न्हाइ पाप परिहरे, तत प्पिन[15] ।
गयौ चद दीवान अनी, वानोय फुरतौ ।
सुफ्फल[16] हत्थ सुप तत्थ राउ, भिंट्यौ सु तुरतौ ।
श्रुति सुनिय विरद पुच्छिय, तुरत सच्च[17] पयपहि भट्ट सुनि ।
निमि[18] निमि अचार दिल्लिय नृपति, तिमि तिमि, जपहि पुनहि[19] पुन ॥३८॥

दोहा

आदरु नृप तास को, कह्यौ[20] चद कवि आउ ।

---

1 BK2 BK3 थप्पिय । 2 BK2 BK3 उत्तरयउ । 3 BK1 कै । 4 BK1 मोरि । 5 BK2 BK3 'जिनै' छूट गया । 6 BK2 BK3 लीये । 7 BK2 BK3 रे । 8 BK2 BK3 गज्जरह मूव । 9 BK1 भम्मीषन । 10 BK2 हिलौरे । 11 BK2 BK3 सुते । 12 BK2 BK3 सबदु । 13 BK2 BK3 मिटे विध । 14 BK1 जल 15 BK2 BK3 प्पन । 16 BK1 सफुल । 17 BK2 BK3 सब्ब । 18 BK2 BK3 जिम निमि । 19 BK2 BK3 पुनह पुनि । 20 BK2 BK3 कहउ ।

ढिल्लिय[1] पति जिहिं विधि रहे, सुनौं कहहु समुझाउ[2] ॥३९॥
कितकु[3] सूर सभरि धनी, कितकु देस कुल चंद।
कितकु रन[4] हत्थ गली, पुछ्यौ[5] राइ सु चंद ॥४०॥

सूर जु सौ गैनह हुवै, कौल[6] दल बल आस।
जब लगि नृप कर[7] उठवै, तब लग देह पचास[8] ॥४१॥

मुकुट बंध सब भूप हैं, लच्छन सब सजुत्त
बरनि जेनि उनहारि वह, कहि चहुवान सजुत्त ॥४२॥

कवित्त

बत्तीसै लच्छन[9] सहित, बरस छत्तीस मास बह।
इम दुर्जन सब्बहे राह, जिमि सूर चंद गह।
कै छट्टै सहि दानहु, इनत छुट्टैति दड कहि।
इक्क कर्रहि गिरि चद, इक्क अनुसरहि चरन गहि।
चहुवान चतुर चिहु दिसहिं[10] वलिद[11] बन मध्य[12] हत्थ निहि[13] हनहिं[14]।
इमि[15] जपै चद बरद्दिया, प्रथीराज रनहार हि[16] ॥४३॥

दोहा

लिपि थवास्त थिर नयन, कहि कनवज्ज नरिंद।
नैन नैन बहुरि परै, मनु थन उभे मयंद[17] ॥४४॥
सोमेसुर[18] पानि ग्रहन, तब ढिल्लिय पुर कान।
हम गम जन बत्तै वर्दहि वह धन मागि सु लीन ॥३६॥
जौ सोमनि[19] मद्रा हनो[20], तौ सुत विजै नरिंद।
सब सेवहि हम कौतु पति, तुम जामहु कवि चन्द ॥४६॥

---

1 BK1 दिल्लिय। 2 BK1 समभाउ। 3 BK3 जितकु। 4 BK2 BK3 रन। 5 BK2 BK3 पुछयउ। 6 BK2 BK3 "कौल" छूट गया। 7 BK2 BK3 अरि। 8 BK2 BK3 पचास। 9 BK2 BK3 लच्छिन। 10 BK2 BK3 दिसहु। 11 BK1 वलंद। 12 BK2 BK3 सब। 13 BK1 हि। 14 BK2 BK3 "हनहिं" छूट गया। 15 BK2 BK3 इम। 16 BK2 BK3 इहि। 17 BK2 BK3 मइद। 18 BK1 सोमेसु राखि। 19 BK2 BK3 मामनि। 20 BK3 हतौ।

छद पद्धति

अवसर पमाव[1] करि पगु राव । सुत तात साथ दिग विजय वाव ।
तुम देव लगिग दच्छिनहिं[2] देस । तब लगिग मेच्छ इच्छह प्रवेस ॥४७॥
सावत राज तपितो न बधि । सम्रह्यौ[3] सब सैन सधि ।
दामिन्न रूप छत्रिय कुलाह[4] । सामत सूर दुह विधि दुवाह ॥४८॥
उन मथि[5] गृह राज काज । कुल पड छत्र चहुवान लाज ।
मिगिनि समत्थ सर सद्द[6] वेध । जिनि कग्हु राज उन मिलन पद ॥४९॥
हिंदवान जानि लग्गो न धाइ । उहि उच्छत कौनु दिग विजय कराई ।
मानिक्क राइ[7] दुहु हुव समुद्ध । रघुवस राइ जिम निकत दुद्ध ॥५०॥
सुक्ल्योति[8] तोहि दिप्पन वराति । राज[9] सू जेगि मड्यौ[10] वयाति ।
॥५१॥

दोहा

बहुत चद वोलहु वयन, ए लच्छन छिति है न[11] ।
सव्व समूरति लच्छनह[12], सोव दिपावहु नैन ॥५२॥

कवित्त

इसौ राज पृथीराज जिसौ, हर्थहिं अभिमानह[13] ।
इसौ[14] राज पृथिराज जिसौ[15], हकारह[16] रावन ।
इसो राज पृथीराज राम, जिम अरि सतावन ।
वेर मती सषह अग्गिले, लच्छन सब सजुत भनि ।
इम जपै चद वरदिया, पृथ्वीराज[17] उनहारि[18] इनि ॥५३॥

दोहा

रतन चुद नरपत नृपति, हय गय हेम सुहद ।

BK3 पसाव । 2 BK2 BK3 दच्छनहि । 3 BK2 BK3 संम्रह्यो । 4 BK3 लाहो । 5 BK2 BK3 सुथि । 6 BK2 BK3 सब्द् । 7 BK3 मानिक इ । 8 BK2 "ति" छूट गया । 9 BK1 रान सूर । 10 BK3 मड्यो ।
1 BK1 हीन, BK3 हिन । 12 BK3 BK3 लच्छिनह । 13 BK1 अभिमानहिं ।
4 BK2 BK3 इसड । 15 BK2 BK3 जिसड । 16 BK3 हकारा ।
7 BK2 BK3 पृथियराज । 18 BK2 BK3 उनहरि ।

अवन[1] वुद मगन तनह, मिर छत्रह सु दलिह ।।४४।।
पछुक मैन नैननि पारग, कछु जोर वचन वपान ।
कछु लपि उलपि विचार किय, अति गभीर सुजान[2] ।।४४।।

छद ब्रमानिक

निहग भृगगा पुरा, चलत सोन नूपुरा ।
अनेक भाति मादुर, असाढ़ मोर दादर ।
सुधा समान सुण्यहि, उठत इदु[3] सम्मुहि ।
नितव तुग न्याम के, मनौं[4] सयन्न काम के ।।५६।।
लसन्न भृग गुजहि, सुगन्ध गध हल्यहि ।
दिपत टोर वकरो, कटि प्पमान[5] वकुरे ।
सुवन्न मुत्ति तारए, अलक्क मक आरए ।
मवद मोभ तगुले, रहति[6] लज्जि कोकिले ।।५७।।

अडिल्ल

चाहुवान दासी, रिम कपिय । पुर राठोर रहै, दिमि[7] नपिय ।
विगलि केस पुरुप त कोइ अप्पिय । प्रन्वीराप न्पत सिर ढकिय ।।५८।।

दोहा

भव त्रि भूप अनूप मद, पुन्प जि कहि प्रथिराज[8] ।
सुमनु भट्ट मल्यह अन्छे[9] तिहि करत[10] तीय लाज ।।५६।।

---

1 BK2 BK3 सवन 2 BK2 में निम्नलिखित दो दोह अधिक हैं जोकि स्वीकृत पाठ समझना चाहिये —

जियन पुरप रस परस बिनु, कहिग राइ सुरसान ।
घवल ग्गृह ते अनुसरिग, भट्टहि अप्पुन मान ॥ १ ॥
पोडस वरप सुमुक्कि गृह, ले सब दासि सुजान ।
मनहु सभा सुर लोक ते, चली अप्छरी समान ॥ २ ॥

3 BK1 इद । 4 BK3 मनो । 5 BK1 प्पमाण । 6 BK2 BK3 रहत ।
7 BK1 न्सि । 8 BK1 पृथ्वीराज । 3 BK1 अच्छ । 4 BK1 करत ।

इक्क कहहि निट्टहि सुभट, इह न मत्य प्रथिराज[1]।
इद उहि दुहु मन इक्क है, तिहि करतत[2] यह लाज ॥६०॥
अप्पिग पान समान करि, नहि रप्पु कवि तोहि।
जु कछु इन्छ करि मगि[3] है, काल्हि समप्पौं तोहि ॥६१॥
छन सरद बज्नन महूल, बहुल घस ाधि नद।
मत्त सहस सपह धुनिय, महल जाय जय चद ॥६२॥
हक्कारयउ रावण नृपति, कुकुम कलस सुवास।
जो[4] पश्चिम जय चद पुर, तिहि लै रप्पि अवास ॥६३॥
आइस रावन सत्थ चलि, अमिय सह सभट सत्थ।
जि भर भुम्मि ढिल्लन कहै, मेर भरहि उठि वत्थ ॥६४॥
मम्ल सूर मावत घन, मधि कविता[5] किय चद।
प्रथिराज मिघामनद, जनु उय पर पुर इद ॥६५॥
भइ तनु मा दिन मुदित मन, उड नृप तेन विराज।
कथित कत्थ कथहित सब[6], मुप मयमू प्रथिराज ॥६६॥
तब सामतउ मूर मिलि, सब पुच्छी नृप वत्त।
जु कछु मत्ति सवाद भौ[7], नीडर राइ सुतत्त ॥६७॥

मुडिल्ल

तत्तु[8] कहे नृप नीडर पुच्छिय।
राज मचद[9] मत्ता सभ मुच्छिय।
आदि दए कमधुज्न सुरायह।
दासिय मेत कहे, सब मुक्कि नृपालह ॥६८॥

सेवत सेव करै कर जोरे। छत्र धरे सिर कौनु[10] निहोरे।
फेरि कहि कवि चद सुवत्तिय। पग प्रतीप गयो तत्र छिप्पिय ॥६६॥
पत्त[11] सुतत्थ तुमे घर घल्लिय[12]। भट्ट कहै कर छगल झल्लिय।

---

1 BK1 पृथ्वीराज। 2 BK2 करत। 3 BK1 मग। 4 BK2 "जो" छूट गया।
5 BK2 कवित। 6 BK1 सय, BK3 सच। 7 BK2 BK3 भउ। 8 BK1 तत।
9 BK1 रचद। 10 BK1 कौन। 11 BK2 BK3 पत्र। 12 BK2 घलिय।

सभरि राइ तमक्कि रिमानिय। मैं भ्रम भ्काज धम्म पाविय[1] ॥७०॥
काल्हि सुभेष धरै भुवपत्तिय। न्पन तोहि धरद्धर[2] छत्तिय।
भट्ट सौ क्ह निपट्ट रिमानौ। तू माजतनि तोरन थानो ॥७१॥
तू थवि देत आसीसहि छड्डहिं। सूरनी सीस मुमरत्ननि तुट्टहिं।
तौ लगि भोजन भष्य सपज्जै। हास करै उर मैं चित लज्जै ॥७२॥
हैं सब सत्य मैनत्थ[3] सयानी। सूर कहै जिनि होइ विहानी।
॥७३॥

दोहा

आद[4] रस दिनियर दिष्ष करि, तब नृप प्रवत्ति प्रजक।
मनहु रान जुग्गिनि पुरह सुर भ्यौ[5] सैन निसक ॥७४॥
एकाकी बुल्यौ सु कवि, अवसर दक्खिन राइ।
स्वामी निंद मुक्यौ करत, पौरि सपत्तौ जाइ ॥७५॥
मृदु मृदग धुनि सचरिग, अलि अलाप सुध छद।
तार[6] तति मद्दल झनक, पग सु पग परिद ॥७६॥
जलन दीप दिय अगर रस, फिरि घनसार तमोर।
जम निकट उच्च महिल किय, सरद अभ्र ससि कोर ॥७७॥
तत्तु[7] धरा महि मत्तु यह, रत्तह[8] काम सुचित्त।
काम विरुद्ध[9] न विधि कियौ, नित्त नितबिनि[10] चित्त ॥७८॥

छद

दर्प्प कागी नेत्र[11] चगी, को वाच्छि कोकिला नीरागमे[12]।
भागवानी अगसे[13] लो डोल, एक बोले[14] अमोल।
पप्पाजली पग सिर नाइ, जयति तुव काम देव[15]।

---

1 BK2 BK3 पानिय। 2 BK1 तुट्टहिं। 3 BK1 मैनच्छ। 4 BK2 अद रस। 5 BK2 BK3 सुम्यौ। 6 BK2 BK3 तार त्रिगम्य उप्ग सुर, पग परिद। 7 BK2 BK3 तत्त। 8 BK1 तत्तह। 9 BK2 BK3 विरद्ध। 10 BK2 BK3 नितु बिनि। 11 BK2 BK चगी कुरगा। 12 BK3 नारगमे। 13 BK2 BK3 अगाज। 14 BK2 BK3 बोल। 15 प्रक्षिप्त।

दोहा

पुह्पजुलि[1] सिर[2] मटि प्रभु, फिरि लग्गी गुम पाइ।
तरनि तार सुर सुर घरिय चित्त, धरनि निरप्पिय वाइ ॥७६॥

छंद नाराच

ततथेई[3] ततथेई, ततथे सुमडिय।
तत थु ग थु ग थु ग, राग[4] काम मडिय।
सर गि म पि ध नि धा, धनु ढनि त्ति रप्पिय।
भवति जोति अग तान, अगु अगु लप्पिय ॥८०॥
चलभ्रत्ता सुभेद[5] वेद, भेदन मत्त मन।
रणकि भकि नूपुर, चुलति तोरन भन्न।
घमडि थार[6] घुटिका, भवति भेष वेपयो।
तडित्त जुत्त केस पास, पीत स्यांह रेपयो ॥८१॥
जति गति स्सु तारयो, करि सुभेद सु दरी।
घुसुम्म सार आवध, घुसु भ चड नदरी।
उरप्प रभ भेप रेप सेप, किंकिनी[7] कस।
तिरप्प[8] सिप्प सिप्पयो, सुदेस दप्पिन दिस ॥८२॥
सुरादि सग गीतने, धरति सास ने धनी।
लजाइ[9] जोग नट्टनी, त्रिविद्ध[10] नच सचनी।
उलट्टि पट्टि[11] नट्टिनी, फिरक्कि चक्की चाहनी।
निरत्तते निरप्पि जानि, बम मुत्त वाह्निनी[12] ॥८३॥
विशेप देस घुर्यद, वदन्न चद्र राजयो।
शुक्र[13] भेप वालना, विराज[14] रोज राजयो।
उर द्र मुद्ध[15] मडलरी[16], अरोहि रोहि चालन।

---

1 BK1 पुहरजलि। 2 BK1 सिरि। 3 BK2 BK3 ततथये। 4 BK2 BK3 विराग। 5 BK2 BK3 सुभेद भदेन मन मन। 6 BK1 थार। 7 BK1 निकिनि। 8 BK2 तिरपा। 9 BK1 लज्जाइ। 10 BK2 BK3 त्रिविद्धि। 11 BK1 लट्टि पट्टिनि। 12 BK2 BK3 वाहनी। 13 BK3 सुक्र सेस। 14 BK3 विर्मांजयो। 15 BK1 सुद्ध। 16 BK2 मडली।

महति मुत्ति उत्तिमागनौ[1], मराल चालन ॥८४॥
प्रवीण वाण अढर, सुबिंदु मुत्ति[2] कुडली।
प्रतच्छि भेष यो धरयौ, सु भूमि लो अपडली।
तल[3] तलस्सु तालना, मृदग धुकनो धुनि।
अपा अपा भनति भेजयति, जानयो जने॥८५॥
अलष्प लष्पने नयन्न, वैन भूषणं पने।
नरे नरिंद भास मेव, काम मुष्पने।
।
॥८६॥

दोहा

जाम एक छिन दाच्छ घट, सातिहू[4] मत्ति निवारी।
कितु कामिनी सुप रति, ममर नृप निय निय विमारी॥८७॥

शाटकु

सुष्प सुष्प मृदग ताल जयतो, राग कला कोकम।
कठ कठ पिता गुना हरि हरो, सुग्रीय वना पिता[5]
एसह सुष्प महाय कु भ महिता, राजाय राज्य गता।
कत्राति भार पुनर्मद गजे, माषा न गड स्थली॥८८॥
उच्च तुच्छ तु रास पुष्प कमल, कलि कु भ निद्रा टल।
मधुरे साप सकाइता अलि कुल, गु जार गु जा रवा।
तर्नो[6] म्रान लटा पट, पग पग जै राइ सम्रापता।
॥८९॥

दोहा

प्रात राउ सम्रापति गजह, दर देव अनूप।
सयन करि दरबार जह, सात साहस जह भूप॥९०॥

---

1 BK3 उत्तिमा गानौ। 2 BK2 मति। 3 BK1 मलत्त लत्त लस्सु तालना मृदचनो धने। 4 BK2 स तिहूँ। 5 BK2 पवना। 6 BK2 तर्न्यं।

मिस यज्जट्टि गगा न दिन, कन्नि[1] पति भ्राति मूह।
चढत सुपानस सनुहौ, जह सावन समूह ॥६१॥
दम हथिय मुत्तिय सघन, सत तुरग बहु भाइ।
ल्ब्धु दरसु बहु सग लिय, भट्ट समप्प न जाइ ॥६२॥

कवित्त

क गयउ राज मिल्लान चद, वर दियहि समप्पनु।
दिष्पि सिंघासन ठयउ इह, जु बैयठौ[2] इद्र जनु॥
बहुत कियौ[3] आलापु आपु, कनवज्ज मुकट मणि।
यह ढिल्लिय सुर दत्त विय, सनहि गनौं तुज्झ[4] गनि॥
थिरु रहे थयाइत थिरु नयन, छडि सिकार हि।

[प्पिनकु रह जिहि]

असिय लष्प पल्लानिय हि, पान देहि दिढ हत्थ गहि ॥६३॥
सुनित भूल स पिट्ठि किय, वर उट्ठि दिठि बक।
मनु रोहिणी यमुन मिल गमनु दुइ उदित मयक ॥६४॥

दोहा[7]

राजा पान न अप्पहि, पगु न मडे हत्थ।
रोप देपि नृप चित महि, कहि चद तब गच्छ ॥६५॥

अनुष्टुप

तुलसी विप्र हस्तेषु, विभूतिरपि योगिना।
तावूल चडि पुत्रस्य, त्रीणि[5] देयानि सादर ॥६६॥

दोहा

भुव वकिय करि बक नृप, अप्पिय हत्थ तमोर।
मन हु वज्र पति वज्ज गहि, सहि अप्पियो सजोर ॥६७॥

---

1 BK2 BK६ कन्निय। 2 BK2 BK3 वयठत। 3 BK2 BK3 कियउ।
4 BK2 BK3 तुम। 5 KK2 त्रीण्या।

कवित्त

पन्चियौ जय चन्द यह, न ढिल्लिय सुर लिप्यौ[1]।
नहीय चद उनहारि, दुसह दारुण अति पिच्यौ[2]॥
करि मठह करि वार वन्इ[3], कनवज मुक्ट मणि[4]।
हय गय दल पव्य ग्ह, भाजि[5] पृथिराज जाइ जिनि।
इतनो कहत भुवपति चिड्यौ[6], सुनि नीरद किन्नौ नमौ।
सावत सूर हमि परमपर, वहहि मले रजपूत सौ॥६८॥

दोहा

सुनहु मन्त्र सावत, हो कहे पृथिराज।
जो अच्छह[7] पिन पिन भइ, दप्पिन नयर विराज॥६६॥
बुल्लि कहह अयान नृप, मति महप असमत्थ।
जौ मुष्ष सत मत्थियनु, तौ[8] लिहे कत सत्थ॥१००॥
जौ मुकउ[9] सत सात्थियनु, तौ सभरि कुल लज्ज।
दप्पिन कर कनउज्ज हु, सुनि सम्मुह मरनज्ज॥१०१॥
जानि पगु चहुवान कौ, मुष जप्पौ यह वैनु।
बोलि सूर सामत स्यौं[10], करौं एक ठौ सोनु॥१०२
भई ममक दिसि विदिसि मिलि, वहु पप्पर भहराव।
मनु अकाल टिड्डिय सघन, पावस छुट्टि प्रवाह[11]॥१०३॥

कवित्त

पव्वैसुर प्रिथिराज[12], सोमेसुर नदन।
लग्गे[13] लगर राइ सज[14], सजम सुव जबर।
वारह हत्थह मुल्लि वग्घु, उट्ठ्यौ लोहानौ।
पारद्धी चपियो द्वार, चपौ चौहानौ।

---

1 BK2 BK3 लिप्प। 2 BK2 BK3 पिप्पउ। 3 BK1 कहै। 4 BK1 म्मथि। 5 BK1 भाज 6 BK2 BK3 चढ्यौ। 7 BK1 BK2 अच्छ हु। 8 BK1 भौ तौ हौ कत सत्थ, BK3 भौ लिहौ कत सत्थ। 9 BK1 मुक्कौ। 10 BK1 सौ। 11 BK2 प्रवाह, BK3 प्राहाह। 12 BK1 पृथीराज। 13 BK2 लगा। 14 BK2 BK3 "सज" छूट गया।

चर वीर वराह उप्परे केहरि बट्ढा वर बढ़न।
इक अधिक इक इक्क, पग इक्क सु मुप लग्गा नरन ॥१०४॥
अद्धा देस सुभेस एक, अद्धा तमूला।
अद्धा आमन अद्वराज, आदर समूला[1]।
सगाने दीवान गयो नहि, रह्यो तिन सत्थे।
कया तुग सो कह देव, साह्यो भुज वत्थे।
गुरवार रत्ति गोचर कियौ, प्रात प्रगट्टत[2] छुट्टयौ।
दरवार राइ पट्टु पग दल, चौकी चोग्ग जुट्टयौ ॥१०५॥
मन्त्री राइ सुमन्त्र हल, वज्यौ[3] सु चढतौ।
दु जाइ ढिल्लीय कोस, सु जरह बढतौ।
हल्लो हल यनवज्ज मज्झि[4], केहरी कुक्दी।
मजम राइ कुमार लोह, लग्गा लूमदी।
चहुवान महोवे जुद्ध हुव, गेहा गिद्ध उडाइया[5]।
रन भग राउ नेवर विरद, लग्गे लोह उचाविया ॥१०६॥
पल्लान्यौ जय चद मरद, सुरपति आकप्यौ।
असिय लप्प तुष्पार भार, फण पति फण सक्यौ।
सोरह महस निसान भयो, कुहराव भुव भर।
ढरि समाधि तिहु लोक नाग, सुर असुर[6] नाग नर।
पाइक्क[7] धके वर को गिनै, जेहि[8] असीय सहस गैंवर गुरहिं।
पगुरो कहै मामत सह लेहु[9], राज जोवन धुर हिं।
हय गय दल घममसहि, शेसु मलमलाहि[10] सलकहिं।
महि कुरम अहि डरहि मेर, भर भार हलकहिं।
शृ ग ककुभ दिग डरहि, साहि कलमलहि चलक्कहिं।
सहस नैन जलु[11] भरहि, रेणु[12] पल रइ पलकहि।

---

1 BK2 BK3 समूला। 2 BK1 घट्टत। 3 BK2 BK3 रह्यो। 4 BK2 BK3 मझि। 5 BK3 उड़ा निया। 6 BK2 BK3 देव। 7 BK2 पाइकी। 8 BK3 जेहि। 9 BK1 लोहु। 10 BK2 BK3 सलमलइ। 11 BK1 जल। 12 BK2 BK3 रैणु पल पछेरेइ पलक्कहि।

पायान राज जय चद कौ, भार झल्लको अगवै।
हय लार वहत भीजत थल, पंक चिहुट्टहिं चक्कनै[1] ॥१०८॥
विजय नरिन्द इननौ[2] मुदल, धरि धर पर चल्यौ।
इमि हय पुर पुटत एमि, पायालह डुल्यौ[3]।
एम नाद उच्छरयौ एमि सूर चढयौ गयदह।
एमि कुलाहल भयौ एमि सु न्गि रवि इदह।
एम लण्प पप्परं परि भुवन आरुप है।
पगुरौ चल्यौ कवि चन्द कहि, विनु पृथिराज को सहै ॥१०६॥
डर दुग्गम थरहरहिं अन्र,[4] हरहिं गरुर गिर।
तन चन घन[5] टट्टल धरनि, धसमसहि हयनि भर।
मर सम ह धरभरहिं डड[6], दिढ दाढ करकहिं।
कमट पीठि[7] क्लमलहि, पुन्मि मैं प्रचौ पलट्टन्हि[8]।
जयचद पयानौ सभरत पुनि, ब्रह्म ड न छुट्टि[9] है।
नन चलहिं नन चलहि रे, चल हित प्रलैपलट्टि[10] है ॥११०॥

कवित्त

राज नभो मिलि भजि अट्ठ, दिग्गय करि वरु करहिं।
धरि चरत दिग अट्ठ मुरहिं, डाढहि वाराह हि।
हरि वराह[11] डिढ डटुढ करत, फुनवै[12] फन टारहि।
फनवै फन निढरत कुभ, पप्पर जल भरहिं।

---

1 BK2 BK3 चक्कनइ। 2 BK2 BK3 रोसु धरि इम करि चल्यउ। 3 BK2 BK3 दुल्यउ। 4 BK1 अटर टारिय। 5 BK2 घनन। 6 BK1 डट्ठ ददा डार्ना। 7 BK2 BK3 पीठ। 8 BK2 BK3 पलट्टे हि। 9 BK2 BK3 *निछुट्ट है। 10 BK2 में निम्नलिखित दोहे अधिक हैं —*

जल थल मिलि टुव पक हुव टुटि तरवर भर मूल।
दिप्पि सयन सावत बलि, छुल नकि वा घन फूल ॥ १ ॥
सज्जत पग नरिंद कहु, विजय सुरष्छोणी वग्ग।
मुक्ता ग्रह सु कवित्त कहि, जल थल मग्ग अमग्ग ॥ २ ॥

11 BK2 BK3 दाढ़ वराह हरिहिं। 12 BK2 फनवै।

भाग हिति सुभ पप्पर जलहिं, तह उच्छलहिं।
पयाल जल उच्छलत होइ तह, जुग अनै न चढि चढि-
जयचद दल ॥१११॥

दोहा

न डरि न डगि छोणी सु तिय, सतु रुरु छिनकु छयल्ल।
छत्र पत्ति जोग्न भयिग, तू नित नित नवल्ल ॥११२॥

छद भुजगी

प्रनाम न[1] नाजी न लाजी प्रहार। मनो रवि रत्थ[2] आनै प्रहार।
स्वामा सम्राम झिल्लै दुधारै। तिनै उप्पमा चन्द दिज्जै छिकारै ॥११३॥
माहिय बाग गट्टे जिलारा। वठ भूमत गज गाह भारा।
मनौ आवमे हत्थ बज्जति तारा। छुट्टिय तेज वट्टे जिकारा ॥११४॥
तिते मज्जिए सूर सज्जै तुपारा। तहा पप्परे प्रान ते मार मारा।
चहै वाय वेगै नहि भूमि भारा। तिनै टुट्टिप जानि आकाम तारा ॥११५॥
घटे[3] औघटे घट्ट फदे निन्यारा। किते लोह लाहोर बज्जे तुरक्की।
तिनै[4] धावते दीसै न धरयौ पुरक्की। सजै पच्छिमा सिंध[6] जानै न थक्की[5]।
तिनै साथ सिंधी[6] चले जक्क जक्की ॥११६॥
पवन पपी न अपी मनीपी। न्तिै सास कट्ढे न चपै न नंपी।
राग बागै न सुकी उरक्की। उप्पजै उच आदे धुरक्की ॥११७॥
अरन्नी विदेसी लरै लोह लच्छी। नएँ[8] कोक वठील वठानि कच्छी।
धरा पित्त पु दत सद त वाजी। किते निप्पियहिं एक एक्त ताजी ॥११८॥
इते पड्डु वेप गुरे राय सज्जी। तबहि दल[9] दुवन देपत लज्जे।
तहा आपुन्व[10] कवि चद पिप्यौ। तरनि द्विन राज सम तेज दिप्यौ ॥११९॥

दोहा

फिरे राइ धनवजन महि, जानि मजोग हिं वत्त।

---

1 BK2 BK3 तता जीन लाजा। 2 BK2 BK3 रथ। 3 BK2 घट औघट। 4 BK2 तिने। 5 BK1 थक्के। 6 BK1 सधी। BK3 सधि। 7 BK2 तुरक्क। 8 BK2 BK3 नए औ कठ कठील कच्छा। 9 BK2BK3 दुवन दल। 10 BK2 अपुव्व।

चढि विमान जय जय करहिं, देव सुरग निकृत्त[1] ॥१२०॥
करिंग देव दष्पिन नयर, गगा[2] तुरग अखिल्ल[3]।
जल छुडे[4] अच्छहिं करहिं, मीन चरित्तह भुल्ल ॥१२१॥

रासा (दोहा)

भुल्लो रंग सुमीन नृप, पग चढयौ हय पुच्छि।
सुनि सुदरि वर वज्जनै, चढी आवासह उट्ठि ॥१२३॥
दिष्पित सुदरी दलबलनि, चमकि चढत अवास।
नर कि देव किधु कामहर, किधु कच्छु गग विगास ॥१२४॥
इक्क कहहि दुरि देव इह, इकु कहहि इद फनिंद।
इक्कु कहै[5] अस कोटि नर, इक पृथ्वीराज नरिंद ॥१२५॥
सुनि रव सुदरि उब्भ हुव, स्वेद कप सुर भग।
मनु कमलनि क्ल सहरिय, अमृत किरनि तरग[6] ॥१२६॥
सुनि रव पिय पृथिराज को, उभय रोम तन रग।
स्वेद कप स्वर भग भौ, सपत भाय तिहि अग ॥१२७॥

मुडिल्ल

गुर जन गुर दहइ नहि सुदरि। राज पुत्रि पुच्छइ कहु दुदरि।
अम्हह पुच्छन दुत्ति पतावहि[7], गुन अच्छे पच्छे करवानहि ॥१२८॥

रासा

पग राइ सा पुत्तिय, मुत्तिय थाल भरि।
जुवती जौ पृथिराज, न पुच्छै[8] तोहि फिरि।
जो इन लच्छिन[9] सव्वन, तव्व विचारु करि।
है व्रत मोहि नृ जीव तलै, उस जीव वरि ॥१२९॥
सुदरि आइ सधाइ, विचारित नाउ लिय।
जह जल गग हिलोरे, प्रतीर प्रसग लिय।

---

1 BK2 BK3 निकृत। 2 BK2 गग। 3 BK1 अविक्ख्ल। 4 BK2 BK3 छुटइ अच्छइ करइ। 5 BK2 BK3 कहइ। 6 BK2 BK3 तन रग। 7 BK1 पठावहु। 8 BK2 BK3 पुच्छइ। 9 BK1 लच्छन।

कमलित कोमल हस्त[1] केलि, फुल अंगुलिय।
मनो दान दुज अध, समप्पदि अंगुलिय ॥१३०॥

छंद नाराच

अपति अंगुलीय[2] दान, जान सोभ लग्गए।
मनो अनंग तरग अग, रंभ इंदु पुञ्जए।
जु पानिहार चाहुवान, थार मुत्ति चित्तए।
मनो पिहुत्थ कंठ तोरियो, ति पुंज अप्पए ॥१३१॥
निरप्पि नैन टोरियें, न, ता नृपत्ति बाहिय।
तरप्पि दासि पास पक, सक्क एन साहिय।
अनेक रग अग रूप, जूप जानि सुंदरी[3]।
उवत्ति जम्मु छांटि, ढिल्लिनाथ साथ आचरा[4] ॥१३२॥
मारत सूर चाहुवान, मान एम जानए।
करन्न केहरी न पीन, इंदु मीन थानए।
प्रतप्पि हीर जुद्ध धीर, जोस वीर सबही।
चग्गत प्रान मानिनी, चलत देत गठि ही ॥१३३॥
सुनत सूर अश्व फेरि, तेन, तामह कियौ।
मनो दलिद्द रिद्धि पाइ, जाइ कंठ लग्गियौ।
रनक कोटि अष्ट धात, रास भास मालसी।
रनति भौंर झीनि स्याद, उन्न काम कामसी ॥१३३॥
सुधा सरोज मौन मर्गालि, करग्ग हल्लिए।
मनो मयक फद पासि, काम काल बल्लिए।
करस्मि केम कक्कणति, पान पत्त बधए।
भावती[5] सपीसु लज्ज, जुझ्झ[6] रज्ज बज्जए ॥१३४॥

---

1 BK3 हस्ते। 2 BK1 अंगुलिय। 3 BK2 में निम्न लिखित पाठ अधिक है —
उच्छग जटन गग मध्य, सुगिंग-पत्ति अच्छरी।
ति अच्छरा नरिंद माहि, दासि गेह पगुरे।
सु जोधु फुल्लनि -- ।
4 BK2 BK3 आचरे। 5 BK2 भावरीस। 6 BK1 जुझु।

अवार वार देव सद्द, दृव पण्ण जपही।
सुगठि ढिट्ठ एक चित्त, लोक कोक चपही।
अनेक सुष्प सुष्पसार, जुद्ध मधि लग्गिय।
कति कति अत वत, तमोर[1] मोरि अप्पिय ॥१३६॥

दोहा

बरि चल्यो[2] दिल्लिय नृपति, जहा जैचद कुवार।
गरव[3] छोडि दप्पित्र करिग[4], प्रान करिग मनुहारि[5] ॥१३७॥
पय पियग पत्तीय जप्पति, जयति जुग्गिनि पूरेम।
सर्व विधि निपद्धये , तांबुलम्य समाप्नाय ॥१३८॥

गाथा

सहि यणो श्रग् रानो दिट्ठी रिस्काइ मन सो अप्पाय।
दै हत्था बिछोडा, हा हजे! वज्जणे हियडे ॥१३९॥
हजे! हिया हणप्पी कपी, तणयाहि[6] काम मजोए[7]।
णिद्धा[8] अधार विणया हा वाले! जीवण कुणए ॥१४०॥

दोहा

रेणु परे सिर उप्परह, हय गय गुज उच्छार।
मनहु ठग्ग ढग[9] सूरि दे, रहेति सत्थ मुच्छार ॥१४१॥
मनहुँ वध अाहुति भर, है तिन जानत वट्ट[10]।
वचन स्वामी भग न करै, सब जोवहिं नृप वट्ट ॥१४२॥
अवलोकी तन स्वामी मन, मो सावतनि सुष्प।
हसहिं सूर सावत बहु[11], काइर मन हति दुष्ष ॥१४३॥
धरि चनु धरि ढाल सिर, बाहु दत उत[12] रोभ।
नृपति यत्र विय अकुरिग, मनहु मद गज सोभ ॥१४४॥

1 BK1 तमोरि। 2 BK1 वर चल्लियो नृपत्ति सुत। 3 BK2 BK3 गबि। 4 BK2 BK3 किरिग। 5 BK2 मनुहरि। 6 BK2 BK3 तणयाह। 7 BK2 BK3 सजोइ। 8 BK2 BK3 णिद्धां। 9 BK2 वग सूरि है। 10 BK1 वट्ट। 11 BK2 BK3 तब। 12 BK3 कत रोस।

हरपनत नृप नृत्य हुव, मन[1] ममह जुध चाव।
मिलत हत्थ करण लपौ[2], कहइ[3] कम्मह काव ॥१४ ॥
गगन रणु रवि मुं दि[4] लिय, धर सिर छंडि फनिंद।
यह अपुव्व धरित्त मुहि, करन हत्थ नरिंद ॥१४६॥

चौपई[5]

चरिय बाल सुत पगुराइ। उहिं व्रत रच्चि मिल्यौ[6] तुम आइ।
तजि सुद्धहिं अव जुद्ध सहाइ। छंडिय कन्ह अवासह आइ ॥१४७॥
सोभत मज्झि इक्क मात होइ। त उन[7] सुंदरि मुक्कै कोइ।
मो रजपुत्ति सुंदरिय एक। मुक्कि जाइ बद्धहिं[8] ति किं तैक ॥१४८॥
यह नृपत्ति बुज्झियै[9] न तोहि। सुंदरि नजे जिय तक्यौ[10] मोहि।
जौ अरि थट्ट कोरि मिलि साजहिं। ढिल्लिय तपत देउ पृथिराजहिं ॥१४९॥

अनुष्टुप

धर्मार्थे यज्ञार्थे च, काम कालेषु सोभिता।
सर्वत्र बल्लभा बाला, समामेषु च मोहनी ॥१५०॥

दोहा

चलि मिलि सूर मु सत्थ हुन, रन निसक मन भौन[11]।
सह अवार सुप मगहि, मनहुँ कियो फिरे गौन ॥१५१॥
पति अंतर विछुरण विपति, नृपति सनेह सजोगि।
सुनौ भयौ सुपि कौन विधि, दय[12] जिवावन जोगि[13] ॥१५२॥

मुडिल्ल

पानि परस अरु दृष्टि विलग्गिय।
सा सुंदरी काम अग्गनि जग्गिय।
पनन लाप लाप मनु कीनउ[14]।
ज्यों वर वारि गयौ तन मीनउ[15] ॥१५३॥

---

1 BK3 मेन। 2 BK2 लप्पो। 3 BK1 कहे। 4 BK1 मुंद। 5 BK3 चोपइ। 6 BK1 मिलयौ। 7 BK1 ऊन। 8 BK2 BK3 बधांहि "ति किं" नहीं हैं। 9 BK2 BK3 बुझिये। 10 BK2 तक्ये। 11 BK2 BK3 भोन। 12 BK2 दैय। 13 BK3 योगि। 14 BK1 कीनौ। 15 BK1 मीनौ।

अडिल्ल

फिरि फिरि बाल गवाष्पिनि अप्पिय । ता मानि[1] नेहि वयन वर मप्पिय ।
चित्तु उत्तर मोदन मुष रप्पिय । निमि चात्रिक पावस रितु नप्पिय ॥१५४॥

मुडिल्ल

अगन अगन चदन वावहि । अरु लाजन राजन ससुभावहि ।
दै अचल चचल दृग[2] सु दहि । कुल सुभाइ तुरिया जिमि पु दहि ॥१५५॥
बहुत जतन सजोगि ममाए । सोम कमल अमृत दरसाए ।
उमकि भकि दिष्यउ[3] पन पत्तीय । पति नेपत[4] मनु महि[5] अनुरत्तिय ॥१५६॥
तोहि नाथ सजोगि सुलष्पिनि । जो तुम वरमाह्यो कर दष्पिन ।
सो तुअ तात दल[6] न्न लित्तौ । सरण तोहि सु न्दरि सपत्तौ ॥१५७॥

दोहा

ता सुष सु दन सु द किय, अलियन जपहु आलि ।
डाढे उपर लैन रस, प्रति पिन दिज्जै गालि ॥१५८॥
अघ न दर्प्पन नेपरी, गुण न नपहि गल्ल ।
अस्तुत नहि गानहि लहै, अयल न लयहि सचल्ल ॥१५९॥

[अनुष्टुप]

गुरु नना न मे नास्ति, तात मात पियर्नित ।
तस्य कार्य विनायति, यावच्चन्द्र दिवाकर ॥१६०॥

दोहा

नै[8] निषेध कीनी सु कथ, दुन अरु दुनी प्रमान ।
त्यै न गन्रय गभयी, विधि कीनो अप्रमान ॥१६१॥
या करि सिर धुनि सषिनि स्यों[9], देषि सयोंग सुगान ।
जिहि पिय तन अगुलि फिरै, सो प्रिय ना थिहि कान ॥१६२॥

---

1 BK1 मनि । 2 BK2 BK3 द्रिग । 3 BK1 दिष्यौ । 4 BK1 देषित । 5 BK1 मह । 6 BK2 BK3 इस न्नल लित्तै । 7 BK2 BK3 ममां । 8 BK2 मै । 9 BK3 स्यों ।

कुंडलिया

धुनति गवष्पनि[1] सिर लषि, सपिन[2] मभ्भ सुप अबु।
अनिल तेज झलझल कपै, सरद[3] इद प्रतिबिंब।
सरद इद प्रति बिंब सींचि, चतुरानन आनन।
निरषि राज पृथिराज कह्यौ, सुदरि सुनि कानन।
हम सों भट्ट सुभूप पग्ग, भो हौं नग नतह।
भानि रीस विसवास सीस, धुनि[4] नहि धनु तह ॥१६३॥

कवित्त

सुदरि जपै वयन ढीठ, ढिल्ली नरेस सुनि।
कह्या सूर सावत पवन, हल्लहि पहार पुनि।
अज हुँ हल्यौ[5] नहि चल्यौ, गठी[6] दीठी सु जम्म कह।
जो सद्धइ सुर लोक कलहइ, अच्छरिनि मग्ग मह।
यह चित कत अच्छइ बहुल, बट्टु समूह सुव वर कहै।
सदेस साम सभरि धनी, पलन प्रान पच्छे रहै ॥१६४॥

अनुष्टुप

आलोकी नृप नयने वचन, जिक्कास[7] कातरा।
श्रवन समान दुस्सह, स्वामि निंदा सुनतय[8] ॥१६५॥

॥ नौरम्म विलास कथन[9] ॥

कवित्त

शृंगारी सुदरी हास उपजै, तुव बद्दह।
करुन[10] बोलि इह[11] विहुत[12], रौ[13] कामिनि कत[14] सद्दह।

---

1 BK1 गवप्पिनि। 2 BK2 सपि सपिनि। 3 BK2 BK3 सुरद। 4 BK2 BK3 धुनि धुनि न धनु तह। 5 BK2 BK3 अल्यौं। 6 BK2 नहि चवौ गठि दीठी, BK3 नहि चवौ गठी दीठी नि। 7 BK2 BK3 जिकास। 8 BK3 सु तया। 9 BK2 BK3 "कथनं" नहीं है। 10 BK1 करुण। 11 BK2 BK3 यह। 12 BK2 BK3 विहत। 13 BK1 रौद। 14 BK1 कत

वीर रहत गधर्व भयौ भामिनि भयानक।
वीभच्छ सग्राम भनिन्नि, अच्चिरज भयानक।
छिन सत मत विच[1] वत, इय पिय विलास किय दिन करिय।
इम अप्पै[2] चन्द नरराइ वर, कलन कन[3] तुम अति डरिय ॥१६६॥
॥ जाम जादी बोल्यौ[4] ॥

कवित्त

ते गच्छोरि नरवनि मौह, सिर धरि पतीज किय।
इन सत्थह मावत भुम्मि, सधार भार थिय।
अतलित वल अतलित प्रमान, अतुलित्त वल देवह।
अतुलित छत्रिय छित्ति गयन[5], स्वामित्त[6] सु सेवह।
देप हि न राज वसि[7] विलगि, वलि[8] कलह केलि कलपत किय।
अवलत्त छंडि मनु मवल करि, विघर राइ सिंधूति किय ॥१५७॥
पृथ्वीराज वामग मग, जौ मन्ह तन्ह[9] दल।
हौं चहुवान समत्थह, रौं रिपु राइ तत्थ[10] बल।
मोहि विरद नरनाह चद, कौं करै भुवनि भर।
मो कपहि सुरलोक मत्त, पायाल नाग नर।
मम जपि कपि सु दरि सपह, भ्रुढिग कोरि काइर रप्पत।
इह भुव हि ढिल्लि कनरज्जनी, तुहि अप्पौ[11] ढिल्ली तपत ॥१६८॥

गाथा

मदन सराल ति निवना विवहा ।
दैत प्राण प्राणेण, नयन प्रवाहन[12] विवहा ॥१६६॥
॥ अहवा काति कथा ॥

रासा

सु दरि मोचि समुझि[13], सु गह गहक्यौ रब्भार भरि।

---

1 BK3 वुव। 2 BK2 BK3 कहइ। 3 BK2 BK3 कति
4 BK1 वोल्यौ। 5 BK2 BK3 गयान। 6 BK1 सामित। 7 BK2 BK3 वसै। 8 BK2 BK3 "वलि" नहीं है। 9 BK2 नन्ह। 10 BK2 BK3 तथ। 11 BK2 अप्पो। 12 BK2 BK3 प्रवाहित। 13 BK1 समुज्झि।

तब हि राज प्रिथिरान, सुचि सोचिय बहु घरि।
दिय हय पुट्टहिं भार जु, सब्ब सु लक्षिनिय।
करत तुरग सुरगनि, पुच्छनि अच्छनिय ॥१७०॥

गाथा

एक थाइ मजोई एक्ट्ठयो, होइ ममर निर चोपो आनिय।
थाति[1] पत्म अदोलए, हन्न आइ हद आइ ॥१७१॥

दोहा

मन अदोलित चद सुप, दिपि सावतनि मुख्य।
अदोलित प्रथीराज हुव, सिर कढ्ढिय सुव दुप ॥१७२॥
चय विलग्गि इक्त करह, इक कर लग्गिय लाज।
चय जुग्गिनि पुर कहुँ चले, लाज कहै मिरि राज ॥१७३॥
षय तन कुरपनि निरपयो, लाज सु आदर दीन।
कलि नारद निंदय सु नवि, प्रक्ट्ट[2] करहि हम कीन ॥१७४॥
कहैं भट्ट दल विषम हैं, सुन दल बुच्छि नरिंद।
पग न पुत्ति जयचद की, करहि न सु गृह आनद ॥१७५॥
झुकित र इ उत्तर[3] दियो, मो सथ[4] सत्त सुभट्ट।
हौं चहुवान सु सभरि, भुज ठिल्लो[5] गज घट्ट ॥१७६॥
चरयौं भट्ट मयुहाइ तह, जह दल पग असेस।
जा इच्छै नृप तुज्झ मन, बढ्ढौ चित्त नरेस ॥१७७॥

अनुष्टुप

कस्य भूपस्य सेनाया, कस्य वाजित्र वाजये।
कस्य रिपुराइ आर्त्ता, कस्य सन्नाह पष्पर ॥१७८॥

दोहा

दल आयौ[6] चहुवान नृप, भट्ट सत्थ प्रुथिराज[7]।

---

[1] BK1 थाति। 2 BK3 प्रगट। 3 BK1 उत्तर। 4 BK2 BK3 मथ। 5 BK2 मिल्लो। 6 BK2 BK3 आयो। 7 BK3 राना।

तिहिं उप्पर हय पप्परह[1], तिहिं पर बाज न बाल[2] ॥१७६॥
सुनि श्रवननि प्रथिराज कहुँ भयौ निसानद् घाउ।
ज्यों भद्दव रवि अस्त गह, चयय बद्दल बाव ॥१८०॥
सुनि चयन्न राजन चढिग, सहस मच धुनि चाव।
मनहु लक विग्रह करन, चढ्यौ[3] रघुप्पति राव ॥१८१॥
राम दलह बानर[4] सयल, उहिं रच्छस[5] दल बद्द।
अमीय लप्प मों यों भिरिग[6], धनि प्रथिराज नरिंद ॥१८२॥
परनि राउ ढिल्लिय समुह, रूप किन्निय मन आस।
कहिं[7] चव नृप पग दल, जुद्ध जुरहिं जम दास॥

गाथा

सय रिपु[8] रि ढिल्लि नाथे, सए आर्यया पध्र सणाय।
परणि पग[9] राव पुत्ती, जुद्धाइ मागति भूषणं ॥१८३॥

इति श्री कवि चद विरचिते पृथी राज रासे जयचद सवादो, सयोगिता विवाहो नाम नवम षड ॥६॥

1 BK2 BK3 पप्परहि। 2 BK3 बाज। 3 BK2 BK3 चढ्या। 4 BK3 बनर। 5 BK1 रक्षस। 6 BK1 भरिग। 7 BK2 BK3 कहे। 8 BK2 BK3 रिपु ढिल्लिय। 9 BK2 रा पग।

दशम षण्ड

दोहा

चढिग सूर सामत मह, नृप धर्महि कुल लाज।
मह समूह दिष्पहि नयन, त्रिय जु वरिग पृथिराज ॥ १ ॥

छंद (अडिल्ल)

मज्जत धूम धूसे[1] सुनत। कपिय तीनि पुर जेनि यत।
डमर डहक्यि[2] गौरी[3] कत। जानिय जोग जोगादि[4] अत ॥२॥
क्मि किम सेस मह भार डहिय। क्मि उन्चै श्रगा नयन बहिय।
कमठ सुत कमठ नहि श्रभु लहिय। जाके जकि ब्रह्म न ब्र ह्मड रहिय ॥३॥
राम रावन कवि किम कहता। सकति सुरलोक वरदान लहता।
कस सिसु पाल जुरि[5] जमन प्रभुता। भ्रम्मिय[6] एन भय लच्छि सुरता ॥४॥
चढ्ढिय सूर श्राजानु बाह। द्रुट्टि नव सघन नट्ढी[7] न लाह।
गग जल जमुन घर हलै मौजे। पगुरे राय राठौड[8] फौजे ॥५॥
उप्परै[9] रोस पृथिराज राज। मनौ[10] वानरा लक लागे हि काज।
जग्गिय देव देवा उनिंद। तहा दिप्पिय दीन इद फनिंद ॥६॥
जहा चपिय भार पायाल दुद। तहा उट्ठिय रेण आया समु द।
लहै कौन[11] अगनित्त रावत्त रत्ता। छत्र छिति भार दीसै न पत्ता ॥७॥
आरभ चक्री रहै कौन मता। जुवा राह रूपी न कधे धरता[12]।
जु सेर सनाह[13] नव रूप रगा। मनौ झिल्लवै सीस त्रिनैन गगा ॥८॥
तहा टोप टकार दीसै उतगा। मनौ वद्दलै पति बधि सुरगा।
जिरह जजीर गहि अग लाई। मनो देह गोरष्प लग्गी रषाई ॥९॥
हत्थ रै हत्थ लग्गिय[14] सुहाइ। तिते धाइ गजै न थक्कै थकाइ।
राग जर जीन वनि वानि अच्छै। दिप्पीयहि[15] मनों नद भेष कच्छै ॥१०॥

---

1 BK1 धूम। 2 BK2 BK3 डह डहक्किय। 3 BK3 गोरि। 4 BK1 जुगनि दि।
5 BK2 BK3 जुर। 6 BK1 भुम्मिय। 7 BK1 वट्टो। 8 BK1 राठोड।
9 BK2 BK3 उप्परह। 10 BK2 मनै। 11 BK3 कोन। 12 धुरता।
13 BK2 BK3 सनाह 14 BK2 BK3 लग्गाय। 15 BK1 दिप्पयहि।

सरत्र छत्तीस करि कोह सज्जइ[1] । ति इत्तने सोर वाजित्र नज्जई ।
निसान निमाहार बज्जइ सुचगा । दिसा देस दच्छिन्न[3] लच्छी उपगा ।।११।
तवल्लत दूर तिजगो मृन्गा । सुनै नित्त नारद कठे प्रसगा ।
वधै वस विस्तार बट्ट रग रगा । जिनै मोहिए सत्य नागो कुरगा। ।।१२।
तहा वीर गुडीर तँमे सुरगा । नचै ईस सीस ध्रै जान गगा ।
सिंधु समादताय श्रवने उतगा । सुनै अच्छरी अच्छ मनै सुअगा ।।१३।।
न फेरी न वैरग सारग मेरी । मनों[4] नृत्यना इद्र आरम्भ केरी ।
सिंग सावक्क उग्गे ननेरी । वजे झिझि आवज्झ हत्थे करेरी ।।१४।।
असुरे[5] धाइ धर घट टेरी । चितते[6] नही नट्ठै कुवेरी ।
उप्पमा पड नव नयन भग्गी । मनो राम रावन्न हथ्थे विलग्गी ।।१५।।

दोहा

दल सम्मुह दतिय मधन[7], गनि कुकहै अगनित ।
मनु[8] पर चित विधि बरण क्रिय, सह दिप्पिय मयमत ।।१६।।

छद [अडिल्ल]

दिप्पिय मत मयमत मता । छत्रह रग अगे[9] दुरता ।
एम अदूनि छुट्टे जुरता । धाइ बट्ट बेग कटकता दता ।।१७।।
जि सीस सी दूष सु उै प्रहारे । सार समूह धावै[10] करारे ।
उज्जए बान सज्जै हकारे । अ कुमह को सहहि ते[11] चिकारे ।।१८।।
मेठ[12] मगोल बहु कोट वके । भूप बाजू विना[13] पूनि हके ।
सेह रज्जे रपट्टे निक्लिने । चपिए[14] पानि ते मेर[15] ठिल्ले ।।१६।।

---

1 BK3 सज्जाइ । 2 BK2 BK3 बजइ । 3 BK2 BK3 दच्छिन । 4 BK2 मन्यौ । 5 BK2 उच्छरे । 6 BK2 BK3 चितत । 7 BK3 सगन । 8 BK2 BK3 मम नु परवत विधिवरया त्रिय । 9 BK2 अंगै । 10 BK2 BK3 धावइ 11 BK1 ने । 12 BK1 मोठ मामे सच हु कोट बके । BK3 मेठ मामे बहु कोट वके । 13 BK3 निवा । 14 BK1 चपिए । 15 BK1 गरू, BK3 मरु ।

रेस रेसम्म[1] नारी ति भल्ली। सीस[2] सींदूर सोहति झल्ली।
दिपै रेव बॅग्प्प पति पत्तिबल्ली[3]। नेज[4] बानाह ये ढाक ढल्ली ॥२०॥
हल्लए मत्त लग्गे विवान। परवते[5] गजे सम करे मान।
सिंधुर सबध[6] धारि धुरगा। सुर्भ सुग्रीव डरि इद्र सगा॥२१॥
सीस सिंदूर गज झप झपै। देषि सुरलोक[7] पायाल कपै।
पाषरा झलन्न गज एम झलपै। दति मनि मुत्ति जर जटित लप्पै॥२२॥
मनौ बीज गमकति घन मेघ पप्पै।
इतन ही साम वरि वा रहियौ। कहहि पृथिराज पृथिराज गहियौ।

दोहा

गहि[8] गहि कहि जय चद नृप, इक इक्क गहि अप्पि।
इकु[9] जनु पावस प्रवह अनिल, हलि बद्दल बहु भिप्प ॥२३॥

प्रमानिक छंद[10]

हय गय नर भर, उनै विनै जलधर।
दसा निसान वज्जए, समुद्द सद्द लज्जए[11]।
नाद[12] मद्द अ्र पुली, व्योम पक मकुली।
तटाक वान रगनी, जुनिक्क मो वियोगिनी ॥२४॥
पयाल पल्ह पल्लए, दिगत मत हल्लए।
अनदने निसाचरे, कुकपि रु ड साचरे।
भगत[13] गग कूलए, समुद्द सून फूलए।
अवर्त्त छवि[14] छत्रए, मनोज भो न सत्रए ॥२५॥

---

1 BK2 BK3 रेस रेसम्म। 2 BK2 BK3 सास सिंदू ससिंदूप मिलि। 3 BK1 फरली, BK2 म 'मनौ वनराज ठाले ति ढल्ली। घट घोर न सोर'' अधिक पाठ है और BK3 मे यहा ओटक है। 4 BK2 BK3 यह समस्त चरण छूट गया। 5 BK2 BK2 यह समस्त चरण गया। 6 BK3 सबधे। 7 BK2 सहदेव। 8 BK2 गह गहि कवि सेनान सव, चलि हय गय मिलि इक्क, BK3 गहि गहि , त्रोटक। 9 BK2 BK3 जनु पावस पुवह अनिल। 10 BK3 मवानिका छुदु। 11 BK1 लज्ज पज्जए। 12 BK2 रलोद। 13 BK1 भगत्त गडथ, BK3 भगत गव 14 BK2 छ्त्र, BK3 छत्र।

अपद्द रेन भंडन, डरप्पि इंदु छंडन।
पमट्ट पिट्ठि पिट्ठर[1], प्रसल्लि भार भिच्छर।
सापहम मग्गए, ममाधि आदि जग्गए।
अपूरव ति पधयो, जग्गलु[3] कालु भग्गयो ॥२६॥
नरिंद पाइ मग्गमा, भ्रमंत आधि सग्गहा।
न जोगिान पुरे सु अप्पु विप्फुर अर।
॥२७॥

छंद [अडिल्ल]

पट्ठिया[4] राइ पग सु ढीम। भपे दुचा[5] नहि नैन दास।
निवप्ट दे तुच्छ रोम सीम। उपरे फौज पृथीराज रीस ॥२८॥

छंद रसावला[7]

कोप[8] पल्लव भपी, मेच्छ मन्न भप्पी, रोम साह नपी, वीर बाह[9] पपी।
मध सावधपी, टक[10] अट्टारपी पची विन्भारपी, लोह नाराच पी[11] ॥२९॥
प्रान जापा लपी,[15] चूल चाच्चपी, हिन्दि बाह नपी, धर्म माह सुपी[13]।
काल तेना लपी, पारमी पालपी जग[14] पार ठुपी, स्वामिता विन्तपा ॥३०॥
ढिल्ली डाह[15] भपी, साठि हज्जार पी, पचग[13] पारपी ॥३१॥

कवित्त

बग्घेलो वर सिंघ[17] राव, केहरि कट्टेरि।
कालिंजर कोलिया[18] राइ, बधौ वर जोरि।
रन[19] रावण तल्लार बाग, कढ्ढो मुप जप्पौ।

---

1 BK2 निट्टर, पिट्ठिर। 2 BK3 प्रसल्ले। 3 BK1 जप्तजु काल। 4 BK3 पठिया।
5 हुइ दुवी नहि, BK3 दुवा नहि। 6 BK2 निचट्ट। 7 BK3 रसावलु।
8 BK2 BK3 कोल पल भप मेच्छ सब मपी। 9 BK1 बाह। 10 BK2 टक।
11 BK2 BK3 की। 12 BK2 लकी। 13 BK3 चाह। 14 BK8 पग
15 BK1 हाह। 16 BK2 पचग। 17 BK2 BK3 सिंघु। 18 BK1 केलिया।
19 BK1 रण।

रा विज पाल नरिंद, काम कारन द्वै कप्पा।
गहह चपि चहुवान कहा[1], मत्त सावत कह।
मो[2] सहत्थ सहस भारत्थ भर सहम दिए कमधज्ज दह ॥३२॥

दोहा

सहस मान सह छत्रपति, सहस जुद्ध सरि[3] जुत्त।
गऽह मत्त वारण[4] बली, सह मावत समत्त ॥३३॥
मत्र घात सक्र भूरिता, विष उत्तरै फनिंद।
तुम विनु जग्गु[5] न निव्वहै, तुम विन धाम नरिंद ॥३४॥
सूरु कट्ठ कहुत नृपति तात परयौ तुम काम।
जब लगि[6] अंग न नचिए, काम न होई ताम ॥३५॥
सो इन[7] काम रावण सु सुनि, जिहिं तन उट्ठिय आप।
यह अलम्भ लोक त कहहि, जिहिं मरि मारिय साप ॥३६।

कवित्त

तब रावण उच्चरिय जग्गि, मडत कुमत किय[8]।
जैति जग्गि आरंभि[9] प्रथम, चहुवानै[10] बधिय।
यह अबि हठ तुम कहहु, कहहि अन दिट्ठौ दिट्ठौ।
दो उन होहि प्रभु पग सहित, पौंडी[11] गुड मिट्ठो।
बच्छहु विचार मत्रिय मरन, चहुवान गहु करि गहि सभरिय।
जाइ कन्या वरइ जुग, अकित्ति प्रकट्टै[12] रहिय ॥३७॥

दोहा

आरभ न जीय मरण, गर न अगवै राइ।
जग्य बिगारयौ जुद्ध चढि, लिए[13] सु कन्या जाइ ॥३८॥

---

1 BK2 कह। 2 BK2 मो सत्थ भार भारत्थ भा सहस दिए कमधुज्ज दह। 3 BK2 सरि। 4 BK3 वारण। 5 BK1 जर गुन निव्वहौं। 6 BK1 लग। 7 BK2 BK3 यिन। 8 BK3 किय। 9 BK2 BK3 आरम्भ। 10 BK2 BK3 चहुआन। 11 BK1 पूडी। 12 BK1 प्रगटै। 13 BK3 लिये।

दोहा

सुय जादौं[1] बोलहु वयन, नगर कध कुटवार।
सु विधि मीर समाम भर, तुम्ह[2] रहहु हटवान ॥३६॥
हट्ट नार कुटवार सुनि, करि सावतनि जग।
सननि निरष्यत पग दल, परि पति दीप पतग ॥४०॥

अडिल्ल

हय दल पय न्ल अग्ग सुटारे, नृपतिन छत्रन लभै न पारे।
सूर मानत मज्झे[3] हजारे, मने चिंटिया कोट मध्ये मनारे ॥४१॥

छद भुजगी

मोरिया[4] रान पृथि राज बग्ग, उट्ठिया[5] रोस आयास लग्ग।
पत्थ भारत्थ भरि होम जग्ग, पोलिया[6] पग्ग पड अनल लग्ग ॥४२॥
उट्ठिय सूर सावत तज्जे, छोहिय सिंघ माहत्थ लज्जे[7]।
बाज नै दीरए पग्गु[8] वज्जै, मनौ आगमे मेघ आषाढ गज्जै ॥४३॥
मिले जोध यत्थे न लग्गे करारे, उडै[9] गैंन लग्गे[10] सम सार झारे।
कटै कध कावध सध[11] निनारे, परै ज्ञगर[12] गम्म नौ मत्त वारे ॥४४॥
झरे सभरे राइ सों सार सारे, जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यों अपारे।
जवै दारि हल्लै नहीं कोप चारे, तथें[13] कोपिया कान्ह मैमत मारे ॥४५॥
जहा अप्पिय मार मध्य दुधार[14], कटं कु भ रूपत नासाग भार।
गए सु ट दता न दता उपारे, मनौ कदरा कद मिल्ला उपारे ॥४६॥
परे पट्टुरे वेम ते मार सोस, मनौ जोगिनी यत्र लागत दास।
चढ़े वान कम्मान[15] दीसें न भान, भवै गिद्धिनी गिद्ध पावै न जान ॥४७॥
रलै पैत अ त चरत करार, घुलै कठ सठी न लग्गे[16] उभार।

---

1 BK2 प्रजाद, BK3 जाद। 2 BK2 BK[3] तुम। 3 BK2 BK3 मम्म। 4 BK2 मोरिय, BK मोरिय। 5 BK2 उट्ठिय, BK3 उट्ठिय। 6 BK2 BK3 पोलिय। 7 BK[3] लज्जो। 8 BK2 पगु। 9 BK1 उभै। 10 BK[3] लगे। 11 BK1 सधै। 12 BK[1] जपर। 13 BK तव। 14 BK2 दुगारे। 15 BK2 BK3 कमान। 16 BK2 लग्गा।

सर श्रौन रग पल पारि पक, बजै वमन सस बैसे करक ॥४८॥
दुम हल्लि ढालति हाल सुदेस[1], गए हंस नासं लगे हस वेस ।
परै पानि जघ धरग निन्यारे, मनौ मच्छ कच्छ नरं[2] नीर भारे ॥४६॥
मिर सा सरोज कच सा सि वालं, गहै अं त गिद्ध सुसुभे मराल ।
टर रभ रात भरत विचारे, कृत[3] स्याम सेत कृत नील पीरे ॥५०॥
धरे अ ग अन्न[4] सुरभ सुभट्ट, जितै स्वामि कज्जै समप्पै[5] सुथट्ट ।
तहा काल जम जाल ह्रथा समान, भयौ इत्तनें जुद्ध अस्त सुभान ॥५१॥

दोहा

भान विहान[6] जु दिप्प पिय, वर सुर पिणकु थीर ।
तनह धरौ कि सभरौ, तुम रप्पण रजु मूर ॥५२॥

गाथा

निम गत बछहि भाण, चक्की[7] चकाइ सूर सार घणी ।
विधु मनोग वियोगो[8], कुमुदिनी तु कातरा णरा ॥५३॥

दोहा

उभय सहस हय गय परित, निसि आगत भान ।
सात महस असि मीर हणि, थल विचौ चहुवान ॥५३॥

कवित्त

बाघराउ[9] बघ्घेल[10] हेल, मुगलन्नि हलक्किय ।
मेघ विसिष[11] बिज्जलिय, जाव[12] जबूर मलक्किय ।
वेगयद वारुनि बहत, वार त्तन वारिय ।
मीर पुठिब आरुट्ठि[13] सेन, गहि गहि अप्पारिय ।
आवत्त मान सावत रन, जमर मेच्छ सम्मर भिल्लिय[14] ।
अष्टमी चष्प एकह सुमह, प्रथम रोर्स दु दु[15] जु मिलिय ॥५४॥

---

1 BK2 सुदेस । 2 BK3 तर । 3 BK2 BK3 कत । 4 BK2 BK3 अनं । 5 BK3 समपै । 6 BK2 BK3 विहन । 7 BK3 चक्क चकाइ । 8 BK2 BK3 वियोगौ । 9 BK2 BK3 राव । 10 BK2 BK3 बघेल । 11 BK2 BK3 विसिष । 12 BK3 जाब जबूर । 13 BK1 आरुट्ठ । 14 BK1 भिलिय । 15 BK1 दु दुन मिलिय ।

प्रथम मार सायत सही, मीरनि इति मित्तिय।
वाघ राउ[1] बग्घेल हेल, इन उत्तर चित्तिय।
उभय हमकि रान काज, लाज किन्नो[2] पृथिराजह[3]।
एकठ[4] मु डि अयारि इक्क, मिडिग[5] पग पाजह।
पुत्तार उरह कट्टार कर परिग, पेत रन जित्तिय।
यह जुद्ध सुद्ध चहवान सों, प्रथम केलि क्रमधुज्ज[6] किय ॥७६॥

परयौ[7] गग गहिलोत[8] नाम गोविंद रान घर।
दाहिम्मो नर सिंह परयौ, नागौर जासु धर।
परयौ पुन पामार चढु पिथ्यौ मारती।
सोलकी सारगु परयो, असि वर झारती।
कूरम्भ राय पज्जून सौ, बधौ तीनि ति कट्टिया।
कनवज्ज रारि पहिले दिवस, सौ में सात निघट्टिया ॥७७॥

पज्जूनह उप्परे रान, पृथिराज सपत्तौ[9]।
गरुव राव गोविंद घाइ, अघाइ मसत्तौ[10]।
चाइ चित्ति चहुवान काह, किनो कर उभ्भौ[11]।
रा रडा ढिल्लरी[12] आज, लग्गी मन दुभ्भौ।
धाराधि नाथ धारग धर, जैत जित्ति किन्नी सदन[13]।
चावड इक्क रघ्यौ सुग्रह[14] रायन[15] छित्ति छत्री हृदन ॥७८॥

अद्ध रैनि चदनी[16] अद्धि, अग्गे अधियारी।
भोग भरनि अष्टमी, सुक्रवारे[17] सुदि रारी।
च्यारी रात[18] जगली रह्यौ, तह नींद न सूत्तो[19]।

---

1 BK2 BK3 राव। 2 BK1 किन्नी। 3 BK3 प्रिथिराजह। 4 BK2 एकत सु ढि। 5 BK1 मिरि गय गप्पाजह। 6 BK1 कमधज्ज। 7 BK2 BK3 पत्यो गघ। 8 BK3 गुहिलौ सनाम। 9 BK2 BK3 सपत्तउ। 10 BK2 BK3 ससतउ। 11 BK2 BK3 उभौ। 12 BK1 डिल्लरो। 13 BK2 हृदन। 14 BK2 BK3 सुग्रह। 15 BK1 BK3 राषस। 16 BK2 BK3 चद्दिनी। 17 BK1 सुक्रवारै। 18 BK2 BK3 जाम। 19 BK2 BK3 सुत्या।

थल विंद्यौ[1] कमधुज्ज रह्यौ, कदल[2] आन्नतौ।
दस कोस अंत कनरज्ज तैं, कोस कोस अंतर अनी।
घाराह रोह जिमि पार धी, इमि सध्यौ[3] सभरि धनी ॥५६॥

रासा

परह चार चै इदुज, इदीवर मुदय।
नव विरही नो नेह, नवज्जल नौ रुदय।
भीषम सुभ समीपन, मंटित मन्न तन।
मिलि मृदु मंगल कीन, मनोरथ सच्चु[4] मन।
घुरि निसान गत भान कलक्कल[5] मुद्दयौ।
तह सावंत भरि दच्छिन हु, घर धुक्कियौ[6]।
सविष पग दल ब्रिष्टि, निहारयउ।
अचल[7] मीस सजोगि रैंन, मिस झारयउ[8] ॥६१॥

अनुष्टुप

जतो नलिनी ततो नीर, जतो नीर ततो नलिनी।
तिजत मेह मेहनी, जत्र गृहिनी तत्र गृह ॥६२॥

दोहा

आजु अवनी घद हुव, तार सुमारु भिन्न।
पलचर[9] रुधिचर हस चर, करी रवन्नी रैनि ॥६३॥

कवित्त

रानीडर[10] राजैत राइ, भोहा मिलि चिंती।
सो अरिष्ट उपज्यो[11] मरण, अपकित्ति सुनती।
छुछुंदरी[12] मिलि सप्प गहन, उगहन कुलभह।

---

1 BK2 BK3 विंटे। 2 BK2 BK3 आहुधा। 3 BK2 BK3 रवस्यौ। 4 BK2 BK3 सत्य। 5 BK2 BK3 कलकल सुदयउ। 6 BK2 BK3 धुक्कियउ। 7 BK3 अचंमो। 8 BK1 झारियो। 9 BK2 घर रुधिघर। 10 BK2 डर राइजैत। 11 BK1 उपज्यौ। 12 BK1 छुछुंदरि।

बुंदि[1] गय गार सिर उप्परह, ममर मार उट्ठिग पहर ॥७३॥
पहर एक असि एर एक, एकहि[2] निवरत्त[3] घर ।
घर घर घरनि निहारि नाग, च्युक्किय कि नाग मिर ।
हल हिलि[4] मिलि रट्ठ[5] घर, रीठि लग्गो रघ[6] वज्जह ।
कर कर्कस करि केलि धार, उट्ट[7] हि लगि घारह ।
दुहु दल पगार भिरि भिरि, भुवग[8] भोगि पहु झत्ति तन ।
पहु फटिग घटिग सर्वरि समर, अमर मोह जग्यौ सघन ॥७४॥

इति श्री कविचन्द विरचिते पृथ्वीराज रासे अष्टमी शुक्रे प्रथम दिवस
युद्ध वर्णनो नाम दशम पद ॥

---

1 BK3 बूंदि गय । 2 BK2 एंकह । 3 BK2 BK3 निवरित्त । 4 BK2 हलि । 5 BK2 BK3 रट्ठि । 6 BK2 वज्जा रह । 7 BK2 BK3 डुट्ठहि ।
8 BK3 भुयग भोगि गन नापहु फटिग घटिग सर्वरि ।

एकादश षण्ड

कवित्त

दिन अगत भग जुद्ध, जूर चपै पावतनि।
भर[1] उप्पर भर परहि घरह, उप्पर धावतनि।
दल दतिय विच्छुरहि हय, जु हय हय करनक्कहि।
अच्छरि दरि हर हार धार, धरनिय झननन्नहि।
नय जय सु मह जग्गनि कहहि[2], कनवज्जिय ढिल्लिय[3] नयर।
मावत पच मित्तह परित, मति मति भय विप्पहर ॥१॥

गाथा

विपहर पहट्ट परिय[5] हय गय, नर भार सार इत्थेन।
रह रोम पग भरिय, उव्वरिय चीर वींवेण ॥२॥

कवित्त

परयौ माल चन्देल जेनि, धवलिय धर गुज्जर।
परयौ भान भट्टी भुवाल, थट्टा धर अग्गर।
परयौ सूर मावत[7] राजै, निवानौ सुहु मुच्छह।
हसै तिनहि पावार विरद, बानावली[8] अच्छह[9]।
निर्वान वीर धानर धनी, गन्यौत[10] इक्क[11] नरिंद दल।
ग परत ५च भुय जग पहर, अगनित भति अभग पल ॥३॥
चहुवउ सूर मध्यान पग, परतग गहन किय।
पमरि पेह पह मिलिय श्रवन, इक्क सुनि लिय[12]।
तव नरिंद जगली कोह कढ्यो, सु चक असि।
अरि धम्मिल धु धरिग, दुअ रन मैद्धि[13] तिय ससि।

---

1 BK[3] में यह समस्त चरण दो बार लिखा है। 2 BK1 BK[3] कजहि। 3 BK3 दिल्लिय। 4 BK[3] मित्तह। 5 BK1 परिय। 6 BK2 उघरिय, BK3 उब्बरिय। 7 BK2 BK[3] सात। 8 BK[3],वागावलि। 9 BK2 BK3 अच्छेइ। 10 BK2 BK3 गन्योत। 11 BK2 BK3 इक्कु। 12 BK[1] निय। 13 BK2 मनहु घन मद्दिद्दि तिय ससि।

अर[1] अरुण रत्त गौतुक वलह, मेंयो नम वह भिरत भर।
सावत निघट तेरह परिग, नृप तन लग्गिग पच[2] सर ॥५॥

दोहा

हूँ सर अज्ज रह द्वे नृपु, इक्कस इक्क सनोगि[3]।
जुरि[4] अच्छिनि रत्ति करि, अब जगल वे भोग ॥४॥
रैन राम रावत्त रान, रन रग रग रस।
उठत एक धावंत पच[5], वहत वीर दस।
वलि[6] वारं मोहिल मद्द, मारू मुह मद्धौ।
अरुण अलकृत पग, पारस दल पद्धौ।
नारेन[7] वीर बधव महित, दिन दिवान गो नगौ।
कलहल जीध सावंत परि रह्यो, स्वामि सिर मेन्ड्यो[8] ॥६॥

छद (मोतीय दाम)

[दु[9] अग्ग रह तीम लह बहु पाइ। गुरू दह रस्म तुरग तुराइ।
जगन विमाय पयपै[10] जाम। धरै[12] तिहि छद[13] सुमुत्तिय दाम।]
रजो रवि रत्थ रही मिर व्योम। धमक्किय बज्ज[14] मरालिय गोम।
जग्यो रम तामस धगह पूर। गह ग्गाह राज चवै सब सूर ॥७॥
नवम्मिय वृत्तिर सूर सुधान। घटी दह मत्त राउ[15] सब दीन।
नया[16] सिर आइ सह गन देव। गहौ पहु जगल सूर समेव ॥८॥
सुवन्न हरी वसु जगन अग्ग। कढे कर नट्टिय सिंह सुवग्ग।
तुरग मदति पयदल[17] सक्क। मत सजि अगह मह सरक्क ॥६॥
धमक्किय धोम निसान निनद। चमक्किय कातर सिंधु[18] रसद।

---

1 BK1 अनि असरण। 2 BK1 पद्ध सर। 3 BK2 सयोगि BK3 स्ययोगि।
4 BK3 ज्जगरे अस्थनि, BK2 जुरि धरि अच्छिनि। 5 BK1 पच पाहत वार नस।
6 BK1 विश्व तारन माहिल्लं मद्द दल समुह मत्थौ, BK3 महिलं मद्द द जाए रस मई मथौ। 7 BK3 नारन वार। 8 BK2 सहरो। 9 BK2 BK3 अग्गर तीव। 10 BK2 पयं पय, BK3 पय जामे। 12 BK2 चवै, BK3 थवै। 13 BK2 BK3 चंद। 14 BK1 इज्ज। 15 BK2 गत। 16 BK2 नयो। 17 BK1 पयदल। 18 BK3 सधु।

घमडित सिंधु ग्स पुर मेन। ग.म्मह् रचि क्रम्यौ[1] सव सेन ।।१०।।
उलट्टिग मिंधु मपत्तिग अप्प[2]। उरत्थिय सज्जन अत कलप्प।
मुरक्कि वग्ग मुजगल राइ। प्रगट्टित कोप धुवधर धाइ ।।११।।
नह्[3] नह् तू बर द्वै रन तूर। सूरब्वर[4] सप्प सजे घन सूर।
मिले पहु जगल सेन सुपग। मनौ मिलि सागर सगह गग[5] ।।१२।।
बढ्यौ रह नामस नचिय[6] पग्ग। मनौं रहि हारि जुवारि अलग्ग।
झर झर धज्जिय धार निधार। टूटे पग फोर मनौं निसि तार ।।१३।।
लगि मुपि[7] सागि गयदनि हेरि। मनौं गज राज बनावत मेरि।
हय दल पैदल दतिय एक। लए कर आउध[8] सावध केक ।।१४।।
झर भक्षर सेन झनक्यि सार। धर प्पर लुत्थिय[9] ढरे घन घार।
कढी चहुवान कमान सुबक्र। मनौ पह सेन सुग्रीव[10] मयक ।।१५।।
करी अरि अप्पु विडारत तज[11]। मनौ वन जारत चीय घनज।
ढहे गज ढाल सुभ्रुडनि[12] सार। मनौं भर भार सुट्टहिं ढार ।।१६।।
ढह्यौ घन धाइ मु डु गह[13] देव। भुवन्नह[14] राउ परयौ धर वेव।
भरक्किय सेन स भग्गिय पग। परे तह तीनि सहस्सनि दंग ।।१७।।

कवित्त

धरियर स्सर विसेष रह्यौ,[15] चलहत मत्त भर।
घत्र घात सावत अग्गि[16], लग्गिय सु पग्ग झर।
हल हलत दल पग दग, चहुवान जान भय।
तब आयो राइ[17] सल्ल विरद भैरो सुभूत रय।
हाकत[18] हक्क उच्चरिग अतुल, पान आजान भुव।
कमधुज्ज लग्गि कमधुज्ज छल[19], बीर धार विज पाल भुव ।।१८।।

---

1 BK3 क्रम्यो । 2 BK3 अप । 3 BK3 नह् तुह । 4 BK1 सुरब्बर । 5 BK3 गध । 6 BK2 नगिय । 7 BK2 BK3 मुष । 8 BK1 आवध । 9 BK2 लुत्थि । 10 BK2, BK3 सुग्रीव । 11 BK2 BK3 नज । 12 BK1 सुकट्टदनि सार । 13 BK1 सुट्टुगह । 14 BK1 सुवन्नह । 15 BK2 परयो । 16 BK1 अग्गि । 17 BK2 BK3 रय । 18 BK2 हाकत हत हक । 19 BK1 BK3 छल ।

दोहा

महस वीस भर अप्पु बर, एक एक रथि रिन।
सभर जुद्ध सावत सम, मनु मम लग्गिग सिंघ ॥१६॥

छंद पद्धडी

तह लगे लग्ग परि, सिंघ धाइ। चहुआन सूर, कमधुज्ज राइ।
हावत मत, भारत तेक। हल सत रत्न, हलि चलत एक ॥२०॥
गयनेह[1] सूर रूधति भौन[2]। भ्रमरी मरीचि, नहि मद्धि तौन[3]।
सचरै धाम, सद्ध न व्योम। धुधरिग धाम, दह दिग्ग धीम ॥२१॥
पावै न मद्धि, गिद्धिय पसारु। भिदति पपि, पद अद्ध चारु।
देपेत सूर, कौतिग्ग सोम। नारद, अघ निरपि व्योम ॥२२॥
पेचरह सुद्ध, सुभझै[4] न धक। घन परह पेह, पूरित पलक।
अच्छरि[5] रत्थ, यद्धति सीम। पावन[6] रन, इच्छति सी[7] ईम ॥२३॥
किरतात[8] काल, सहसल्ल[9] रूप। गहहु चवत, चहुवान भूप।
मयति सिर धुध, सुभझै[10] न भान। प्रकटै न आप[11], दृग अप्प पान[12] ॥२४॥
दिप्पहि[13] न सूर, सावत राज। सम्रह्यौ[14] सन्न दल, सकल साज।
रुप्यो सुकन्ह, मामत हद्द। हों जैत राइ, नामानि जद्द ॥२५॥
नीडरह सिंघ, मुनि अत्तताइ[15]। सुभझै[16] न नैत, सिंघू मराइ।
बच्यौ सु सूर, चौरगि नद्द। लप्पौं[17] मु राज, अरि लप्प वृद ॥२६॥
बच्यौ सुकन्ह, धुव गैन धारि। गय पति[18] सार[19], बधी जु पारि।
क्रम[20] कै सु श्रवण, सुनि अत्तताइ। लोहा सुधीर, धरितो न धाइ ॥२७॥
हलरति मत्थ, मामत ढार। मनु क्रम[21] क्रमति, हरि दत भार।

---

1 BK1 नैह। 2 BK3 मोन। 3 BK1 तोन। 4 BK2 BK3 सुझै।
5 BK1 BK3 अत्तरिय। 6 BK1 पावन रन्न। 7 BK2 BK3 "सी" छूट गया।
8 BK2 BK3 कृतांत। 9 BK2 BK3 सह। 10 BK2 BK3 सूझै। 11 BK2
अप्प। 12 BK3 पानो। 13 BK1 दिप्पाय नाह, BK3 दिप्पाय नाहम। 14 BK3
त म्रह्यौ। 15 BK3 जाइ। 16 BK3 सुझै। 17 BK2 BK3 लप्पो। 18 BK1
पत्ति, BK3 पति। 19 BK2 दार, BK3 सर। 20 BK2 क्रम्यौ सु। 21 BK2
BK3 "क्रम" छूट गया।

विहथति कोपि, वाहत न[1] कौन। भिदति[2] सिंघ, उड्ड ति[3] भौन ॥२८॥
प्रकटति भाक पावक[4] धोम। किलकति घुटी, सट्ठी सव्योम।
धमकति नागधर, असि उसघ। क्रह्कति सेष, कूरम्म कध ॥२९॥
धर टुट्टि धगनि पल पल निपक। तन रघन सथि, वभा निसक।
गय ढार मार, सुप मत्त भार। प्रस्टति मद्धि, दुट्ट दल पगार ॥३ ॥
कधति पार, पगुरद्द सन। निरषत स्वामी, सावत नैन।
॥३१॥

दोहा

मभ्क मपत्तिय नृपति रन, अरि पारस परिकोट।
रहे सूर सावत जकि, दिष्षहिं नृपतिन चोट[5] ॥३२॥

रासा

मित्त महोदधि मभ्क, दिसत गसत तम।
पथिक्र घध्र पथ, दृष्टि अहट्टि।
चग निम जुवन जुवत्ती, रत्ती सट्टि अपप्पनौ[6]।
जिमि मारम रम लुन्ध, जु मधुप मधुप[7] लौ ॥३३॥

दोहा

सभ्क सपत्ति[8] रत्त[9] भर, कलि सज्जे दल पग।
चालिग सूर पहु पति मिलि, जुद्ध भरनि किय अग ॥३४॥

कवित्त

कमधुज्जह राए मभ्भ[10], विरद भौरौ[11] सुभूत गह।
करनट्टी कहि राज ओर[12], सारग हत्थह[13]।
सुप गुटी सुग्रीव राव, बघेल राज धर।
मोरी काम मुकुदपत्ति, मेहासु पट्ट धर।

1 BK2 BK3 "न" छूट गया। 2 BK2 भिद ति। 3 BK3 उडति। 4 BK2 पावक। 5 BK3 चौट। 6 BK2 अपप्पनउ। 7 BK2 मधुप लउ। 8 BK2 सपत्तिय। 9 BK3 परत्त। 10 BK2 मल्ल, BK3 मभ्र। 11 BK2 भौरै, BK3 भौरै। 12 BK1 उर। 13 BK1 हत्थ।

[दुन्निन[1] गु कलहुति झमकतिय पतति।
रयन छंद पयति सु, नर नाम हुति।]
नृप कन्ह राय मरहट्ट पै, हरिय सिंघ हत्थ नेरि घर।
पर पाल राव नृप माल पति, राइ मल्ल क्रमि[2] सत्थ भर ॥-४॥

छंद [हनुफाल]

नवमि मुवन सूर वनिग विषम तूर।
गहन गहन पग, वधिग[3] सविध जग ॥३५॥
तरनि मरनि सिंधु धरनि तिमिर धुंध।
संचरि सगुन थान, झलकि सु इम जान ॥३६॥
सघन निगन जूप, प्रकटि पुहमि रूप।
सजित सु चहुवांन, करषि कर कमान ॥३७॥
रजित[4] राम निसंक, मनहु लैन लंक।
छुटिग सगुण[5] कन्न, वहित तुरग तन्न ॥३८॥
पषर मयर सार, प्रहमि उरनि पार।
धर धर लगि धार, धरनि रुधिर ढार[6] ॥३९॥
राय सल लषि राज, क्रमि गह गह गाज।
लषि सम रज धाइ अय लगि अततताइ ॥४०॥
हय गय सगि मार, नषि जु पुर परार
उट्ठिगं क्रमि सु[7] सूर, मड सम सिंघ सूर[8] ॥४१॥
राय[9] सल पर पिष्पि, क्रमि गहे[10] रज रष्पि।
मिलि कन्ह अततताइ, रवि रन रोकि राइ ॥४२॥

---

1 कोष्ठगत दोनों चरण प्रक्षिप्त हैं और प्रति BK के दाएं हाशिए पर लिखित पाए गए BK2 BK3 में दोनों चरण नहीं मिले। 2 BK2 BK3 क्रमिले सत्थ भर। 3 BK2 BK3 बधिग सविग। 4 BK1 रजत। 5 BK2 BK3 सगुन्न। 6 BK2 दारा। 7 BK2 BK3 सु। 8 BK2 रूर, BK3 रूप। 9 BK2 BK3 रय। 10 BK2 BK3 गहि।

परि दह रन धाइ[1], मघन घट[2] अघाड।
परि[3] जन भुज विष्पि, भजि सनय सलष्पि ॥४३॥

दोहा

भजै सेन विजय[4] पाल नृप, लषि भय तामस राइ।
महस एक भर सप धर, कहगि सुछडि रिसाइ ॥४४॥
बानै सप विरुद्ध[5] वर, वैरागी जुध धीर।
सूर[6] सावत नृप नाइ सिर, भर पहु भनन भीर ॥४५॥

कवित्तु

पवग मोर पष्प रह मोर[7], ग्रीव ति गज गहिय।
मोर टाप टट्टरिय मोर, मडित मन्नाहिय।
मोर माल उर सप सक, छडिय भय भागिय[8]।
धार[9] तिच्छ अद्दरिय पग, सेवहि वैरागिय।
सिह डरनि डोरि घालै फिरै, तिनहि[10] राज रप्पत रहहि।
हल हलत सेन सावत भय, मुक्कि मुक्कि अप्पनु कहहि ॥४६॥
नृप केहरि कट्ठेरि राइ, परताप पट्ट पहु।
मिधूरां राहप्प ओर, रण राव ठट्ठ[11] वह।
कट्टिय आस सकाज पत्ति, गुडि रन रत्तह।
पहु परवत पुडीर हीर, सापुला समत्तह।
अन्नेक सेन पति सप धर, सहस[12] एक विन मोह हत।
आम्या[13] सु पग किलकति क्रमि, अप्प अप्प मुख भुप्प रत ॥४७॥
हय हय आयास[14] केकि, सज्जिय सुह सहर।

---

1 BK2 BK3 घाइ। 2 BK2 BK3 घय। 3 BK2 BK3 मनि। 4 BK2 BK3 विजेपाल। 5 BK2 BK3 विरद। 6 BK1 BK3 सर। 7 BK3 मोर यावति। 8 BK1 भगिय। 9 BK1 में यह समस्त चरण छूट गया। 10 BK1 विहित। 11 BK3 वइ, BK1 वट्ट। 12 BK3 एह मप कवित मोहंता। 13 BK1 अप्पा, BK3 मया। 14 BK1 आकास।

कहु धरिग कहु परिग अरिग, थर रहिग सुहड भर।
अरराइ पति सप्पह कियो[1], मिंभाइ अतत्ते।
मनहु पात निघात पत्ति, सावत सुरत्ते।
हम सत सेन उब्भय अभय, चाहुवान कम धुज्ज कम।
उच्चरिग धीर आनदु हुयो[2], सम्भ धीर रत्ते सरम ॥४८॥

छंद [हनुफाल]

विमल मक्ल व्योम, रजित मिरन सोम।
प्रकटित[3] नृप सपग, हलि मलि मिलि गग ॥४६॥
सुरति सेन[4] सुलप्पि, गिरषि परषि पप्पि।
विहमि दग करूर, बलडरि विय नूर ॥५०॥
दल[5] सु समद दूप, अचवन अपि[6] रूप।
हकि हक्कि सप धार, सग सु मभरि वार ॥५१॥
रजि मम सिंघ रूप, सूर विय सप भूप।
विरसि[7] उचित व्वग, तन् सुचवति[8] रग ॥५२॥
मिलिय उभय भार, बजित विषम सार,
वर धर लगि धार, भर तुर ढरि भार।५३॥
भनन[9] भनन भार[10], अचल मनु अधार।
हवकि हवकि सग, अनिल[11] अनगि अग ॥५४॥
विहल करल कूप, क्रिपित कल सरूप।
वनित सप सावत, अरिग सु[12] करि अर्त ॥५५॥

---

1 BK3 किय। 2 BK2 BK3 हुइ सभर रक धीर रत्ते सरम। 3 BK2 BK3 प्रगटितम सुपग। 4 BK2 BK3 सयन। 5 BK1 दल ससमद। 6 BK2 अवि। 7 BK1 येरसि। 8 BK2 BK3 सुचवठि। 9 BK2 भननंनि। 10 BK3 भार। 11 BK2 BK3 आनि अवि लगि अगि। 12 BK2 BK3 मुक्र।

सुचि मरयत माझ[1], अपु अपु इछ[2] माज।
सुमिरि सुमिरि मत, अयग मब सुनत ॥५६॥
सकति सगुन धार, हक हक बजि तार।
न विन[3] धीर निपग, थेई थेई थेई थग ॥५७॥
घन[4] घनझति घट, खिल खित गुम गुठ।
गिधिनि अत गहेस, अतर अकास देम ॥५८॥
मूल अत मधि धार[5], अत सु लगि[6] अतार[7]।
मनु वर धाल रग, उडवत चार चग ॥५९॥
सु रचि जवर सार, अधति उद्ध विहार।
फर फर पुरि[9] फेफ, परत पपि दुरेफ ॥६०॥
हकति सिर बिरुध, नचित घर कबध।
सकति अचय धोर, प्रजिर[10] जिघट घोर ॥६१॥
नचित रजित[11] ढाल, सचित[12] [सजित] सिरनि माल।
रमित[13] सर सभट्ट[21], अबर जयति मद ॥६२॥

कवित्त

दस सत यउनत सप- सघन, नीस़ान धुनिक्कय।
पावम रितु आगमन मिघरि, सिघ्रि जानि निरक्खिय।
विनहि अमित पौरपह[15] सत्त, सामत विर्यप्पिय।
नीडर जैत नरिंद स्वामि, सिगिनि गर थप्पिय[16]।
हहकारि भूप भो हायु भर, गहि अकाम नपिय सहस।
उढ मडल उडत निरप्पियो, मनहु बाज पपी सुभय ॥६३॥

---

1 BK2 BK3 सज। 2 BK2 BK3 इछ। 3 BK2 चित। 4 BK2 BK3 घनन झकति घर। 5 BK2 BK3 घर। 6 BK2 सलगी। 7 BK2 BK3 अलर। 8 BK2 BK3 उध। 9 BK1 फरि। 10 BK2 BK3 वजिर। 11 BK2 BK3 रजिज। 12 BK1 सवित। 13 BK2 रमित। 14 BK2 BK3 सभद्द। 15 BK2 BK3 पौरिपह। 16 BK2 BK3 थपिय।

तव केहरि कंठ्ठीरि रान, सिंगिनि गर घत्तिय।
वरून पासि निय नंद, लोक पालह पति पत्तिय।
हसि गहकि हकारि पग्ग पुत्तिय जान धन।
ताव अग्ग सचरिय[1] रान, राजनह[2] आन घन।
चहुवान रत्थि सत्थह चलि, सुधम बधि कमधुज्ज वर।
पचित अलापि भर कन्ह दिट्ठि, हर हर हर कहि धरान ढरहिं ॥६४॥

दोहा

गुन कट्टनि रवनि सुवर, दमनह पग्गु सु वारि।
असि वर मर पृथ्वीराज हनि, सिर सु हत्थ निरवारि ॥६५॥

छंद त्रोटक

निरवारि सुकट्टिय कट्ठ तन। धरि[3] टारि धरद्धर भार घन।
भरल भर लग्गिय मार भर। कटि मडल पड विहङ्ड[4] हर ॥६६॥
लगि हकि सुहकि सुधीर सुव। कढि हकि करी सुर धारि धुव।
हय असि ग्गड सुमुड पत। मनौं सुष[6] कुट्टक वारि कट[7] ॥६७॥
भ्रमै वर केहरि तु गल चपि। गहै कर पाव[8] उडति लडपि।
धर सम जंगल पुच्छ सरोह। मनतप मडल उज्जल मोह ॥६८॥
फिरफत आइ घर प्पर घु क। किलकंति[9] चप्प्य लग्गिय[10] कु क।
विभत्थ[11] रस रम मच्चिय मैन। हयग्गय लुत्थि नरप्पर मैन ॥६९॥
धरप्पर सप घुरं स्सय सत्त। सुरक्किय सेन सु पग्गुर पत्त।
मनौं भगि[12] घूर अधूर नरिंद। मुदति मरीचि अत्थि ग्गय चद ॥७०॥

कवित्त

निसि नौमि गत चंद, हक्क बज्जी त्याव दिसि[13]।
भिरि[14] अग्ग सावत वीर, वरषत मत्र असि।

---

1 BK2 BK3 सचरिय। 2 BK2 राजन। 3 BK2 BK3 घर। 4 BK1 विघंड। 6 BK2 BK3 सुष कुट्टिक। 7 BK2 कटं। 8 BK1 "पाव" छूट गया। 9 BK1 कलिप्पत, BK3 कलिक्कति। 10 BK1 पडगित। 11 BK1 BK3 विभत्स। 12 BK1 सग, BK3 सागि। 13 BK2 दिसि। 14 BK3 सिंभिरि।

जुद्ध जुद्ध[1] आवद्ध इष्ट, आरम्न[2] सत्ति वर।
इक जीव दम घटित दसत, ठिल्लै[3] सहस्स भर।
दिप्यो न देव दानव भिरत, सुहर रत्त निपियंति[4] छल।
सावत सूर सोरह परिग, गयौ न पग अभंग दल ॥७१॥

छंद [भ्रमरावली]

भई रारि[5] दुहु कक, असह[6] प्रमान। परे सूर सोरह तिनै नाम आन।
परयौ मडल्ली राइ, माल्हन्न हसो। जिनं हक्किया पगरा, सेन गसो ॥७२॥
परयौ जावलौ[7] जाल्ह, सावत भारौ। जिनै पारियौ पग्ग, पंवार सारौ।
परयौ वागरी वाग, बाहे दुहत्थौ। भिरे पग भग्गे, भरे हत्थ वथ्था ॥७३॥
परयौ नीर जद्दौ[8], व्रलीराव राना। जिने नपिया नैत, गैदत राना।
परयौ सत्त सावत, सारग गानी। दुहु सत्थ भप्यो[9], भलौ हत्थ माक्को[10] ॥७४॥
परयौ पाघरो राउ, परिहार राना। पुलै सेल सालै, पुलै पग बाना।
जबै उप्पटै पग, आवद्ध नीर। तहा सापुला सीह, भुज पारि भोर।
परयौ सिंघलौ सिंघ, सादूल भोरी। लगी लोह अग्गी, जगी जानि होरी ॥७५॥
भिरयौ भोज भग्गौ नही सार भग्गे। जुरयौ[11] मल्ल हल्लै, नेड़ा जूड़ लग्गे ॥७६॥
परयौ राउ भोहा, उभै[12] चद सप्पा। इकै किंत्ति भप्पो इकै कुमुम नप्पा।
जिसी भारथ प्योहिनी अट्ठ होमी। चैत सुदि रारि, निसि एक नोमी ॥७७॥

दोहा

महुप पार राठौर रन, जिनि मिगिनि गर कीन।
भुन भुजग सावत विय, गहि सवद्धर लोन ॥७८॥
तुरग पिछडिग मटि[13] रसु, फेरिग सु शस्त्र बिशस्त्र।
रुधिर सुवोरह उद्धरिय, भरिग उमापति पत्र ॥७९॥
राज पयपै[14], सुनहु सब, आजु कह्यौ हित छोहि[15]।

---

1 BK2 BK3 सु जुद्ध। 2 BK2-आरम्भ, BK3 आरन। 3 BK2 BK3 ठिल्लई। 4 BK2 तियति छल, BK3 विय पियति छल। 5 BK2 रा। 6 BK2 BK3 अक। 7 BK2 BK3 लो। 8 BK2 BK3 जंदा। 9 BK2 BK3 भप्यो। 10 BK2 BK3 माक्की। 11 BK2 BK3 जुरयो। 12 BK3 उभि। 13 KK2 पटिन सु। 14 BK2 BK3 पयप्यौ। 15 BK2 BK3 छौहि।

भोहा भूप पराक्रमह, कुल चंदेल न होहि[1] ॥८०॥

कवित्त

जिह[2] सपद्धर सप पूरि, पूरित भुव कपिय ।
जिहिं सपद्धर पूरि भूमि, इारत भर चपिय ।
जिहिं[3] सप द्धर पूरि भूप, पर सिंगिनि घत्तिय[4] ।
सो सप द्धर असु समेत, आयासह पत्तिय[5] ।
धनी[6] वीर धीरसा[7] सब, सुक जवार अवधारितैं ।
सामतन सूरन हन्नह[8], सु कलि किति विस्तारितैं ॥८१॥
दिट्ठी दुर्ग[9] नरिंद कासियाजह, जुर जगिय[10] ।
राउ हन्यौ लगूर गोठि[11], कन्नर[12] कर भगिय ।
पग राव परतप्प[13] जग, रप्पन रन माई ।
निसि नौमी ससि अस्त, गस्त गैंवर गहि पाई ।
हाकत दति[14] चप्पौ नृपति, सावतनि सब्बर बहिय ।
भुइ परयौ छत्त आछत्त, को[15] कहहि सदन गहियन गहिय[16] ॥८२॥
त दिन चाइ चहुवान, तिष्प तिरसूल[17] उप्पारिय ।
सिंगी नाद अनद इष्ट करि, ईस सभारिय ।
सधर सत्थ सामत रुधिर, पप्पर पल मगह ।
रहसि राइ लगूर भीव, चप्पो अ भगह ।
जय सद्द जोति जुगिनि करिय, आततइ[18] उत्त ग ढर ।
भर हरग पगु पगुर सयन, गग सुरगिय रग ढर ॥८३॥

दोहा

अतुलित बल अतुलित तनह, अतुलित जुद्ध सुचद ।

---

1 BK3 होहि । 2 BK3 जिहि । 3 BK2 BK3 जिह । 4 BK2 समस्त चरण दो बार लिखा है । 5 BK2 सपत्तिय । 6 BK2 BK3धन्नि । 7 BK2 BK3 धारम्म । 8 BK2 BK3 नह नह । 9 BK1 दुर्गंन नरिंद । 10 BK1 जुगिय । 11 BK2 BK3 गौठि । 12 BK1 कत्तर । 13 BK2 BK3 परतप्पि । 14 BK1 दत । 15 BK2 BK3 कौ । 16 BK2 BK3 गहाय । 17 BK1 तिरसल । 18 BK1 आवातताइ ।

अतुलित धन मभाम किय, कहि उतपति कवि चद ॥८४॥

कवित्त

चौरगो चहुवान राज, मडल आसा पुर।
तौवर घर परधान, सुवर, मानों वृत्तासुर।
धनु असव घर धनिय एक, नाम सुविघाईय।
तिहि पर पुत्रीय जाइ पुत्र कहि करिग वधाईय।
करि ससकार द्विज नाम[1] दिय, आततइ कुल कु वर वर।
नृप अनग पार दीवान महि, पुत्र नास अवु मरिय वर ॥८५॥
अति तनु रूप सरूप भूप, आदर करि उट्ठहिं।
चौरगी चहुवान नाम, कोरति करि पुट्ठहिं।
द्वादस वरिम सुपूजि मात, गोचर[2] करि रष्यौ[3]।
राज काज चहुवान पुत्र कहि, कहि मुख भष्यौ[4]।
हरिद्वार जाइ विस्वक सुहर, सेव जननि सगह करिय।
वरु[5] कहि वरु[6] मन्त्रिय पुरप, चहु रूप देषि सिव उर धरिय ॥८६॥

दोहा

पच धेनु पुज्यौ सु सिव, गहि गिरिजा तिहिं पानि।
तिय कि पुरुष छवि सचु कहि, विधि कहि वधि प्रमान[7] ॥८७॥
मो पितु जुग्गिनि पुर धनी, अनगपाल परधान।
पुत्र नाम कहि अनुसरिय, राज डरह चितु पीन ॥८८॥
जव तिय अग प्रगट्ट हुव, तव किय मात दुराइ।
अद्ध रैनि लै अनुसरिय, सिव सेवन सत माइ ॥८९॥
तव प्रसन्न गिरिजा भई, मगि जु मगन हार।
पुत्री ते यह पुत्र करि, धन कुल रष्पन हार ॥९०॥

---

1 BK2 माम। 2 BKI गोचर। 3 BK2 BK3 रष्पो। 4 BK2 BK3 मष्पो।
5 BK3 मरु। 6 BK2 रमन्नि रमनिय पुरुष रूप देषि शिव उर धरिय, BK3 मरु कहि रमन्निपपुरुष •। 7 BK2 BK3 प्रमानि।

कवित्तु

शिव शिवा[1] हसि सैन रहस्य, सैन उप्पर समत्थ भय[2]।
सुविधि सज्ज[3] आदरिय सत्त, स्वामित्त अत्थ[4] लिय।
वपु विभूति आस रहि सिग, सग्राम धरै उर।
त्रिकूट कथ सथ सघरिय तिप्प, त्रिसूल धरै कर।
कलहंत बीर किलकंत सह, जुगिनि गन संथह फिर।
चौरंगि चंद[5] चहुवान चित, आतताइ नाम हि धरहि ॥६१॥

दोहा

नमसकार सामत[6] करि, जब जब दिप्पहि ताहि।
तब तब राज विराज मन, रह भूप सुप चाहि ॥६२॥

कवित्तु

हाडाराइ हमीरराइ, गंभीर निबधो।
लप्पाना[7] तुप्पार लष्प, उर तीन सुदद्रो।
राज अग्ग फेरिय[8] जहि, जगल त जानहि।
चहुवाना[9] चामर नरिंद, जुग्गिन पुर थान हि।
भ्रम दुर्ग दुर्ग[10] दल स्यों जुरिय, सामतनि मत्तह चढिय।
आलोह सेन लंगर्त विषम ललकि[11] दानवां बले चौढिय ॥६३॥
कासिराज दल विषम मध्ये, जनु तीरनि छुट्टिय।
फिरि निहारि भुज धारि अद्ध[12] हल हल्लियति बदिय।
निघनि घात घन घात घात[13] घन घाव अघानिय।
जुत सायरी[14] जिहाज रहित[15], पत्ति तिहि ठावानिय।

---

1 BK2 BK3 सिवा। 2 BK3 मया। 3 BK2 राज BK3 सैजै। 4 BK2 BK3 अरिथलत। 5 BK2 सद। 6 BK2 समत। 7 BK1 लंप्पाराइ जो रुप्पौ अरह सजि जोन सुहद्दो, BK3 लप्पाना रुप्पौ जर जान सुहद्दे। 8 BK2 फेरियहि, BK3 फरेय। 9 BK2 चहुवान। 10 BK1 दुर्ग दुर्ग। 11 BK2 BK3 बलिकि। 12 BK2 BK3 अद्ध लिय बटिय। 13 BK2 हय गय घात अघानिय। 14 BK2 BK3 साइरी। 15 BK2 विरहित।

जल अग्गि वलपति बत्त तिनि, छिनु छिनव कमधज्ज दल।
भूमि चाल भाल उथ्थल पथल, इम सुकत्र पहु पग चल ॥९४॥

छंद भुजंगी

हले पर्ग छत्री निर्छत्र छितानं। उव हड्डु हम्मीर गंभीरवानं।
थहं थाल भग्गी सुजग्गी जुवानं। रधि द्वार उढ़ारं भूमि भयानं ॥९५॥
सम सेलं सदेहं[1] हयं अज्ञानं। हय तीनि हड्डु निछडे परानं।
सम सेलं सज्जेवं[2] जजीर थानं। निसा एक मेक स मैक दियानं ॥९६॥
दिमा धूरि धंधूरी उड्डी गियानं[3]। भिरे वीर सामंत उभे उथानं[4]।
महा भार भूतेस साई[5] सभानं। ॥९७॥

कवित्त

हाड़ा गव हलक, कामि, राजह दून दुहूनि।
दत जुग्गिनि पुर सामंत, उतह कनवज्ज वीर रम[6]।
वियो[7] वीर आहरिय दत धर, धर अधि ध्यारध।
नार्भि नीरं निच्चुरिय[8] केरिय, केहरि कुस रावध।
उडि हस[9] नसममहं सहर वैर, कम्र दैवं वर्ज्ञो मुहर[10]।
उग्गियो नाग नागप्पुरहं, हार्सं दुर्ग धामेकि धर ॥९८॥

दोहा

हाडा हथ्थ सुहथ्थ धूरं, गभीरा रस वीर।
कामिराज दलं सौ जुरिग, कुल उत्तरी न नीर ॥९९॥
नृप अलसिग अलसिग सुभर, अलसिग पग नरिंद।
विलसित काक करकं किय, सहसवि तीस गनिंद ॥१००॥
कनक नयन कलकिये तरुनि, वर वजि नैन निषेध।
जिहिं वर्ल वर्ल्लिह निरंपयो[11], तं भूमि परग सूर वेध[12] ॥१०१
दिप्पि सजोगी चित्र अचल, श्रम जल वूंद[13] वदन्न।

---

1 BK2 सिदेह ग्रदह ज्ञान, BK3 मम सेला सदेह ज्ञान। 2 BK2 BK3 सिजेव। 3 BK2 येगियानं। BK2 उठान। 5 KK2 साई सतान। 6 BK2 BK3 रमि। 7 BK2 BK3 वीयो। 8 BK1 BK3 निचुरिय। 9 BK1 हसमसमामह, BK2 हसमसम मसह। 10 BK1 सुमर। 11 BK1 निरपयौ। 12 BK2 वेत्र। 13 BK2 BK3 बुंद।

रति पति अचिति फु कि सुधि[1], जानि प्रनालि मदन्न ॥१०२॥

छंद त्रोटक

तब दिप्पत[2] राज, रवनि[3] सुष। अतिवत दुषी दुष, मानि सुष।
भुव चकम[4] रकम राज मन। इष तत्ति निहत्ति समोह घन ॥१०३॥
गुन कट्टनि[5] कट्टिनि तात कुल। किय स्रोत[6] महा भर वीर बल।
अभिराम विराम निमप्प कर। उर चपन विट्टिन दिट्टि हर ॥१०४॥
इति भीय सुकीय सुजात कुल। भुव[7] सपनि कपनि काम तुल ॥१०५॥

दोहा

सुघर विलषत घरिय घर, रहि ठट्टे घट[8] तीन[9]।
उठहि न असित कर सुवर, कछु मन मोह प्रवीन ॥१०६॥

कवित्त

मिले सब्ब सावत बोल, मगहि ति नरेसर।
अप्प मग्ग लग्गिये मग्ग, रष्षहि सु महाभर।
इक्क इक्क भूभत दति, दतिय ढढोरहि।
जिते पगुरा भीम[10] मारि, मारि करि मोरहि।
हम बोलि रहे वलि अतरै, देह स्वामि पारच्छियौ।
अरि असि लष्प कुरा अगमै, परगि राइ सारथियौ ॥१०७॥
मति घट्टिय सावत मरन, भय मोहि दिपायो[11]।
जग चिट्ठिय विन होइ कहन, क्यौं तुमहि सुह्यायो[12]।
तुम गञ्या भर भीम तास, गब्बह मय मत्तौ[13]।
मै गौरी साहाब साहि, सारी ल सुभत्तौ[14]।
मो चरन सरन हिंदुव तुरक, तिहिं सरनगति तुम करहु।

---

1 BK2 BK3 सुष। 2 BK1 दिप्पति। 3 BK2 BK3 रवनि। 4 BK3 कक मरकम। 5 BK2 कट्टनि। 6 BK1 स्रोम। 7 BK2 सुष जपनि। BK1 पत्ति। 9 BK2 BK3 तीनि। 10 BK2 BK3 भींव। 11 BK2 BK3 दिषायउ। 12 BK2 BK3 सुहायउ। 13 BK2 BK3। मत्तउ। 14 BK2 BK3 सुभत्तउ।

बुझिये न सूर सावत होइ, तौ[1] बोझू अप्पन घरहु ॥१०८॥
वन रष्षै जौ[2] सिंघ वीझ वन, रष्षहि सिंघ हि।
घर रष्षइत भुजग धरनि, रष्षइत भुजगहि।
कुल रष्षइ कुल वधू, वधू रष्षइ ति कुल अप्प[3] कुल।
जल रष्षइ[4] जौ हेम, हेम रष्षइत सच्छ[5] जल।
आव रहै तब लगि जियन, जियन रष्षै जम[6] आवतह्।
रावत रष्षै राइ जौ, रावत रष्षै राइ कह ॥१०६॥

तैं[7] रष्षै हिंदवान गति, गौरी गाहतौ।
तैं रष्षौ जालोर चपि, चालुक्क पहतौ[8]।
तैं रष्षौ पगुलो भीम, भट्टी दै मत्थै।
तै रष्षो रन थभ राइ, जादौं सौ हत्थै।
यह मरा हिंत्ति राइ पग की, जियन[9] किंत्ति राइ जगली।
पट्टप रनि जाइ ढिल्लिय लगैं, होइ घर घ्वर मगली ॥११०॥

सूर मरन मगली स्यार, मगल घर आयैं।
बाह मगल मगली धरनि, मगल जल पायै।
कृपन लोभ मगली दान, मगल मगल कछु दिन्नै।
सत[10] मगल साहरस धरस[11], मगल कछु लिन्नें[12] रहै।
मगली मरन[13] किय तिय, सत्यै तनु[14] षडियै।
पित चढ्ढि राइ कमधज्ज सौं, समर[15] सनम्मुप मडियै ॥१११॥
सरण दियौ पृथिराज सहै[16], छत्री करि पट्ठे[17]
मींचल[18] गनिया[19] पाइ पाइ कह्यौ, आयौ घर बैठे।
पाच घाटि सौ कोस कहै, दिल्ली सा कथै[20]।

---

1 BK1 BK3 तो। 2 BK3 जो। 3 BK1 BK3 अप। 4 BK1 रष्षै। 5 BK1 सच्च। 6 BK1 जिम। 7 BK3 ति। 8 BK2 चाहतौ। 9 BK2 BK3 जीयन। 10 BK1 सत। 11 BK2 मग, BK3 स्थान रिक्त है। 12 BK1 लिवाराह। 13 BK1 मरण। 14 BK2 BK3 ति सत्ये। 15 BK2 मरव, BK3 मर। 16 BK1 जय है BK3 पृथीराजय है। 17 BK3 पट्ठे। 18 BK3 मोहच। 19 BK2 BK3 गनीया। 20 BK1 कहै।

एक एक सूरवां, पिप्पिय चाहंतो वत्थ[1]।
घर घरनि परनि राइ पगु की, पहुचै कहाँ बडत्तनी।
जब लगि गग घर चद रवि, तब लगि चलै कवित्तनी ॥११२॥

गाथा

गिद्धोण[2] जाइ गहणो, गहणो कवि चद सूर[3] सावत।
प्राची हय रह भ्रमणो, रहणो गत चितनि[4] दावत ॥११३॥
सप्त[5] भट किरणि समूहो, सुग्गो आरोणि आणि आएस।
जुग्गिनि पुर पति सूरो, पार सपत्ति पग राएस ॥११४॥

छद त्रोटक

परि पग कटिक्कवि घेरि वन[6]। दस पच ति[7] कोस निसान धुन।
गज राज विराजत मध्य वन। जनु बद्दल अभ्र सुरग उन ॥११५॥
परि पप्पर मार तुरग रन। जनु हल्लवि हेल[8] समुद्द तन।
घर बवर वैरष छत्र तनी। बिच महि[9] सु अरनह हींस घनी ॥११६॥
हगि तत्त हिमावत पीत पनी। देषि लज्जित[10] रैनि मरत्त तनी।
घान[11] रत्त[12] भेरि अनक सय। सह नाइनि[13] सिधु वैराग लिय[14] ॥११७॥
निसि मन्व नृपत्ति अनि[15] र फिरै। जनु भावरि भान सुमेरु[16] करै।
दल सत्त[17] सभारिय रत्त[18] करी। जिलि जाइ निकस्सि नृपत्ति अरि ॥११८
नृप जग्गत सब्ब तुरग चढै। विन मान पयानह लोक कढै।
चहुवान कमान ति कोप लिय। मिलि साहुनि पच्चिक सीस दिय ॥११९॥
मद गध गयदनि सुक्कि गय। सब दच्छ रह्यो[19] न अनत भय।
सर विद्धत इक्क[20] सुसात करी। दल दिप्पत नैक दट्टुकक परी ॥१२०॥
जा नेनह सूरान भीर परी। ठिलै चहुवान ति अप्पु उरी ॥१२१॥

---

1 BK1 वच्छै। 2 BK2 BK3 गिधोण। 3 BK2 BK3 मार। 4 BK1 नै। 5 BK1 सत्त। 6 BK2 घन। 7 BK1 BK3 थि। 8 BK1 हेम। 9 BK3 माहि। 10 BK2 BK3 लज्जिव। 11 BK2 मेनन कहि। 12 BK3 रतहि। 13 BK1 नाइन। 14 BK2 BK3 लय। 15 BK2 BK3 अना। 16 BK2 BK3 सुमेर। 17 BK2 सत्त्व, BK3 सत्। 18 BK2 रत्ति। 19 BK2 रहोत, BK3 रहोव। 20 BK2 विक्कं।

कवित

बधौ[1] सै जैचद राज, विजपाल सुपुत्ता।
सैरध्री उर जन्म नाम, वीरम[2] रावत्ता।
सहस सीस सिंदूर ढाल, नेज सिंदूरी।
सिंदूरा सदेह सेव, धारुनि घट[3] पूरा।
दिन एक महिप सु जै भये, विजै दिग्गे[4] नृपद।
जिते जुवान हिंदुव तुरक, वाम अग ढोढर[5] पगद ॥१२२॥
शुक्रवार अष्टमी निंद, जानै न जुद्ध पुर।
नौंमी सनि मध्यान स्वामि, समाम इद जुर।
हय दिप्पत[6] पाइ गह सत्त, पच्छे पच्छारिय।
रें सु सुद्ध सुद्ध ग[7] जग, लगि ही न जगारिय।
आयौ निसि सामत जद कर, कमंत आलम असन।
तिते सूर सान्वि सबर, जनु अगस्ति दरिया गसन ॥१२३॥

दोहा

वास करिद्वय वप धरि, पय वसिट्ठ परि हार।
उभय पाणि साहिल समर, गो नृप पगु सुसार ॥१२४॥
रा जैचद नरिंद हलि, दरस भृत्य[8] बल काज।
भै भुज पजर भिरि गहिग, इन मैं को[9] पृथिराज ॥१२५॥
माया मग्गति देव नगि, हुव[10] जिम हक्क प्रगट्टि।
तानि[11] कटारिय कर धरिग, तिहिं घन सेन निघट्टि ॥१२६॥

भुजगी छद

घन सेन निघट्टिग पगु दल। रावत्त वग्घ्यौ[12] तिहि वीर बल।

---

1 BK2 बघौग, "सैं" नहीं है, BK3 बघौर। 2 BK1 बीर, BK3 बीर। 3 BK2 घन। 4 BK1 दिग्ग नृप पद। 5 BK1 टोडर। 6 BK2 दिप्पत पाताम पाइ गहि सत पच्छारिय, BK3 दिप्प वंस पाइ गहि सत्त पच्छारिय। 7 BK3 सुपग। 8 BK1 भृत्त, BK3 भृत्य। 9 BK1 हौ। 10 BK2 हवि। 11 BK2 तीनि। 12 BK2 BK3 वग्घो।

रुधि पात पवित्त कियौ समर । घन दिप्पि विमान फिरे अमर ॥
तिनि पौरुप राज सयो सवर । कवि चद कहि वरदाइ वर ॥१२३॥

कवित्त

कट्टिय चरु[1] विसरयो,[2] धाइ लग्यौ धर रानन ।
जद्दव भीम जुवान ति रस, तु गह भिरि भाजन ।
रा रन वीर पवित्त सुपति, रप्पि अप रिहा रह ।
राज काज चहुवान स्वामि, सकेत अडारह ।
भिरत तिनहि हय गय सहत, गहि गहि कढ़[3] तिहिं सभरिय ।
निसि घटिय एक सामत परि, भइ पीत दिपि अभरिय ॥१२४॥

दोहा

निसि नौमि वित्तय विपम, सुपम निसाचर चित्त ।
उ कहिन कर पल्लव नयन, अस विड विस्त कुचित्त[4] ॥१२५॥
जगि आभगे[5] पग नृप, जियन आस चहुवान ।
सुर पडल मडल रयन, भया सुरत्तो भान[6] ॥१२५॥

इति श्री कवि चद विरचित पृथीराज रासे नौमो शनिवारे द्वितीय
दिवस युद्ध वर्णनो नाम एकादश खंड ॥११॥

---

1 BK1 वर । 2 BK1 विसरयो । 3 BK2 B ९[3] कढ़ै । 4 BK3 कुचित्त ।
5 BK2 BK3 आभगइ । 6 BK1 भाण ।

द्वादश. षंडः

दोहा

कनवज्जिय भजिय सयन, जे भर डिल्लिय भार ।
घे घर अञ्जुलि जल उठि[1], उद्दित आदित[2] वार ॥१॥
करि[3] विचार सामंत सब, नृपतिहिं रष्षन काज ।
कहै अचल सुनि सूर हो, करहु चलन कों[4] साज ॥१॥
उदय तरुनि नट्ठिय तिमिर, सजि सामंत समूह ।
नृप अग्गै[5] बद्दइ सु इम, चलहु स्वामि करि वूह ॥३॥
चलन मानि चहुवान तब, बजे सु पग निसान ।
तिमि जु दु दु दुहु दल भयौ, विद्धु सहित विनु भान ॥४॥
उन धर चपी रट्ठि वर, मुप घर[6] समरिवार ।
चलत राइ फिरि फिरि फिरिग, अज्जित अद्दितवार[7] ॥५॥

छंद त्रोटक

चहुस्या सेन सब मीर मिल्ले । विङ्गरिय सेन स्वबे निवल्ले ।
चाइ चहुवान राठोर रल्ले । दिप्पियहिं पगुरा नैन[8] लल्ले ॥६॥
कप्पियउ[9] वीर विजैपाल पुत्त । आवघ[10] करहि जम जाल जुत्त ।
महन्यौ सेन सनि सौ सदीप[11] । नौमि तिथि घलह[12] पृथिराज सीह ॥७॥
राजस तामस वे प्रकट्ट[13] । मुक्किय सारक[14] चट्ट ।
मार सपत्त पत्तेति रत्थ । मनौ आवघ रुद्ध इन्द्रानि कच्छ ॥८॥
निहुरइ ढाल गय मत्त मत । पुट्टि सामंत भीमत्त रत्त ।

---

1 BK2 BK3 उठौ । 2 BK2 BK3 अदितवार । 3 BK1 कहि । 4 BK2 कौ । 5 BK2 BK3 अग्गह । 6 BK2 घरि । 7 BK2 BK3 अदितवार । 8 BK1 मे नहल्ले । 9 BK1 कप्पियो । 10 BK2 आवर्ध । 11 BK2 लोनदीह । 12 BK2 घलह । 13 BK2 BK3 प्रकट । 14 BK2 सानुक ।

भूमि भारथ्य[1] ढरे सोइ पथ्थ। अथ्यि निय हथ्यि प्रथिरान हथ्थ ॥९॥
विढड वीर सावत सावीर[2] रूप। जिसो[3] सेल सादूल भई सजूप।
कपै काइ हय लोह रत्तौ सरत्त। जिसौ अनिल आरंभ पारंभ पत्त ॥१०॥
इसौ जुद्ध अनिरद्ध[4] मध्यान हुव। रहै[5] हारि हथ्थ जिसौ चोप जूप।
नामिय अरन दिल्ली दिसान। पुट्ठए पग बज्जै[6] निमान ॥११॥
चप्पौ चाइ चहुवान हर सिंघ नायौ। जिसौ सैल[7] तैं सिंघ गज जूथ पायौ ॥१२॥

कवितु

करि जुहार वर सिंघ नयौ, चहुवान पहिल्लौ।
वरि अनि सावरी लप्प सत्त[8], भिरयौ अक्किल्लौ[9]।
अगम कथा है फिरयौ[10] धरनि, पुर[11] सौं पुर पु दइ।
इक लप्प सों लरइ इक, लप्पह रन रु धइ।
तिलु होइत भोन ही मुरि हय, हय आयास भौं[1]।
इमि[13] जपै चद बरद्दिया, च्चारि[14] कोम चहुवान गौ[15] ॥१३॥
तिमिर बघ रट्ठि वर आइ, जब पुट्ठि विलग्गउ[16]।
गहि गहि कहि चहुवान हिंद, हिंदवान सुभग्गउ[17]।
कर कर्क सह रहसिग मिंघ, सम सिंघ निदयौ।
जन कु जत्त वे मुह[18] समुह, लभ्यो[19] सुरन बधौ।
घन घाइ चार बित्तिय धरी, करिग आन सावत सह।
वैकु ठ वट्ट लद्धी दुट्टुनि लरति[20], अप्प अप्पनि सुरह ॥१४॥

दोहा

परत[21] धरनि हर सिंघ कहु, हरषि[22] पगु दल सब्ब[23]।
मनहु जुद्ध जुग्गिनि पुरह[24], तन मुक्यौ[25] सब गब्ब ॥१५॥

---

1 BK2 BK3 भारथ ढरे। 2 BK1 सावोत। 3 BK2 यियौ, BK3 पिसौ। 4 BK2 BK3 अनुरुद्ध। 5 BK1 रह। 6 BK2 BK3 वज्जे। 7 BK2 BK3 सलते। 8 BK1 सन। 9 BK2 अकिल्लो। 10 BK2 फिरयो। 11 BK2 पुर पुर सौं पुदइ। 12 BK2 BK3 भउ। 13 BK2 इम जपइ। 14 BK2 चारि। 15 BK2 गउ। 16 BK1 दिलग्गौ। 17 BK1 सुभग्गौ। 18 BK1 सुहर। 19 BK1 लम्यौ। 20 BK2 BK2 लरत। 21 BK1 परति। 22 BK1 हरष। 23 BK1 सब्बु। 24 BK3 पुरहि। 25 BK2 BK3 मुक्यो।

पनि प्रथि राजइ[1], अच्छ[2] दल, वलि[3] राठौर नरेस।
सिर सरोज चहुग्रान को, सारभ वर मम भेस ॥१६॥

कवित्त

दिग्य[4] सुनहु पृथिराज, क्नकनायो बड गुज्जर।
हम तुम्ह[5] दुमह मिलग्गि, सत्त न[6] छड्यौ सद्धर[7]।
षड षड हुइ रड मुड, हर हारहिं मज्यौ।
इमट[8] वस भज्जिग नरेस करि पंड विहड्यौ।
इम वस भज्जिग नरेस वर, जुरि पति पक अरुझयौ।
इमि[9] जपै चद बरदिया पट्ट ति कोस चहुवान गौ[10] ॥१७॥

दोहा

बड हत्थ[11] बड गुज्जरा, विरुझि[12] गयौ वैकुंठ।
भीर सघन स्वामि हि परत, चपि कमधुज्ज सुदिट्ठ ॥१८॥

कवित्त

धर फुट्टइ पुर तालन मेह फुट्टै सिर उप्पर।
भवन[13] गयौ गति परा, पत्ति पृथिराज सामि वर।
पगगइ मीसइ नत पग्ग, पुप्परिय पर प्पर।
श्रोणित बुंदइ परत पक, विंटिया जु पप्पर[14]।
विहु[15] पप साह वर सिंघ सुव, षड षड तनु पड्यौ[16]।
नीढर निसक जुज्झत रणह, अट्ठ कोस चहुवान गौ[17] ॥१६॥

दोहा

जुझि पेत[18] नीडर परयो, दिप्पि दट्टु दल सत्थ।

---

1 BK1 राजहिं। 2 BK2 अच्छि। 3 BK2 बल। 4 BK2 दिप्प। 5 BK2 BK3 तुम। 6 BK1 नहिं। 7 BK2 BK3 'सद्धर'' छूट गया BK3 म यह समस्त चरण छूट गया। BK2 में चौथ और पाचवें चरण का जगह। 8 BK3 "इह वस भंजि जनित कोई जुरि पति "अरुझउ" पाठ है। 9 BK2 इम। 10 BK2 BK3 गउ। 11 BK2 हत्थ है। । 12 BK3 रुझि। 13 BK2 तब नायो रा ब्योर नृपति, BK3 गत परउ। 14 BK1 पलघर, BK2 गय घर। 15 BK2 विरचि लोह वर। 16 BK2 BK3 पडयउ। 17 BK2 गउ। 18 BK1 दुहुं दर फाडर परयो।

कटि पटु छुरि जैचद पहु, ढक्यौ अप्पु सैं हत्थ ॥२०॥
सम राठौरनि राठ वर, निडर जुज्झि[1] गिरि जाम।
दिनियर[2] दल प्रथिराज कौ, चप्पौ पग सु ताम ॥२१॥
चापतह पिछोर दिसि, हय पट्टन तन दिप्प।
तनु तुरग तिल तिल करै[3], भयौ कहन ससि सप्प ॥२२॥

कवित्त

सुनि[4] बहित्त पप्परै लोह, बढ्यौ दल रक्यौ।
चिट्टुर होइ चापत स्वामि, अद्भुत यह पिप्यौ।
पट्टु पट्टन पल्लानि हल्ल[5], हिल्यौ न गयदह।
सबर वीर वर[6] सिंघ भीर, नहि परै नरिंदह।
रक्यिो छगन जै चद दल सिर टुट्टै असिवर बढ्यौ।
जब लगि[7] सुतिह दल रक्यौ, तब सु व ह[8] हय[9] वर चढयौ ॥२३॥

दोहा

चढत वाह सावत हय, जय जय कहि सब देव।
मनहु कमल वरिवर किरन, सुहर[पग दल सेव ॥२४॥

कवित्त

तबहिं वाह चहुवान तुरिय, पट्टन पल्लान्यौ।
हींमत क्रम[10] करि उठ्यौ, मरण[11] अप्पनौ पिछयानौ।
यह[12] कर असि वर गहै, गहविगज कु भ उप्पट्टइ[13]।
वह मारै वह धाइ पु दि, अरिदतह कट्टइ।
वह नरौंनिसक है वर सधर, पिप्पहु चित्त कुचित्तयौ[14]।
वह सीस हार गु थयौ, वह [रवि रत्थह जुत्तयौ[15] ॥२५॥

---

1 BK2 जुज्झि। 2 BK3 दनियर। 3[BK2 करन। 4 BK2 सुन वहुत वषैत। 5 EK2 हरकि होइ नौ गयदह। 6[BK2 सघरौ। 7 BK2 लग्गि। 8 EK2 वा ह। 9 BK2 EK3[है। [10 EK1 क्रमि। 11 BK2 मरन। 12 EK1 EK3 वह वर कस दर गहै। 13 EK2 उपट्टै। 14 BK2 BK3 यो। 15 BK2 BK3 -यो।

दोहा

घरनि क ह परत ही, प्रकट पग दल हक ।
तनु अकाल अरली जरल, गहहि दुट्टि निधि रक ॥७६॥
तब झुकि अल्हन पग्ग गहि, भयौ अप्पु बल रूप ।
सिर अप्पौ[1] कर स्यामि कै, हन्यौ[2] गयदनि[3] जूप ॥७७॥

कवित्त

सिर टुट्टइ[4] घर घयौ गद, कट्टियौ कटारौ ।
तह सुमिरी मह माइ देवी, दिन्नौ[5] हु कारौ ।
श्रमी कलम आयास लियो, अच्छरि उछग तह ।
भई परतप्पि सुतत्थ सह, जय जय कह[6] न्वर ।
अल्हन कुमार विभ्रत सुमौ, भौ कवि रन मान मन्यौ ।
तिमि[7] अहिति लोयन[8] गग धरत[9], मति सकर सिर धुन्यौ ॥७८॥

दोहा

धुनि सीस ईस सिर अल्हनह, धनि धनि कहि पृथिराज ।
सुकि कुप्पौ[10] अचलेस तब, महि वर देव विराज ॥७९॥

कवित्त

करत[11] पैज अचलेस धुकिव, चहुवान पग्ग गहि[12] ।
अग्गि दल बल सघरिग, घर[13] भरिग रधिर दह ।
मत्थति हय नर फुरहिं कच्च[14], गज कु भ विराजहिं ।
उवरि[15] हय फर फुरहिं तत्य, सुप कमल ति राजहिं ।
चवसट्टि सद्द जय जय करहिं, छत्रपति[17] पर सवरिय ।

---

1 BK2 BK3 अप्पौ । 2 BK2 BK3 करिव । 3 BK2 BK3 गयदन्नि । 4 BK1 टुट्टै । 5 BK दिन्ने । 6 BK2 BK छु कहक्कह । 7 BK1 तिम । 8 BK2 BK3 लोयन। 9 BK2 BK3 धरति । 10 BK2 BK3 कुप्पइ । 11 BK2 BK3 करित । 12 BK2 गह । 13 BK1 धरि भूरि रह्यो रधिर दह, BK3 धरि भरग रधिर दह । 14 BK2 कच्च । 15 BK2 समस्त पद की द्विरावृत्ति है, BK3 में त्रिरावृत्ति । BK3 उवरि हस उदि चलहिं । 16 BK2 छत्रपति रविवर सवरिग, BK3 छत्रपतिनि पर सवरिय ।

सेम मीस कपियौ टाढ, ढिल्लिय[1] भूमि आरह।
कवि चद एह अपुव्व सुनि, नृप रप्पहि सिह भुव भग्गो।
फिरि कपियौ[2] जपि जैचन्द दल, तोंवर सिरि टट्टर धरयौ ॥३६॥

दोहा

पुर सौरों गगह उदक[3], जोग मग्ग तथ चित्त।
अद्भुत रस असि वर भरयौ[4], विजन वरन कवित्त ॥४०॥
घरिय सत्त आदित्त देव, दसमी अग रोहनि।
रच्यौ तत्थ पृथिराज पच, सत्थह अध पोहनि।
सत्त अग्ग वरिस मत्त[5] सावत सूर तिथ।
पच अग्ग पचास सब्ब, सत्थह सेवकिय[6]।
वामग तुरगम राजत नित्त, न सजि सिगिन मुक्कर।
वचो सु चद सदेह नहि, जीव राह अचिरज्ज नर ॥४१॥

दोहा

गग पुट्ठि अग्गे[7] चिहर, नत बक उज्जल निद्[8]।
उडयौ[9] छत्र सिर पग्गु[10] पर, जनु हेम दड पर इदु ॥४२॥

कवित्त

रा कमधज्ज नरिंद अद्ध, पोहिनि[11] भुरगिय।
तिन म अद्ध सुव[12] कन्नि नग, गै मुत्ति सुरगिय।
तिहि[13] छुट्टै इह लव[14] माहि, सावत राज चढि।
ते थल थक्कि विरहत मास, चहुवान रान रढि।
सिथिल[15] गग थल चल अचल, परसि प्रान मक्कन रहिय।

1 BK3 ढिलीय। 2 BK3 कंपीयौ। 3 BK3 उदगक। 4 BK2 BK3 भयौ। 5 BK2 BK3 सत्ति। 6 BK1 BK3 सेवक्यिउ। 7 BK2 अग्गै। 8 BK2 विंदु, BK3 सिंदु। 9 BK3 उद्यौ। 10 BK2 BK3 पग। 11 BK2 K3 पोहिनि। 12 BK2 सुव कनीन नग सुत्ति सुरगिय, BK3 सुव कज नग ग सुत्ति सुरगिय। 13 BK1 तिह। 14 BK2 BK3 लव लव लहि साहि। 15 BK1 सिथल।

जुरि जोग मग्ग मोरीं समर, चलनत[1] जुद्ध न दह[2] कहिय ॥४३॥
न्वौ पप्प गभीर दुहुँ, पप्पह रा वच्चं[3]।
दुहूँ वाह दुज्न रह मान, मातुल न्प लप्पै।
कठ माल सुभ कठ वाग, सनोग सुरप्पे।
दुहू ह-थ ह्य जुज्झ गज्जि, गन सेन सुरप्पे।
न सरहूँ[4] स्वामि नकुट विघन्ट, त्रिघट रक्कि कमधुज्ज दल।
आदिच्च वार दसमी दिवस, गरव जुद्ध गगह सुजल ॥४४॥
अभग राउ भनि[5] जन कचरा, अरि कच्चरि कच्चरि।
गन्व[6] धर्म स्वामित्त सूर, सम्मुह[7] रन अच्चरि।
पटन सिर अर पट्ट गयद[8], दह घट घटि नप्पी।
जय नय हुर दन सद्द[9] नाद, त्रिभुवन सुप भप्पी।
पद कर[10] पल्लक्र वक्किय हि, हर उग्ग राइ रट्ठ नर धर।
चालुक चलत सुभ सुर्ग[11] मग, ब्रह्म अर्घ दिनौ सुभर ॥४५॥
जयारी रा भीम स्वामि, अग्गौ भयौ चवन[12]।
दुहु वाहह सावत[13] दोउ, द्वादस[14] दह सुदन।
पच मत्थ सजोग[15] कलह[16], कहिय कौतुहल।
मत्त[17] मन्ना रभ मोहिनी, सुरा अमृत कुल पूहल।
दुहू गइ जुद्ध डडु ज भयौ चहुग्रान राठौर भर।
दुड[18] घडिय श्रोन असि नर उद्धरयौ, मनहु धूम अग्गौ सझर[19] ॥४६॥

दोहा

निसी नौमी वित्तिय लरत, दसमी पहर ति चारि[20]।
पुहमि प्रगटि पृथिराज भिरि, अत्थत[21] अद्दित वार ॥४७॥

---

1 BK2 चवत। 2 BK1 वदह। 3 BK2 रावत्थे। 4 BK1 विकहै, BK8 कहै। 5 BK2 मासे जराइ, BK3 भनि जनइ। 6 BK2 BK3 गरव। 7 BK2 BK3 सासुह। 8 BK2 BK3 गगध दह घट्ट नप्पौ। 9 BK1 दत्ति देवि सुरननि। 10 BK2 पर कर पलाइ वज्जिय विहर। 11 BK1 सुग्ग। 12 BK2 उद्दन। 13 BK1 साहाव। 14 BK1 द्वादश। 15 BK2 BK3 सयोग। 16 BK1 कह ककुह कति। 17 BK2 BK3 मत महन। 18 BK2 BK3 दोइ। 19 BK2 सुझर। 20 BK3 चरि। 21 BK1 अच्छुत।

दिप्प पग सनोगि सुष दुष कि नौ ग्ल मोग।
जग्गि जुरधौ रानन मगुन, अवर न आहुति[1] भोग ॥६७॥
इय कहि पर दुप्पिन फिग्गि नममसार मोइ वान[2]।
ग्गन प्रतिष्ठा रूप गर, गढ़ ढिल्लिय पुर दान ॥६६॥
चहुान ढिल्लीय[3] नु स्पद, उड्डी दुहूँ दल पेह।
छुटी आम प्रथिरान की, गयौ पगु फिरि गेह ॥६७॥

कवित्त

न ग्गि गेम गठौंर चपि चहुवान गहन घर।
मो उप्पर मौ मम्म नीय, अगनित दह[4] लप्पह।
पुट्टि[5] डु गर थल भरिग भग्गि, जल वलनि प्रवाहग।
सर अच्छरि अच्छहि विवान, सुर लोक वनाइग।
रग्गि चन्द दु दु दहु ग्ल भयौ[6], जन निम सिर मारह झरिय।
हर मेम हार हर ब्रह्म तन, तिह ममाधि तहिन टरिय।
घरिय तीन रान रत्त पग ग्ल बल आहुटयौ ॥६८॥
जयारी ग भाम स्वामि, घरमह घर दुरगी।
सगर गोर सिर मोर, देह रप्पो अजमेरी।
उडत हस आगाम हष्टि, नन[7] अचरिन[8] घेरा।
जागरा सूर अवधूत मन, असि विभूति अगह घमिय।
पुच्छहु मु जाइ त्रिय मुन सकल, कोक[9] लोक को कह वसिय ॥६८॥
वर छुड्यौ तिहि राइ वरन छड्यौ तिहि वर रवि रथ[10] थक्यौ।
महि मार करन थक्यौ, गहि सारस रव थक्यौ।
रव रवन रवन थक्यौ मुष मारह　　　　।
धर थक्यौ धर परत, मन न थक्यो उच्चारहु।
पायौ न पार पौरुष पिसुन, स्वामिनि मह अच्छर तप्यौ।
निमि निमि सुमीह सम्मीर शिव, तिम तिम शिव शिव जप्यौ ॥७०॥

---

1 BK2 अहुति। 2 BK3 बन। 3 BK1 ढिल्लिपुरह। 4 BK2 BK3 लप्प दह। 5 BK1 पुट्टी। 6 BK2 BK3 भयो यन। 7 BK2 BK3 यन। 8 BK3 अचिरज। 9 BK2BK3 कौक। 10 BK2 BK3 रथक्यौ।

एक अग तिय सक्ल त्रिकल उच्चरिय न राज नृप।
भृकुटि वक्र भ्रकुरिय अरन, तिहिं लिखिय मद्धि रूप।
निय विमान[1] उप्परि देव, दुल्लिय मिलि चल्लिय।
भ्रम चमत्रि भ्रायाम पति, अच्छरि मिलि अल्लिय।
दम एक चवमट्टि वत्रि कमल, भ्रम मग मित तह[2] मीद मिलि[3]।
इम रारि करत जुद्दह जुरत, भिरत रारि इक्क इक्क मिलि ॥७ ॥
वेद कोस हर[4] सिघ उभय, ति गनि वड गुज्जर।
इक्क वान हर नयन निडर, मीडर भय सज्झर।
छगन मत्त पल्लानि कन्ह, पचिय दग पालह।
अल्ह चाल द्वादशनि अचल, विथा भनि कालह।
शृगार विक्कि[5] सलपन लपन, पग राव फिरि गेह गौ।
सावत सत्त जुझे प्रथम, ढिल्लिय पति पृथिराज भो[6] ॥७२॥

दोहा

राजन भृत घर कुम रहव, लभ्भ सु कित्तिय सूर।
जिह गुन प्रगटित पिंड किय, ते मघरि गय सूर ॥७३॥
मघन धाइ मात्त घन, उच्चारिय कवि ईस।
महि अमोलिक सु दरी[7], डोलते रह तीस ॥७४॥

छद पद्धडी

परि सक्ल[8] सूर अघाइ धाइ। उच्चाइ चद नृप धाइ धाइ।
धरि लीयो वीर चालुक्क भीम। वग्गरिय देव अरि चपि सीस ॥७५॥
पावर जैत पीची प्रसग। भारथ्य[9] राइ भारह प्रसग।
जामानि राइ पाहार पूज। लोहान पान आजान दूज ॥७६॥
गुज्जरह गइ रघरिय राव। परिहार महन नाग्र सुजाव।
जगलह राइ दहिया दुवाह। बकटिय स पहुव धनौ रथाह ॥७७॥
जदवह जाज रावत्त राज। वर वलिय भद्र भर स्वामि काज।

---

1 BK1 विमानि। 2 BK2 BK3 "तह छूट गया। 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया। 4 BK1 हरि। 5 BK2 BK3 विक्क। 6 BK2 BK3 भउ। 7 BK2 BK3 सु दरिय। 8 BK1 पर सिक्ल। 9 BK2 BK3 भारथ।

छंद रासा*

अगर धूम[1] मुष गौष[2], त्रिय उनय मेघ जनु।
मोर मराल निरत्तहि मत्त पुन
सारग सारग रग पहक्कहि[3] पप रस।
विज्जुल्ल वाक लसति, झमक्कहि त्रास मिस ॥११॥
नादुर मोर म नूपुर, नारि घन।
मिलि सग मद्धि मयभ्रत, माधुर मत्ति मन
माल कप चप वेस[4] प्रजकि[5] तद्ध सह।
हथि सुत्थान प्रजोनति, दास न्म ॥१०॥
के जुर सत्थ[6] जु, वाधि प्रमानहि मत गति।
के नर अबर वाइ ति, रूपहि[7] अद्द रति।
के वर भाप पराजित, रा ज्ति देव सुर।
के वर वीन विराजहि, वार वर ॥११॥

सोरठा

इह विधि विलसि विलास, असारत मार त्रिय।
दै मुप जोग सयोजन[8], पृथिराज जिय ॥१२॥

छंद प्रवानिक

प्रथम केलि मज्जन, वन धन निरन्तर[9]।
मनिद्ध केस[10] वासयो[11], सुवद्ध वेनि भासयो।
कुसुम्म गु थि[12] साधिय, सुसील[13] फूल आदिय।
तिलक्क उप्प किंकरी, अवन मडन घरी[14] ॥१३॥
सुरेप कज्जल दुन, धनुक्क सगुन मन।
सनासिका सु सुत्तिय, तमोर मुप दुत्तिय।
सुधार कठ लागयो, लम्बोदर विचारयो।

---

*रासा छन्द के लक्षण यहा घटते नहीं हैं। 1 BK2 BK3 द्रुम। 2 BK 1 गाष। 3 BK1 पयक्कइ। 4 BK2 BK3 विस। 5 BK2 BK3 प्रजनति द्रुस तहइ। 6 BK2 BK3 सुत्थ। 7 BK1 रूपइ। 8 BK2 BK3 संयोनन। 9 BK3 निरतन। 10 BK3 वेश। 11 BK2 KK3 वाशयो। 12 BK1 गुथ। 13 BK3 सो साल। 14 BK2 BK3 धरी।

अनर्घ[1] हेम पामयो, सुपानि मध्य भासयो ॥१४॥
कलस्सु पाणि कंकण, वलय सुगट्टि मुद्रित।
सु कट्टि मेषला भर[2], मरोह नूपुर जन्न।
मता? हम सावक, तलेन रत्त जावक।
सवार चातुरी रस, शृंगार मंडि षोडस[3] ॥१५॥
सगध गोय चिहुए अभूषनति भूषए।

शाटक छन्द

लज्जामान कटाच्छ[4] लोक्न कला, अल्पस्तथा जल्पनं।
रत्यारम्भ भयाइ पिम्म मरमा, गेहस्स[5] बुभयाइनो।
धीर जे इत्थ माप चित्त हरणं, गुह्य स्थल शोभनं।
मील[6] नीर सनात नित्य तन, माप दूनं आभूषणं ॥१६॥

गाथा

अवा अबाह पत्ति[7] कता, कताहि दिट्ठि सा दिट्ठो।
महिला मरम्म मिट्ठो, पति कता हि सिप्प मिप्पाइ ॥१७॥

दोहा

रस घुटिय लुट्टिय मयन, टुट्टित मजरि जाइ।
भर भगगत कच्छह[8] सुभी, अलि भर मजरियाँह ॥१८॥
अलि अलि अलि एकत मिलि, रस सर चर मयोग।
ते कवि चित्रिय[9] वर सरस, पट्टु प्रकटित रति भोग ॥१९॥
वै वसत छ वसत किय, भृत सावत सजीव।
प्रापम गठि[10] सु पैम प्रभु, अमृत सुधा रस पीव ॥२०॥
उत्तर पच्छ[11] असाढ पषि, छा अद्र सुमगल मटन छत्र।
दारुण भोग लछि त्रिय गत्ति, विलामनि राज करौ नव नित्त ॥२१॥

---

1 BK2 अनग्र्घ। 2 BK2 BK3 वैभर। 3 षोडश। 4 BK1 कटाक्ष। 5 BK2 BK3 गेहस। 6 BK1 शील। 7 BK2 BK3 पत्ती। 8 BK2 BK3 कच्छह। 9 BK2 BK3 चित्रय। 10 BK3 गति। 11 BK1 पच।

[छंद मालती]

[गुरु पच मत्तति चावरे, लहु चार अच्छर वधए।
सति पिय[1] पिंगल भासए, गीय मालती प्रति छन्दए॥]

प्रिय ताप अगति दग दव, रति दव रुच्छ वर ति भूशए।
कतुमेह पेह ति मेट लोपित श्रोन सकित अगन॥२२॥

नर रहित अहितनि पथए[2], गति पत्र पूजित गोधन।
रवि रत्त मत्तह अभ उहिम, कोपि कम्म[3] मो घन[4]॥२३॥

जल वुट्ठि उट्ठि समूह बल्लिय, सुभ्रम आवन आवन।
हिंदोल लोलति चाल सवि सुर, ग्राम सु रव सुर गावन॥२४॥

कुसुमत चीर गंभीर गघति, मद वुद सुहावन।
दरक्त वेनिय वद्धए, निय चद सेनिय आनन॥२५॥

त,टक चचल लज्जन, चल मज मेघला[5] वरए।
रव रग नूपुर हम दूपुर, कज नृपुर पावन॥२६।

नथ उप्प उप्पनि दिप्प अप्पनि, कुप्पि कपि सुहावन।
दमकंति दामिनि दसन कामिनि, जुत्थ जामिनि जानन॥२७॥

तच्छुर ग्रत[6] घनसार भारह, वेल ति द्रुम छावन।
इल गुज माल हि देपि लालहि, रभ रभरि वन॥२८॥

रासा

विजैं विहसि द्रिग पाल[7] पयातनि[8] पच थिय।
विरहनि वै गट दहन, मयय अग्र लिय।
गज्ज गहिर जल भरित, हरित[9] हरि तत्त किय।
मानौं निसान दिसाननि, आनि अनग दिय॥२९॥

---

1 BK2 BK3 पाय। 2 BK[1] पत्थ पगति। 3 BK3 कम्स। 4 BK2 BK[3] यहा इस छद में प्रथम चरण की दृष्टि विभ्रम से तृताय चरण में आवृत्ति हो गइ, फलत तृताय चरण छूट गया। 5 BK[1] मेखल रानए, BK3 मेखला रावनं। 6 ततच्छूरतत। 7 BK1 द्रगपाल। 8 BK2 पायाननि। 9 BK1 हरित सुतत्थ किय, BK3 हरिततत्त किय।

छंद [मालती]

दिग भरित घुम्मिल, हरित भुम्मुल, कुमुद निर्मल सोभिल।
द्रुम अग वल्लिय सीस हल्लिय, कुट्टक नट्टति[1] कोहल।
कुसुमति कुंजर, सरोर सुब्भहि[2], सुलभ[3] दुन्भर मद्दय।
नद रोर दद्दुर, मोर मद्धुर, वनसि घन वन[4] बद्दय ॥३०॥
झिम[5] झिमकि विज्जलि, काम कज्जलि, श्रोत सज्जलि कद्दय।
पप्पीह वीहति जोह जजरी, मणित मजरी नद्दय।
जगमगिति जगमिग सुरनि निर्भय, अभय नहि लहि हृदय।
मिलि हस सग सुवस सुन्दरी, उरसि आनन बद्दय[6] ॥३१॥
उर मास श्वास सुवास वासर, छलित कलि बल छद्दय।
असि सरद सुभ गति राज मनित, सुमन काम उमद्दय।
नव नलिन अलि मिलि, अलि ति अलि मिलि अलि व्रत मण्डिय।
चक्क[7] चकि चकोर चप्पित, चप्पि छडित छद्दय ॥३२॥
दुज अलस अलसिनि कुसुम अच्छित, कुसुल मुद्रित मुद्रय।
भव भवन भवनि ति मत्रि सुर दिवि, दिवि धुनी क्रिय नद्दय।
नव छत्र मत्रनि नृपति रज्जित, वीर जुझुरि बज्जय।
महि महिप लयि रसु भित अरिनिर, सत्त पाठति दुर्गय ॥३३॥
सजोगि सग सिंगार सोभित, सुभ सिंगार सजोगय,
दिय दीय दीपति भूप भूपति, जूप जूपति सद्दय।
असि सरद सुभगति राज मनित, सुमति काम उमद्दय।
॥३४॥

कवित्त

सवत्सर बावना आम, आसोज[8] विपप्पिय।

---

1 BK1 नद्दति। 2 BK2 BK3 सुम्भहि। 3 BK2 BK3 सलिभ। 4 BK2 वन न वद्दय। 5 BK2 BK3 झिमि। 6 BK2 BK9 बद्दय।
7 BK3 चकि चक्कोर। 8 BK3 असोज।

तव दुर्गे[1] नथ दान्त मल, मारुत निरखियय।
नव मत तव रिद्[2] मरिप जोग[3], जुगिनि हुल्लारहि।
रयन मन्त्र द्विन पढहिं[4], पुन दुर्गे हि नमारहि।
उच्छव उत्तग ति हरादय, रति[5] नर तेग घघहि नृपति।
मयना चित्त चहुवान की, प्रथिराज तेजह उपति ॥३४॥

तट्ट अट्ट अठ अट्ठ[6] रियार मिलि मडिय।
अट्ठ अट्ठ प्रमान मन्र, सिगार सिरडिय।
आनन तेन आयाम तर[7], भूप भूप भुय पत्तिय।
मानिक राउ कुल च्द्धरन, प्रथियर न[8] छत्र पतिय।
जैत पम मडयो मामि, मामत परप्पर।
अट्ठ बात करि अट्ठ रेत जुग अट्ठ मुरप्पन[9] ॥३६॥

अट्ठ[10] मुट्ठि चौरिट्ठ वरि, विट्ठ जु मगि घर।
इक देन मत माल अग, आभग मन्य नर।
मारुनि तुग मह मत्त भर, श्रम अभ्यास दिन प्रति करै।
इक मुट्ठि मुट्ठि[11] ति मुट्ठि लहु, किर न मार दुहु अग मरै।
विहसि चढेरा चहुवान मूर, मन मेन चलायौ।
जैत पम रूप्पीयौ लोह मन नाम मिलायौ[12] ॥३७॥

भयौ[13] राइ आइमु कथर, मारु मो विल्लहु।
चिहुटे न चोट दुइ अगुलिय, यांहत मग मत्थे भारिय।
अप्पी[14] जु माइ तिहि अप्पु कर, मनौ राइ सठ भर[15] हरिय।
चक्रित चित्त चहुवान सूर, सायत सुमझै।
रन थप्पार[16] भर भिरन, पभ मौ पिजि पिजि जुझै[17] ॥३८॥

---

1 BK2 BK3 दुर्ग। 2 BK1 दिन। 3 BK3 योग। 4 BK3 पढ़हि। 5 BK1 रविज तेग। 6 BK2 BK3 अट्ठह। 7 BK1 नर। 8 BK1 पृथ्वीराज। 9 यहां कवित्त छद के लक्षण पूरे नहीं उतरते। 10 BK2 BK3 अट्ठ। 11 BK1 मुट्ठि मुट्ठ किल हुक कि हुन। 12 BK3 मिलायो। 13 BK भया। 14 BK2 BK3 अप्पी। 15 BK2 भद। 16 BK1 थप्पर। 17 BK1 पभ सौं पभ पिजि जुझै।

तीन पण्प पचमी[1] वार, रवि घोमा उउनै
मत्र* वैरि सलतान मानि मम्मह करि मज्जे।
पुडरी राइ चदद् तनौ, धीग नाम वै अनुरिय।
रण मिध कध थप्परि तरकि, हैम तुल्ल लिनौ तुरिय। ॥३६॥

दोहा

दिन अट्टह पुज्जिय सकति, नवल विधि तव थिप्य[3]।
देह[4] मिलह सुरग मडिय मघन, चढयौ तुरगम मीर ॥४०॥

छद भुजगी

चढयौ[5] सीह सावत सज्जे[1] सुभारो। धरै कप मोहै मक्ती करारी।
हरे जूह बालद्ध सा लग्ग सारे। पिने पभ ताना दुहू अग डारे ॥४१॥
रुरी भेरी भकारनी मान धाई। उठी नेद मत्री हि विप्री हि भाई।
तपै तेज वाहौ सुभग्गी तरारी। वही धात मै वात कह्री नियारी ॥४२॥
मिटी रैनु[6] राना[7] दिपी अग चगी। तुला सार टडी मनों पड मडा।
कियो राइ प्रसाद पुडीर पाढ। महम्म मुकाम मु हिंमार कोट ॥४३॥
पच हज्जार ग्राम[8] सथान। फटा माह वैरप्प पील निसान।
रपत्त वपत्त तुरत्त उचायो[9]। थप्यो सत्त सावत पुण्डीर जायौ[10] ॥४४॥
बले देह दुनिया बलें बल उचार्यौ[11]। कहै चाइ चहुवान सो वोल छायो[12]।
मरन कौ[13] हरन काहि करन साई। ववन कौ गहन सुरतान थाई ॥४५॥

कवित्तु

ज दिन वम पुडीर, वानी[14] मपहि[15] त्थ।
ज दिन मान महत्त[16] त्तदिनह पट्टे लिपि हत्थ।
त दिन गाम सुठाम सुनहि, रावत सु जु सत्थ।

---

1 BK2 पच वीर मीमान ति बउनै। 2 BK2 BK3 सव। 3 BK1 थप्पाय। 4 BK1 दे। 5 BK3 चढ्यो। 6 BK1 रेनु। 7 BK2 BK3 राया। 8 BK1 जाम। 9 BK2 BK3 उचायो। 10 BK2 BK3 जायो। 11 BK2 उचायो। 12 BK2 BK3 छायो। 13 BK2 कै। 14 BK2 वानै। 15 BK2 BK3 मुदित्थ जिजग। 16 BK2 BK3 महत।

ज दिन हत्थि हय हत्थ दियै, गोरे जग हत्थ[1]।
असु पत्ति सयल दल भज्जहु, धीर नाम त दिन लहीं।
वास न पसाव हय गय, त न्नि माहि जीवत गहौं ॥४६॥

दोहा

चलि आवाज ढिल्लिय सहर, गहन धीर कहि साहि।
हमहि सु मिलि सामत हिं कुटिल दृष्टि सुप चाहि ॥४७॥

कवित्त

हसि बुल्यौ[3] चामुण्ड वीर सुनि बात हमारी।
पाति साह दल विषम, तुरिय अगनित्तह भारी ॥४८॥

घर बैठे आपने बोल, तुम्ह वड्डे[4] बोलहु।
मेरु भरन कहि वरय सिंघ, मम कु नर तोलहु।
सुनहु[5] सूर पुडीर कुल, इतौ भूठ न नू कहि।
जिहिं सत्त फेर[6] सती फिरहि, किम सु माहि जीवत गहहि ॥४९॥

हौं पुडीर नरेस होत, जुभार सवर वर।
हौं सुत चहद तनौ, वेलि[8] दल त्रिनिय देवु घर।
मोहि इष्ट वल मत्ति मोहि वरइत वर छज्जित।
मो मम अरु न सूर साहि, दल उप्पर[9] गज्जित।
हौं सु सत्त दाहन दहन, हौं जु तिनहिं तृण वर गनौं[10]।
वर वरन वीर इम उच्चरइ गहा माहि सस्त्रा हनौं ॥५०॥

तक्यो साहि गज्जने धीर, जालधर जत्तह।
अट्ठ महस गप्परी भेष[11], कप्पर करि रत्तह।
छल वल करि आनहु पुडीर[12], रा चद्द कुवारह।
कर कग्गद लिपि दिए भेज, राजेत पवारह।

---

1 BK2 BK3 मे यह समस्त पद छूट गया। 2 BK2 BK3 सह। 3 BK2 BK3 बुलौ। 4 BK3 बड़े। 5 BK2 BK3 सुनहि। 6 BK2 BK3 फेरह। 7 BK3 जुभार। 8 KK3 वेरि। 9 BK1 ऊपर। 10 BK1 गिनौं। 11 BK1 भेद। 12 BK2 BK3 पुडुरी।

तारनि[1] तु ग सा धिर मक्ल, पच मयद टडलि रचिय।
गन गुपित हत्थह[2] धग्गि, सुगति मग जग तिय[3] हमिय ॥४१॥
भगति नैन कहि तत्थ हत्थ, पप्पर[4] जु तुम्ह कहि।
निसा प्रानि इक्क जौं पुज्जि, मूरति तु मन कह।
ठाम[5] ठाम मा सिग फेरि, धरिए धुत्तारह।
गहि योनन म्म पच सिय, सिघह उत्तारह।
लै गए साहि[6] पह धीर कहँ, ऊँचो निमहु न धरिय।
द्वादस[7] दिन द्वादस[8] सक्ल, सार्हि हिंदु इक्क करिय ॥४२॥

दोहा

इमह सुन्यौ ढिल्लिय सहर, गहन धरि कहि साहि।
जइ सुपन विपरीत भौ, बेर वत्थ हत्थह[6] कधाहि ॥४३॥

कवित्त

मै पुच्छे सुरतान अवे[19] तू, चन्दह नंदन।
तुज्झ[11] निरद इमि[1-] कहहि, अप्पु नर वैर निकंदन।
प्रयसान हि मकरै जीव, रावत्त जु सच्चै।
ता छननो निय दोप भरन, जै[13] पत्रिय वच्चै।
तुम जाहु हम[14] बाहरि पिसुन, इतौ मुट्ठ[15] न झपियै।
कहि धीर लज्ज कारन कवन, प्रान रप्पि मति मुक्कियै ॥४४॥
न मै पग्ग समह्यौ, न मै सिंगिनि कर पचिय।
न मै मारियो कोइ पति, लागि रन तन मचिय[17]।
टरचौ हौं न जोगिन्द्र जानि, धीर त्रनु धरचो।
चावहिमि विट्टयौ पु दि[18], पु दिवि मन रह्यौ।
बोल्यौ जु बोलु चहुवान सु, सो इन बोल छुटै हियौ।

---

1 BK3 तारनि। 2 BK1 हत्थ। 3 BK1 यौं। 4 BK2 BK3 कप्पर। 5 BK3 तौम। 6 BK1 साह पहि। 7 BK1 द्वादश। 8 BK1 द्वान्न। 9 BK हत्थ धाहि। 10 BK1 अवत्त। 11 BK3 तुम्म। 12 BK1 इम। 13 BK2 जौ। 14 BK2 BK3 हइ। 15 BB3 इतों उट्ठ। 16 BK1 मवित्ति। 17 BK2 BK3 न हौं मारयो, कोइ पानि लगि तन मचिय। 18 BK2 BK3 श्र दि।

गहि माहि हत्थ अप्पुनु करयौ ताप यउन कारन जियौ ॥५५॥
सुन अप्प सुरितान धीर, चदहि चलि चुक्कै।
जो दुरोग पुंडीर माहि, गोरी क्रिम रुक्कै।
सुदय[1] जुद्ध समाम सूर, सानह मनु धीरहि[2]।
जुरे जुद्ध जेठ हक, हकारिय वीरह[3]।
हिंसार कोट चदह तनौ, धीर नाम तद्दिन लह्यौ[4]।
राजनह काज पुंडीर नृप, च्यारि दिवस बध्यौ रह्यौ ॥५६।
पुनि पुच्छै सुरितान[4] धीर, तैं झुट्ठ जु बुन्नौ।
किन साइर थाहयो, मेर किन हत्थहि ठिल्यो।
किहिव सूर समह्यौ, किहिव सपन धन पायो।
कौन सिंध स्यों ससा खेली, जीवत घर आयौ।
सुरितान दीन साहाब स्यौं इतो झूठ न तू कहै।
जह[5] सात वींठ हस्ति जुरहिं, सु साहि क्यों न जीवत गहै। ५७॥
जौ विषहर विष अधिक, गरु डरयौ गरवु न माडै[6]।
जौ गल गज्जै[7] सिंध कोरि, कुंजर वन छडै।
जौ गल धन सघन मिलत पवन परचडनि कुंदै[8]।
जौ पमरै रवि किरन, कुहर फट्टै जग नदै।[9]
जौ चपि राहु चदहि गिलौत, कि ताराइन रप्पनौ।
ज द्दिन सु साहि चहुवान रन, तद्दिन धीर परप्पनौ ॥५८॥
रवि न नैडै अत्थवै[10], चदि नौ नैडै मडै।
कोल करक्कइ[11] दट्ढव सुह, वासुग भर छडै।
पवन[12] थक्कि[13] थिररहइ, अवधि जलनिधि जल टुट्टइ।
मेरु[14] डिगै डगमगै[15], धुव[16] तुट्टै वलि छुट्टै।

1 BK1 सुदया। 2 BK2 समरि धरहि, BK3 सानह सन धरहि। 3 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया। 4 BK2 BK3 लहौ। 4 BK1 सुरतांन। 5 BK2 BK3 जहि। 6 BK2 BK3 मडै। 7 BK3 गवै। 8 BK2 BK8 कुदइ। 9 BK3 वदि। 10 BK3 अथभै। 11 BK1 करक्कै। 12 BK1 वासग। 12 BK1 जवन। 13 BK2 थाक्कि। 14 BK2 BK3 मेर। 15 BK2 BK3 मगे। 16 धूव शुट्टै।

जौ जिय तन सुरतान हि गहौं, तौं न पज्ज पारों रवरि।
जौ धीर बोलि धरनिहि पिसै, तब सैनहर[1] अगह गवरि ॥५६॥

दोहा

पूब पूब सुरितान[2] कहि, पूब धीर मन बुज्झ[3]।
मगि मगि जो मगनो, हौं सु समप्पौं[4] तुज्झ[5]॥६०॥

अनुष्टुप

तावत् भवति दारिद्री[6], यावत साहाव न दृष्ट[7]।
अथवा नष्ट जायते, दरिद्र लोप जायते[8] ॥६१॥

कवित्त

उदिर ताम उज्बरहिं जाम, मस परि न विडालह।
मच्छ ताम तरफरैं, जाम नदी रुध्यौ जालह।
गैवर तह पंगु ठवैं, जाम केहरि नहि गज्जे[9]।
हरि न फाल[10] तह करैं, जाम चित्रक न हि सज्जै[11]।
मेरु ताम गरुयत्त नह, जाम नह पूरग हु करि वढै।
साहन समूह दल सबल, तह जह न धीर पप्पर चढै ॥६२॥
धीर हत्थ दिय पान पान, पुरसान निसानहि।
त्रिनल[12] वास कैलास मेलि, कढा फुरमानहि।
रोइ[13] राइ गप्परिय भेरि, भप्पर भर भारी।
कसकि गहौ कसमीर भीर, भारत्थ सभारी[14]।
जल्लालदीन नदन नवल, करि अवाज उद्दिम कियौ।
पुटीर राइ पच्छै पहर, मिलि मिलान योजन दियौ ॥६३॥
जल जोवन साहावदीन, सुरतान दुरंगे।
करे कूच पर कूच तुरग, तोरिय ही कुरंगे।
जत्थ रत्ति रहि धीर हीर[15], हत साहिनि रप्पै।

---

1 BK1 सिनहर। 2 BK1 सुरतान। 3 BK2 BK3 बुझ। 4 BK2 BK3 समप्पउ। 5 BK2 BK3 तुझ। 6 BK2 BK3 दरिद्री। 7 BK2 BK3 दृष्ट। 8 BK3 जाने। 9 BK3 BK3 गज्जइ। 10 BK3 फल। 11 BK2 BK3 सज्जइ। 12 BK1 त्रिकज्जल। 13 BK2 BK3 रोई। 14 BK2 BK3 में यह समस्त चरण छूट गया। 15 BK2 BK3 ही हत।

वर वेली पु डीर हथ कर पंडे पर्यौ।
खोवान रान प्रथिरान भनि, भगनि गल्ल समह तिज्यौ।
नीरग बसु पु डीर है, परनि नेपि निय मुर लज्यौ ॥६५॥

दोहा

वर मिल्यौ सभरि धनिय नयन नयन जत[1] चाल[2]।
इसहित सूर सावत मव, लज्जि निगहिय माल[3] ॥६ ॥

कवित्त

चोंडराइ जैत सीह, महि सावत अभगो[4]।
षभ फोरिग विय चद[5], गह गम्भरु सु मग।
मुष, नहान नादान वाल, बड्डा बहु लग्गा।
गब्ब गंवार पु डीर साहि, बद्धन चलि[6] भग्गा।
सुरतान जुद्ध अरु स्वामि वर, मुक्ति मरन आरम कह्या।
वर वरत सूर इम उच्चरें, धार ननिनि ग भ,[7] गरयौ ॥६६॥
काल्हि जित्तौ गज्जनौ, काल्हि तुरकानौ डड्यौ।
गौरौ काल्हि गइद काल्हि, सुरतान विहड्यौ।
काल्हि जितौ गौरी साहाब, पर दल विथारयौ।
काल्हि चद की आन काल्हि, जब स्वामि उत्थार्यौ।
सो काल्हि पैज वरदाइ भनि, सभर[8] धनि सचारिहों[9]।
बहुरि[10] हू काल्हि करि हू, कलल जुद्ध जोर वर धरिहौं ॥६७॥
जिनकु जुद्ध जिहि किए, धीर पु डीर बधाए[11]।
ते त्रियन वस्य नहि[12] द्रव्य, वस्य[13] बहु मोह गवाए।
सामि धरम साधन हि, साहि बद्धन बल लग्गा।
सुनि दुनीन[14] गज्जन हि रेण, अद्ध रेन लग्गा।
अरु अहन रक्त कौतुक कलह, रनह सूर सावत हुव।
पु डीर धीर हय पष्परत, सेस महित कपिय भुव ॥६८॥

---

1 BK1 इत, BK3 इत। 2 BK2 चाव। 3 BK2 मार। 4 BK3 अभगौ। 5 BK3 दु चद। 6 BK2 BK3 चले। 7 BK3 गभइ। 8 BK1 समरि। 9 BK2 सवारि। 10 BK2 BK3 बहुरि—धीर" तक पाठ छूट गया। 11 BK3 बधौवाए। 12 BK1 न। 13 BK2 वश्य। 14 BK1 दुवीन।

भुजंगी छंद

पट्ट दूनति माहि सजे सुरतान[1]। तहं छत्र मुजक्कर नजीर निसान।
गन टालति[2] माल बहु दिसि फेरि। बज्जो सदन मद्दन रन भेरि ॥६६॥
जल कुम्भ रती जह मेलल कठि। जह लम्प करी धर पाइर[3] गठि।
हथनारि सुयारि अराज उतग। उडि रेन रही दल पूरि सिपग ॥७०॥
फिरि फौज पुंडीर परलिंग निपग। रवि जानि ज्यों जवि बद्दल मज।
कल कौतिग कूह कुलाहल वीर। सुरतान धराधर भिज्झि पुंडीर ॥७१॥

छंद भुजंगी

टुबे सेन लग्गे अमुक्के विवान। रथं जानि रूढ मनौ सेत यान।
दुहु हत्थ गुल्ले हलक्के सुवत्थ। कहि[4] दन दवानि जो सभि हत्थे ॥७२॥
महाचंद पुत्त सुवार महीनं। कहे नैन बोंनं नं आनं सुहान।
भंटो साहि वैरप्प दीधु सुगामा। हमे सत्थ सानत पुंडीर मान ॥७३॥
इते उत्त मझ्यो[5] जु पभ प्रमान। लियो साह लाना जु हेमं समान।
उतै[6] मटली मेच्छ जोर सु माज। इते हिन्दु हीनै प्रथीराज काज ॥७४॥
कहै सन्न भामल सूर लहान। अप्पनै मान कनवज्ज थान।
दिये चारि[7] नेम जु पुंडीर राज। गह्यो अप्पु पतिसाह धीर सुसाज ॥७५॥
तिनै अप्प लानौर लुही ममाह। रहै सभरेरी सपति साह माह।
॥७६॥

छंद भुजंगी

मिले मटली फौज[8] हिन्दू तुरक्की। मुरै मुक्क[9] नाही सुधारै मुरक्की।
हवौ हक्क[10] वज्जी विरज्जी सु गज्जी। कदिक्का भनक्कै किनक्कै सुतज्जी॥७७
उठे श्रोण छिछ्छी ठगो लग्गी निदू। रहै दार अग्गे मनौं दार तिदु।
पुलै टोप लोलति बोलर्षि सूर। गहै चौंर तोर मरोरति[11] मूर ॥७८॥
भिए सद्दिने जाउं मुक्के उताही[12]। रह्यौ हानि तु बानि वल्ले बलाही।
परयो धाइ पुंडीर तेजी पटाटी। जिनै बाल पुच्चै मुपे मुच्छ डाढी ॥७९॥

---

1 BK2 BK3 सुरितान। 2 BK2 BK3 टालिति। 3 BK2 BK3 पाइक्क।
4 BK1 कहे। 5 BK2 BK3 मझ्यो। 6 BK3 उति। 7 BK2 BK3 प्यारि।
8 BK2 BK3 फोज। 9 BK2 BK3 "मुक्क नाही सुधारै" दो बार लिखा है।
10 BK2 हक्कौ। 11 BK2 मरोर मरोर। 12 BK2 उनाही।

कहै चद वत्त विरद पुमान। करै अट्ठ चारि कारि एक थान।
उनै हस्ति ठेल्यो इनै मोह दीनौ। भये चारि जादौं भये दिट्ठि दूनौ ॥८०॥

कवित्त

गुडलि लग्गि गय गणि साहि, समुहि[1] गज ढिल्यौ ॥
धरनी धीर पुडीर साहि, ममुष असु मिल्यौ[2]।
भिरे[3] साग सू साग, नेन नेजानि फररक्के।
ढाल ढाल ढहढहै, गदे मुद्धनि फररक्के।
इम दुदुभि वाजत इमन, घन हुडु मेल हम्मीर लिय।
हय कध डारि अरु उसरचौ, पैज पुडीर प्रमान किय ॥८१॥

छद भुजगी

गह्यौ साहि हत्थ जु पुडीर रान। कहै सार सावत पैज प्रमान।
हन्यो[4] इक्क गजराज कोट समान[5]। कहै देव देवा जु भारथ पुरान ॥८२॥
कहै[6] चद बत्तो रद वार दान। कहै चद सूरज्ज कित्ता वषान।
वेद प्रजाद समुद सुपान। सुनै[7] सोर केन[8] जु नप्प बहान ॥८३॥
अस्वनी कुमार[9] वास वहान। पथ्य पडा जि जाध रचान[10]।
कहै चद कित्ती जु वेली वषानं। रहै मल्ल मेल सुरत्तान सग ॥८४॥
जैत चामुण्ड हामे अभग। धीर पुडीर पैच पुरान।
कियौ षड हत्थ रुधिर द्वार वान। हम समान जु सीह पलान ॥८ ॥
दुहु दास अकी जु कोठ पठान। तिनै लुट्टि लाहोर आयौ समान।
किय स्वामि कान जु पिंज प्रमाण। ॥८६॥

---

1 BK2 BK3 समुह। 2 BK2 में निम्न लिखित पाठ अधिक है, और प्रक्षिप्त है— इसन हुड किय दूक, संड टुट्टिय सु प्राहल।
परत भूमि सुरतान षांन, कियो कोलाहल।
झकझोरि मोरि उद्धरि उधर गहि हमेल हम्मीर लिय।

3 BK 2 BK3 में चारों पद छूट गये। केवल BK3 में "इमन—हुडु मेल हम्मीर लिय" पाठ है। 4 BK2 BK3 हन्यो। 5 BK2 BK3 सामानं। 6 BK2 BK3 कहीं चंद वत्त रदानं। 7 BK1 सुनौ। 8 BK2 केलं। 9 BK1 कुमर 10 BK1 रवान। 11 BK2 BK3 धार।

कवित्त

नव सै दस सिल्लार पास, अठ दह म्मीरह।
असी लष्ष साहन समूह, षहु पष्षे वर षीरह।
वेद लष्ष तरवारि सषह, नेजा षमरतह।
अट्ठ लष्ष घोर धार मेघ, जिम्मि सर वरषतह।
पुंडीर राइ काल सरिस, भुव भुवग चित्तह धरिय।
षीरग वस पुंडीरह इ, साहि गह्यौ सस्त्रो ह^यौ ॥८७॥

दोहा

गहिव साहि गौ धीर घर, गौषनि मुलितान।
जित्ति राइ सह उत रहिय, जै लुट्टै सहु जानि ॥८८॥
वरष वासवे जल कह्यौ, धीर निहोरौ ताहि[1]।
कलु[2] अप कर कर गहि, तवहि धीर गह्यौ पतिसाह ॥८९॥
गुरु ना गयौ[3] गोरी घरह परयौ न देगत प्रान।
उक्ति चित प्रथिराज भइ[4], धीर गह्यौ[5] सुरितान ॥९०॥

कवित्त

सुंडा डंड[6] पयड मुंड, पडनौ परक्यौ।
सिल्लारा[7] सुर ससुर बिज्ज[8], उज्जल उफनक्यौ[9]।
गहि गोरी गंजियो[10], गहिव भुव वल उप्पारयौ।
राइ सर[11] सरायह तुहिव, रुधिरा पप्पारयौ।
फगरौ फनप्पि भन्यौ हस्रो, है वर टट्टर[12] अभय हुव।
सो असि वर सज्जहिं बिज्जए, धीर[13] लज्ज दिज्जै न तुव ॥९१॥

छंद मोदक

[गुरु पच दह मत्त पयौ। भिय नाग हन्यौ हरि वाहन यौ।
इति छंद विछंद विलास लहै, तिनि मोदक छंदह छंदु कहै॥]

---

1 BK2 साहि। 2 BK2 यह समस्त पद छूट गया, BK3 यहां त्रोटक है। 3 BK1 गय। 4 BK1 भै। 5 BK2 BK3 गह्यौड। 6 BK3 डुंडु। 7 BK2 BK3 यह समस्त पद दो बार लिखा है। 8 BK2 बिज्जै BK3 बिज्जड। 9 BK3 उसनव भउ। 10 BK2 BK3 गजयो। 11 BK2 BK3 सरिस रायह। 12 BK1 ट्टर। 13 BK1 धीरज्जां।

न्य र्ग निमा ग्नि तु्ङ र्मै। चुर चरित्र निमै भमि चित्त, भर्मै।
नरि मातल मयन वारि नयो। विग्गा नन रनर हारि नयौ ॥६२॥
घनसार मृगम्मद पान स्त्रिय। द्रित भनित लज्जित लोचनय।
तन रुपत नपत मोचनय। नर यु दल मदल परा नव।
कच ध्रध्र पन्ना निचि[1] निज्जु भने। कुसुमावलि छुट्टि लचग वग।
गत्ति निग्रुन्ति पति चग। श्रम बुदनि गुत्ति मर्र उरा ॥६३॥
गलति जन गम[2] मिव स्मरन[3]। कटि मदल घट्ट रवत्ति रवै।
तुर मत्त मसार अमृत[4] श्रवे। रति रञ्जन श्रमान तग्ग भगी ॥६४॥
द्रिमयत रिता रत यान करा। गुरु गुरुत चार रनद।
लहु वरन विच निय दून। निच हिरे पय रस चद ॥६५॥

छद मोटक

रति सिसिर मर्दर मोर। परिपक्क पवन झकोर।
नन त्रिगुण तूल[5] हमोर। घन अगर गर निचोर ॥६६॥
भुग मीन चिनन भोर। लय अमलनि खू कनोर।
रस मधुर मिश्रित चोर। रति रमत[6] रस नित चोर ॥६७॥
रल रलम निच कलार। वय श्याम गुण अति गोर।
पर स्मि दम्म महार। अनलाक लोचन[7] चार ॥६८॥
सुप टठात मुक्ति मराट।
इति सिसिर[8] नृप निलर्सत। रितुराय[9] अंद्र नमत ॥६९॥

[सगना निरि च्यारि परत गुर। मोर त्रोरक छन्द प्रमान घर।
पय मत्त चय नर ते नरन। निय नाग वदै वयु[10] पुनय नरा ॥१००॥]

छन्द पद्धडी

पवन भगति मीत सुगव सु मन्द। लंगट भमरा तन मन अनद।
जागि नगिर मनानि लता भइ नार। मनि कनिय[11] कठीय कठ मगार ॥१०१

---

1 BK2 निच। 2 BK2 BK3 गलतो गम। 3 BK2 BK3 स्मरिन।
4 BK2 BK3 अमीत। 5 BK3 तूल। 6 BK2 रमन। 7 BK2 BK3 लोकन।
8 BK1 सिसर। 9 BK1 रा। 10 BK2 वपु नाय धरम, BK3 वपु नायय।
11 BK2 BK3 कनि।

सुहु सुहु काम सु धाम धमारि। जे जप्पिय[1] पच प्रगट्ट मचारि।
सुफलित्त मलित्त हलित्त घन। नव नक्करि चंद रिसम्य सुन ॥१०२॥
पृथ पृथु पिम्म उभ सुप लग्गि। सु दार विरत्थ[2] मनोरथ मग्गि।
उदे नलिनी अलिनी रद मक्क। मधु व्रत मद्धि[3] बसो जिमि सक्क[4] ॥१०३॥
रह्यौ गहि सपट चपट नारि। सुपिंग पराग हरै उनहारि।
रस द्रुम घु टि गुलल्ल पृयान। घरि घटि लागि पियो अलि और ॥१०४॥
मधु रस्स मिश्रित पट्टर दार। धजै रव रंग उपंग समार।
मविच्चि सुविच्चम कु कुम[5] पाज। पिनै पुन पीनि[6] अहो पगराज ॥१०५
ति चपक चारु मन मधु बिंदु। दरस्सन देव कि ।
सग घनि अंग सुपग पराग। लुटै लगि कुठक कोइ अभाग ॥१०६॥
बल व्रत बेलि बिलंबहि बेलि। करै दिन कक करान्नय[7] केलि।
लरक्कि अलगित बगियै हार। गनो न कुसुम्म सुगध अपार ॥१०७॥
मह्यो[8] न वियोग भले सिर गात। तज्यौ[9] तन रत दसत प्रभात।
अब स्मर प्रीति न मुक्कहि प्राण। हमहि[10] तिनै वयन सुनान ॥१०८॥

साटक

श्यामग वल धूत पूत मिसिर[11], मधुरे हि मधु वेष्टिता।
वाता मीत सुगंध मंद सरसा, आलोल मा वेष्टिता।
कंठी कूल कुलाहले यरलया, कामस्य उद्दीपनो।
एते ते दिवसा पतति[12] सरसा[13], सजोगता भोगाइने ॥१०९॥
दीहा दीर्घ सु सु दरोय अनिला, आनत्त मित्रा[14] कर।
रेनं सेन दिमेन थान मलिना, गो मग्ग आडंबर।
तीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरुण्या मत।
मलया चदन चद नद किरणै, ग्रीष्मे च आयेचन ॥११०॥

---

[1] BK2 BK3 देहु पिय। 2 BK1 विरत्थ, BK3 विरथा। 3 BK3 मद्धे। 4 BK3 सक। 5 BK2 BK2 BK3 कुमकुम। 6 BK2, 3 पिहि। 7 BK2 BK3 करनिय। 8 BK2 BK3 सहो। 9 BK2 BK3 तजौ। 10 BK2 BK3 हसही। 11 BK1 मिपरे। 12 BK3 वपति। 13 BK2 BK3 सरिसा। 14 BK1 मित्ताकर।

आले बद्दल मद मत्त दिमयो[1], दामिय दामायते।
सिंगाराय वसुधरा मुललिता, सलिता समुद्राइते। ।
जामिया सम वासरे विसरिता, प्रावृट सुपरयामिते।
पप्पीहानि सुनन्ति मद सुरया, विरहन्नि तीरायते[2] ॥१११॥
पित्रे पुत्त सनेह गेह भुगता, भोगादि दिव्या दिने।
राजा छत्र निशा ज रान छितया, निंदा चला भाविती।
कुसुमे कावीग चद निमल कला, दीपन्न[3] वरदाइती।
मा मुक्के पिय चाल नाल समया, सरदाय दरदायते[4] ॥११२॥
छीन श्वास वासर दिग्घ निसया, सीतेन जीन वने।
सज्जा सज्जर वास जूह तनया, आनग आनगने।
बाला तनु निवृत्ति पत्ति नलिनी, दीनान जीव छिने।
सम्राते हिमवत मत्त गवने, प्रमदानि आलवने ॥११३॥
रोगाली घन नील भूधर वर, गिरिउ गुना रायते।
यवया पीनकु वानि जानि शिथिला, कु कार झकारया।
शिशिरे सर्वरि वारिणेय विरहा, मावृष्ट विद्दारया।
माम्राते मृग[5] बद्ध सिंघ रवने[6], किं देव उच्छारये ॥११४॥

दोहा

भर अनग अथिय[7] महिल, रति बट्टिय घटि सार।
विपरित दिन ढिल्लिय सहर, नृपति अलुझिय मार ॥११५॥

इति श्री कविचद विरचिते पृथ्वीराज रासे कनवज्जत ढिल्यां पुनरागमन सामत धीर पुडीर हस्ते गोरि सहाबदीन निग्रह षट रितु श्रृंगार वर्णन नाम त्रयोदश षड ॥१३॥

---

1 BK2 दिसया। 2 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 3 BK2 दीपान, BK3 दीपन। 4 BK2 वरदायतो। 5 BK3 मग। 6 BK2 रावने। 7 BK2 अप्थिय, BK3 अच्छिय।

चतुर्दश खंड

वार्ता

तिन दिननि[1] तैं एक हि दिवसु[2] सुरितान था राम करि, आनि परे हुवे। तत्तार पा पूछया—बहुत रोज भये कछु ढिल्लिय तैं-षबरि न आई, तब तत्तार पान बोल्या—पातिसाहि सलामति पैर षूब है, सिरजनहार करै तौ जिहिं हिंदू पातिसाह[3] सू बे आदबी करी दैहै तिस हिंदू के टूक टूक करेंगे। भी एक बेर दूत भेजिए[4]।

अनुष्टुप

चिर तपो फल राजा, चिर राज प्रभो[5] फल।
चिर[6] नाम घने दाता, चिर दूतस्य लक्षण ॥१॥

कवित्त

तब सुसाहि गज्जनै दूत, ढिल्लीय पठाये।
जु कछु मन कौ मत तत, कहि कहि समुझाए।
लैं आवु जगल नरेस, सब षबरि सबुद्धिय।
राज काज चहुआंन सकल, सामतह सुद्धिय।
लियौ साहि फुरमान सेम, सो भी तिन किन्नौ[7]।
उभय पष्ष क्रम पथक[8] गरु, काइब कर[9] दिन्नौ ॥२॥

गाथा

वर वर वैत्तति सिद्ध लिद्ध, चहुवान राजधानीय।
सह दूत पथान गोरीय जत्थ जानाति ॥३॥

वार्ता

धम्म[10] न काइ थपै, षबरि पाइ, तबहिं दूत गज्जने कू धाए।

---

1 BK1 दिन। BK2 दिवस। 3 BK2 BK3 पातिसाहि सौं। 4 BK2 भेजायै। 5 BK2 BK3 प्रभु। 6 BK2 चिरे। 7 BK3 कन्नौ। 8 BK1 पथर। 9 कार। 10 BK1 धर्म्म।

केतेक रोजनि मै दरवारि जाइ परे हुवै। पातिसाह पैरीद पैरीद।

गाथा

पैरीद सुलतान दुसमन, दैवान महल त्थाय।
भर सह रत्त विरत्ता, आयात गोरिय दोइ[1] ॥४॥

वार्ता

मार्वतनि मन भरै। चौंडराव वैरथौ। भोरे राइ जैत सी पासि भेद रा बुझया। पुडोरौ लाहौर लुट्यौ। भोवा दुनिया म की। माल देव भोति जु की देवरा दीवानि[2] छोड्या। जादवा वीर उछ्याह, जाति शु दाइ पेल आ समर दाम मेल।

दोहा

वर वर वत्तनि सव्व सुनि, झुकि किय घोष निमान।
मत्त सहस कग्गर कहा, पहु फुट्टत फुरमान ॥६॥

वार्ता

ते वेहा फुरमान पढै जिमी सुविहान सुरतान जल्लालदीन जाया, सुरतान महाब दीन पेस पर पेस सिताबी। दुसमन जोरवान हत्थै सितान वर परवर, उनकै तोबा[3] करि दइ, इनके कहा है।

दोहा

चढि अचान ढिल्लीय सहर, बढ्यौ साहि सुरितान।
घर अगन अगन तुरिग, सुनत सूर अकुलान ॥७॥

मुडिल्ल

सकल लोइ पच्छन गुरु इच्छहि।
गुरु घट मास राज अन दिप्पहि।
यह प्रनानि[4] परपच उपायौ।
तव गुरु पुच्छन चदहि आयौ ॥८॥

---

1 BK3 दाइ। 2 BK3 दिवानि। 3 BK3 तौ। 4 BK2 BK3 प्रनानै।

दोहा

आदर चद अनत किय, गृ॰ आवत गुर रान।
मम सुत[1] मन्त्रियणि चरण परि, सिर फेरिग सब साज ॥६॥

मुडिल्ल

तब गुरु राज राज ऱवि बुझ्यो। तू वरदाइ तिहुँ पुर सुझ्यौं।
जिहिं अह[3] निमि सेवत[4] गुर वानी। तिहिं पट मास मिले विन जानी ॥१०॥

दोहा

हस्यो[5] चदवर विप्र स्यों, तुम जानहु बहु भाति।
जिहिं कामिनि कलह क्रियो[6], सो जामिनि विलसति ॥११॥

अडिल्ल

कहिय चद वर विप्रन मानिय। रहि रहि कवि मोइ[7] बात न जानिय।
धनु त्रिय मरन त्रिनचर मानिय। सु किमि देव त्रिय वसि करि जानिय ॥१२॥

मुडिल्ल

तुम मम ऱष्ट्रि[8] अरिष्टनि[9] दिष्यो। असिय लष्प दल गहि गहि भष्यौ।
प्रान समान परत दन छोह्यौ। मरन छाडि महिला मुष मोह्यौ ॥१३॥

अडिल्ल

जिहि महिला महिला[10] विसराई। अरु गुरु देव सेव सुनि साई।
विभौं भुम्मि भ्रत जाइ सुजाई। सुनि सुनि समौ राज गुरु राई ॥१४॥

दोहा

ममौ जानि गुरुराज कहि, कहि कहि कवि इह बत्त।
किम वय किम रूपह ग बनि, किम राजन रस रत्त ॥१५॥
जोबन तन मडन समै, सिसु मडन तन बोल।

---

1 BK1 सत। 2 BK2 BK3 सुकुड। 3 BK1 अहि। 4 BK2 BK3 सेवते। 5 BK2 BK3 हस्यउ। 6 BK2 BK3 क्रियउ। 7 BK1 होइ 8 BK1 BK2 दृष्ट। 9 BK2 अ न। 10 BK2 माहिला।

बालप्पन सहि विच्छुरत[1], निर्हि चित चचल लोल ॥१६॥

गाथा

जजोई मजोई जोईत, सिद्ध जन मानि ।
न जोई सजोई जोईत, सिद्ध जन मानि ॥१७॥

छद [अडिल्ल]

सजोगि जोबन जमन। सुनि श्रवण दे गुरु रानन।
तल चरण अरुणि ति श्रद्ध न। जनु श्रीय श्रीपट" लद्धन ॥१८॥
नप कु द मल्लिमु वेसन। प्रतिबिंब श्रोन सुदसन।
गय हस मग्ग उत्थप्पन। नग हेम हीर जु थप्पन ॥१९॥
कसि कासमार सुरगन। विपरीति रभति जघन[3]।
रसनेव रज नितबिनो। कुसुमप एप बिलबिनी ॥२०॥
उर भार भद्धि विभजन। दियय उरोज जु थभन।
कुच कज परमत जगली। मुष मोप[4] दोप कलक्कली ॥२१॥
हिय अइन मइन ति मैनयो[5]। तजि गृहन निय तह रजयो[6]।
जन हीन भीन ति कचुकी। भुज श्रोट जोट ति पचुकी ॥२२॥
नलि[7] नाभि नाभि[8] ति अत्थयौ[9]। ननु कु ड कु न्न सचयौ।
कल ग्रीव रेख त्रिबल्लियौ। ननु पचजन्य सुधा लियौ ॥२३॥
अधरे पयक्क सु बिंबन। सुक मारि आरिन पटन।
दमनेव सुक्ति सु नदन। प्रतिवास तुरन्ति बदन ॥२४॥
मघु मधुरया मधु सद्दया[10]। कलयट्ठ काकल बद्दया।
हुव भवन जीवन नासिका। निसु[11] अजनी प्रिय नासिका ॥२५॥
झलमलत श्रवन तटकता। रथ अग अर्क विलबिता।
भ्रुव इच्छ इच्छहि वक्रसी। जनु व्याप व्यावन सफसी ॥२६॥

---

1 BK1 विच्छुरत। 2 BK1 सापड। 3 BK2 BK3 जभ घन। 4 BK2 BK3 मौष। 5 BK2 BK3 मइनउ। 6 BK2 BK3 रजयो। 7 BK1 नल। 8 BK1 नामित। 9 BK2 BK3 अत्थयउ। 10 BK1 मधु मधुर याम मधु सद्दया। 11 BK2 BK3 नेमु।

सित अमित रत रत्न पगय[1]। अभिसरत पजन वत्थय।
भ्रुव[2] वरुनि भूय वरन्नन[3]। नव निरसि अलि सुत अगन[4] ॥२७॥
सुत इदु मृग मद विंदुजा। चप इदु निंदइ मिधुजा।
कच वक्र चकित कु तल। तन उप्पमा नहि भूतल ॥२८॥
मणि वृन्द पुहप ति दीसयो। कनु कन्द कालीय सीसयो।
त्रिमरावलि वलि रेनिय[5]। अवलवि[6] अलिकुल सेनिय ॥२९॥
चित चित चितति अवर। रनि जानि सबर।
॥३०॥

दोहा

सम रस मडन समर गृह, समर सुर प्पुर भोग।
सम रस जित्तिय पग, नृप त बल्लह सजोग ॥३१॥
मानि राजगुरु राज रम, तै कवि वरनी मत्ति[7]।
जस भावी नर भुग्गवे[8], तस विध अप्पे मत्ति ॥३२॥
उभै उभै रस उप्पनै[9], मिले चद गुरु राज।
कै विय वहि अवनिहि मिलै, किनै न[10] निरप्पहि राज ॥३३॥

रासा

मिले चद गुरु राज, विराजहिं गज ,दर।
तह पगान प्रमान कियो, पृथ्वीराज कर।
तहां अवज[11] वर वास, विलासहि सु दरिय।
भूत विन[12] नृप दरबार जु, नग विनु सु दरिय ॥३४॥

---

1 BK2 BK3 अपगय। 2 BK1 भुव। 3 BK1 वरनन। 4 BK1 अनग। 5 BK1 वनय। 6 BK2 BK3 अवलनि। 7 BK3 'सत्ति' शब्द के पश्चात् "समरस जित्तिय पग, नृप तब" पद्यांश की आवृत्ति है। 8 BK1 भुग्गवे। 9 BK2 BK3 उप्पजो। 10 BK2 BK3 नि। 11 BK2 BK3 अप्पु। 12 BK1 न।

दोहा

जपि कह्यौ कविराज गुर, भपि कपट निवारि।
कोइ गुह्रै नरेस सौं, दिमि गज्जनै पुकार ॥३५॥

रासा

कुटिल भौंह बपु सोहति, मोहन दास दस।
कछु हसि कछु पै लगि, पयपै[1] अलि रस।
तुम मर वगि सु कवि राज[2], गुरु राज सम।
तुम तन सुमन निरष्पि गए, पत्ति पाप हम ॥३६॥

दोहा

आसन दिय अनुचरन[3] परि, कच झारि तन रेन।
सुभहिं सिंगारहि सु दरिय, आदर आभर नैन ॥३७॥
आदर अति दिन्नौ तनहि, आइस मग्यौ[4] दासि।
कहु पयपहि नृपति सों, कहहु चद गुरु भाषि ॥३८॥
कग्गरु[5] अप्पौ दासि कर, मुप जपी यह वत्त।
गोरीय रत्तो तुव धरनि, तू गोरी अनुरत्त ॥३९॥
दासि सपत्तिय तिहि महल जहा सजोगि नरिंद।
मम मुप सपिन निरष्पियौ[6], मनहु पृथ्वीपति इद ॥४०॥
अना मण्ल दासि निरषि, परषिय जपन जोग।
उन्नत मुप रुप रान किय, नृपति समत्तउ[7] लोग ॥४१॥
इय कहि दामिय अप्पि कर, लिपि जु दियौ कवि चद।
पहिली आवली बचियौ, रे भइ जाइ नरिंद ॥४२॥

कागर वाच्यउ । कवित्त

गज्जनेस आइस असभ, सब सैन सकिल्लिय।
दह चादरि[9] आदरिय आनि, ढिल्लिय तन मिल्लिग।

---

1 BK2 BK3 पयपइ। 2 BK3 "राज गुरु" शब्द छूट गये। 3 BK1 अनुचरनि पर। 4 BK3 मग्यो। 5 BK2 BK3 कग्गर अप्पउ। 6 BK2 BK3 निरषियो। 7 BK1 समत्तो। 8 BK1 मुहँ। 9 BK1 चादर।

दस हजार वारुनि विमाल दस लष्य[1] तुरगम।
तह अनेक भर सुहर भीर, गभीर अभगम।
आवर्त्त बान चहुवान सुनि, प्रान रष्यि आरम्भ करि।
मावतन हि मावत करि, जिनि घोरहि ढिल्लिय[2] सु परि ॥४३॥

दोहा

सुनि कग्गद सुनो सु कर, घर रष्यै गुर भट्ट।
तमकि तून मिंगिनि सुकर, जिमि बद्ल्यौ रस नट्ट ॥४४॥
सु प्रिय प्रिय दिप्पौ[3] वदत, किय जिय निर्भय माथ,
बहु पूज्यो वयन तुद कहि, समि घोरति रतिनाथ ॥४५॥

कवित्त

कहै सु प्रिय कामिनी कत, धन धर्यौ तो न धन।
सप कुमार आरुह्यो सार, ममार मरन मन[4]।
दिन दिनियर दिन चद रैनि, दिनियर दिन आवै।
अन जत यह वरन श्रवन[5], लग्गिवि समझावै।
अरधग धार अरधग हम, अरि अर धर अरधा[6] करि।
जस हम हस जम हमिनी, सर सुम्भै पकजन परि[7] ॥४६॥

कवित्त

अजन सुपन सु न्दरिय रभ, लग्गिय परिरम्भह[8]।
तह तु वत्तीय सुकीय तेज, अच्छरि रवि गतह[9]।
तिनि तुम मिलि झगञ्चउ, गहै कर वर वर जपै।
तह अदिष्ट अरिष्ट द्रिष्ठि, दानव तन चपै।

---

1 BK2 BK3 लरक। 2 BK2 घोरहि। 3 BK3 दिप्पो। 4 BK3 मना।
5 BK1 श्रवण। 6 BK2 BK3 अरग। 7 BK1 'पर, BK2 BK3 में यह निम्नलिखित दोहा अधिक है—

कहि राजा सजोगि सुनि, सुपनइ कत्थ अकत्थ।
श्रवनि मडि कनवज्जिनि, रसा सुपननर तत्थ॥

8 BK1 परिरभय। 9 BK2 गभइ।

तह इन्न तन्न[1] नन अच्छरिय, हर हर सु उपज्यौ ।
जान्यौ न देव दैवान गति, कहि न्निमान विहि निर्मयौ ॥४७॥

सो सुपनवर मुनिव राजगुरु[2], अनु कवि बुल्ल्यो[3] ।
सो सुपनवर सुनिव तेन[4], सुप तिनं प्रति पुल्यौ[5] ।
मनर हत्थ मनमत्थ अभय, पत्तर पठि दिन्नौ ।
दस दिन ते तह मिलिय गुनी, गुन अरथह भिन्नौ ।
दिय[6] वलि दिसान दस महिप, अह ति मत अनतक दान दिय ।
तिहि[7] दिवस देव पृथिराज कर सफ सुहर भर महल दिय ॥४८॥

दोहा

करि महलु मति मडि छडि, चावड राइ नर दद ।
वागरी देव राउ दरस्यौ, नृपति सुमन भा आनद ॥४९॥
आनदे भृत भर सुहर, दीन दुलह नृप काज ।
वध मध्यो बहुरि साह, गहह तिहिं राज ॥५०॥

कवित

चहुवाना वर वस बाल, वेदी जग जुत्ता ।
तारा जन वृत कज्ज सेति, सावत उप्पत्ता ।
पच सूर एकग्ग जत्थ, कच्छह कुल जाए ।
दीयँ[8] कर्म्म कर जोग भोग, जुग्गिनि पुर जाए ।
ता अनुज राज भगिनी पृथा, वर समेलि रावल समर ।
सग पनह प्रीति वासर सु दश, निगम बोध उत्तरिय धर ॥५१॥

वास मदन सावत राज, सजोगि सपन्ने ।
हय हत्थी सिंगार हेम, नगमुत्ति सु दिन्ने ॥

---

1 BK1 वहह ततनन, BK3 तह न ततनन । 2 BK2 BK3 राज । 3 BK2 BK3 बुल्यउ । 4 BK2 BK3 तेनि । 5 BK2 BK3 पुल्यउ । 6 BK2 यह समस्त पद छूट गया । 7 BK1 तन । 8 BK2 BK3 दय ।

पृथा क्त घर जाहु हमहिं, गोरी[1] घरि लग्गी।
कि जानै[2] किउ[3] होइ काह, सउनी काह[4] भग्गी।
मभर हु जाइ सभरि धरा, उर सभरि अवधारचौ।
सब जेत रीति जामन[5] मरण, समर राइ विच्चारियौ ॥५२॥
चव चदानी[6] आयास वाम, भृकुटी रुद्रानी।
है नाना घर सूर कुवर, अश्विन[7] नीसानी।
जीह स्वाद जल वरन करन, मडल पवनालय[8]।
बाहु इद्र आसरिय ब्रह्म, इद्रिय दासालय।
सब देव विष्णु आग्या रमै, प्रानह आनदित फिरै[9]।
चित्रग राउल बल[10] पाहुनौ[11], सवन[12] आम भग्गह भिरै ॥५३॥
पाहुना पर दीप काज पर, जै काइ जुम्यौ।
चहुवाना कुल पुज्ज[13] देन, द्विजवर किमि[14] सुम्यौ।
तुम पुट्टइ[15] गिरि जंग[16], दुर्ग दारन गभीरा।
गुज्जर वै माल नीत्म[17], भज्जौ हम्मीरा।
फल फूल पत्र अम्बर सुवर, मुकुट बध चामर सुरस[18]।
सावत सूर जोरा धरा, इक्कमे दिन मनहु वरस ॥५४॥
मोम[19] जागी दाल माल, कमला रुद्रानी।
मोगान[20] मुप मिलिय ब्रह्म, मोगर सिद्धानी।
सिंगी रा अवधूत जोग, बद्धचौ जुद्धानी।

---

1 BK2 गोरिय। 2 BK2 BK3 जान। 3 BK2 BK3 किं। 4 BK2 BK3 का। 5 BK2 BK3 जमन मरन। 6 BK2 BK3 चदानो। 7 BK1 अश्वनि। 8 BK3 पवना मय। 9 BK2 BK3 आनदितो फिरे। 10 BK2 बनै। 11 BK2 पाहुनौ। 12 BK2 BK3 'सवन आस' पद्यांश छूट गया। 13 BK2 पुज्य। 14 BK1 किम। 15 BK1 पुट्टै। 16 BK2 BK1 जुंग। 17 BK2 BK1 हाम। 18 BK2 BK3 सरस। 19 BK2 म। 20 BK3 मेगान।

आहुट्टा मम्झामि स्वामि, कहि जौ सुरतानी।
सामत मत केतो[1] कहौं, तैं घर नर गोरी बहन।
कालक राइ कप्पन विरद, महन रभ बाहो करन ॥५५॥
महन रभि आरम्भि[2] राज, रावल रा रिंदु।
सत्त मत्त वर वत्त जमन, जुगिगनि ग्रह निंद।
चाहुवान कूरम्भ गौड़, गाना बड गुज्जर।
नहौ रा रघुवस पार, पुट्टौ[4] रति पप्पर।
राठौड पवार मुरस्थली, प्रद्य चाल जगल भरा।
चावड राइ जहाँ[5] नृपति, मौ कि वार सभरि धरा ॥५६॥

दोहा

पगी पाग सुरग जग, सामता सति भाय।
जुद्ध निबधौ साहसी, छड्यौ चामु ड[6] राय ॥५७॥
छड्यौ जाइ चावड कहु, जुगिगनि पुरह नरेस।
घर रप्पन जै तोहि नृपति, करि आदर नरेसु ॥५८॥

कवित्त

जिहि बभन उच्छाहि ठेलि, ठट्टी पच्चारिय।
जिहिं मोगर मेवात मारि, मोहल[7] उच्चारिय।
जिहिं केहरि कट्टेरि तारि, कढ्यौ तत्तारे।
ते राया रघुवस आइ, सम्भरि सम्भारे।
इदपत्थ[8] सु पत्थे कारणौं, चाहर बीर विचारिया।
जावार बीर कट्टन नृपति, रान गौरि पधारिया ॥५९॥

दोहा

इकु सुरितान अवाज सुनि, विय राजन घर आइ।
देइ अनद वधाइया, है घर चावड राइ ॥६०॥

---

1 BK[1] BK3 कोती। 2 BK2 BK3 आरभ। 3 BK1 राजा 4 BK2 BK3 पुट्टी। 5 BK2 BK3 जहो नृप। 6 BK1 चावड राइ। 7 BK2 BK3 मोहिल। 8 BK2 BK3—पथ।

गए चद् मावत तह, जह चानड वर वीर।
देप्यौ[1] देव ममान तह, सूर सूर त्तन धीर[2] ॥६१॥

सीला मैंगरि माजु जहि, तै नौ मीर पिवाइ।
सिंघिनी सिंघ जु जाइया[3], है घर दाहर राइ ॥६२॥

वैरी सों पग मम्मुहौं, मो राजन पग लग्गि।
सु ठट्ठा जु सुहाइया[4], जेन[5] उनाही श्रग्गि ॥६३॥

लज्जए[6] श्रीमानीय सघत, श्रापन नैंन दुराइ।
सावता सों यौं कह्यौ, कढौ लोहनीन[7] पाइ ॥६४॥

वेरी कह्यौ[8] चरण तें,[9] नमित कियौ[10] तिहिं मीस।
राजा मनह श्रानन्द किय[11], देन कही वकमीस ॥६५॥

जाहु सबे सावत तहा, जहा नृपति पृथिराज[12]।
ता न्निि मुक्यौ लोह पथ, मौ सौं कछु न काज ॥६६॥

रोजा नाम पु डीर कुल, ते नौ पुत्तीय[13] प्रताप।
सो गनत पग लग्गिया, श्राज हनदे पाप ॥६७॥

डेढ्ढ हजार सुरग घर, हस्ती तेर हजार।
मोती माल सुरग दस, राजन रचि विचार ॥३८॥

चीर पटबर फेरि सिर, बज्जी वज्जन लग्ग।
वर वरदाइ वरद्दिया, बोल सु मग्गन लग्ग ॥३६॥

पवारा पु टीरया, कूरम्मा जहोनि।
गज्जरिया दाहम्मिया[14], घरै कि लग्गो कौनि ॥७०॥

लै[15] रप्पी निज श्रालि करी, बड्डा बड्डम बोली।
जोरन जग्ग सु सद्दही[16], ढिल्लीह दे ढोंल ॥७१॥

---

1 BK3 देप्यो। 2 BK3 मूर सत्त रनधीर। 3 BK जाइया। 4 BK1 सुहाइवा। 5 BK2 BK3 जीनि। 6 BK3 लजए। 7 BK2 लोह तीन। 8 BK2 BK3 कढी। 9 BK2 BK3 चरणाते। 10 BK 2 BK3 कीयो। 11 BK2 BK3 कीय। 12 BK3 पृथिराज। 13 BK2 BK3 पुत्ति। 14 BK3 दाहिम्मिया। 15 BK1 लै रक्की। 16। BK2 सु सद्दाही।

कवित्त

जह जहाँ जामान राज, लग्गौ धूरम्मा।
पीची राइ प्रमग देव, वग्गरी दुरम्मा।
गज्जरा राम दे जेत, साहिब अन्नूरा।
हुइ अवारि हुस्यारि, धीम भग्गौ[1] अव्वूरा।
मुष जीह लोल बोलहु घना, राजन काज वरहिया।
पावै न पीर पजर तन नीम, न पप्पह[2] भट्ट भिया ॥७२॥

दोहा

तनु तरवारिन वटनौ, ह्या वटनौ न देस।
मो स्यौं[3] बोलि न दाहिमा, हौं अप्पानो भेस ॥७३॥
वर वानै बधै सकल, अप्प अप्पनै भाग।
तैं बाधी सूर तौ भई, तौन पर[4] पगी पाग ॥७४॥
जौ मझ्झौ नृप पगह तौ[5], मो किम सज्जौं हत्थ।
नृप अयान पास न तनै, कहै चद कवि सत्थ ॥७५॥

कवित्त

ते जित्यौ गज्जनौ, तू ज अड्डौ[6] हम्मीरा।
तैं जित्यो चालुक्क पहरि, सन्नाह सरीरा।
तैं पहु पग नरिंद इद, गहियौ जिमि राहह।
तैं गोरी दल बह्यौ वार, पटु निमि दाहह।
तुव तु ग नग[7] तुव उच्च मन, त तौ पास न मिल्लियै।
चामड राइ दाहर तनै, तो भुज उप्परि पिल्लियै ॥७६॥

दोहा

छोरि तेग नृप आपि कर, अप्पिय हत्थ सु मूर[8]।
लै चामुड सु बधि द्रिढ[9], तू धर रप्पन नूर[10] ॥७७॥

---

1 BK2 भग्गे बव्वूरा, BK3 भग्गो बव्वूरा। 2 BK2 BK3 पप्पै। 3 BK1 BK3 स्यौं। 4 BK2 पर पंग पगी पाग। 5 BK2 BB3 तै। 6 BK2 अड्डो। 7 BK3 नेग। 8 BK1 BK3 सुर। 9 BK1 द्रढ। 10 BK1 रूर।

तत सामत जु मिर धरी, सुप जपौ यह वैन।
जा सिर पर पृथिराज है, भौ किहि गौरी मैन[1] ॥७८॥
लोक लज्ज गृह लज्ज उर[2], लज्जा करि एक।
लहु लगर कट्टन चरन, लरन हत्थ लइ नक ॥७९॥

छद रसावला

गहे[3] तेग सुव दड, सावत राजी। दियो वाजि राज, मुनक्क म ताजी।
छवी रत्त स्याह, छवी जानि ग्र वू। रच्यौ रुप राका, पक्यौ जानि जवू ॥८०॥
जरी जीन माकत्ति, है हेम हेल। निमा निर्मल कृष्ण ना छत्र भेल।
उच कध कन्न, निय नैन नासी। गनै रध रध सुधा स्याम स्यासी ॥८१॥
नप[4] मडल दड्डि, सुम्म मुढारे। उर पुट्ठि मंम, दुव सै उधारे।
द्रु म ग्रासन वाय, ढारति वाय। छिमा छत्र छाया, तनौ वाजि राय ॥८२॥

दोहा

वाजिराज दिन्नौ थकसि, मिलि मगल गल लग्गि।
घन निसान भेरी सबद, वार जगावन लग्गि ॥८३॥

कवित्त

शिला इक्क पाषान हत्थ, तीमह वन लवी।
द्वादस हस्त चवसट्ठ[6] सट्ठि, अगुल उदरभी।
ता नीचै कदरा तहा, कौ मर निद्दानौ।
ता उपर[7] तिहिं दिवस राज, बज्जै सादानौ।
आघात सुनिय करचट्ट लिय, बज्जे बज्जावन गुरिग।
अचरिज्ज[7] करिग सावत प्रभु, भट्ट सहित पारस फिरिग ॥८४॥
इक्क कहै यह शिला, कहौ काहे ते हल्ली।
इक्क कहै मिलि उठौ, इस इह ते उट्ठै भ्रम पुल्ली।
छह लगर घर घालि, भाव लिनौ[9] उच्छगह।
सुप अनिंद चप निंद, अगि दिप्पो अति रगह।

---

1 BK2 कितौ कि गौरा सैन। 2 BK[1] अर। 3 BK2 BK3 गह। 4 BK1 नपु। 5 BK1 पुग। 6 BK2 BK[3] चवट्ठ। 7 BK3 उपर। 8 BK2 अचिरज्ज। 9 BK1 लिनौ।

प्रारथि चद पुच्छे सु तिरि, कह सु जनमु कम उप्पतिय[1]।
को मातु पितु को नाम तुम, किमि सुथान इह निद स्थिय ॥८४॥

छंद [रसावला]

चरन ति श्याम, मम रम्य[2] काम। नष पिंड भीत, मय भीत मीत।
जुरे जान रत्त, इबी जानि[3] लत्त। कटि नाभि नील, उर सिंभ पील[4] ॥८६॥
वच्छ धर्म रूप, भये जोग भूप। भुजा भीर भूरी, सुर सिंधु[5] सूरी।
सिर मोत नित्त, विराज पवित्त[6]। रजु ताम नैन, जु मा तुम्ह हैन ॥८७॥
हकारति डाक, द्रिग कपि हाक। महावीर वाली दयाधर्म पाली।
वर विप्र जीह, न को लोपि सीह। गय गात गैन[7], बोलि धरनाइ बैन ॥८८॥

कवित्त

दच्छ[8] प्रजापति जग्गि[9], रुद्र निद्रा सति समरि।
तनु तिहि सुक्यौ[10] ज्वलन, जग्गि[11] जन मतरि मजरि।
तब हय हय त्रिभुवन[12] नाग, नर गध्रव गन भरि।
भरि न[13] वाय[14] सुभग्ग सुतो, पुक्कार छंडि रन।
भय भीत भूत बेताल घन, कुवलय[15] कपि कैलास गिरि।
तिह निमल इम लग्गिय नयन, जट सुगिंद्र[16] पिट्ठिय सु फिरि ॥८६॥
जटा जनम तदिनह नाम, सुहि वीर भद्र धरि।
तात श्रग्ग त्रिपुरारि जग्गि, विद्ध स सौ सहरि[17]।
सति जुग्ग सकर्पनी तत्र, त्रेता तू जाबालिय।
द्वापर टुंभर सल्लि धर्म, धरनी प्रति पालिय।
आनद निंद जुगिगनि नयर, काल नाम कलि जुग्ग[18] लहि[19]।

---

9 BK[1] उतिय। 2 BK3 रस्य। 3 BK1 जानि। 4 BK2 BK3 स्यम। 5 BK[1] सिंध। 6 BK[3] पवित्। 7 BK[1] गेनं। 8 BK1 दक्षि। 9 BK2 जगि। 10 BK[3] सुक्यो। 11 BK2 BK3 जगिय। 12 BK2 BK[3] त्रिभुवनह। 13 BK1 नहि। 14 BK2 विय, BK3 त्रिय। 15 BK3 कुवल। 16 BK1 सुद गिद। 17 BK1 सहर। 18 BK2 जुग, BK[3] जग। 19 BK1 लिहि।

आवत्त[1] मौर फुट्यौ सुजन[2] किमि सु मोर[3] कवि चद कहि ॥६०॥
इहि सु सोर सुनि स्वामि, इन्द्र वृत्तासुर लग्गिय।
इह सु मोर सुनि स्वामि, राम रावन घर भग्गिय[4]।
इय सुमोर सुनि स्वामि, कौर पांडो[5] फट्यौ अलु।
इह सु सोर सुनि स्वामि, जरासधह जद्दौ प्रभु।
यह सोर स्वामि सावत कौ, सुमति साहि गोरी वयर।
चामुड राइ छुट्यौ लरन, इम सु मोर दिल्लिय नयर ॥६१॥
तुम मनुष्य मत्ता हि मैं, नेव देवासुर दिप्पै।
सा इद्रिय तारक चन्द, राना[6] नृप रप्पै।
रामायन मडली मधु, मागव माधाता।
मान तुग दुर्योध यथा, पडव छह भ्राता।
वरदाइ दुर्ग दुर्गह[7] मजिय, भट्ट जाति जीह टुन्नौ।
माधर्म जुद्ध हिंदुव तुर्क, कथा सुमत ततौ[8] मुनौ ॥६२॥
तुम देवासुर न हुद्ध जुद्ध, नेव दिप्पै जु[9] मयाने।
ए सामत अमत रूप, दिप्पिव विहसाने।
इनि आवध प्राराधानि, भार वज्जे झक झाइ।
उत्तमग उत्तरहिं सीस, हस्कइ धुक पाइ।
जिति रुधिर बुद थल परहिं, तित[10] कन्ल दल उट्टहि भिरन।
उन वीर सग पुन[11] वीर हुव, निमष एक नच्चह फिरन ॥६३॥

दोहा

जगि वीर मडी नयन, वयनह अलप प्रबोध।
मोडि जगावे[12] जुद्ध कौं, विनु[13] दुर्योधन जोध ॥६४॥

---

1 BK3 मार। 2 BK[2] सजन। 3 BK1 सौर। 4 BK3 गिय। 5 BK2 BK3 पांडव। 6 BK2 BK3 राज। 7 BK2 BK3 दुर्ग दुर्ग। 8 BK2 BK[3] ना तौ सुन्नौ। 9 BK2 BK3 ज। 10 BK2 निति। 11 BK2 पुम, BK3 पुम। 12 BK2 BK3 जगावइ। 13 BK2 विन।

छंद भुजंगी

जिनै जोध दुर्योधन[1] जुद्ध कीन। जिनै दाह नर रूप कौं[2] वृत्त लीन।
जिनै चक्र धारी करे चक्र रूप। जिनै जाइ रूधै तहाँ ताहि भूप ॥६४॥
जिनै अप्प अप्प प्रतिज्ञा निवारी। जिनै नंद नंदन पै पैन पारो।
जवै पत्थ हत्थ चप कोपि[3] कोप। किय पट इत्थ बने बान धोप[4] ॥६६॥
हनूमान पत्यौ[5] पतापा पतंग। हन्यौ[6] मेत वानी जु त जोति[7] भंग।
अपै तून कट्यौ[8] न गनीन गज्जै। किय देव जत्त धनुर्वान वज्जै ॥६७॥
कियौ छिन्न छिन्न मनाहति छिन्न। नदुर्वैन वानी रचि[9] देव भिन्न।
सुत स्याम रत्ता[10] जु मास[11] सुदेस[12]। मधुमाधवे जानि माधुर्य केस[13] ॥६८॥
जका जोग माया बरी ध्यान थान। कहै देव दैवान जान न जान।
न जानति जानति जान न ज्ञान[14]। न तत्राय जत्रीय मत्राय मान ॥६६॥
हयती हयती हयता ति प्रान। भरती भरती भरती विज्ञान[15]।
रथगी रथगी रथ मन्नि पान[16]। ॥१००॥
करै पड पड पलू पड जूर। सुरग सुरग चर क्वान सूर।
बिताल बिताली ब्रत्तार तूर। पथ प्यग पथ कथ मार मार[17] ॥१०१॥
कटि प्पट्ट छुट्यो लुठै पट्ट पीन। नर हानस्य नूत भय भात भात[18]।
॥१०२॥

दोहा

भयभीत अभीत भीपम सुभर, इपु दिय अर्थ[19] उदार।

---

1 BK2 दुर्जोधन। 2 BK2 BK3 को। 3 BK3 कौपि। 4 BK2 BK3 किय पड पड रथ वान धोय। 5 BK2 पत्या, BK3 पत्यौं। 6 BK2 BK3 हनौ। 7 BK2 BK3 जोत। 8 BK2 BK कट्यो। 9 BK2 BK3 रथिदैव। 10 BK2 रत्त। 11 BK1 स्याम। 12 BK2 BK3 सुदेसु। 13 BK2 BK3 कसु। 14 BK2 BK3 न जान न जानति जान। 15 BK3 भरतीं ति थान। 16 रथग ति पान। 17 BK2 BK3 पथ थ पथ थ काथ मार मार। 18 BK2 BK3 नस्य नून दभू मय भीत भीत। 19 BK2 अथ।

आधा आप अवनिहि परन, मतनु राज कुमार ॥१०३॥
छत श्रोनित छिछे सुबन, सु तन लग्ग[1] चप दून।
मनु अबर पुज्यौ अमर, वर वधूक प्रसून ॥१०४॥
मु करि ग्यान सुत्तउ ममर, हिय धरि ध्यान गुविंद।
मद हास मडिय श्रवन कहि कवींद्र कवि चद ॥१०५॥
भव भविष्य[2] जानु[3] सक्ल, अकल अपूरव वत्त।
सु मत बैठि सामत सब, सुनहु त[4] कहौ कवित्त ॥१०६॥

कवित्त

जैत राइ चामुड राइ देपि[5] बग्गारी।
बली राइ वलिभद्र[6] राम, कूरम्म सभारी।
पीची[7] राइ प्रसग जाम, जद्दौ भर भप्पी।
रवनि राज पहु प्राण स्याम, दानह धर रप्पी।
सावत मत कैमास विनु, वर बध्यौ[8] सुरतान दल।
मावत सिंह दुज्जन सया, दया न किज्जै काल ग्रल ॥१०७॥
कहै राव[9] चामड जाम, जद्दा सुनि वत्तिया।
गत सोवन किज्जये सोर, भज्जै[10] बल पत्तिय।
सुप अतरि दुप होइ, दुष्प अतरि सुप पावै।
दुप सुप बध्यो जाव, जाव बध्यो मन गावै॥
मन स्वामि धर्म बध्या, कहहि स्वामि धर्म बाचय मुक्ति।
सो मुक्ति बधी सुरतान दल, मथिन सूर कहइ[11] जुगति ॥१०८॥
पुनि जप्पौ जद्दो भुवाल, चावड राइ सा।
छौ[12] पग लग्गउ[13] लोह, लोह लग्गै गुमत गौ।

---

1 BK2 BK3 लगि। 2 BK2 BK3 भवस्व। 3 BK2 BK3 जानहु। 4 BK2 BK3 तव। 5 BK2 BK3 देप। 6 BK2 BK3 बल भद्द। 7 BK2 BK3 पिची। 8 BK2 BK3 बध्यो। 9 BK2 BK3 राइ। 10 BK3 भजै, 11 BK2 BK3 कहहु। 12 BK2 BK3 दौ। 13 BK1 लग्गौ।

माम दान अरु भेद दट जी बक करिज्जै।
कर बर भर होइ बक, धर भूपति जिज्जै।
सुरतान खरी गुरमान पति, उनय दल बद्दल मनों।
पृथीराज सथ सावत मत, ति नमी उह सत्तनि गनो ॥१०६॥

दोहा

ते छल बल छुट्टे पग पह, मत्त[1] छ छत्रिय छत्र।
समर समप्पन दैव गति, कदहु न मुष भरि बत्त ॥११०॥

कवित्त

सुनिग सद्द चावड राइ, जहाँ जग बत्ती।
हम पग लग्यो[2] लो‍ह लोह, लग्गौ[3] गइ मत्ती।
ता ते मौं[4] कहु रान, तू कान विनासै।
अद्ध रैनि उठि जाइ करै, दुज्जन पुर वासै।
हम पगन बहुरि वैरि मरै, लरि न मरै जहाँ कहै।
जह जह सु दैय,[5] कुल समहै, तह २ पजरपुर महै ॥११२॥
कहै राइ बलि भद्र, काम कूरम मत्तानी।
सबरे[6] सौं सग्राम राजन्हु[7], वा राजानि।
म्हैं म्हा के ढोलरै, ढाल ढोरा ढढारी।
कूरम्मा कू[8] परै डाढ, ढिल्लिय उच्छार।
उर अन्तर अन्तरउ मत, मत[9] जिन सापा जोनै जनो।
असु मेध जग्गि तुरिया तनौ, जनमेजय बरज्यौ घनौं[10] ॥११३॥
कहै राइ रासेत रान, रावत अज्जूना।
हय हत्थी नो साज रान, लद्धौ पज्जूना।

---

1 BK2 BK3 सत्तथ। 2 BK[1] लग्यौ। 3 BK2 BK[3] गौ। 4 BK2 BK3 स्यौं कहौं। 5 BK3 देय। 6 BK2 BK[3] सवरै 9 BK2 राजन नहु गत्तानि। 8 BK2 BK3 उपरै। 9 BK2 मन। 10 BK2 BK[3] घन्यौ।

मावता उन्भार जुद्ध, अडन सद्दाना[1]।
चौ अग्गानी मट्टि, सट्टि आनि पगानी।
म्हें गामी गुज्जर गम्हिया, हामाइ हामाईया।
गति वाह देह सुरतान ग्ल, रष्पि राज लगि आईया ॥११४॥

तुम भोरे भीमक रारि, सोमति मौ जीता।
ज्यौं दुज भोरे[2] अब धाइ, धत्त रस पाता।
घ्रासानी ध्रस पात्त लष्पु, सिक्कार चढाई।
हस्तीनी चिक्कार फट्टि, रासभ दर जाई।
पु डीर राइ भग्गौ[3] भिरै, मिर सुरतान बधाइया।
अन भगी अगि अनवुक्क[4], भरनै कनवज्ज जुझाइया ॥११ ॥

दे गारी गुज्जरह तू ज, चावड कहानो।
ए जहाँ कूरम्म जियन, बच्छहि सदानो।
पिच्चो राइ प्रसग च, वर वेधहि मपुरानो।
जे वीरग गिडार डाक, वज्जै उभ्भानो[5]।
गानिंद राइ चोला वरैं, मलह केलि कलपत्त किय।
पजाब पचनद पथ भौ, जात गात रप्पौ[6] सुजिय ॥११६॥

हस्यौ राइ बलि भद्द हत्थ, जहाँ दिय तारी।
बड गुज्जर दाहिमा बोल, लग्गान अधिकारी।
को सेवग को स्वामी कौन, भर धरवुन पाई।
केह ना घर जरो हत्थ, सेम्हु कौ[7] आई।
सन मध राज स पगन[8], किसौ पत्थै को केही कहैं।
सह गयन राज सिवपुर[9] करें, बोलि न कछु वास न लहौं ॥११७॥

राज काज पावार सिंघ, उव्वरयौ वार तिहि।
ए जहाँ जामानि वलिय, बलिभद्र बार इहि।

---

1 BK2 BK3 उ भार जुम्ह अजू सद्दानी। 2 BK2 मौरे। 3 BK2 BK3 भग्गे।
4 BK1 घनुवुक्क। 5 BK2 BK3 उभानो। 6 BK3 रषो। 7 BK2 कै।
8 BK2 सगपन। 9 BK1 BK3 विसपुर।

हम गामी गाचार छम, रतिवाह न चपै।
ममि पटी पुग्मान अधर, गुज्जर गृह कंपै।
निर्धात प्रात भजै मयन, गयन रान रवि उग्गइ[1]।
आजानु बाहु पुच्छइ प्रभु, स्वामि धर्म मिर तिच्छ दइ ॥११८॥

लोहानी आजान बाहु, म मह हयवारिय।
तुम्ह सु धर्म राजन[2] नरिंद, लज्जह अधिकारिय।
जो अर्मत मामत तारि, मतह उत्तारिय।
तुम्ह सु भीम भारत्थ जेम, पारत्थ उत्तारिय[3]।
दस लप्प भर सुरतान दल, नर तुरग उत्त ग नर[4]।
रुधि मम अस्थि वसु प्रान, तुम्ह फल निमान दुपै मकर ॥११६॥

तव चित्रग नरिंद चित्र, चिया चितारिय।
भव भविष्य निमान मह्म, ग्यानै सु विनानिय।
तुम अनन्त अगरानि नग, सुविज्ञान विचारिय।
रत्तिवाह दिव वाह माह, पैलाह सभारिय।
सुभ थान प्रार[5] सुरतान किय, राज जान मम्मुप चलइ।
पत्तीय विगत्ती[6] नवै सु कवि, वरमि २ सुल्लै फलइ ॥१२०॥

यह मिराइ परमग पिङ्गउ[7], विच्चिय पमरालिय।
रान नैन हिय सैन वयन[8], बुल्यौ वयठारिय।
रे गुज्जर रे जैत राइ!, पावड राइ सुनि।
रे जद्दौं[9] जामानि बलिय, बलिभद्र सार धुनि।
बहु कहहु कहा बरियाम वरि, सुरतान छत्र सीसह[10] धरौं।
यह समर सीह रावल सुनै, जौं न जुद्ध इत्तौ करौं[11] ॥१२१॥

पुहमि ईस पल तीस रीस, तज रहसि विचारिय।

---

1 BK1 उग्गहे। 2 BK1 राजान। 3 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 4 BK3 नर। 5 BK2 प्रान। 6 BK3 विगति। 7 BK1 पिच्छौ। 8 BK3 दैन। 9 BK3 जद्दो। 10 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 11 BK2 BK2 BK3 करा।

पृथा। चत सों सुनत तत, हसि हसि दिय गारिय।
निस[1] अघ मर सब देव, कव्ल नहि पिरवै।
हम मनुष्य[2] सम गिमें[3], किति कह कह कहि भिरवैं।
धवलग दीह धवलिय दिसा, धवल कध सम्मुप लरैं।
मोमेम मुनु[4] सुरतान सों, अजब जुद्ध जुद्धैं भिरैं ॥१२२॥

छंद [हनुफाल]

चपु स्वामि धर्मति भेष। चप पुंडरीक सुरेष।
कच वक्र कुंतल लीन। मकरज[5] मैं[6] मुप पीन॥१२३॥
मक्रीट हार विहार। तम हरन किरन प्रहार।
श्रत कुंडलीन विलास। कल ग्रीव दुत्ति सलाल॥१२४॥
निन नाम मुत्ति सुहृद। तिलक सम अति बुंद।
तैं ग्रीति अनर प्रीति। रघुवंस राज सु रीति॥१२५॥
करि करिय स्पदन पानि। मम मधुर मिष्ठति वानि।
धरि पुष्टि तून[7] धनुक्क। जिय जासु जोन जनक्क[8]॥१२६॥
इनि कठ लिय निन नयर[9]। इनि कठ लग्गौ[10] पयर।
इनि कठ लग्गौ राज[11]। इनि साहि अज[12] ही काज॥१२७॥

दोहा

त्रिसल तेज लग्गिय विभुव, चप रत्ताह विजाम।
जैत गइ वर जोइ नैक[13], कटि हुँ देपि[14] रिहान॥१२८॥

कवित्त

कहै जैत पावार पार, वग्गरी तुम्हारी।
कहीं मुनी चावंड राइ जहाँ अधिकारी।

---

1 BK2 BK3 निस्ता। 2 BK2 मनुप्यि। 3 BK3 गिमे। 4 BK2 अनु। 5 BK1 मकरज। 6 BK3 मे। 7 BK1 तूर। 8 BK1 जानक्क। 9 BK2 इनि कर्मनि ग्लिलय नयर। 10 BK2 BK3 कटनि लग्यउ। 11 BK2 इनि आयुध बद्धनि नृपति। 12 BK3 आज। 13 BK3 नेक। 14 BK1 दैपि।

अप्पु पानि[1] नालि पै, मैन सुरितान निहारी।
मरन मत्त चुक्क[2] न धर्म, छत्रिय जिनि हारी।
सह सव्वर[2] सभरि धनी, सो प्रतीति[3] रावह तनी।
जै अजै भाग भूपति चढे हौं, चढी घरि[4] धारह धनी ॥१२८॥
देव राव बगारिय वार, धारह धर थप्प्यौ।
करै सु को मिलि करी, साम रावह धर सप्प्यौ।
सोहि रान पृथिराज पान, चवल चलहतिय।
जत्र जोर सर मारि सारि, भग्गे रहि[5] ततिय।

जोध हत्थ तुग[6] सत्थ समत्थ[7] सुरतान, कढ थलह दोउ दो बल धरा।
सो सुज्झि जुज्झि सम्मुह लरी, लगी न पुनि पत्थह भरी ॥१३०॥
इक्कम दिन सावत सारि, गौरी[8] गहि थप्प्यौ।
इक्कम दिन सावत पगु, जगाह धर सप्प्यौ।
इक्कम दिन सावत राज, रनथभ उपारयौ।
इक्कम दिन सावत चाड, चालुक्क गहि मारयौ।
दिन इक्क स्वामि सावत को, सत छंडि[9] कलहंत क्रिय।
सुप लोक लोक जीहा चरिय, धरियालह बज्जिय घरिय ॥१३१॥

इति श्री कविचन्द विरचिते पृथ्वीराज रासे चामुण्ड राइ सामत बध मोचन, गौरी साहाब दान उद्धार सर्व सामत मन्त्री नाम चतुर्दश प्रस्ताव ॥१४॥

---

1 BK2 पान। 2 BK2 सर सवर सवर, BK3 मर सवर। 3 BK2 BK3 प्रीतीति। 4 BK2 धारे। 5 BK1 रहे। 6 BK2 BK3 "सुग" अधिक है 7 BK1 'समत्थ' छूट गया। 8 BK1 गोरी। 9 BK1 छांडि।

पंचदश पंडः

कवित्त

बज्ज त्रांरय घरियार साहि, उत्तरि[1] सिंधु नद।
विपम वाय[2] उडि भग[3] सिंध, त्रुटयो कु सद्द नद।
तमकि तमकि मावतराज, राजम किय तामस।
घुमरि घुमरि नीसान थानु, जग्गिय जनु पावस।
निसि अध अनेही वीय तीय,[4] पिय पिय पप्पीहा सुनिय।
पपानि फरकि अपिनि अनषि, उदय अनद मुनीर किय ॥१॥

मुडिल्ल

कला कल पुच्छिय, अथिर जानि। सिषो सिव अभसि कट्टिय जानि।
पियो[5] करुणा मुष, किं मुष वीर। दियो[6] रस सक्कर अन्तर वीर ॥२॥
सनोग[7] वियोगन,[8] ईसर बध। लही चक चप्प, अहर्निस[9] सध।
पिया पिय पुट्ठि, न दिट्ठि भुवन रही चित्र पुत्तलि, जानि अजनि ॥३॥
विथा विथ वपिन, जपइ[10] सोइ। क पुच्छइ[11] का इक, उत्तरु देय।
थके अग अगनि, अगनि ताहि। रह षप जानि, दृग दृग चाहि ॥४॥
भ्रम भ्रम लग्गि न, जग्गहि नैंन। गयौ रस छंडि, मनो अमु हैन।
रसी रस निद्ध निबद्धिय माल। भइ सुक मन्न, भयानक नाल ॥५॥

---

1 BK1 उत्तार। 2 BK2 वायि। 3 BK2 भूग। 4 BK3 तिय। 5 BK2 BK3 पीयो। 6 BK2 BK3 दीयो। 7 BK1 सयोग। 8 BK2 BK3 वियोग 9 BK3 अहनिसि। 10 BK1 जपै। 11 BK1 पुच्छै।

निमेष[1] करी कन्ना, रस केलि। उठी नर वीर, वर घट पेलि।
सनि झुनि रान, गवन गवन। निन त्तियन मत्त, भवन भवन ॥६॥
घनक्कि[2] घमान निमान निनद्द[3]। पनक्किय मघट, मुघट निहद्द।
हरप्पिय राज सु जुज्झर वद्द। भरक्किय ना, नवे मिर लद्द ॥७॥
तुरक्किय पप्पर, पप्पर[4] सौर। ढलक्किय[5] ढिल्लिय, ढाल मदोर[6]।
हलक्किय हाल, फरज्जनि सूर। धरक्किय धाम, मरातर कूर ॥८॥
कथ कथ रान, उमान गुमान। हुआ[7] दस कोस, मिलान[8] मिलान।
दिंदूर मेच्छ[9] बज्यो रन ताल। गयौ दिवि दव[10], विद्धिय वाल ॥९॥
निपप्पक[11] भूमि, अयासह अग। चढ्यो जनु इद्र, धनुक्कहि रंगि।
जय जय सद्द करा, तिन वीर। कहो त्रिय राज, गर्वान्निहिं पीर ॥१०॥

दोहा

नृप अयान यौमिान परषि, घटि साहस घटि इक।
सुकथ केलि पिय पिउप पिय, जतनि करि सषि किक ॥११॥

छद [भमरावली]

जतन जतन निय सनलिय। दिपि दीपक तुड टरयौ सुहिय।
भवन भवन भव नागरिय। घर मुच्छी परी भव[12] सागरिय ॥१२॥
द्रिग अचल अचल सों मुदिय। विरहा उर उग्रग सासु धिय।
हय पुट्टि लिय वय रज्जु हिय। पद पुट्टि सुधा निधि कीनि धिय ॥१३॥
वर बबरि लोय सपि विरिय। अश्रु आसिक्क नासिक मचरिय।
चल चदन वीर ममीर करै। लन्री विष जानत[13] प्राण टरै ॥१४॥
नहि नारिय नाइक[14] पानि गहै। तजि जाहि न इक्क वियोग सहै।
पल ध्यानन आनन पत्त टरै। अलि चोटन जोट समीर हरै ॥१५॥

---

1 BK3 मिन मेष। 2 BK1 घमक्कि। 3 BK2 BK3 "घुरक्किय घुग्घर दद्दुर सद्द" अधिक पाठ है। 4 BK2 BK3 पक्कर सोन। 5 BK2 BK3 ढलिक्किय। 6 BK2 BK3 सदोन। 7 BK2 BK3 दहा। 8 BK1 मिल्हान। 9 BK1 मलेच्छ। 0 BK1 देवक्कि। 1' BK2 निमप्पक। 12 BK3 बुधि। 13 BK2 जनित। 14 BK1 नाएक।

छनदा[1] दल छीन हि छीन भई। घरियार निहार प्रगास भई।
॥१६॥

दोहा

धन घरयार वज्जिग नयर, हलग हिंदु दल ढाल।
दुतिय चंद पूरन विजै[2], बढ़ि वियोग वर बाल ॥१७॥
हरि हि आदि अम्मर[3] सकल, अलि रप्पो अलि हूर।
जोग भोग प्रिय मग मरै, त्रियन धम्म घर उर[4] ॥१८॥
जल आधार रप्पै नियन, ब्रत रप्पै ... प्रान।
अब रवि मंडल वर मिलन, कह जुगिनि ... थान ॥१९॥
कह[5] धरनी कह अंबरह, कै[6] ... मूल।
दैव[7] राल वा तून मिलि, उडहि[8] जल ... तूल ॥२०॥
यह चरित्त पिप्पौ वरनि, जह ... राइ।
मो चरित्त सुरतान[9] सुनि, सिंधु मेरा मेधाड़ ॥२१॥

कुण्डलिया

कूच कूच पधार परि, पच उच्च ...।
सुन्यौ रान सुरतान[10] कह, सिंधु विहत्थह[11] ...।
सिंधु विहत्थह[12] वीचि सैन, सुरतान[13] संपत्तौ[14]।
है हिमार पुंडीर आइ, सत नज मिलत्तौ[15]।
मिलित राज प्रथिराज भाव, रप्पौ मन उच्चह।
मंकिल सव्व सावंत क्यों, न उत्तरि नद घुच्चहि[16] ॥२२॥

---

1 BK1 नदी। 2 BK2 जिवै। 3 BK2 अमर जु सकल। 4 BK2 BK3 उर। 5 BK2 BK3 कै। 6 BK1 किह अन्तर किह अन्तर किह मूल। 7 BK2 BK3 दैय। 8 BK1 उडिय। 9 BK2 BK3 सुरितान। 10 BK2 BK3 सुरितान। 11 BK2 BK3 विहत्थहि। 13 BK2 BK3 सुरितान। 14 BK2 BK3 सपत्तउ। 15 BK2 BK3 मिलत्तउ। 16 BK2 BK3 नदि कुच्चद।

तव लुट्टिग छंडिग सहर गहर कियौ[1] जुध भीर।
धीर लज्ज कह लगि लगौ, रा पावस पुंडीर।
रा पावस पुंडीर धार, लज्जह लज्ज रष्यौ।
नत सोमेसुर आन प्रान, गढ तैं गहि नष्यौ।
हसहिं मन्त्र सावत गच्छ, हय गय तुम गच्छहु।
कहै राज प्रथिराज सहर, लुट्टौ मत मत्थहु॥७३॥

कवित्त

पहर इक पुंडीर त्रिमा छम, अदय परष्पिय।
सु[illegible] सावत मन्त, अथिय भर भष्पिय।
[illegible] अया है लग्गौ दिवान, सुरतान सुनान हि।
[illegible] अट्ठ महि दोह, मालूम चहुवान हि।
[illegible] दुल[illegible] ोह पत्तैं कट्ठिय, अरिन[4] भनहि मिरनि।
[illegible] यान [illegible] तरवारि कर, नौ न भग्गि उडहिं[5] करनि॥७४॥
[illegible] केलि [illegible] संतनन चपि, पट्टिय क्रूरू।
[illegible] जालध राइ, हाहुलि हम्मीरहु।
[illegible] जिय सज [illegible] परसियहु परसि, दरसत यह अप्पहु।
[illegible] भव[illegible] दुहुँ दीन मिध, पप्परि किन दिप्पहु।
अ[illegible]सकार करि पुज्जियहु, ज्यौं पुच्छहि पिछली पिरति।
कर जोरि चरन बदन करहु, हम सु देषि तुम्हह अरति॥७५॥

मुडिल्ल

मग्गह चलत करि कहि विरम।
सामत सुभर भर मुदित तम।
जालधर जाहु नृपति सु काज।
रष्पियहु सु दिन पृथ्वीराज काज॥७६॥

---

1 BK2 BK3 कीयौ। 2 BK3 लगि। 3 BK3 दुलोह। 4 BK1 अरि रिन भजहि तह मिरनि। 5 KK1 उड्डहि।

कवित्त

चलत मग्ग यह मंगि रान, तब लगि तुम[1] धीरह ।
लै आऊ नालराइ, हाहुलि हम्मीरह ।
तिन उत्तर उत्तरह जाइ, कगूर मपत्तौ ।
पंच शत अर पंच पैड, अग्गै मिलि लित्तौ ।
भोजन भुगत्ति बहु भाइ करि, सब पुच्छिय राजन निगति ।
जालराइ जनू घनी, सुनि हम्मीर चंदह[2] सुमति ॥८७॥

दोहा

ढिल्ली वै है वैदिमा, तिरि भर जल गभीर ।
हुत रे रन आतुरह, चढि हैं हम्मीर ॥८८॥
कारन हीं है वैदिमा, चढि ढिल्ली वै भट्ट
चक दिसाहन[3] घरह, भौले लाहोरी[4] हट्ट ॥८६॥

बोला बक सु कक केलि, सभरि रा गौरी ।
उन्हा उन्हा कहहि चंद, पचनद मेरी मेरी ।
जुद्धानिग[5] जागि जग्गि वीरा उज्झाई ।
हो हम्मीर नरिंद । चंद, जाइ न बुज्झाइ ।
पग धार धम्म छत्रिय तनौ, चुरै नर्क[6] निवासियै ।
जै काम सूर सिद्ध न करै, तै धू मंडल वासियै ॥३०॥
केही काक केलि करौ, काहे लगि जुज्झे ।
हठि गल्हा[7] सौ लगि जाइ, कैरों फुल बुज्झे[8] ।
हों हम्मीर नरिंद चंद, बलवत[9] करि रप्पौ ।
पचनद पंच देसि श्रद्ध, अद्धा करि रप्पौ ।
केहा न सुप्प नर लोक में, क्यों सुर लोक सुहाइया[10] ।

---

1 BK2 BK3 तुम । 2 BK3 चंद । 3 BK1 बिसाहन । 4 BK3 लाहौरी ।
5 BK2 BK3 जुद्धानीग । 6 BK1 न श्रर्क । 7 BK1 गला । 8 BK2 BK3
बुझ । 9 BK2 BK3 बलवत्ता । 10 BK2 BK3 सुहाइय ।

मिष्टान भामिनि भवने[1], पुच्छे तोहि सुभाइया[2] ॥३१॥
चहुयाना के रान पान, मावत बड़ाई।
ते बोला वर लग्गि जाइ, कनवज्ज जुमाई।
थे गारी सहाबदीन, जानहु पहिलूना।
हमम हय गय हेम[3] देस, दिष्पहु न्ह गूना।
कौ[4] काम मलन कदल चढी, कै कामा धसी गन्नी।
वै[5] काम भट्ट गल्ला पढी, निनि बोरहु ढिल्लिय चढ़ा[6]।
गल्हा काजि हमीर मर्ग, मुध्यौ उज्जिन्नी ।*
गन्हा काजि नरिंद नद, मोवन गिरि कीन्हीं।
गल्हा कानि गुविंद करै, कैरव पटव जुद्ध।
गल्हा कानि भरत्थ भ्रमन, कीन्हो रावण वध। [7]
हम गल्हवान गल्ला पढै, तुमू गल्हा लगौ बुरी।
मृत लोक जीव जम पनरी, तुम्ह[8] जानहु छुट्टै दुरी ॥३३॥
एक उलूक करि गरुर सों, मनि अति मित्राई।
ताहि उलूक हि नेपि देषि, नी रामु[9] सपाई।
तब उल्लू[10] रनि भयौ मैं, गरुर अग्गैं कर जौरै।
मोहि तहा लै जाहु जन, कोइ जीव न तोरै।
धरि पप नग माइर गुन, जिहा[11] विलाव मुष्यौ मरन।
मनबध देह निर्हि ठा पर, सो न मिटै राजन मरन ॥३४॥
कालिय विपुधर डक मक, वै हरी उच्चारै।
नील कठ सिव धरै मोर, मैं अग निहारै।
काक लब ढरि जाइ लगै, पप्पीह पुकारै।
गानै सिंध गड्ढ चढै, भिरकाल[12], सिक्यारै।

---

1 BK2 भवन। 2 BK2 BK3 सुभाइय। 3 BK2 हम। 4 BK2 कै। 5 BK2 BK3 वै। 6 BK3 चच्चो। 7 BK2 में तीनों चरण नही दिये। *BK2 BK3 में "गल्हा कानि हमार राज, मुक्यो रघुराइ" अधिक चरण है। 8 BK2 BK3 तुम। 9 BK2 BK3 जौरा मुसकाइ। 10 BK3 उलू। 11 BK2 BK1 जइ विलाउ। 12 भ्रक्काल।

सुरितान समर सधन सलप, जैत राइ बिरदह[1] वहै।
वरदाइ भट्ट हाहुलि रहै, कोइ नप्पु इत्तउ[2] सहै ॥३५॥
रायसलु पावार अनल, चहुवान पिथाई।
भुट्ट मम निगपि राज समर, मोपे धरिताई।
जैत राउ कठीर इत्थ, सामत गाज सिर।
पट्ट पवार पाहार धरै[3], भजै गोरी घर।
अन्नु वराइ अगाइ पहर, पिन न जोर जवू रहै।
घु ग लिय बुज्जि जुग्गिनि पुरिय, ज ज भावै त त वहै ॥३६॥

दोहा

तुम तत्तुवाद जानहु सु कवि, हम माया पुच्छाहि।
जालधरि[4] चलि देहरे[5], मिलि जालप पुच्छाहि ॥३७॥
नारि केल फल दल सुफल, कर कपूर तमोर।
उभय मरन पुच्छन चले, दिय सब मत्थ वहोरि ॥३८॥

कवित्त

च्यारि कोटि वज्रागिन मध्य, जालप अस्थानह।
हेम छत्त जरि मुत्ति मत्र[6], दुर्गा[7] जप्पानह।
करि अस्नान पवित्र धोइ, धोवति धरि मट्टिय।
सुभ सुगध पढि छद जाइ, कुसुमावलि छड्डिय।
धूप दीप नैवेद्[8] मिलि, राज उदेस सदेस कहि।
बुल्लिय न वयन देविय त दिन, अजित हमीर हिं मत्त लहि ॥३९॥
कहि हमीर सुनि देवि, तत्त वादी कवि आयौ।
या मैं को हिंदू को तुरक, कौन रक्खस[9] कौन रायौ।
को रविंद को जिंद कौन[10], तापस कुन छाया।
को साहाव को राज कौन, सूकर कुन गाया।
यह परम हस हिंसा रहित, तू माया हू मोह मत।

1 BK2 BK3 बिरदहि। 2 BK1 इत्तौ। 3 BK2 BK3 धरि। 4 BK1 जालधर। 5 BK1 देहरे। 6 BK1 मन्त्रि। 7 BK1 दुमा। 8 BK2 BK3 नैवद। 9 BK2 BK3 रक्ष्स। 1 BK1 कोन।

जानी न न्हैव दक्खिण करन, हौं माइ मसा हस्त ॥४०॥
दिय कपाट चहु ओर चम्, देवल महि मुक्यो।
हत्थ न सुज्भइ हत्थ मत्थ, मत्थ मन ठा मस्यो।
मिलि जानी सुलतान लियौ[1], मुलतान लिपाई।
हौं पर्वत सो राज थान, पनान[3] सुपाइ।
एक रतन लाभ[4] अनमेर भगि, दुर कर राज लगाइया।
वज्जिया डक डक्किनि पुरिय रंगि, हमीर फिरि माइया ॥४१॥

कुण्डलिया

चामर मृग मद मधुर मधु जानी अम्र कपूर[5]।
मिल्यौ[6] जाइ गोरी घरह, हाहलि राइ हमीर।
हाहलि राइ हमीर माइ, दो हा घर लग्गी।
सीलवत तप तेन धम, धुर धारा[7] भग्गा।
गो विप्राय गो छुटि क्रूर[8], पर्वत पति पामर।
मिल्यौ जाइ गोरी घरा[9], मधुर मृग मद लै चामर ॥४२॥

दोहा

चारि चारि तरवारि भर, हर बधिय वर धाइ।
यह चरित्त पिथ्थी चरनि कहौं, साहि स्यों जइ ॥४३॥
हाइ हाइ बज्जा सुचर धुनि, मुच्छिय सुरताइ।
जुद्ध स बध्यौ हिंदू दल, जुभै[10] रहै कि जाइ ॥४४॥
बाल वृद्ध जुव जन कहहिं, ए मत्ते मत्ताइ।
तेक एक पक्की चवे, चो[11] चक्का भज्जाइ ॥४५॥
करि निवाज सुरतान कहि, कित किय जित उन ईस।
गहि न राइ कथह हयो, गहि मुक्यौ इहि रीस ॥४६॥

---

1 BK2 BK2 लियो। 2 BK2 BK3 कौ। 3 BK1 पजाव। 4 BK2 BK3 लभ। 5 BK1 कज्जम पूर BK3 पूरे। 6 BK3 मिल्यो। 7 BK2 धार न भीगो। 8 BK2 कूर। 9 BK2 घर। 10 BK2 BK3 जुभे। 11 BK2 चोकच्चा, BK3 चो कचा।

कुण्डलिया

यह गदिय मदिय मरद तुम, मरदह मरदान।
तुम्ह[1] सु ग-ज गज्वह हरन, हौं फकीर सुरतान।
हौं फकीर सुरतान अप्प, ऊहि पुच्छहि कानी।
भिस्ती भाप[2] क्यौं[3] करौं, होइ हाजी उर गाजी[4]।
जो उमेद जा होइ राह, दुइ अवह वदी।
को गुमान जिनि करहु, कहै काया यह गदी ॥४७॥

कवित्त

सिंधु उतरि सुरतान कह्यौ, सुरतान पान सौं।
पा ततार रस्तम्भ गहहु, स-बे[5] मुसाफ तुम।
मैं आलम अक्केलि[6] हा दल, हिंदू राइ प्पर।
जिहिं गहि छड्यौ, सत्त वार बारहौं अप्प कर।
ता गहन हेत अच्छे सुमन, सुमन सच करतार कर।
भग्गहु अभग[7] मृत सग्रहौ, वरहु लउन भज्जहु न नर ॥४८॥
पा पुरमान ततार पान, सुविहान निठोरे।
हा हमीर हिंदू न दीन, गो जार न जानहि।
एस भय पचिवे काज, जाइ गोरी गुम्मानहि।
अलफ पान उज-बक्क, हक्क हमीर जारे[8]।
सुरतान आन चहुवान सौ, जेन चाल बधिवि भिरहिं।
दै हत्थ हत्थ अजहू मनहि, जो दयो[9] रोग दोनक परहिं ॥४९॥
समरक्द मौमदी मोर, महमूद रहिल्लौ।
नव नव कोरि सु डड एक, एकह अबिल्लौ।
त्रिसि यक गढ ढिल्लिरिय[10], कौन मडल वह वारह।
कौ वैसत सातत सहै, को हम जुज्झारह।

---

1 BK2 BK3 तुम। 2 BK2 भप। 3 BK2 BK3 जौ। 4 BK2 गज्जा।
5 BK2 सचे, BK3 साचे। 6 BK2 सक्कखि, BK3 सकैलि। 7 BK3 अस भग।
8 BK2 BK3 में यह समस्त पद छूट गया। 9 BK2 चोद्द रोग। 10 BK2 ढिल्लिरिय।

मा॰ावन्नीन सुरतान सुनि, प्रगट ण्ह पर्रतिग वहि।
पुनाइ भुम्मि हम मचरहि, नों न देहि चहुआन गहि ॥५०॥

दोहा

मेच्छ[1] मसूरति सत्त निय, नचि कुरान कुरान।
वीर विचारत रत्त हुव, दिए मिलान मिलान ॥५१॥

छद [मुडिल्ल]

महि चल्यौ[2] माहि, आलम असभ। उप्पटिय जानि, साइयरनि अभ।
जल थल ति थल, ति जल होत दीस। उनए मेघ, वर वर रास ॥५२॥
बज्जहिं विसाल घन, जिमि निसान। दामिनिय तेऊ धर, वर कमान।
वारनि चन्त मन्, गध बध। सुञ्भइ न भान[3], दिमि दिदिमि ॥५३॥
सिंधु घुम्मिलिब मिलिय कलयठ[4] सद्द। चक्की व चक्क मुक्कि[5] चलत।
रस दरस सरस, मारस मिलत। प्रतिबिंब अब, अम्बर तिनार[6]।
भुगतै न मुक्ति[7], पजर विचार ॥५४॥
दर्प्पक अदर्प्प, आलोल नैन, विमरियै कोर, सुर गौन[8] धैन।
चक्कित सुचित्त, मन मित्त मित्त। रम उभय, भ्रमिय आनद चित्त ॥५५॥
हसि चक्र वन्न सु, कहिग छद। मानिनिय जानि, जामिनि आनद।
असपत्ति असु भर, गहन हिंद। भुक्यो सु जानि, गोरी नरिंद ॥५६॥
प्रज्जलहिं पथ, पट्टन न[9] सिद्ध। मिलि चलहिं अग्ग, आरभ गिद्ध।
अच्छी सु रैन, पत्थी पुकार। मावस तुम क्रमन सन्निवार ॥५७॥
रवि घरह राह अनुक्केत गत्ति। जानै[10] सु चद, मह ग्रहनि गत्ति।
॥५८॥

दोहा

सज्यौ[11] सेन सत्तरि सहस, जगल वै चहुवान।

---

1 BK2 मैच्छ। 2 BK3 चलयो। 3 BK2 ॰ान। 4 BK2 कल कलय, BK3 कलय सद्द। 5 BK2 BK3 मुक्कि विवलत। 6 BK2 नितार। 7 BK1 मुगति। 8 BK2 गैन। 9 BK2 BK3 नि। 10 BK1 जाने। 11 BK3 मन्यो।

घर अगन मगन तुरिग, सुनत सूर अकुलान ॥५६॥
सब सपन्न सतरि सहस, घटि वढि वर्नत वार।
जि भर भरि सम्मुष सहै, ते वत्तीस हजार ॥६०॥
सहै भीर नृप पीर निय, जिनि सिर झारहि[1] दुधार।
लज्जा धर धर्म तिन गनै, ते बहु पन हजार ॥६१॥
पच हजारह मझि दुइ, ते आया वर स्वामि।
फर वज्जिय वज्जिय सहन, तै से पचह छामि ॥६२॥
तिन महि सौ सोभय हरन, मील मत्त सम जुत्त।
तिन मह दस दारुण दहन, उप्पारण[2] गन दंत ॥६३॥
तिन महि पच प्रपच मलपिय, न तिन गति काज।
दैव गति दैवान सौ, तिन महि पहु पृथिराज ॥६४॥
पावस आगम धर अगम, दल सज्जै दहु दोन।
अवर छायो अभ्रतन, छिति छाइ छत्रीन ॥६५॥
वसहि सूर[3] रण आभरण[4], मरन सुख निय नाह।
दल नरिंद वर हिंदु कै, भई सनाह सनाह ॥६६॥

छंद [भमरावली]

दुहु राइ महा भर[5] यों मिलिय। मलिता जनु मत्त समुद्द लिय।
करकादि निसा मकरादि दिन। ननु जुद्धति[6] सेन दुपाल मन ॥६७॥
दुहुँ राइ नरप्पति रत्ति चठे। जिहुरे जन पावस अभ उठे।
निमि अद्ध विघेत निसान घुरे। दरिया दव जानि पहार गुरे ॥६८॥
महनाइ न फेरिय काहलिय। सर नीरह वीर चले मिलिय।
ठट्ठनक्ति[7] घटनि घट घुर। वल कौतुक देव पयाल पुर ॥६९॥
लगि अबर बबर डबरिय। बिसरी दिसि अर्घति वुधरिय।
समसेर[8] रसे लस नाहिनि सौ। दमकै दल मडित राइन सा ॥७०॥
दरसी[9] दल की वर दल्लरिया। सुमिरे घर काइयर वल्लरिया।

---

1 BK2 झारहि। 2 BK3 उप्परण। 3 BK2 BK3 सुरा। 4 BK2 BK3 आभरन। 5 BK2 भर। 6 BK2 BK3 वद्धति। 7 BK1 टट्टनक्ति। 8 BK2 BK3 समसेर। 9 BK1 दर्सा।

निरषे तन चेतन अच्छरिया। जिनने मुष मुच्छर मुच्छरिया ॥७१॥
नृप जाइ फवज्जनि बन्धि लिय। मुहु मारष चावड राइ न्यि।
भुज दच्छिन अब्भुव राव रच्यौ। सिर छत्र सु पेय न आनि मञ्यौ ॥७२॥
भ एकादिस अग्ग पुडीर भए। कटि कंध कबंध गिरंत लरे।
कूरम्म अरं भनु जाम अनी। सुधरी कवि चन्द सुनि सुमनी ॥७३॥
दल पुट्टित भोरिय राइ सुने। कवि इत्तम उत्त सुनें सु भनें।
निरवान चन्देल ति जद्द भने। हय मुक्कि लरे जम सौ जुरने ॥७४॥
तिन मद्धति मभरि राइ इसौ[1]। भुज अर्जुन अर्जुन राव जिसौ।
भमरावलि छंद प्रमान थिय। नृप जोइ फवज्जनि बंटि लिय ॥७५॥

कवित्त

रा जद्दो कूरम्म राउ, रावल[2] प्रति पट्टे।
चमर छत्र नीमान गिद्ध, व्यूहा[3] ररि गट्टे।
एक पष्प बलभद्र एक, पज्जूह जामानि।
विच कंध पुंडरी सेन, सम्मूह सुरतानी।
पग पिंड पुट्ठि आहुट्ठ पति, पुच्छ सुरचि मार महन।
वामग अग्ग पृथिराज कै, सुतनु जुद्ध मञ्यौ गहन ॥७६॥

दोहा

सावन मावस सूर सव[4], उभय[5] घटी उदयत्त।
प्रथम रोस दुहुँ दीन दल, मिलै सुभर रन रत्त ॥७७॥
दो उद्दल बद्दल[6] विषम, बाग[7] न लाग निमान।
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें, चाहुवान सुरतान[8] ॥७८॥

इति श्री कविचद विरचिते पृथ्वीराज रासे[9] जालधर देवी स्थाने हाहुली राइ हम्मीरेन न्याजेन चद कवि निरोधन अथ च पृथ्वीराज गोरी सहाय दीनयो युद्धायसेना समागमे गृद्ध व्यूह[10] रचन नाम पचदश षड ॥१२॥

---

1 BK[3] इसै। 2 BK2 BK3 राउल। 3 BK1 धूहा ररि। 4 BK2 सुव।
5 BK2 BK3 उभै। 6 BK2 BK3 बद्दल। 7 BK2 BK2 खागरु लाग।
8 BK2 BK3 सुरितान। 9 BK1 में जालधर देवी से
पृथ्वीराज" तक पाठ छूट गया। 10 BK1 "व्यूह" छूट गया।

षोडश खण्ड

छन्द भुजंगी

मिले चाइ चहुआन, सुल्तान पग्गे। मनों बाग्गा, धृत्ति वेमत्त लग्गे।
उठी हक्क धुद्द धुद्द, उद्द धुद्द काल। करें जार जाय, तुट्टै ताल ताल्ह ॥१॥
बड़ा जंग लग्गी, बजा धार धार। भए सेन दून, दुहू मार मार।
सु भद्द जु थट्ट जु, घट्ट जु सूर। स एक भए मेल, मेल न[1] पूर ॥२॥
तहा इक्क इक्कर, भए जुद्ध जेर। मिली सत्थ मत्थे, अना एक मेक[2] ॥३॥

कवित्त

विषय राइ वलिभद्र[3] सुपथ, जदा प्रति रद्धी।
समर सिंघ रावल समर, साहस गति पत्थी।
राज धर्म्म भृति धर्म्म, धर्म छत्रिय सालोकिय।
कह सुहम आनंद तत्त, कहि वुद्धि सलोक्यि।
यह कहसु मोह मर्याद मैं कहसु जोति जोति हिल है।
जोगींद्र राइ ज तू दिवस देव, त्तहिं तत्तहिं कहै ॥४॥
विषय जु बध्यो मोह सुपथ, जिहि मोह निवर्त्ते।
राज तु आग्या अवनि सेन, तिनि वत्र प्रवर्त्ते।
भृत्य जु स्वामिय रत्त नेह, निंदा न प्रगासै।
अह निसि बछै मरन, सु पट्ट मकरे निवासै।
सो हम हम मडल रवै, मन अनत अतर रूरत।
सामत सिंघ राव रचवै सुगति, सुगति लच्छे सुरत ॥५॥

---

1 BK2 BK[3] "न पूर" छूट गया। 2 BK2 BK3 तहा इक्क से
सत्थ" तक पाठ छूट गया। 3 BK2 BK[3] बल। 4 BK[3] कहा।

तब अद्धं चद्र तत्तार पान, पन पान पुरेसी ।
पामूस न मारूफ गज्ज, गप्पग कुरेसी ।
हाहुलि राइ हम्मीर चुग, वधे दल टोहा ।
जे ममारह आदि माट, दोही गुर सोही
विह चाट ढलन्ति वहल मिलिग, करि हमीर हिंदुव हमि ।
पुडीर गइ पावस नृपति, लरन लोह कटुट रस[1] हमि ॥६॥

छंद रसावला

ते पुडीर जत्ती । महामल्ल पत्ती । लगे[2] लोह तत्ती । मनी विज्ज पत्ती ॥७॥
अवे हाति उत्ती । जुटे मेच्छ छत्ती । बजै रूप गत्ती । जनौ तार थत्ती ॥८॥
गजे घाइ अत्ती । मृदग्ग सुरत्ती । रूरि[3] भेरि भत्ती । सु तु वानि रत्ती ॥९॥
गह दत्त सत्ती । चढै[4] सु भ वत्ती । मनों इद्र वत्ती । विना इद्र हुत्ती ॥१०॥
रुधि द्वार रत्ती । उच्छारे सुमुत्ती । इमा वार वत्ता । सुभारत्थ नत्ती ॥११॥
दुहू सेन थप्पी । निरप्पी सु अवा । थभा[5] न रम्भा । सदा दाव तु बा ॥१२॥

कवित्त

सहस तीनि गप्पर गुराइ, हाहुलि हम्मीर हिं ।
मुगरि मुरारि मारूफ पान, तत्तार ओटरहिं ।
पल पुरेस पन पान जान, छडिय पग कल्लिय ।
जन कि महिष मयमत कहर, उडर[6] लग्यौ गयन ।
कूरम्म राव जहाँ जमनि, अमर मोह भुल्यो मयन ॥१३॥
समर सिंघ रावलह महस, तेरह हय छडिय ।
तत्त नीर गोरिय विलप्पि[7], रोहित रन मडिय ।
विदल डारि उडन[8] अभग, पग पोलि विहत्थह ।
कहै चद वरदाइ सुनहु, छत्रिय यह कत्थह ।
भनै मरम्मु जीवन मरन, ति नर तु ग सद्धउ समर ।
मुरि गए जु छडि भारत्थ मै, कोइय माप्पि अप्पह अमर ॥१४॥

---

1 BK2 रहमि । 2 BK1 लागा । 3 BK2 रुरी । 4 BK2 BK3 चढ़ी ।
5 BK1 थभा रात रुम्मा । 6 BK2 BK3 औडर । 7 BK2 BK3 विलप्प ।
8 BK1 उड्डन ।

छंद भुजंगी

दुवे सेन हक्के, अमुक्के गुमान। बजे तु ब तु बा, दमक्के निसान।
नचे नट्ट नद्दिय, भेरी भयान। मनु मेघ गज्जै, दिसान दिमान ॥१५॥
बने घाइ आवद्ध[1], गज्जी हवाई। करी तीन तीन, दू तीन न्हाई।
हबक्की हबक्की, वहै नेन नेज। महामल्ल मल्ल, मबै नालि तेज ॥१६॥
गिरे[2] उत्तमंग, उठै श्रोन लल्लौं। शुभै दग लग्गै, जु पावक्क पल्लो।
नचै कध हीन, कवध कलाप। जनी जोगनी जोग, लग्गी अलाप ॥१७॥
रगी रग भूमी विताल उमद्द। हुवै हूक बज्जै, हहल्ल गहिल्ल[3]।
गयन्न ति गिद्ध, जु सिद्ध बिमान। रत रग रत्त मुरत्त नयान ॥१८॥
लज लोक पाल, वह कह सुभीर। लियो तात सग, महामल्ल वीर।
तहा सुप्प दुप्प, न तात न मात। तिय तु ग तु बी, महा मोह वात ॥१९॥

कवित्त

अद्ध रैनि अतरी जुद्ध, वसरी सपत्ती।
अट्ठ अट्ठ जुग्गिनि, अट्ठ वेताल वियत्तो।
जालधर सम्मुही ईस, अग्गै यह कत्थी।
भिरे जित्ते हिंदू[4] तुरक्क, भारत्थ जुरि विथ्थी।
चावुडराइ सिर समरसी, मिर जहौं कूरम्भ वली[5]।
पावा सीस पचौं पवित्र, दूरि जाल गठी सु कली ॥२०॥

वीर भद्र अरू रूद्र नोति, जालप्प जलप्पिय।
कहै वीर बैताल सूर सामन कलप्पिय।
कहु साचि सक्रमन वार, सतई रन मड्यौ[6]।
कोइ न हिंदु दल जान ग्यान, दिन इक्क न पड्यौ[7]।
अर अद्ध राह चपै रविहि, चद ज्योति चिहु दिसि दवै।
मह माल लोइ बदै नहीं, नीरव मद्धि रप्पीह वै ॥२१॥

---

1 BK2 BK3 आवध। 2 BK2 गरे। 3 BK2 समस्त पद छूट गया। 4 BK2 BK3 हींदू। 5 BK2 BK3 बद्ध। 6 BK2 BK3 मद्यो। 7 BK2 BK3 पढ्यो।

केंद्री है शनि सूर स गुरु, ग्यारहु ममि तानौ।
नौमि शुक्र तिन चन्द्र नवम, मगल बुद्ध नानौ[1]।
राह केत सुप रप्पि विप्र, दप्पिन हर घातय[2]।
जोति चक्र जुध वक्र दृष्ट, दानव यरि मतिय।
त्रिय त्रिपुर जीति त्रिपुरारि हू, पल मनमुप रप्पै।
तव हि ग्रह ग्रहन गठि पुञ्जै पुहप सपहिं जुद्ध निरो पिनहिं ॥७२॥

जुद्ध करहु भिरि लेहु देहु, कै अप्पि अप्प[3] वर।
नप्प वध कुवेर नाम, मुवेर[4] भविचिय।
तुम सब कन्ह कल्यौ, सूर सावत कलप्पिय।
करि मनुष दनु रूप भूप, वबरि करि उट्ठिय।
किमि अग्गिछ[5] आवधान, मिग वानावलि फुट्टिय।
किमि किमि सुपग पत्तर वहै, किमि तुराह मुग्गहि गहिय।
भागत्थ कत्थ भावै भनहि, चन्दराज अचड्डी कहिय ॥७३॥

दोहा

सूर सुवन जुद्धत अथिग, गई सु तिथि अतीति।
बाम कलउ क्दल घनी, भौ प्रति पदा अदीत ॥७४॥

कवित्त

च्यारि सहस असवार, राइ चावड दुहिल्लौ।
चौदह सहस मफरद्द[6] मिया, मनसूर मुहिल्लो।
दुहु हक्क हू[7] उक्क सीस, दुट्टे धर धावहिं।
आनदित अपच्छरा अप्प, इच्छा[8] वर पावहिं।
चावडराइ दाहर तनौ, हर हारा वलि सढचौ।
मफरद्द पान पैराज सुव, तेजवत भिस्तहिं गयो ॥७५॥

रजक दड सिंदूर[5] सेत, चामरनि सेत धज।

---

1 BK2 BK3 वीनै। 2 BK2 BK3 वतिय। 3 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 4 BK2 BK3 सुवेर। 5 BK2 BK3 अरिष्ट। 6 BK1 फरद। 7 BK2 हहक्करि। 8 BK2 BK3 इच्छानि। 5 BK2 BK3 सिंदूप।

सेत छत्र अभिराम[1] जुद्ध, आचरन[2] अग्र गन।
हेम मुत्ति गन झप दुत, कलयस कट्टारह।
अवनि अद्ध झारहि भनक्कि, पाइक पुतारह।
सुरतान अग्ग पुरसान पा, अग्गवान[3] हिंदुन सरक।
दुहु वाह सेन सन्नाह गनि, मनु पच्छिम उग्यो अरक॥२६॥

दोहा

उत भज्जे भज्जे तुरक, उन जित्ते जित्ताहि।
डरहि सेन पावार परि, सेत छत्र उत्ताहि॥२७॥

कवित्त

हाइ हाइ अरिष्ट दृष्टि[4], चावड अवरिय।
रे जद्दौ बग्गरी राम, कूरम्म सभारिय।
षिच्चिय राइ प्रसंग मोधि, पावम पुंडीरह।
अप्प अप्प मुष वधि आइ, भजहु भर भीरह।
नृप जैत राइ उप्पर करन, देइ दुहाइ दा॰र तनै।
तिरच्छयौ तरक्कि लग्यौ लरन, मनहु अग्गि जङ्गर जनै॥२८॥

छंद रसावला

हुं मेच्छ भर। एक एकग्गर। काइ जा न्प्पर[5]। भारि वड्डप्फर॥२९॥
ग्गा झार झर। गैन लग्गा वर। निद्ध[6] जालधर। द्रोन नच्चै धर॥३०॥
तीस हक्का कर। दुत दतू सर। अ त आलू झर। अर्भ सोहै रिन॥३१॥
ाल कट्टे सर। ढाल पाल ट्ठर। केलि साप ट्ठर। वीर सा बबर॥३२॥
ानि टुट्टे पर। कघ बधै भर। तार बज्जी हर। सटि कत्तर॥३३॥
ाच पच घर। मुत्ती लद्धी नरं। राइ चावड सौं। फिरै[7] गौरी लर॥३४॥
मोहि गोरी इन। जैत छत्र तन। अर्बुं राया रन। मेच्छ भजे घन॥३५॥
अद्ध अद्ध तन। घाहि घाहु द्धन। तुड मुडे वन। भीभि नाल भन॥३६॥

---

1 BK2 BK3 आभरन। 2 BK2 आवरन। 3 BK2 BK3 अग्गिवान। 4 BK2 BK3 द्रिष्टि। 5 BK2 BK3 कप्पर। 6 BK2 गिद्ध। 7 BK2 BK3 फिर।

छंद भुजगी

वहै वान चहुवान, श्रावद्ध वीस[1]। लगे मेच्छ अग, मनौ उज्ज तीम[2]।
टुटै[3] सध सन्नाह, कै, अ ग अ ग। उठी श्रोन छिछ्छी, नरै जानि दग ॥५६॥
चटच्यौ[4] वीर नदी, मसूली अनदी। नचै रग भैरौं, बकै जानि वदी[5]।
चवै सट्ठि, चौसट्ठि, सौं[6] श्रोन लुट्टै। ग्रहै मोह भग्गा, जनौ सूर तुट्टै ॥५७॥

कवित्त

परचौ राव परसग पग्ग, पगगह[7] पति पुत्तौ।
परचौ राउ भुवड चड, रावा सजुत्तौ[8]।
सीहत्थै मीहत्थ गैन, गध्रव किय गानह।
घरन इच्छ घर इच्छ द्रोन, श्रोनह किय पानह।
सभरिय राज सभरि क्ला, मघन घाइ समुष लरिय।
जिमि जिमि सु जुज्झि धरनिय परिग, तिम तिम इद्रासन टरिय ॥५८॥
परचौ जुज्झ वग्गरिय वरन, झग्गरिय सुरगय।
सूर लोक सिव लोक लोक, भारत्थ कुरगिय।
बालप्पन जुवपनह वृद्ध, बडपनह बडाई।
समर राज पृथीराज बजिह, वाजि सु चढाई।
दिव दिव सु दैव जै जै करहिं, पुहपजलि अच्छै करनि।
तजि लोक लोक तन घन[9] सघन, वस्यौ देव मडलि तरनि ॥५६॥
परत सिंघ अचिन्न विरद, साई भुज पजर।
सुन हत[10] कट्ठी जीहन तर, रच्यौ[11] मुप मझर।
ते क्तार घु डलिय राम, मडलिय उल्लसिय।
राइ रहै अघघाइ जाइ, जुद्धह मल्लालिय[12]।
घन घाइ अघाइ निघाइ अरि, सत्त सुभाइ पग्त करि।

---

1 BK2 BK3 घाम। 2 BK2 BK3 तास। 3 BK1 ढुवै। 4 BK1 बच्यौ। 5 BK1 चद्दी। 6 BK2 BK3 तै। 7 BK3 पिहद्धिय पति पुत्तउ। 8 BK2 समस्त चरण छूट गया। 9 BK2 BK3 गन। 10 BK2 BK3 हित। [1]3 रच्यौ। 12 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया।

दल मलह होलि जोतिस्स[1] रह, भिरत मूर दिष्षौ सु हरि ॥६०॥
आरिण्य रान गुर राज, विप्र मुष चाह्यौ[2]।
पचाइत मण्डली लेहु, इन कोटि मनायौ[3]।
जा जुग्गिनि पुर ग्रेव रान, रष्यौ चहुवानह।
मो काया[5] बल भग सग, होइहि सुरतानह।
द्विज हस्ते[5] मडि छटो धर्यहि, मोहर जुद्ध विरुद्ध न्नि।
छिन भगु देह विंदु छटा,[6] दुष्प न करहु महात जन ॥६१॥
पानि मडलिय दान स्वस्ति, भनि वेद मन्त्र दिय।
जनह[7] जग जालप्पराज, अगह अभग किय।
साधारन[8] निर्द्धार भेद, छेदन रायह वपु।
सिलहदार दिय सत्ति सत्ति, किय देव इन्द्र जपु।
बावज्ज पायि[9] गज्जिय सस्रति, वरिर घट गोरिय सुघर।
सुनि हक्क हक्क हय गय मुरिग, सहस पच उत्तारि धर ॥६२॥
सहस पच उत्तरिय पान, पुरसान सपत्ताउ।
पहु पच्चै पतिसाह आइ, सुरतान मिलत्ताउ।
तीनि[10] वीर उज्जान मारि, अकुस गन फेरिय।
चक्रवान चतुरग चपि, चावद्दिस घेरिय।
परि सिलहदार सारग दै, गरुब पान गोरी गसिय।
उर उरन उरभि अच्छरि[11] छरन, उर[12] वरय इह व्वसिय ॥६३॥
पन्न[13] धार दिय पन्न[14] कन्न, लगिगचि कर साह्यौ।
परगु पुच्छि विय पत्ति वचि, सदेस सुनायौ।

---

1 BK2 जोति जोति। 2 BK2 BK[3] चाह्यउ। 3 BK2 BK3 सवायउ।
4 BK1 मोका रावल लग सग। 5 BK1 हस्ति, BK2 हस्त। 6 BK2 BK[3] विक्क छुटा। 7 BK2 जत्र जाल नालप्पराज। 8 BK2 सार धार निर्धार।
9 BK2 पाय। 10 BK1 तानि। 11 BK1 अच्छर। 12 BK2 उरवसि उरवरयाह वंसिय। 13 BK2 BK3 पन। 14 BK2 BK[3] पन कन।

श्रमी गयो[1] वल चद वमल, मडिय ति मान भर।
गति गयद गहि इद रूप, रति रभ सुगग रर।
मति मान विनय लच्छिय सहम[2], मोर पिच्छ केसा[3] सुमन।
ह।[4] हत मार मिट्यो[5] हियो, उडि न हंस तौ हम विन ॥६४॥

पन धार परि हार, गुञ्ज, गामार वीर रही।
स्वर्ग नारि उर[6] धारि, कह सु सदेस वार इहि।
निजरि पिम्म[7] सकरि मवर, सकर उर लज्जिय।
छल वल कलि छुट्टे न जान, जिय बाल सु सज्जिय।
तू नाम वैहरि वमल सार, धार चट्टिद विमल।
पल चारि[8] जाइ जुग्गिनि पुरह, कहिय कत्थ गिद्धनि समल ॥६५॥

इति श्री कवि चद विरचिते पृथ्वीराज रासे गौरी साहाब दानोयुद्ध
तदगर्त जालधर देवी स्थान महेश प्रति वीर भद्र जक्ष वैताल
योगिनाना संवादो नाम षोडश पद ॥१६॥

---

1 BK2 BK3 । गयड । 2 BK2 BK3 सहज । 3 BK2 केसी सुस, BK3 केसा सुस । 4 BK3 ह हम । 5 BK2 BK3 मिट्यउ । 6 BK1 उद्धारि, BK3 उधारि । 7 BK1 BK2 BK3 पिम । 8 BK2 चरिय ।

सप्त दश खंड

कुण्डलिया

जन्म जानि अतर मिलन, जुगिगनि पुर आवास।
चरण लगि वधो मरन, सब परि गहर[1] पवास।
सब परि गहर[2] पवास, जनमु जायौ जजारह।
काम भाम धमार्र पार[3], छडिय परिवारह।
छत्र धार सुरतान मीर, सिर पान पवासहिं।
करै वदना पग्ग पवास[4], जनम कह कामहिं ॥१॥

पृथु आउध फुट्टहिं, गुरज्ज[5] बज्जिय गुज्जर पर।
जनु पषान बुद रुद चद, लग्गिय दुज्जन घर।
टुट्टि टट्टर[6] सिर ओण छिछ, उट्ठिय भूमि बुट्टिय।
तुरग रत्त मन मत्त सहस, आउध[7] ले उट्ठिय।
असि नेत आवु[8] इक्कत घरिय, लरि जुज्झिय अडरित परिय।
धनि सेन साहि गोरिय गुरु[9], यति नर तुम तिन वर करिय ॥२॥

छद त्रोटक

नव[10] नन्नि जुर, जुथय जुथय।
ततथे ततथे, ततथे तथय।
असिज असिज[11] असिज जघय।
लुत्थि लुत्थि उलत्थि, पलत्थि पय ॥३॥
गज वाजि फिरक्कि, फिरै हथिय।
उडि[12] मडल लै, चडि जा, कथिय।

---

1 BK1 गद्दरि । 2 BK2 गड्रि ।3 BK2 BK3 पारि । 4 BK1 वास न जम ।
5 BK2 BK3 गुरज । 6 BK1 टटर । 7 BK2 BK3 आयुध । 8 BK1 आवद्ध क्कत । 9 BK2 गरुवति । 10 BK2 BK3 नवि । 11 BK2 BK3 असिर्फ असिफ । 12 BK2 BK3 उड ।

सक माल सुवाल, हलक्कि जमा।
करि घाइन दाइन, भाक भमा[1] ॥४॥

कुण्डलिया

विवि[2] कुंडलि अश्रुति थपिय, फिरि दच्छिन गुरु राज।
सर लग्गो[3] बछयो मरन, स्वामि स लभ्यो काज।
स्वामि सलभ्यो काज मरन, घायो सन द्रोनह।
वह दल शस्त्र समस्त सबै, बड गुज्जर श्रोणह।
उर चप्पो वट्टार मेच्छ[4], हत्थह रन मडलि।
विप्र जोति नृप होति अश्रु, ति थप्पिय दिव कुण्डलि ॥५॥

कवित्त

हालाहल विचरायौ[5], गिद्ध जवुक कोलाहल।
रुधिर वुंद अतरहि, अंत अम्मर डोलाहल।
बार बार गुन धुकि हुनि, अवननि भाक भाइ।
हा! बलिभद्र सभद्र सिंधु, रुध्यो रन साईं।
सग्राम वत्त रम्मिय कहै, लग्गे गात दुराइया।
गुर नाह गरन गोरिय धरा, जहौं तेक उचाइया ॥६॥

रन रत्तौ दलभद्र कहा, पावस प्रति लग्गौ।
तू धीर जा धीर भीर, रावत ते भग्गो।
हु दुढारी ढाल हाल, कट्टौ सुरतानी।
बड गुज्जर दाहिमा बोल, लग्गे उरतानी।
प्रारम्भ राज पज्जून सुव, बट्ढारी बट्ढे सुभर।
असवार[6] सनाह असवत अध, मनु विवध वटी निधर ॥७॥

अग्गे वघे वियारि[7] पछे, जोवन दव लग्गि।
हय गय नर आररिय, भररि गोरिय घर भग्गी।

---

1 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 2 BK2 BK3 द्विव। 3 BK2 BK3 लग्गि। 4 BK1 मेक। 5 BK2 BK3 वित्तयो। 6 BK1 असवीर। 7 BK3 वियारइ।

पग छुट्टत पतिसाह पान, पाना पुर मानी।
हिंदवान पे हत्थ मैंद[1], अग्गै सुरतानी।
मिर दाम रिसान निसान, पलि सुविहान असमान मति।
हलकि गई चहुवान की तू, पठान अगवान पति॥८॥

छंद [विधु माला]

{लहु गुरु छह सतारेह, मात्रा एहा अक्षर अदोई।}
{पग पत्ति सुनदा नाग भनिंदा, विधु माला छदोई॥}
धूरम्मा वाले, ममरस झाले, सिंधुर ढाले कर बेहाले उच्छाले।
गोरी घर काले, अस किय ठाले, परि[2] बेहाले तन हाले॥९॥
उर धरि सुरतान, सै सुरतान, तुरकान भुज भान।
टहक्क[3] तिमान, बजि दुनान, असि झननान[4] सुरतान अग्गे॥१०॥
चहु त्रिय चहुआन, तेक उवान, किय घममान असमान।
दुहु दुहु मरदान, झर झर थान, अम किय ठान उर पान॥११॥
आवद्ध तुटितान, मिलि वर ध्यान, जानि विमान मल्लान[5]।
॥१२॥
धम धम लत्तान, बहु गत्तान, राजा भान सुविहान।
नर त्रिय तपतान, न्हसित पान, रहसि रिसान विरभान॥१३॥

कवित्त

उवे सेन आलम्म[6] आइ, आलम्म[7] सपत्ती।
है[8] हिंदू आलम्म[9] आइ, जदु उप्पर कित्ती।
द्रवइ द्रवइ अकुरि धरिय, वज्जीय झर झर[10]।
नरिय नरिय विथ्थरिय[11] हरिय, जम्मन आवन घर।
रन राम दुर्जोधन भर भिरन, वालमीक व्यामह करिय।

---

1 BK1 सेद। 2 BK1 पर। 3 BK2 डह डह, BK3 डह। 4 BK1 झरतान। 5 BK1 मरस्थान। 6 BK2 BK3 आलंम। 7 BK2 BK3 आलम। 8 BK2 यह, BK3 ह। 9 BK2 BK3 आलम। 10 BK1 झर। 11 BK2 वितुरिय।

हुइ होहिं आदि हिंदुव तुरक, मुक्ति मग्ग जितिय धरिय ॥१६॥
इकु नव सहस नरेस, इकु त पधार ततारह।
इकु गोरिय कुल सबल, इकु त मटल परिहारह।
दुवे सेनपति सूर पूर, हक्कारह ठाइ।
इकु मभरिय महाइ, इकु त पुरमान सहाई।
मच्छ मेच्छ भेच्छ छुट्टिय, विस्सर दुसर तेत लग्गिय सुभर।
अइ उदर वृत्ति लज्जिय सवर, दुहु नरिंद पु ट्टिय सु मर ॥१८॥
पूब पान तत्तार पूब, मारु मह नम्मी।
पूब पान आवूव जेन, मोघ्यो रन गम्मी।
पूब धर्म स्वामित्त पूब, सिर तेक प्रमारिय।
नाहर राइ नरिंद परिय, पप्परिय पहारिय।
अहि हार हिंदूताई सु दिन, वह भोरी वह[1] पूब हुत्र।
धारक तेज नीसान धुरि, सुन्न सेन मंडिय सु भुव[2] ॥१६॥

शाटक

आचिन्नोइ[3] अचिव्ज राजन्न रन, भूपाल भूपालय।
भाराक्रात निवृत्त धन्न धरनी, निर्घातय घातय।
धाराधार[4] सु धुक हुक धरनी, सुव्वीर[5] सुरतानय।
गोरी सैरति[6] चार तु ग तरुनी, ताराय तारायन ॥१७॥
दवी दत व्रसत[7] धेनु धरनी, वूहीय वूहायन।
ढाल ढाल सुढाल माल उल्लल, उल्लायन[8] भायन।
हाथ हाथ सुहाय हत तुरंगौ, जाटी[9] जटा लूटन[10]।
लूटालूट पवग पग पबर, पायामि[11] पायाइन ॥१८॥
अती अत सु अत राइ उडनं, चुगाइ चचु पुट।

---

1 BK3 एह। 2 BK1 भव। 3 BK2 BK आचिजोइ। 4 BK2 BK3 धोरा।
5 BK2 BK3 सुवीर। 6 BK1 सेरति। 7 BK1 उसत। 8 BK2 उभ्रायन।
9 BK3 जारा। 10 BK2 जू न। 11 BK3 पायामि।

गभी रभ सुरभयाइ त्रग, भीव भीयव भाइन।
चावड परचड जैत छत्र, मेच्छ समुद्र मही।
नेज नेज सलेव नेत फिरिय, लब्भाय[1] मुत्ति मही ॥१६॥

सो रान बड गुज्जराइ सिग्यि, ओना हिता ओनय।
सा सूर धर डडि गोरि हि घर, घर नाभि जगी घर।
ता कूल तब क्त कूल कलली[2], वाना हिता वानय।
सा वाना सुनि मेच्छ इच्छ उवन, आरभित अम्मर ॥२०॥

वीभच्छ पुडीर राइ पानस रस, मिंघा दिन रावर।
पाना पान जमान जोति उभय, ईच्छानि ईस बर।
बाहते[3] कूरम्म पम्म पलय, जामानि जहे दल।
हे हे कति हहति उन्नि निरय, नी कपिनाय[4] पुर ॥२१॥

तो सक्ति गरजति साहि पलय, ह्यमति देवप्पुर।
जगी जग विछुट्टि छुट्टि भरय, भूमी विह्वा राइन।
चोर[5] घोर स चोर पानि उडिय, चदानि आयासन।
सा चौर हह हपि[6] चपि भ्रमिय, एक घटी जुद्धय ॥२२॥

सा जुद्ध प्रथिराज राइ इक्व, मेच्छाइसौ मत्तय।
सन्मुष्प पुरमान पान भनिय, हिंदु च हिंदू दह।
वाहि बाह सहाव गोरिय घर, क्म्मान भू नप्पिय।
॥२३॥

कवित्त

मन्न मीह परिहार नाम, रानी सु दिवानी।
दल सोमन मुरतान श्रद्ध, अगह[7] अगिवानी।
ता ईधर ढिल्लगी सार, हिंदुव सिर वुट्ठे।

---

1 BK2 BK3 लम्भाय। 2 BK1 लत्रली, BK3 कूनली, 3 BK3 बाहति।
4 BK2 उर्न्नीनी कपिनाय। 5 BK2 BK3 घोरद्दा रस चोर। 6 BK2 ह चपि।
7 BK1 अगहद, BK3 अमह।

अट्ठारा लोह कच, ढारे तु[1] -स्से।
विहत्थ कराई हत्थ री, बत्थराज घालन कहै।
मुन नस मुजाइन तजि तुरिय, तक्कि तक्कि सम्मुह रहै ॥३६॥
तक्कै वह पृथिरान रान, तक्कै वह तोरन।
दिट्ठो स करूर मिले, मरदा मुप जोरन।
वाईं दिसि उनि आइ, चपि चु गिल उच्छट्टिय।
सारगी मारग भीम, बन मज्झि उयट्ठिय।
चौहान कमान करप्पि कर, अगिवान ढट्टर बट्टिय।
लगि थान पयान कुस न[2], उड़ि चरनि कै भाल्लय राहय ॥३७॥
वीयवान सिंदूक मध्य, सुरतान जान बाह।
वहबल पा ढल्लरिय सीस, सिघ्घर समेत ढाहि।
त्रि लयवान ताक्त बोहि कहि आलम गोइ।
वेद वान पुरसान पान, सुप मद्धि समोइ।
पचमै धुकात धरनिय धराक, भरकि[3] पुट्टि गोरिय सुभर।
अस उच्चवाह अस्तुति कर, पूब पूब हिं सुहर ॥३८॥

छद मोता दाम

धरै गुन पच उभै इक तोन। रह्यो रन राज गुरु जिम[4] द्रोन।
सुरगिय भूमि अन्त सुश्रोन। तमी तम[5] तेक प्रति घट जोन ॥३६॥
समी सम जुद्ध विरुद्धनि भोन। द्रवै पुहपजलि अम्मर[6] गोन[7]।
इमि इम[8] अच्छरि कच्छरि ढोंन। वदी वर गिद्धनि समर दोन ॥४०॥
मुरी घर गोरिय माहि अदिट्ठ। पराक्रम राज पृथ्वीपति रुद्ध।
॥४१॥

कवित्त

जबर[9] जग सुरितान पान, उर वान बिछुट्टिय।
भूमि बाहर इराक घोर, जबूर उच्छट्टिय[10]।

---

1 BK1 तुर। 2 BK2 BK3 कुसन। 3 BK1 भरिक। 4 BK3 जिमि।
5 BK3 तमे। 6 BK3 अमर। 7 BK2 BK3 गौंन। 8 BK2 BK3 इमि।
9 BK2 BK3 जबल। 10 BK3 उच्छिट्टिय।

चमर ढार चावग्ग[1] ढार, ढलक्तह भगिय।
छुट्टस्थान हुवक्क मक्कि, सकर पन जगिय[2]।
कहि चु गल उ गल घरइ, भ्रमि जुग्गिनि पुर[3] त्रिय निमल।
हिंडोल हेम सनोगि गृह, चमर डारि गिद्धिनि समल ॥४२॥

कुण्डलिया

हा हत[1] न क्रिन उस पिनि, गिद्धिनि समल ममोल।
चर मर दिप्पिति तनु क्रियौ[4] नग मुत्तासु अमोल।
नग मुत्तासु अमोल राज, चरनी उर चप्पौ।
यह स्वामी सदेस अमल, गिद्धिनि मुष जप्पौ।
उदर अर्ध आरम्भ बहहु, भारथ की कथह।
चमर चपि उर तरनि सीस, कढ़ढति हा हतह ॥४३॥

छंद मोटक

पति व्रत्त सयोगि सुनत सतो। समलो[5] उर गिद्धिनि धाम मतो।
अहि कन्ह[6] सुह दिन कदल भी। घाट इक्क घटो मुह रव्यिन ज्यौं॥४४॥

प्रथम पृथु तत वर[7] कथय। पुरि राज वधू भव रान सत।
दिसि वाम चढी पुरमान अनी। तिन कै मुप राजर मिध[8] अनी ॥४५॥

कर सिंध जु नाग मुषी निकसी। पहिलै रस रुस्तम पान नमी।
नस ही प्रभु जवुव कै जर कै। धक हो धक इक्क परयौ धरकै ॥४६॥

गरु वौ पग पान पुरेम गिल्यौ। पग पिन्न रह्यौ रण मज्झि मिल्यौ।
रह्यौ पग पेलन पान जहा[9]। तजि जीन जु वानि[10] जिहान तहा ॥४७॥

पग सेलहु लेह मतै हलकै। गिरिजानद मैंचह भुजा छलकै।
उर पार पढे उर ते निस्से। जनु पल्लव केतुकि के विकसे ॥४८॥

---

1 BK2 BK3 चाविग्ग चमर दारत वक्कर भगिय। 2 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया। 3 BK2 BK3 "पुर त्रिय" पद्यारा छूट गया। 4 BK2 BK3 कियउ। 5 BK2 BK3 समलो। 6 BK2 कहिद, BK3 कन्हि। 7 BK2 वथौ। 8 BK2 BK3 मिंद सरनी। 9 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 10 BK2 BK3 वान।

मुर पच हजार ति लुथ्थि परै। दम तीनि स्वध उठत लरै।
इति कथ्थ कही ममली सरसी। पुन गिद्धनि यान कहै रहमी ॥४६॥

कुण्डलिया

जो रम रसनन अन्न दिय, अधर दुराइ दुराइ।
से दुन कन कन विक्स्यो[1], सपिनु[2] सुनाइ सुनाइ।
सपिन सुनाइ सुनाइ, सुच सुचिय लाज मनह।
सुथल विथथ थल चपि, नैन नटि नटि सप नह।
जियन मरन[3] मिलि मन[4], कह्यउ जोवन ही रण वस।
मो ही जोव सब मडि है, सबै प्रीति मदन जु रस ॥५०॥

दोहा

सुरति रैनि जनिय[5] धुव, वयनि रमै रति रग।
सुमति मजोगि आलिंग नह, भव न चित्त अति भग ॥५१॥

मुडिल्ल

मै निनय विनय[6] करि, नर सच्चयउ।
कनवज्जिय वसि करि, नर पच्चयउ।
लपि लपि नैन चैन पिय मन।
घर घर धक्कि[7] परी, नहियन ॥५२॥
छिन्न[8] छिन्न क्सिल, तन तट्टी।
मन जोइन भोइन, पर नट्टी।
अञ्जुय गढ पढ सुव, अति छुवल।
भोजन नाहिं करावत, तट्टुल[9] ॥५३॥
रज रुच्यौ[10] गिद्धिनि कह्यौ[11], सुद्धि सचौई चत।
समली स्याम सुलच्छिनी, अञ्जु, कह्यौ नृप अत ॥५४॥

---

1 BK2 BK3 विक्स्यउ। 2 BK1 सपिन। 3 BK1 मरण। 4 BK1 मन। 5 BK2 BK3 जनियन। 6 BK1 विनौ विनौ। 7 BK3 धुकि। 8 BK3 छिन छिन। 9 BK2 BK3 तट्टुल। 10 BK2 BK3 रुच्यो। 1 BK2 BK3 कह्यो।

हू जड तू बड गिद्धिनी, तैं मिलि हड्ड[1] रु मस ।
वीर विरुद्धिय जुगिनी उड तन सुस्यो[2] हस ॥५५॥
हे बिल्लिनि लिल्लिनि सु गज, घज सम ववलिय बिंद ।
उपरन पल पप्पिनि परै, अलप जलप यह निंद ॥५६॥
उडि पपीनि अपिनि निरषि, अपिनि[3] अपडल लगि ।
घटिय इक्क पच्छे प्रकटि[4], वीर विभाई जग्गि ॥५७॥

इति श्री कवि चंद विरचिते पृथीराज रासे गोरी सहाबदीनयोर्युद्धान्तर्गत
योगिनी चिहद गृद्ध रूपेण सयोगिता प्रति सुर समूह पराक्रम वर्णन
नाम सप्तदश षंड ॥१७॥

1 BK2 हड्डु र । 2 BK2 सुरयो, BK3 सुक्रे । 3 BK2 अपन । 4 BK2 प्रकट ।

अष्टादश षंड

दोहा

त्रय जु समर गिद्धिनि समल, कइ पल[1] पत्तिय सःइ।
चवथि कक जुद्धह सु विधि, आइ कहन विभाइ ॥१॥

कवित्त

डवरू डकनिय डसन, इक्कै अधरानन।
साम तिलक दच्छिनिय, कन लबे कना जन[2]।
ऊद्ध[3] केस रत्तलिय नैन, पिंगिय कुच नगिय।
पै अलग्ग अलग्ग चम्म अम्बर कढि ढक्किय।
पुस्तक सु प्रश्न वचै, विहसि रान रवनि मटै श्रवन।
वर वाम विरम्मौ[4] पच सौ पुनि सु दरि[5] जुद्धा वरन ॥२॥

छन्द भुजंगी

इय[6] जुद्ध हद्द, जु जपै विभाई। जहा मेत छत्र, पतै पत्तिमाई।
जहा सेत चौर जु, मोर मिमाही। जहा मेत वैरप्प, सिता गज्ज गाही ॥३॥
जहा सेत जड्ड, गजमुत्ति जूर। जहा पखरी सेत, मौज हिलोर।
जहा सेत तास, सिता नेन झडे। जहा सेत दतीनि, आनद्ध झडे ॥४॥
जहा सेत आरम्म, आरम्भ सेत। जहा सेत तानी, सिताप्री वनेत।
जहा सेत सिट्टक्क[7], ता लाग वान। जहा सेत ढाल, जु आलम्म गाज ॥५॥
तहा नप्पि वाजी धरै लाज राज। अपै पान सुरतान वे घन अगाज[8]।
॥६॥

---

1 BK2 पद्द। 2 BK3 जुष। 3 BK1 उधु। 4 BK2 विचम्मौ। 5 BK3 सुन्दर।
6 BK1 त्रेय। 7 BK2 BK3 सिट्टक। 8 BK1 समस्त पद छूट गया।

कवित्त

वज्र पाट निर्घात धरनि, किय अंबर तुट्टिय।
दरिया दरि किय मथन मद्धि, गिरिराज अहुट्टिय।
हनमत द्रोन उपारि आनि नच्यो[1] कि वीर घट।
दल धरक्कि सिव माम बीस, भुज लरति मान भट।
दल धरकि धरनि मिप्पर धरै, दैयै[2] कि किहिं उप्पर परै।
टक्किनिय कहै तुव कत इमि, सुल्लितान अस्तुति करै॥७॥

कुंडलिया

जिहिं बध्यौ[3] सुरतान[4] सजि सो रुध्यो[5] रन साप्प।
गुरु गुस्तान सुर्तानिया, वीर विभाई भप्पि।
वीर विभाई भप्पि सैन, नच्यौ पतिसाही।
गज कधा आरोहि दिट्ठि, उट्ठि[6] सिरि ताही।
गजरान उज्जान समर, तक्यो करि मध्यो।
सो रुध्यौ रन राज जिहि, सु पतिसाह जु बध्यौ॥८॥

कवित्त

चिहुटी वान ति छुट्टी दिट्ठि, उत्ती मुठी भिन्नी।
कछु धत्तारी धत्त सगुन[7], ज्जूरि विट्ठ न्नी[8]।
आवद सित माम कछु, दिन अट्ठा चन्नी।
तह टोप सहित मिंदूक लुट्टि[9], भर भय रह भूमी।
अरि अरिय वदि लग्गिय कहर, धर धमकि मुच्छिय धरह।
इक्तीस पान पुरमान सो धरनि[10], राज गहि गहि भरह॥९॥

निहिं लइय चोरि राठौर पुत्ति, भर लरन मरन लप।
लेहु वधि हिंदू हिं तुरत, वाराह करन मप।

---

1 BK1 नच्यो 2 BK2 देय 3 BK2 BK3 बध्यो। 4 BK2 BK3 सुरितान।
5 BK1 रुध्यौ। 6 BK2 BK3 उट्ठा सिर। 7 BK1 सगुनि। 8 BK1 गिट्ठ न्ना।
9 BK2 लुट्टि भय रह भूमा। 10 BK2 BK3 स धरनि।

हत्थ मढि आरज्ज लई, मानिनि मही[1] छीनी।
जै वदी[2] जरपइ तेज, [3]तिम उप्परि[3] कीनी।
वेदार हत्थ दीना दिया, अब लभै पच्छै सु स्त्रिय।
इक्तीस मसद विसद भिरि[4], लेहु लेहु रानान निय ॥१०॥

पूजा पज पहार वलिय, वक्ट बघनौरो।
जुग्गिनिपुरिय सहाइ, देव देवर रन बौरो।
दहिया जगलराइ चंद्र, सेनापति तारौ।
भारिय भारथराइ कक, करि बार[5] उच्छारौ।
टडरी[6] टाक टाका[7] चपल चावद्दिसि रप्पहि[8] नृपै।
देव तिय गरव[9] चहुवान, प्रभु विभाई भोजन[10] जपै ॥११॥

लोहानौ आजान बाहु, पानि प्पति गड्डा।
लहु बाही लहु बाह, वीर वड्डा ही वड्डा।
पानी पन[11] सु अन्न धन्न[12], वस्तर वामदे।
हय हस्ती वे वास ग्रास, उप्परि गासदे।
अग्गइ स्वामि मानाह गहि, चामुंडा बेरी भरत।
विब्भाइ नेत भारत्थ भर, है हीना अग्गै लरत ॥१२॥

ह रतिबाह सोभति राव, जा जा गन बट्ठे।
गन उप्परि ढहि पड्यौ, जानि टुट्टि जिय कट्ठे।
कमानी[13] कालक विरद, बाही सिर उप्पर।
पट्टु पीनगी ढाल सूर, साधी जु गन प्पर।
सुरतान काम सद्धन समर, राज सत्थ जहाँ पनु।
अरि बान अबोलो बोल तो, बोलै टकिनि आह मनु ॥१३॥
करनराइ कुंडली समर, रावल वज्जीर।

---

1 BK[1] मह। 2 BK2 BK[3] चदा। 3 BK3 उप्पर। 4 BK1 भरि। 5 BK2 BK3 वर। 6 BK1 ठटरी। 7 BK2 BK3 चाग। 8 BK2 BK[3] रप्पैहि। 9 BK2 BK[3] गरु। 10 BK2 BK[3] भोयन। 11 BK2 BK3 पन। 12 BK2 BK[3] धन। 13 BK2 कमाना।

अनहिल पुर आभरन, राव राय तनहि[1] भोर।
धोरे धुम्मिल्ल केम राव, कनर[2] कनग्गै।
कूम्मी बलभद्र बघ, आरज नीटग्गै।
सुरतान[3] ढाल ढु ढत फिरै, रनत्र जित्ति प्रथिराज लहि।
टनिनिय दुसह गुज्जर समर, बेली निद्र म ऊप कहि ॥१४॥

दोहा

दह सत्ता सावत रन, दह तिय एक समग्ग।
कहर कलग बल्लह सुनौ, जह मनोगि नरिंग ॥१५॥
पच[4] जहा गुरु पच लह, मत्त विमारेह वड[5]।
टनिनि टवक जु डह डहै, रनह विहंगम छन्द ॥१६॥

छंद त्रोटक

एवथ मु अत्थ अमी अमर। गल करथनि वत्थ गनी गमन
भरलार निहार सुभार वन। भुकि भुम्मिय भुम्मि मत्थ रन ॥१७॥
वर धार धमकि धमकि रन। मिलि अस्त्र[6] असुर प्रहार रन।
पट्टमान महम्मद आर रन। जग्गि जग्गिय[7] पान सुधार रन ॥१८॥

छंद भुजंगी

आलील आवूत पानय। मारीग्पा सुरतानय।
पैरोज पान पुमानय। गु जारि गाजी पानय।
ममरेज पा सुलतानय। तुरक्मा ताजन पानय ॥१९॥
असिवाह[8] ईसफ पानय। नारिंग[9] तोमर पानय ॥२०॥
चहुवान गहि पहिचानय। अविहारु भूपति सानय।
असि आलूपान सराहिए। कसि कोस काम क्रिपानए ॥२१॥
घर पय रेन मचवी। महमूद जेन जुनेदवी।

---

1 BK1 तितिहि। 2 BK2 BK3 कनर कन र वै। 3 BK2 BK3 सुरितान। 4 BK2 BK3 जह गुरु पच वि पचलहु। 5 BK1 चड। 6 BK2 BK3 अस्त्र रसू. 7 BK2 BK3 जगिय। 8 BK1 असवाह। 9 BK2 BK3 नारिंगी।

विपरीत भैरव मीरने। गहिमान पान सु घेरन ॥२२॥
अलि आलू आलम नाम की। सकि स्वामि धर्म सुनाम की।
॥२३॥

दोहा

अलिग जम्म आजम सुबन, भिरि भिरि हिंदुव मेच्छ।
आलम बिनु[1] हिंदु आलम हि, माहन मह गहि इत्थ ॥२४॥
नारिंगा भर भूत नभ, अलि गल आलम पान।
पिति पिरोज नौ राजन, सुवर चप्पौ चहुवान ॥२५॥

कवित्त

वान एक बारीह पान, ढाह्यौ धर उप्पर।
करनराइ कलहत नप्पि, भिद्यौ[2] सिर सिप्पर।
अहट्टी हम्मीर वीर, विरच्यौ वारनि वर।
दमसत मसलिग महत आवलि कर उप्पर।
माधा लिंग सिंधु[3] पट्टन पता मति सुमेर सुरतान मम।
टकिनिय कहै सजोगि सुनि, सचु[4] पयपै सुमति हम ॥२६॥

छंद त्रोटक

डह डहति डम्मर[5] डकिनिय। कह कहति कूकति जुग्गिनिय।
तह तहति तेक तरगिनिय। लहलहति बान विरुद्धनिय ॥२७॥
रह रहति बज्जन वज्जियन। वह वहति श्रोन पलक्कियन।
धर धरति सिर विन नच्चिय। पर परति पजुलि अजियन ॥२८॥
कर करति कलहन कतियन। असि राज राजन छज्जियन[6]।
कसि माह मार मसदय। इति पार रच्छति छदय ॥२९॥
उडि हस हसनि इदय। नत अच्छरी प्रभु बदय।
॥३०॥

---

1 BK2 BK3 विन। 2 BK1 भिपियो। 3 BK1 सिक्क्खु, BK3 सिंक्धु। 4 BK1 सच्चु। 5 BK2 BK3 डमर। 6 BK2 BK3 छुजियन।

छंद हनुवत फाल

अति अन्त कालनि अथि। सुरतान मुच्छिय गच्छि[1]।
मिरि तेम जिनै[2] अलच्छि। परि भूप आवलि कच्छि[3] ॥३१॥
असि ममद पान कम्मान। निय मन पिंग्गे चहूवान।
परिवार पारस जुझि[4]। अम दैव गति अवुझि[5] ॥३२॥

कवित्त

इक्तीमा आमद मारि, मासद महा भर।
दम मत्ता मावत सूर, जजुरिग धगधर।
द्वै थाया[6] कलदृरी नोड, जीवत उप्पारिय।
अग्गामी अगिवान राव, वत्था पत्थारिय।
पनत्थ परदार दिड्ढ, मैं भग्गा भगाइन हरौ।
मावन वर्गि पचमी[7] पचस्सर, स्वामी मेच्छाइन हरौ ॥३३॥
अनाचार वर विप्र पगौ, पातक हु जुट्टिय।
हाहुलि राइ हमीर स्वामि दोही करि नट्टिय।
शिव केसव करि भेद भेद, करि वेदह निंद्यो।
पच तत्त प्रभ एत सत्त, तजि साहस सद्यो।
पहु पगुराइ पुत्तिय सुनहि, मुत्ति विलवल कत मिलि।
पट माम वीम वामर जिहत, लग्गि मोम मडलि[8] सुहलि ॥३४॥

छंद त्रोटक

दहवा हत चित्तह हव विह। डवरु डहकत तमकि निह।
भवरी वर हमनि हम विन। पुट रत्र दिमा पहु प्राण जिन ॥३५॥
आल अल्लिनि अल्लिनि सो हनिय। भुव मडल पडकि नाव सिय।
त्रिगत त्रय मत सु मन्त्र मन। छल ही छल हत सुहत हन ॥३६॥
पदमा पदमासन वाम नय। उडि सिद्ध अयासन आसनय।
॥३७॥

---

1 BK1 अच्छि। 2 BK2 BK3 सीम जिने। 3 BK1 कच्छि। 4 BK2 BK3 नझि। 5 BK2 BK3 अवुझि। 6 BK3 द्याया। 7 BK3 पचमि। 8 BK2 मडल, BK3 समडल।

कवित्त

उग मयोगिय आम जीव, जनगि मजरि गत[1]।
पनरीटह मारि इदु गन, मिघ भुग पत।
अप्प अप्प अप्पयन, मपन जमन दिट्टि अप्पन।
निभय गत गत थान, काम किन्नौ क्रम तप्पन।
चिंतवि सचित टाकनि उड्डिय, पर परत पर पार गहि।
मचरिग जुद्ध मानत दम, उग्रति वघ कविचद कहि॥३८॥

गाथा

पत्तिय गैण[2] विभाई विचिय, चातुर्थि[3] ममर मा वुद्धो।
पचमी कलह गुरणो कथिय, कवि चद मारनिय[4] वध॥३६॥

कवित्त

आलमपा इक वान वान, इक्कै भुव भैरों।
इक वान नारिंग[5] नेन, मगिय कुल वैरों।
उग्र चोर दस नान नेज, नडे भरभोरिग।
घट न और अगुरिय ताप, तोरन तन तारिग।
हय डोल लोल लच्छि न, फिरग कल कमान कु डल कलह।
पारिधि विलोइ[6] सुरतान दल, जदौ जाज अतुलित वलह॥४०॥
अतुलित महि मद महि मसद, असु असनन पत्तिग।
सतुलित सारथि कर कमध, जट्टर विहत्तिग।
अतुलित मीरा मिहिरवान, धुक्किय नर नप्पिय।
धर परत सावत मार, मारह करि हक्किय।
जग्गियो जाज आवाज सुनि, सजि परत गैंवर घटिय।
हय हय सुसद त्रिभुवन ति, तु[7] रविमान कुल ठह छुट्टिय॥४१॥
परिहार पीपो प्रसिद्ध, सुरतान जु दिट्ठिय।
विहर कु त सामत अत, अन्तार असु नट्ठिय।

---

1 BK3 गत। 2 BK3 गेण। 3 BK1 चातुर्थ। 4 BK3 सावि। 5 BK नारिंगी। 6 BK3 विलाद। 7 BK2 तर विमान।

पति पमाइ पडउ तुग्ग, हक्कि हक्कारिय।
उलहले धरि कुन्त चम्म, चदन उच्छारिय।
चलि विषम सुपम स्वामि सुम, हत हत राज रच्यो रनह।
वाह वाह हिंदुन तुम्ब, समर शस्त्र टुट्टिय तनह[1] ॥४७॥

दुमामन दिट्ठी पधारि, अदडो[2] परि पारिय।
वेम साहि उर चपि जोर, बबरि उच्छारिय।
रे हिंदू रे मुसलमान, मिरि मिरि पुक्कारिय।
अन्न अन्न निय जुझ सुझ, नहि दिनसांन भरिय।
इमि दल समुद सुरतान कौ, चहुवान सेना भिरिग।
किहि टुट्ट मुंड गज झुंड, ढहि धार धार किहि दुदि परिग[3] ॥४८॥

घन घुरल गोरिय निसान, पेरोज पान धपि।
तिहिं ठट्टर तर तेग वेग, डारिय झनकि झपि।
पूत्र पूव साहिब सहाव, सामान सुटुन्निय[4]।
गहि पप्पर परिहार अश्व, सम सम दो अन्निय[5]।
निद्धग धाम मज्जि महर, हट मास मिलिग रसन।
वज्जिय बनिस्क कर कुच्छरिय[6], मनु पारिक पलनह कमन ॥४९॥
आनन आ जवूर वीर, बिद्धिग वर टुट्टे।
तब बस्ट बबरी[7] राइ, केहरि कर छुट्टे।
गोरी गय गुंजारि हालि, हत्थह हक्कारिय[8]।
छल पच्छे उच्छारिय बाघु, लग्यौ जबरारिय।
गहिनाइ गरन गैवर मुरिय, ढाल हाल आलम डरिग।
बलि इष्ट बलिय ओनह अवन, पति पवित्र कीनीय धरिग ॥५०॥
जूनानी चित्रकूट राम, रावन भर भारी।

---

1 BK1 सुतह। 2 BK3 अडो। 3 BK2 BK3 इस कवित्त में अन्तिम चरण छूट गये। 4 BK2 BK2 सुटुंनिय। 5 BK2 BK3 अनिय। 6 BK2 BK3 कुच्छरिय। 7 BK2 BK3 वघनौर रा॰। 8 BK2 हहरारिय।

समर सिंह करि आन, सीह[1] लग्यौ ग्रह धारी ।
दान मान उद्दं न गरुव, गैंवर मुरि हल्लिय ।
आवग्रह उग्रहिय राज, द्युति तुबर पिल्लिय[2] ।
पर पुट्ठि दिट्ठि हनि[3] इन पिशुन, बार बार आयौ इहै ।
सुरतान पान पनरि बहि, गज हत्थह जीवत रहै ॥४६॥
अलि ग्रहौ सुलतान[4] टक, ठट्टरी टुक्कि दल ।
धक धाम धररिय परत, वीर रहि हिं विरद बल ।
हम[5] गरुव गोरिय गुमान, भुव बल उप्पारयौ ।
स्वामि काज सग्राम धाम, धर तिल तिल डारयौ ।
सुरतान अग्रह कियौ, सु ग्रह सभ्‌ न सभु दिप्पयौ ।
असमान असपति इग्गिय, कसि कसि कदल पिप्पयौ ॥४७॥
कासमीर कामरूव[6], टकह उप्पारयौ ।
टुकराय हम्मीर धीर, पच्छै पति पारयौ ।
साहि सब गिल करित तेक, डडरिय न डुल्लिय ।
छत्र छत्रपति छत्र अश्व, भूमी मह[7] मिल्लिय ।
आलम्भु लब्भ[8] आलमन हुव, अभ्रन असमान हि धरत ।
रम्‌ रासि रसत जाति गति, जौ न सूर इत्तउ करत ॥४८॥
पूरि पैज[9] पहार देव, दहिया दल पित्तह ।
वै छम्मी उच्छाह[10] धीर, रानन इत उत्तह ।
चाइ गरुव चहुवान राइ, देव चौ[11] दीवानौ ।
परत घाइ अघ्घाइ सरन, तक्यौ[12] सुरतानौ ।
वड धृत्ति गत्ति छत्रिय तनी कुल घट बढि न बधान हुइ ।
भडार विधाता मुनति किय, लूटन हार सु लुट्टि सुइ ॥४६॥

---

1 BK2 BK3 सीहि । 2 BK2 तबर पल्लिय । 3 BK2 BK3 हन । 4 BK3 सुरतान । 5 BK2 हसम । 6 BK1 काम रू । 7 BK2 BK3 महि । 8 BK2 BK3 लम्भु । 9 BK2 BK3 पज । 10 BK2 BK3 औच्छाइ । 11 BK2 वा । 12 BK2 तक्यो ।

तयै राजगी राज उपायु, दीनौ हम्मीरा।
अहट्ठी[2] गमीर राव, पुहकर पुह[3] मीरा।
स्वामी मा चडाह स्वामी, अट्‌डा सन्नाही।
ना जानौ मैं मेच्छ तेक, कीमी[5] सावाही।
रे गनपूत गनग धर, क्लतु भान रथ वोटरहि।
मडलह भेद भेदिग भुवन, आलोकह[7] मत्वइ सु कहि ॥५०॥

छद भुजगी

परं मेच्छ पुडीर, मिलि मास भौरे। गडे गात गोरी, जरे हिंदु गोर।
परे सहस सै तून, खूरम्म वाले। स्रे हत्थ डुडु, मुडे[8] विहाले ॥५१॥
परे पच सै पच, चहुनान ऊने[9]। मुरे मोरिया मव्व, भइ नाति सूने।
भिरे देव दानी, मनौ वेर चीत्यौ। मुरयौ सेन चहुवान, सुरतान जीत्यौ ॥५२॥
परे सहस मोरह, मवे सेन गोरी। रहे नानि हिंदू, तुरक पेलि होरी।
॥५३॥

दोहा

दियौ देवल सम दयतु, रण ठट्ठो चहुवान।
फिरि घेर्‍या गोरा[10] सैन, मनहु छत्रनि भान ॥५४॥
नहै मुच्छ मुह अगरे, वे बुफार फरजद।
वाहु पान पुरसान की, सिंगिनि अप्फि नरिंद ॥५५॥
सहि न बोल सम्मुह हयौ, वान पान पुरसान।
दुहु दुज्जी पुज्जी घरी, दिन पलट्यौ चहुवान ॥५६॥
दिन पलटत पलट्यौ न मनु, भुज वाहै सत्र शस्त्र।
अरि भिंयो मिटे कमचु[11], लिप्यौ जु धाता पत्र ॥५७॥

अनुष्टुप

विधात्रा लिखित यस्य, न त मुचति मानवा।
म्लेच्छ मूर्पस्य हस्तेन, ग्रहण पृथिवी पते ॥५८॥

---

1 BK1 राहु। 2 BK2, BK3 औहट्ठी। 3 BK2 BK3 पहु। 4 BK1 अहु। 5 BK2 कसी। 6 BK1 कलक। 7 BK2 BK3 अलोर। 8 BK2 BK2 मुडै। 9 BK1 जाने। 10 BK2 BK3 गौरा मरान। 11 BK2 कवनु।

कवित्त

जिहिं करिनर श्ररि जरहिं, जरयौ निय नरि तिहिं[1] कढ़त ।
जिहिं सत्ति सुप मकत्ति, मकति पचित ढक छुटित ।
जिहि बाणावलि बाण[2] प्राण, कपहि मद सिंधुर ।
तिहिं मद सिंधुर सु डि दडि, क्यि छत्र नृपनि वर ।
तिहिं सुप सहाव सम्मुह रहि, न तिहिं सुप जप्पौ[3] गहि गहन ।
पृथीराज रेव दुव्वन[4] निगह्यौ, रै छत्रिय गुर गव्वहु न ॥५९॥
यह झप्पो समरिय मात, वमरिय दिसा दिस ।
रा येलो चहुवान समर, वित्यो गगा[5] दिस ।
नील गात पग पीत भीत, भैंरो भूतारिय ।
वत्तरि पहु पहु फुट्टि साम, भूली समारिय ।
निग्रह्यौ राज सुरतान[6] छत, रुधिर धार छरि उच्छरिय[7] ।
चहुवान श्राना वय श्रानन्दह, सु कवि चद भनिय न धरिय ॥६०॥
सूर गहनु टरि गयो[8] , सूर गह भयो रान तन ।
भारथ भर वित्तयो, भार उत्तरयौ[9] भुवन घन ।
हार हर न[10] निसठयो मार, ससार नि तुट्टिय ।
मिलि हिंद श्ररु मुसलमान, पगाह पल पुट्टिय ।
सचरिय गल्ल ससार सिर, विरह सभ गढह हरिय ।
रन[11] धाइ साहि चहुवान लिय, गज्जने दिमि सचरिय ॥६१॥
गहि चहुवान नरिंद गयौ, गज्जने साहि घर ।
सा टिल्लिय हय गय भडार, तिहि तनै श्रथि धर ।
वरस श्रद्ध तिह श्रद्ध मुद्ध, किन्नौ नैननि, विन ।
जम्म जम्म वर रुद्ध जाइ, पृथिराज[12] इक्क दिन ।

---

1 BK1 तहि । 2 BK2 BK3 बान । 3 BK2 BK3 जपो । 4 BK2 BK3 दुवन । 5 BK2 BK3 गा सगल । 6 BK2 KK3 सुरितान । 7 BK1 उच्छारिय । 8 BK2 BK3 टरियो । 9 BK2 BK3 उत्तरयउ । 10 BK2 BK3 'न' छूट गया । 11 BK1 रन । 12 BK1 पृथुराज ।

कइ करै नृपति समझन मनहि, अप्पु उपाइ सु वहु करिय।
विधिना विचित्र निर्मिय पटल, सुलिपित निमेष न इतु टरिय ॥६८॥
न्वेवन सुर उद्भम्म[1] भयो, मद्भमन भारथ।
गदा पर्व उद्भम्मवान,[2] उद्भम्मन पारथ।
मेच्छन हिंदू उद्रम्म कियो पुन्न[3] हि ना किन ही।
अब न होइ है वहू कहै, वह कनि लिन इन ही।
इनि जुद्ध मेच्छ हिंदुन हवस, न्य गय पायक जुत्य रथ।
संग्राम कच्छ नच्छह तना, कहिय चंद कवियन सइथ ॥६३॥

गाथा

मवाह मंभ नैनी नचन[4], निनाह वीर वेताल।
दह कोह गिद्ध गोम रणथल, थल्लिय पच लीहाइ ॥६४॥

छंद त्रोटक

इति उक्त कथा सुकथी कथय। अलकावलि अगन सगनय।
भव गजित धू वर मधुनय। ततु नग्गित रत्त[5] रमावलिय ॥६५॥
कर डोर डहक टहक विय। विथुरे मिग अर्क कुसम्म हिय।
उनमत्त पुहप्प पराग क्रिय। वटवानल नैन झलम्म लिय ॥६६॥
गलि चंद ललाट असीप सिय। गर मुंडिय माल महा कसिय।
फुनि डबर डोर फनी उचिय[6]। जट गग सिरोहिय है धसिय ॥६७॥
सिव आनन देषि सिया हसिय। पुनि बध्य चरम्म करी सुनिय।
पुच्छ उच्च[7] तिन दिय के च थिय। सुचकारत भेष लग्यौ अस्थिय ॥६८॥
इह चंद वट कविता कथिय। पहिचानत वीर समीप थिय।
॥६६॥

दोहा

पहिचान्यौ तिहि चंद कवि, वीर भद्र सम वीर।
जा जुग्गिनि पुर जगलह, धरनि न रुप्पै धीर ॥७०॥

1 BK1 उद्दम। 2 BK2 BK3 उद्धमन। 3 BK2 BK3 पुव्व से इन ही तक पाठ छूट गया। 4 BK1 नच्चर। 5 BK1 रत्त रमावलिय। 6 BK3 थोचिय। 7 BK3 उच्च।

कवित्त

परम हस फल वस राम, वासिष्ठ मत्र सुनि ।
अवधि राज रघुवीर नटिय, मभ मटि छत्र धुनि ।
छिनु नरिंदु[1] लहि नद भयौ, चडाल पर सुत्तह।
न छुव न छुव मोहित मुहित्त लग्यौ क्लक यह ।
जागरत जोग दिप्यौ सुपनन, कर बदि सन मुद्ध दुष ।
सचरिय मोक लोक दूर, सन कवि कविंद लभ्भिय[3] सु सुप ॥७१॥
मोक लोक ममार मिटै, आनन जु सच्च[4] कहु ।
तू जुगिंद्र जट पुत्र ग्यान, गोरप तत्त लहु ।
मनि सु माया समुद्र निरत, हन नहि बुट्टिय ।
हरित रट लागत कोह, कदल सा जुट्टिय ।
वीराधि वीर जपहि सु गुरु, जह सुग्रीव दुप्प न लहै ।
दत्तानि धर्म पुल्लैं कमल, सु शिव पुत्र सची वहै ।

दोहा

मुद्रा स्राननि मेषला[5], कच्छ वरच्यो सिर भद्र ।
कथा जोगपन धरै, पुनि वधन कवि थट्ट[6] ।

कवित्त

बज्र पाट दे घाट पाट, उघ्घरिग मद्द सुनि ।
घट घोर सन्नमन भइय, आवास वास धुनि ।
तपै त्रिविध गुन तीनि, भीन जुग्गिनि पुर थानहि[7] ।
गहि नरिंद रिप[8] अध मुनिय, सचरि क्लि कानह ।
पर नारि विरत उम्मत मनहु, आस वामन तज्यौ ।
रस राज सपेमह मित्त तन[9], भर न छडि धर्मह सज्यौ ॥७४॥

---

1 BK2 BK3 नरिंद । 2 BK2 BK3 लग्यो । 3 BK3 लभिय । 4 BK2 BK3 सत्र । 5 BK2 BK3 में दोहे का प्रथम तथा तृतीय चरण छूट गया । 6 BK2 BK3 तव । 7 BK2 BK3 थानह । 8 BK2 वप , BK3 नरिंदप । 9 BK1 पेम इह मित्त मन ।

दोहा

इमि कवि आयो जात करि, हग सुविध्धि गृह साज ।
पुच्छे सुत भृत सु त्रिय तह, कहा करै पृथिराज ॥७५॥
तव सु त्रियनि उत्तर दियौ[1], बोलि सुभाए वैन ।
गोरिय बलि कर समहौ[2], कियौ साहि विनु नैन ॥७६॥
सुनि श्रवननि धरनिय परिग, हरि हरि हरि रट्टिग ।
नहि सभार विक्रार सु कवि, तन मन हिय फट्टिग[3] ॥७७॥
तजिय वध पित मात सुत, अरु मित्र इष्ट जन ।
माया मोह ससार सुरग, त्रिय सब्ब अनित गिन ॥७८॥
इमि चद बात सुनि मद मति, कछु न काहु किहि विधि न कहि ।
दिग वसन इक्क विविरत्त मन, गहिय भट्ट गज्जन सुरह[4] ॥७९॥

इति श्री कविचद विरचिते पृथ्वीराज रासे पृथीराज गोरी सहाव दीनयोयुद्ध तद्गत योगिनी वीर विभाई रूपेन सयोगिता प्रति सूर गामन पराक्रम वर्णन, राज्ञो ग्रहण कथन, अथ च जालधर देवी स्थाने चद्द कविना वीर भद्रण समागम, ततो सुकवि इद्रप्रस्थ गमन नामाष्टादश खड ॥१८॥

1 BK2 BK3 दियो 2 BK2 BK3 समहो। 3 BK2 BK3 में समस्त चरण स्थान में–"तजि पुत्र मित्र माया सकल, गहिय चद गज्जन सुरह" पद दिया है।
4 BK2 BK3 में ७८ ७६ सत्यक दोहे नहीं दिये।

उन्नीसवां पंडः

दोहा

प्रथम वैर भनन मनह, पुनि स्वामी उद्धारह।
लोन वेन कीरति अमर, सु त्रिय चन्द सुद्धारह ॥१॥
गहिय चन्द रन मनत्ते, जह सज्जन स्वामि नरिंद।
नन ह नयननि[1] पिक्खिहु[2], मनहु नयन[3] अरविंद ॥२॥
वपु निभुति वट चिट्टइ, नट यवा जम जूट।
माया मुक्के मन गहे, कों[4] पुच्छे अवधूत ॥३॥
मरसै वरु धर कठ वर, धर हिय नर वीर।
हिंदु कहै हम देव हैं, मेच्छ कहैं हम पार ॥४॥
दिवस तीस पयट् बहिग, गनिय न अद्दि निसि मझ।
पट्टु दिन ननन[5] असुद्ध भा, थकि सुत्तो[6] वन मझ ॥५॥
तह पिपास लग्गिय सघन, जल द्रु ढत वन लग्गि।
जह सु इक्क वट तट निकट, कलयल सिर सुनाग्ग ॥६॥
ता निवह रप्परि तरनि, यह कह जाप हमति।
मनहूँ धूम मज्भह[7] अगनि, झन मलत दरिसत ॥७॥

छंद मुक्तादाम

सुगल्ल विनोद, विनोदिय भट्ट। धरचौ सिर केमनि, कौं नट जुट्ट[8]।
छिन छिन दप्पंण लैक्कर हत्थ। करै प्रति विंब, नियन सुकत्थ ॥८॥
ग्रहो[9] तुम रूप अहो[10] तुम गत्ति। तुप सुख भोगिय, को त्रिय पत्ति।
को प्रभु कौन[11] पुरी कह वास। को अविनासिय, काहि विनास ॥९॥
कनौं क्रिम वदे, निंदै कौन। सु की वर वहै, कोइ सु मौन।
अहो वनि वन्नि, विवे जल विंब। त[12] उत्तर नाइ दियो प्रतिविंब ॥१०॥

---

1 BK2 BK3 नयन्निनि। 2 BK3 BK3 पिक्खिहो। 3 BK2 BK3 नयौ। 4 BK3 कौ। 5 BK2 BK3 नैन। 6 BK2 BK3 सुत्तउ। 7 BK2 BK3 मज्झह। 8 BK2 पट्ट। 9 BK2 ग्रह। 10 BK2 ग्रह। 11 BK3 कोन। 12 BK1 त।

-दर्प्पनु- हो, प्रतिबिंब सु सङ्य। चन्द्र सु चन्द्र कला प्रति वङ्य।
द्वादस दून सु तत्तु[1] तुम्हन्निय। पचनि स्वामि प्रकृति सुहन्निय[2] ॥११॥
सा सिर इक्क कमल्ल प्रगासिय। दिप्पत ताहि गयो भ्रम नासिय।
नील अनील वरन्न - सुहृतिय। मुत्तिय मान प्रमानं सु मुत्तिय ॥१२॥
ता वर सद अनाहत होइय। ब्रह्म अनंत सुग्यानह जोइय[3]।
रे चक कुंभक पूरक पूरे। नाभि तटे जुग वट्ट मु जोरे ॥१ ॥
सो महि[4] रवि अमर जु गलिज्जइ[5]। है भृकुटी रवि मंडल लिज्जै[6]।
नासिका भ्रम दिठे[7] दिठि रप्पै। काम विराम पगै पट पडे[8]।
जीरन वस्त्र जिसे तनु छंडे[9]। ॥१४॥

दोहा

दरसि देविक्किय -भट्ट-वर। क्रूर सिर मडल मति[10]।
सो पग्राम, करि सु दरिय, जिह जस[11] सग जु अति ॥१५॥
हसि हरि[12] सिद्धिय सुद्ध सुप, नृप दह[13] दट्ट उभट्ट।
निरखि वीर अवर धजिय, न्यि सिर बंधन पट्ट ॥१६॥
इत[14] पट्टरु भट्ट-रु सुभट, भग्र भव[15] [भय] भग्गा हस।
परम ततु रत्तउ[16] वयरन, परस पत्त उदस ॥१७॥
त्रुध पियास निद्रा गमिय, दम्यौ सु मोह मयन।
रेवा रम पिय[17] -पिछु दस, सुध्यौ चंद गयद ॥१८॥
इहि विधि पत्तो[18] गज्जनै, जह गोरी सुरतान।
सपै मेच्छ इच्छ अप्पनी, मनहुं भान[19] मध्यान्ह ॥१९॥
- जय जय उभ्रति शुभ्र गति, नट नाटक बहु सार।

1 BK1 BK[3] सुतत्त। 2 BK1 सुभ हन्निय। 3 BK2 सुजोइय। 4 BK2 BK3 सुम्मि द्रवि। 5 BK2 BK3 भिज्जइ। 6 BK2 BK3 लिजे। 7 BK3 दिट्ठे दिट्ठि। 8 BK2 पडे। 9 BK2 छुडइ। 10 BK1 मत्ति। 11 BK3 जुसु। 12 BK2 BK[3] हर। 13 BK2 BK[3] दह दहट्ट। 14 BK2 BK[3] इक्क। 15 BK1 जस। 16 BK1 रत्तव। 17 BK1 "पिय" छूट गया। 18 BK2 BK3 पराउ। 19 BK2 BK[3] भानु।

यह चरित्त पिष्पत नयन, गयौ चंद दरबार ॥ २० ॥

छंद रसावला

दरब्बार गोरी भरब्भीरं[1] जोरी । उडै रेण[2] झीन । करै वाव सेन ॥२१॥
मुष मेच्छ उट्टी । पय पच[3] गट्टी । कटि तूण धान । कमै कैक[4] मान ॥२२॥
हसे कू[5] हलक्के । महीने अधिक्के[6] । फरी नेक भार । गनै कोटि हार ॥२३॥
बहै सोन राजी[7] । करै कै निवाजी[8] । समन्नीत सीस । कहैं कै कुरान ॥२४॥
पढै पत्ति सोहो । सुरत्तान दोही । मैरोरति पुच्छै । गरु ग्यान तुच्छै ॥२५॥
दिट्ठी भट्ट दिट्ठी । हिय पट्ट फट्टी । क्रम चै पिपानं दरब्बार[9] थानं ॥२६॥

रड्ड

तह सु अग्गै निरषि दरवान[10], कनक लकुटि मनि जटित[11] ।
रटित सुभ[12] सवे दुब्भ[13] मिट्ठी ।
तुच्छ अवर, सवर्ल नहीं, ध्रहिक चित्त बुल्ल्यौ[14] त मिट्ठी ।
वपु विभूति पाषंड तन, धूत धूत पर पट्ट ।
भवन भोग रह छुडि करि, किमि सि जोगु रह भट्ट ॥२७॥
हम सुजोगी जमन परिदार, जच्छ[15] जुग्गिनि पुर ।
दरस रस वै ति पारसि, त्रिविधि कल कवित्त ।
जानौं सुच्छन्ति दर रसन रसाइ, न जाइ नहि गीह गाह गुरु ग्यान ।
सैल इत्थ पुच्छै कहो जो, गुदरै सुरतान[16] ॥२८॥

दोहा

हस्यौ जमन परि देषि कै, तुहि जानु कवि चंद ।
जा ह स्वर सुन देव पुनि, मानत अमृत कंद[17] ॥२९॥

---

1 BK2 BK3 म्भीर । 2 BK2 BK3 रण । 3 BK2 पैच । 4 BK2 BK3 केक । 5 BK2 BK3 क । 6 BK2 BK3 अधिक । 7 BK2 रज्जी, BK3 रजी । 8 BK2 BK3 निवज्जी । 9 BK1 दर ब्बीर । 10 BK3 दरावान । 11 BK1 BK3 रजतनि रटित । 12 BK3 सुभ नं 13 BK3 दुभ । 14 BK2 BK3 बुल्यो सु । 15 BK1 जथ्थ । 16 BK3 सुरितान । 17 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया ।

१-वहा चिर सु कवियन करिय, सु रुचि अप्पनी इच्छ।
मह सहा गुरु दिप्प-ही, जु शुद्ध भूमि पर सिच्छ ॥३०॥

छंद भुजंगी

रहम्मी रहगी महिल्ले सुरम्मी। अधन्नी, बसन्ती महक्कार[1] रम्मी।
धरत्ती धरन्नी[2] धरत्ते सुसाले। तुरक्काम कुकात न तात जलाले ॥३१॥
हबस्सीह हम्मी पव्वन्ने सुपन्नी। कुरेसी[3] पुरेसी गरूवे गुरन्नी।
नियाजी बियाजी सु काजी कुसल्ले। सर्वानी मसानी पुमेले[4] सुसल्ले ॥३२॥
सुभे सेष जादे अवादे पठानें। दिपे[5] साहि गोरी गरज्जे सुथानें।
॥३३॥

दोहा

इह विधि जाम[6] सुवित्तगो, भयो तीयो पहरान।
हदफ साहि पिल्लन चड्यो[7], मनहु उदधि अररान[8] ॥३४॥

छंद पद्धरी

सह सलाम मंगह सुमीर। तह रहे बधि फिरि फौज तीर।
अगुलि धरनि धर धर मसंद। सिरि नयौ[9] जबहि भई न जग्गिमद ॥३५॥
पारस सहस्र लदरिय लाल। वन सुभहि पवारी मनहु माल।
अग्गै सुबधन सुरत्ति थान। दस पच हत्थ उत सुविहान[10] ॥३६॥
आसनह हम ताजी सु साहि। नग जरित जीन लग्गै जु ताहि।
कचन सुढाल करि मज्जि[11] वग्ग। जर जरित[12] रग अति वग नग्ग[13] ॥३७॥
तसु कटक सेस सहि सकै सीस। घन पत्ति कम्पर हरि भुवज[14] वीस।
सिंगिनि सुवान करि आप हत्थ। मनु श्वेत वाजि सज्यौ सुपत्थ ॥३८॥
सिर ताज साहि सुभै[15] सु दीस। गुरु तनुच उदै किय तनुज ईस।

---

1 BK1 सहक्कारि, BK3 सहक्करे। 2 BK2 BK3 धरत्ती। 3 BK2 कुरेसी। 4 BK1 पुमेले। 5 BK1 देपि। 6 BK2 BK3 याम। 7 BK2 BK3 चच्यो। 8 BK2 BK3 अररान। 9 BK2 BK3 नयो। 10 BK1 सुविहानि। 11 BK1 मम्म। 12 BK2 जटित। 13 BK2 में समस्त पद स्थाने "कठै कसै साह सर सत्तो, नाय मौम भेस धन पत्ति दोन" पाठ है। 14 BK2 BK3 दोनों पद छूट गए। 15 BK2 BK3 सुभै।

रगहि[1] सुतीय अम्बर सुरग। विविधयै इस्क चंदे विरंग[2] ॥३९॥
आलमु[3] अवल्बु पिथ्थौ न जाइ। रम्यौ सु मग्ग कवि चंद धाई।
तनु बहु विभूति अवधूत धीस। करि करहं दिढि दीनी असीस ॥४०॥

असीस = (आशीर्वाद) पद्धडी छंद

साहि मार साहिब्ब, भारथ करियेति।
साहि कथ कुदार, निर्वलत[4] साहि थापना धार।
शत्रुवनि साहि, मस्तक त्रिशूल।
लो भीति साहि, सिर अकुम मूल॥
सर्वेति साहि रुप्पण सहाइ ॥४१॥
फटक्कि साहि, हियं दत्त पाइ।
उत्तरे साहि दक्षिणे साहि पूर्वे साहि।
पश्चिमे साहि धारि साहि, सिर साहानि साहि।
समुद्रात भूमि तप चलेश्वर इन्द्र भोगेश्वर।[5]
जलाल अगेश्वर एवं सुलतान सहाधेश्वर ॥४२॥

दोहा

देत असीस सिरु[6] नयौ, विन अच्छे फुरमान।
दुसह भट्ट पिथ्थौं नयन, थे पुच्छे सुरतान[7] ॥४३॥

छन्द मोदक

विनु बुल्ल[8] तत्थ बुल्ल्यो सु छंद। हम सु साही वर भट्ट चंद।
अवतार[9] लीन पृथिराज सत्थ। वह गह्यौ होत अत्थौ अनत्थ ॥४४॥
मै सुयो साहि विनु अप कीन। तजि भोग जोग मै तत्थ लीन॥
मै तक्यौ[10] तत्थ बद्रिका थांन[11]। थिर रह्यौ तत्थ सुनि सुविहान[12] ॥४५॥

---

1 BK2 BK3 रगह। 2 BK2 BK3 विरामग। 3 BK1 आलम। 4 BK2-BK3 निवलत शत्रुवनि—तक पाठ स्थान म "निरवति साहि भारात मत्सरयाात" पाठ है। 5 अस्वीकृत पाठ है। 6 BK2 BK3 सिर। 7 BK3 सुरतान। 8 BK3 बुल्लत। 9 BK2 BK3 अवितार। 10 BK2 तक्यो। 11 BK2 BK3 थानु। 12 BK2 BK3 सुविहानु।

धै चंद अंबु-मैं रिसन इच्छ[1]। करतार हत्थ न अनरिये गन्न।
अब चद जाइ मिल्ले हद्दफ। द्वै[2] गल्ह चाहिह करि मलहु तप्प ॥४६॥
फिरि साहि साहि-फुरमान दीद। तिहिं बहुत चद मिहिमान[3] कीन।
.. .. ॥४७॥

दोहा

फिरत चंद चलि नगर कहु, दियो साहि फुरमान[4]।
विधु उदित कुमुदिनि मुदित, गयौ अस्तमित भान ॥४८॥
करहि चंद महिमानि सब, अगर धूप विधि देह।
मिदहि न तिहिं सुप कुप्प-मन, मृतक धरै तन नेह ॥४६॥
हप्फ हरष करि पिल्लयौ[5], गृह आयौ सुरतान।
कथत चद मम सहि मरम, इमि इच्छै सु विहान[6] ॥५०॥
उमर साहि धन--धाइ इहि, रस रत्ती कर राइ।
तिमिर तेज-स्रग्गिय फिरनि, सुमिरि मन्त्र वरदाइ ॥५१॥

छद भुजंगी

निराधार किया हुई देवि चंद। जपै तोहि तोहिज्ज तोरि प्रचड।
कहं साहि गोरी असम्मान सूर। कहं भट्ट फक्कीर लुट्टन्ति धूर ॥५२॥
कहं राज अंधल्ल बंधे विधाय। कहं कोस[7] कम्मान आवै न दाय।
तुही वान मातंगि[8] उत्तंग भारी। तुही वैर रुवी, मकुत्ती करारी ॥५३॥
तु ही सत्य-सत्त चव वेद मन्त्र। तुही भेद अब्भेद[9] जानंति सत्र।
तुही तेज सूरम्म सीयल्ल चद्दे[10]। तुही असमान तुही भूमि नद्दै[11] ॥५४॥
तुही माइ जालधि जालध्र चढ्ढो। तु ही सिद्ध साधंति साधक सद्धो[12]।
तु ही प्रकृति पार अपार पुरुष्प। तु ही अज्ज अरधग अज सग सुप्प[13] ॥५५॥

---

1 BK2 चद सु, BK3 अइच्छ। 2 BK2 द्रि। 3 BK3 मिहमान। 4 BK2 BK3 फुरमानु। 5 BK2 BK3 पिल्लयौ। 6 BK2 BK3 "सुविहान" के पश्चात् धै विहान सुरितान दर दिसान। 7 BK1 काल। 8 BK1 मातग। 9 BK2 BK3 अभेद। 10 BK2 चदो, BK3 चदा। 11 BK2 नदो BK3 नंदा। 12 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 13 BK1 सप्प।

करामाति किद्ध करत्तार काय[1] । तुम्हें कामना[2] काम समार जाय ।
हरैमनु[3] मघ सु मन्त्र जपत । जुते[4] तेन तेज जय अग्र मद्द ॥५६॥
अजै वा निजै वा मढि देव छद । धरी पच ज्यों देवि जोतिग्ग देपे[5] ।
सती साहमी सिद्धि तू ही विमेपे[6] । ॥५७॥
मन मातु मैं शूर लग्यौ मरत्ती सिर मर्दै भद्रा सुतारी करत्ती ।
जमी जतु सिज्जति जालध रानी । मरै मर्व कान वरदाइ[7] वाणी ॥५८॥
तुही देवि पुप्प विरप्प रिसानी । तज्यो मोह मग्ग गो श्रासमानी ।
निक्रपम्म रगी अरगी सु नाथ । सुभे सुम्भ यान लिय हत्थ हाय ॥५९॥
स गुनै मनम्मै विहान । वजै दुदुभी देव घूमै निसान् ॥६०॥

छद भुजगी

महिल साहि सुरतान साहिब गोरी । जगे जुल करणं जानि सम्मान जोरी ।
किताबैं कुरानैं किसे कन्न लगैं । डरे देव वाणी नहीं मन्त्र जग्गै ॥६१॥
दरै दानु दिज्जै सु लिज्जै फकीर । तहा करि सकै कौन गृह साहि पीर ।
चलै सिप्प रुप्प[8] वल्ली सु डली धा । रहै सत्त दूनी दुहूँ ग्यान दोधा[9] ॥६२॥
हिय हेतु अनहतु[10] विद्या दुलप्पै । सुगठै धनतरी[11] रुप मप्पै ।
वाचिज्जै वीञ्च नारद जेहा[12] । जिकै अन पीजै नहीं जीव[13] तेहा ॥६३॥
वस्तरै वाम वामै जु हत्थ । इतै सुन कनै दुक नेन कत्थ ।
जितै पुन पुगी कथ पुन्न धारी । तितै अप्रग्राही जिसे भूप भारी ॥६४॥
हनामत्ति सिप्प तृता[14] तीय लोय । तहा किं करै दुग्ग वैरी सकोय ।
पान पवार अनुकूल सारै । भव कपट धरिया चित्त[15] भारै ॥६५॥

दोहा

भइ सद्द आयास धुनि, भौ सु काम तुष सत्य ।
तिहिं चितै चित्यौ सु मनि, मनि रप्यौ रप्पौनि ॥६६॥

---

1 BK3 काया । 2 BK1 कामना । 3 BK1 हो सेत, BK2 हर सतु । 4 BK1 हुते । 5 BK1 दपी । 6 BK1 विलेप । 7 BK2 BK2 म उमामै विसासै परतीति सच्ची । तु ही अत्थि सासाइ तु ही दाव नाहि । अधिक पाठ है । 8 BK1 रूपावली । 9 BK2 रीध्या, BK3 रीढयो । 10 BK1 अहेतु । 11 BK2 BK3 तरित वाबति तहा । 12 BK1 वति । 13 BK2 BK3 समस्त चरण छूट गया । 14 BK2 BK3 तृया । 15 BK2 BK3 चित ।

छंद पद्धरी

इम चिंतित चिंत्यौ[1] सुरतान। कहा भट्ट निसुरत्ति पान।
बिहु[2] बिराग वन आइ चदु। द्वै कहहिं मुल्ल दुनियाय[3] दद ॥६७॥

वार्ता

ततार षांन, दस्तषान, मिया षान, विलद पान च्यारि षान, सदर वजीर आनि अरदास कीनी।

दोहा

षा ततार अरदास किय, वे अद्व सुरतान[4]।
नट नाटक डकिनि डवरु, नहि पुच्छै सुविहान ॥६८॥
बहु फकीर अरु नाइ हम, करामाति सुरतान।
कहहु गल्ह[5] द्वै[6] बुज्झियहिं, अरु जु[7] लेइ कछु नांन ॥६९॥
बह[8] जु भट्ट चहुवान कौ, सुन्यौ वीर वर सत्थ।
अरजु[9] साहि आलमु कहहि[10], किये वनै छत्रपति ॥७०॥
अह सहाव षुप उच्चरिय, मिया मलिक्क जु षान।
आइ चद सम्मुह[11] चले, वे बुल्लै सुरतान[12] ॥७१॥

छंद पद्धडी

बुल्यो[13] सु चद हज्जूर माहि, बुज्झी[14] सु बत्त अपु पतिसाही।
वैराग चद, तुम जोग सत्त, जो[15] गहि निरुद्ध हम मिलन मत्त ॥७२॥

दोहा

हमहि मिलै वे चद सुनि, विरह दरिद्र स[16] लोभ।
अरु जै दुनियह अद्दरिय[17], गर्ट महत्त[18] न सोभ ॥७३॥
तब हि चद अरदास[19] किय, भल पुच्छिय सु विहान।
जोग भोग रह गीति हौं, सब जानै[20] सुरतान[21] ॥७४॥

---

1 BK2 BK3 चिंत्यो। 2 BK2 वैराग गया। 3 BK1 दुनी आइ। 4 BK2 BK3 सुरिताने। 5 BK2 BK3 गल्ल। 6 BK1 क्कै। 7 BK1 ज। 8 BK2 BK2 बहु। 9 BK2 अरज्जु। 10 BK2 BK3 कह। 11 BK2 BK3 सुमुह। 12 BK2 BK3 सुरिताने। 13 BK1 बुल्यौ। 14 BK3 बुभी। 15 BK1 सु। 16 BK1 सु। 17 BK2 BK3 अद्देहय। 18 BK2 BK3 महिन। 19 BK2 BK3 अरदासि। 20 BK3 जानौं। 21 BK2 BK3 सुरितान।

बालप्पन पृथिराज सुगं, अति मित्त तन कीन।
जु कछु सद्ध मन में भई[1], सब इच्छा रस दीन॥७४॥
पुब्ब पराक्रम राज किय, कछु जप्पी तुच्छ ग्यान।
अरन अन्न कछु अपिद्दो, सो जानै सुरतान॥७६॥
इक्कम दिन पृथिराज रस, मय करिय तिहि यार।
सिंगिनि सर फेर अर्म विभे, मत्त हनहि घरियार॥७७॥
अप्रमान कप्पी न्यौ, दिलु न रह्यो थिर थान।
सुजद रोग मन रोग भौ, कहून[3] भो विद्दान॥७८॥

छंद त्रोटक

थिर कछु[4] कहून कों पतिसाही तु ही। मन मज्झि[5] रही कवि मौल जु ही।
दै अजु किधौं करिहु दिन न्री। नन जा उम ही पतिसाह वाही॥७९॥

दोहा

सुनि सहाव हसि उच्चरिय, यै वे भट्ट विनट्ठ।
अपी हीन बल हीम भौ, कामट्टौ[6] मति नट्ठ॥८०॥
अपी निनट्टै बलु घटै, मन[7] नट्टै सुरतान।
जु किछु मोहि अप्पसु कह्यौ, बोलु रहै परवान॥८१॥

छंद पद्धडी

सुरतान[8] माही फुरमान दीन। सब नयर छोरि घरियार[9] लीन।
मुक्करयौ चद राजंतह पास। तू मंगि हम सु दिप्पहि तमास[10]॥८२॥

छंद त्रोटकु

मिलि माहि हरस्यह रस्य चढी। पृथ्वीराजह अत असन्त बढी।
जरन्बर अबर सो पटय। झप जानि झमकति[11] दप्पतय॥८३॥
प्रति बिंब झरोपति हाटकय। नगिनी[12] नग मटित नाटकय।

1 BK2 BK3 मयी। 2 BK2 BK3 काय। 3 BK1 BK3 कहुन। 4 BK2 BK3 कट्ठ। 5 BK2 BK3 मझि। 6 BK1 BK3 मगे। 7 BK3 मनि। 8 BK2 BK3 सुरितान। 9 BK2 BK3 घरियाल। 10 BK2 BK3 तमास। 11 BK2 BK3 झमकित। 12 BK2 नलिनी।

मिलि तुग समास निहाम कय। ढकि अम्बर ढबर वास कय ॥८४॥
वर वीर[1] विरगिनि लास कय। कल छद कला कल पास कय।
रग अचिनि वीरनि रात कयं। सव्वद भय चित्रक[2] वात कय ॥८५॥
मरि दुग्ग विदुग्ग अवद्द कय। वस रामित साप सवद्द किय।
कपट भान छनक मुद्द कय। ॥८६॥

दोहा

चख्खु हीन दुर्बल नृपति, दस वमन गहि पास।
रोम अगनि तन प्रज्जरे, अरि चिंतत[3] चिंत्तास ॥८७॥

छंद पद्धड़ी

फुरमान माहि माहाव ईस। दस हत्थ रप्पि दीनी असीस।
घर वधराइ अज्जान बाहु। दुज्जनें[4] राइ वर वैर दाहु। ८८॥
चालुक्क राइ फिरि पैज पारि। पगुरे राइ जग्गह[5] सु ढारी।
धनु[6] धर्म धीर अर्जुन नरेस। जिहिं असु[7] वधि किय तिय भेस ॥८९॥
मन मत्थ राइ अवधूत धूत। समरे राइ सोमेस पूत।
जुग रष्षि नाम जज्जर शरीर। वलि सग रग आयो सधीर ॥९०॥
राजनद दान है सुरति एक। घरियार[8] सत्त मर विधन मेक।
विचारि देहि उत्तर सुभग्ग। यह सुनि श्रवन्न मन चित लग्ग ॥९१॥
एहि[9] वानि चद सुनि धुनिग सीस। सिरि नयो, नयो नहीं मानि रीस ॥९२॥

दोहा

सुनि कवित्त बल चद किय, दस दिस भूपय पाल[10]।
रिस धुनि सीस निपिद्ध किय, लोभी चद मुहाल ॥९३॥

कवित्त

समरेस धरि रोस सीस, धुनहि न[11] धनु सज्जहि।
यह मित्त तन मित्त चित्त, चिंता तुव वज्जहि॥

---

1 BK2 BK3 मीर। 2 BK2 BK3 चित्रक। 3 BK2 BK3 चिंतित। 4 BK2 BK3 दुज्जने। 5 BK2 BK3 जग्य। 6 BK1 धन। 7 BK2 BK3 असु। 8 BK1 घरियार सार विधान मेरु। 9 BK1 इहि। 10 BK1 भूव जमाल। 11 BK2 धुनिहि न।

निकट[1] सुनैं सुरतान[2] वाम, दिसि उच्चह जमौं[3]।
जस अवास रतन च अथि, लुट्टिनि कहि अत्तौ[4]।
दै दानु जानु सभरि घनी, बद्दु गड्डहि तू जरहि अब।
दिति अदिति वस द्वै हस उडिय, दु उपाव हौं करौं कब ॥६४॥

दोहा

सुनि कवित्त चल चित्त किय, अजहूँ चित्त शरीर।
मोहि असुभ्यो[5] जानि जिय, तात प्रबोधन धीर ॥६५॥
तू विहुँ[6] अपिनि अनुसरहिं[7], दुवटु[8] अपि उलूक।
असुर वद्ध किमि करि करो, सुप दैत अचूक ॥६६॥

कवित्त

मभरीस करि रीस[9] सीस, धुनिहि न नहि सक्हि[10]।
चलह चित्त नन करहि मोह, अच्छर मन अक्हि।
उत्तगह कर असिय वीह, उप्पर वाव गहि।
सैल वत्त सचरै राइ भुव, पर सव सुनहि।
सरतान[11] पान गुरु ग्यान गहि, गुरु अच्छर चदह भनिय।
मुक्कहि न सत्त सर सत्त वहु, तू सावत[12] सोरह घनिय ॥६७॥
रेन रिंदया अध पिंड, सव्वउ[13] सुर सचौ।
आप तेज सम्भरि धरा, आयस गय पचौ[14]।
जरा जाल वद्धयौ[15] काल, आनन पर पिल्लै।
हत तह अजप जप्पि, सर वर करि मिल्लै।
चलि हस हस हस[16] हित, छडि नेह तनय जरहि।
पृथ्वीराज आज तुव कर मुकति, करि नरिंद जिमि उब्बरहि ॥६८॥

---

1 BK2 BK3 निकटे। 2 BK2 BK3 सुरिताण। 3 BK1 क्तौ। 4 BK2 BK3 लुट्टिय न करिय तौ। 5 BK1 अजूम्यौ। 6 BK2 BK3 विहूँ। 7 BK3 अनुसुरहि। 8 BK2 BK3 हैं विहु। 9 BK3 री सीस। 10 BK3 सकिय। 11 BK2 BK3 सुरितांन। 12 BK2 BK3 सवत। 13 BK1 कव्वौ। 14 BK1 पाचौ। 15 BK2 BK3 बद्धयउ। 16 BK1 हसा।

अनुष्टुप

मा स्नेहि चित पूर्णानि, नित्य कालानि सचयेत्।
वृषादि उदये प्राप्ते, फल वल्लीश्च जारयेत् ॥९९॥

छंद

राजन्नान सामर्थ सु किनौ। स्वर्ग अर्थ नस रत्त जु लिन्नौ।
अर्थी दोषो न पश्यति रावो। वस्सि नरिंद बोल व्यवसायो[1] ॥१००॥

दोहा

जलपि भट्ट सुभ भट्ट स्यों, कर अप्पो तिह वेन।
परम तत्थ[2] सुभ्यो नृपति, सगहि फुरमानेन ॥१०१॥

कवित्त

तव हिं चद वरदाइ साहि, अग्गे कर जोरे।
कृपन दान तिमि गठि[3] राज, हिय[4] गठि न छोरे।
नंदिन[4] कारन हीन[5] करै, जिहिं[6] आस छंडि तप।
अद्भुत रस सुरतान सु जु, मुक्यौ न जाइ अप।
छडै न मोह जिय जनम कौ, अवै तेव अन्तर रहै।
फुरमान साहि सच्चौ विधे, फुरमान न सर गहै ॥१०२॥
मुकि ततार पा कह्यौ, भट्ट जीवन अनरत्तौ[7]।
कहत साहि फुरमान सुरतान, जान प्पति जुत्तौ[8]।
लच्छ सबल घरियार अम्र विनु, इक्क[9] न विद्धै।
मर दुजु[10] मुप उच्चरै जु, कछु अग्गै सब सिद्धै।
फुरमानु[11] साहि तुहि तीन दियै, जौ चहुवानहि होइ[12] कला।
इय वान इयै वर सिंगिनि, घरियार निविद्धे तला ॥१०३॥
भयो चद मन चद दद, गय काम सपत्तौ।
पालि साहि गोरी नरिंद, दिय बोलनि रत्तौ।

---

1 BK2 BK3 व्यवसायौ। 2 BK2 BK3 तत्व। 3 BK3 गठि। 4 BK1 नेह्निन। 5 BK2 BK3 हा। 6 BK2 BK3 जद निहिं। 7 BK3 आन०। 8 BK2 BK3 समस्त पद छूट गया। 9 BK3 इक। 10 BK1 दुन। 11 BK1 फुरमान। 12 BK1 हुइ।

भजन भोग रहि नोग पास आयो रत तुत्र अग्गि।
वचन विद्धि तह[1] सिद्धि लियो[2], गोरी नरिंद हरि।
तिल मज्झि[3] भट्ट टुक्कह कियो, तव सु साहि गोरिह धर्यौ।
हिंदवान पान इम[4] उच्चर्यौ, अब प्रतीति[5] को जिन करौ ॥११३॥
मरन चद वरदाइ राज, धुनि सुनिग साहि हनि।
पुहपजलि असमान सीस, छोडी सु देव तिनि।
मेच्छ अवद्धित धरनि, नृपति नव किय समत्तिग[6]।
हम हम मिलि मिलिग जोति[7], ज्योति हिं सपत्तिग।
रासौ असभ नव रस सरस, बद चद किय अमिय सम।
शृ गार वीर करुण विभच्छ भय, अदूभुत हसत सम ॥११४॥
न रहे तनु धन[8] तरुणि, किरणि उदय अर अस्तय।
चद कला परिपच्य[9] राह, करि गस्त विगस्तय।
न रहे सुर नर नाग लोक, लग्गै जनु जग्गै।
न रहै वापी कूप सत्त, सरवर गिरि भग्गै।
जानहु सुजान अच्छर अमर, विमिल[10] विमलि पुच्छित कहै।
भपि काल व्याम ससार सब, रहित गुरु गल्हा रहइ[11] ॥११५॥

दाहा

मत्रीश्वर मडन तिलक, वच्छा वश भर भाण।
करम चद सुत करम बडे, भाग चन्द स्रत जाण ॥११६॥
तसु कारण लिपियो सही, पृथ्वीराज चरित्र।
पढता सुष सपति लहै सकल, अर सुष होवे मित्र ॥११७॥
॥ शुभ भवतु ॥

[यहा ग्रन्थ समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं दा गइ ।]

---

1 BK2 BK3 विधि तिहि। 2 BK2 BK3 लीयो। 3 BK3 मज्झि। 4 BK2 BK3 इमि। 5 BK2 BK3 प्रतीत। 6 BK2 नव नृपति सोहसि गति। 7 BK2 नहि तिनहि सजोति ज्योति। 8 BK2 BK3 धनु। 9 BK1 पिप्प। 10 BK1 विवर। 11 BK1 रहहिं।

BK2 BK3 के अन्तिम छन्द—

दोहा

प्रथम बेद उद्धरिय बम, मच्छह तनु किन्नउ।
दुतीय वार वाराह धरनि, उद्धरि जसु लिन्नौ ॥१॥
कौमारिक भड़ेस धम्म, उद्धरि सुर रष्पिय।
कूरम सूर नरेस हिंदु, हद उद्धरि रष्पिय ॥२॥
रघुनाथ चरित्तु हनुमंत कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पृथिराज सुजसु कविचंद कृत, चंद्र सिंह उद्धरिय इमि[1] ॥३॥

BK2 का अन्तिम पुष्पिका—

दोहा

महाराज नृप सूर सुव, कूरम चन्द उदार।
रासौ पृथीय राज कौ, रच्यौ लगि ससार ॥
शुभ भवतु। कल्याणमस्तु। पत्र ७ माहे सम्पूर्ण ३३२० लिपीयो छै।

BK3 की अन्तिम पुष्पिका—

इति श्री पृथिराज रासो समाप्ता। शुभ भवतु। किल्याणमस्तु। श्रीरस्तु साह श्री नर सिंघ सुत नरहर दास पुस्तका लिषावत। श्री ग्रन्थाग्रन्थ ५२२ ध ॥छ॥
जादिस पुस्तक द्रष्टवा, तादस लिषत मिया।
जदि सुद्धि मवि सुद्ध वा, मम दोषो न दियात ॥छ॥
लिषत मयेन उदा माहापुर मध्ये ॥ छ। श्री ॥

(इति नवदश खण्ड)

1 BK1 म ये तीनों दोहे नहीं है।

नामानुक्रमणिका

छ

ज

स

Glossary

The meanings of such words which are considered to be in प्राकृत or प्राकृताभास, अपभ्रंश or अपभ्रंशाभास or peculiarly Bardic are given below

Sanskrit तत्सम and अर्द्धतत्सम words have been mostly left out A few words, the origin of which could not be traced, have been given in a supplimentary list.

अक्ज=अकार्य
अकिल्लौ=अकेला
अकुलात=व्याकुल हुआ
अषारे=अखाड़े में
अषेद=प्रस न
अष्पे=कहता है।
अग्ग-अग्गर=आगे आगे
अग्गि जज्जर=अग्नि ज्वलित
अचान=अचानक
अचिज्ज=आश्चर्य
अच्च=अर्चना करता है, तृप्त होता है
अच्छु=निर्मल
अच्छरि=अप्सरा
अच्छित∠अच्छत∠अक्षत
अच्छय=अच्छा, 2 क्षत रहित
अजहुँति=अभी से
अज्ज=अद्य
अजित=आजत अजेय, 2 अजित
अजुत्त=अयुक्त
अजै=अजय, पराजय
अजौं=अभी तक
अटर—अटल
अत्त=आप्तम्
अत्थ—अर्थ 1, 2 अस्त्र। 3 अथ।
अत्थत, अत्थयो अत्थइत, अत्थि गय=
अस्त हो गया।
अत्थ=था
अथ्थि=अस्थि
अद्ध=अर्ध
अदिट्ठ=अदृष्ट
अदेव=राक्षस
अनषंते=अनखते हैं, क्रोधित होते हैं
अनपग्ग पुलते=बिना पाँव उछलते हैं।
अनभग्ग=जो न टूटे।
अनमंति=झुकते नहीं है
अनरोम-सिरल्ले=मुंडित सिर वाले
अनेव=अनेक
अपच्छरा=अप्सरा
अपत्त=अपत्य
अपं—आत्मीयम्।

आरज=आरज राय एक सामंत
आरनि=अरण्य
आरि=अड़ी करना, जिद करना।
आरीह=अरि।
आरुट=आ रुट बहुत रूठना।
आलुज्झै=उलझते हैं।
आवट्टिय=आवर्तित हुये, मुड़े
आवद्द=आद्र
आवध=चारों ओर से घेर कर मारना
 २ आयुध
आवज्झ=आवध्य।
आस=आशु
आ सद=आसन
आसम=आशंका
आहित=आहत।
आहुट्टे=चारों ओर से भिड़ पड़े?
आहुट्टि=भिड़कर, आहुट्टपति एक सामंत भी है।
आहुट्टना=ऐंठना?
आहुं ट=आहुति?

इ

इक्कक्कति=एकैक।
इक्कराय=एक सम्मति से
इच्छुसु=इच्छुरस
इत्या=स्त्री
इल=पृथ्वी, २ इलायची

उ

उक्किल्लिय=उखाड़ दिया।
उग्गइ=उगता है।
उघग=उघड़ना।
उघरी=उघड़ी, जाहिर हुई।
उच=ऊँचा।
उचाइ=ऊपर को उठा कर
उचाविय=ऊपर को उठाया
उच्चरे=उ नत (वक्षस्थल)
उच्छंग=उत्संग
उ च्छंगी=ऊँची, भारी (सेना)
उच्छुटिय=उच्छ गया, हाथ से उच्छल कर निकल गया।
उच्छाह=उत्साह।
उजारी=उजाला।
उझकक्यौ=उझक गया, चूक गया।
उझकि=उचक कर।
उझारिया=उभार दिया।
उझार=उद्धार।
उटकि=उटकना करके
उताही=वहीं पर।
उत्थू—उन्नत
उथपे=उखाड़ दिये।
उदंत=उद्-अंत, वर्षा ऋतु की समाप्ति।
उदरमी=चौड़ी?
उद्ध=ऊँचा
उद्धरै=उद्धार करते हैं।
उद्दस=उध्वस।
उद्गइ=उर्ध्व अग्र
उदिग्ग=उदित हुआ।
उद्दिम=उद्यम।
उद्दु ति=उदय होते हैं।

उँगी=भारी (सेना) "उनगी सुरताण दल" (10-12)
उनता=उनता
उनहारि=अनुहार करके, २ देख कर "चद जेम रोहिनि उनहारि" (3-9)
उनाहं=ऊँचा
उपट्टि=(हि वो) उपड कर, पहुच कर
उपट्टै=उपडते हैं, पहुँचते हैं।
उप्पम=उपमा।
उप्पमाति=उपमा देता है।
उप्परहि=ऊपर को उठाता है।
उप्पारि=उखाड़ कर।
उप्पारै=उखाड दिये।
उप्पारण=उखाड़ना
उपायौ=उपाय किया
उब्बरियं=उभारा
उम=उत्सुकता, "सुनिरव सु न्दरि उम हुव" (9-130)
उभारि, उभरै उब्भारहिं=उभारते हैं।
उभा=ऊपर को उठी।
उम्मत=उत्सुक होता है। "उम्मत मनह" (18 74)
उमद्दय=उदित हुआ।
उय=उदय।
उरक्की=उर में अड गई।
उरद=ऊर्ध्व।
उलट्टिग=उलट गया।
उलटिय पलटिय=उलट पुलट करके
उल्ल=उल्लसित हुआ।
उल्हसै=उल्लसित होते हैं।
उलिचि=उलीच कर
उव=उदित हुआ।
उवान=ऊपर उठाया "तेक उवान" (17 11)
उचाविया=ऊपर को उठाया।
उविट्ठ=उठ गया
उसास=साँस सूखना, व्याकुल होना।
उस्सालहि=उसारता है।
उहास=जोर की हसी।
उष्ठ=ओष्ठ।

ए

एकग्ग=एकत्रित।
एकत्थ=एक स्थान पर।
एम=इस प्रकार।
एरहु=हेरहु=खोज करो।

ऐ

ऐन=मोद, "ऐन गेन" (भूषण) "परी ऐल आलम्म हुवं जान थान" (4 14)

ओ-औ

ओपम=उपमा
ओन=ऊन
ओत्थान=उत्थान

क

कग्ग=कौआ
कपरा=कपरे=टुकड़े टुकड़े।
कच्चरि=कचूरा करके।
कच्छ=कच्छ
कच्छै-=कच्छ=काँछ में

कछछ=कच्छप।
कच्छि=काछ दबाकर
कज्ज, कज्जे=(फा०) कब्जे कर दिये
श्रग हीन कर दिये।
कट्टि पट्टी=कटि पट।
कटक्क=कटक
कटक्कति=अति कटक
कटीर=कटोरा (हि बो) एक बर्तन
कर्णयर=कनेर का फूल या पौदा
कत्थ=कथा
कत्थी=वही
कनकनायो=क्रोधित हुआ।
कन्न=(हि बो) कण=बल
कनरवै=कान मारता है।
कनिधरे=कान पर धर लिया, सुना
कप्पियौ=काट दिया।
कबध=धड़
कमट्ठ=कमठ।
कम्मान (फा) कमान
कया=काया
करंक=हड्डियों का ढाचा
करक्कहि=कड़कता है।
करनक्कहि=कड़कता है?
करषि=खींच कर।
करवत्त=आरा
करव्वारि=करवाल
करार=करारा=कठोर
करह=करभ
करिग=क्रिया
करिज्जै=करिए।
करीव=हाथी।
कलउ=कलियुग।
कलक्कल=कल कल शब्द।
कलप्प=कल्प।
कलप्पिय=कल्पना किंतित हुआ।
कलह=कला २ कलह, ३ कलभ।
कलक=कलकी अवतार।
कसिकसि=कस कस करके।
कसत=कस दिए।
कक=मूठ।
कंगूरक=स्थान विशेष, २ कगूरा।
कंठोल=कठ संबधी।
कंदल=कंद मूल, २ एक सामंत।
कदलह=कदरा में।
कदहि=कष्ट देता है।
कनन=(बहुव०) कर्ण, कान।
कंध=कधा
क्रष्यौ=खींचा।
कृत्या=मारण मंत्र।
काइ=कोई।
काइक=काया।
काइर=कायर।
कालिह=कल।
कावंध=कवंध।
किक्क=कितना।
कांठे=कंठे पर, किनारे पर।
किकट्टिय+दांत किट कटा कर।
किण=(हि बो) कण=हिम्मत।

कितकु=(हि बो) किधर को, २ कितना
किती=कीर्ति।
किष्ट=विकष्ट।
किसित=कृश।
कुच=कुच।
कुचित्यौ=बुरा सोचा।
कुटवार=कूटने का वार=आक्रमण
"हयनार कुटवार सुनि" (10-44)
कुल्ली=(पजा०) झोंपड़ी, २ कुल समुह।
कुसादे=(फा०) कुशादा=विस्तृत।
कुलह=कुल का।
कुहक=मधुर स्वर।
कुहराव=कुहराम, शोर।
कोह=(फा०) काह=पर्वत, २ क्रोध।
क्रीलित=क्रीड़ित।
कै=कृद्ध २ अथवा।
कोटरा=कोट=किला।
कौतिग=कौतिक।
कोद=कोना।
कोह=क्रोध
कोहल=कोलाहल।

ख

खग-खोद=तलवार की खोद=मार।
खग्गवर=श्रेष्ट खड्ग।
खेद=खादना।
खप्पर=खप्पर।
खभरि=खलबलि।
खबरि (फा०) खबर, समाचार।
खारी=खार से भी।

खरक्यौ=खड़क गया।
खरभरहिं=खलबलि मचाते हैं।
खरह=खरना, शनै २ समाप्त होना।
खरे=खड़े रहे।
खरी=खरा-अच्छा।
खल=खल।
खवास=(फा०) अनुचर।
खह=खेह=मिट्टी।
खहक=आसमान ?
खंगारी=खंगार जातीय राजपूत।
खची=खेंची।
खजरी=खजर।
खिजि, खिजि=खिज खिज कर।
खिजै=खिजते हैं नाराज होते हैं।
खिर्ण=क्षण।
खुच्चै=खच खच नादानु कृति।
खुदंत=खोदते हैं।
खेदयार=खेद कर।
खेद्यौ=खदेड़ दिया।
खेह=खे=आकाश।
खोहि=(पंजा०) खोस कर, छीन कर।
ख्योहिनी=क्षोहिणी।

ग

गप्पर=एक राजपूत जाति।
गज=गर्जना।
गजी=गूंजा।
गट्ठ=गठ्ठ, गठ्ठा=गत्त।
गब्ब=गर्व, 'गब्बहु न'=गर्व न कर।

जगि=यश ।
जग्गी=जागा, प्रकट हुई ।
जच्छु राज=यक्षराज ।
जटां=जटाँग ।
जत्ते=(हि वा) जितने ।
जद्दा=यादव ।
जबै=(हि वा) जभी उसी समय ।
जमकइ=यवक, जो ।
जमारहि=जमाता है ।
जरवंबर=जरदार वस्त्र ।
जरपइन्तक=जड़ाउ तेग ।
जरपोस=जड़ाउ जीन का वस्त्र ।
जरद (फा०) जरद, पीला ।
जराव जरे=जरा विल्ले से जड़ाउ ।
जरीन=(फा०) जरीदार रेशमी वस्त्र ।
जरेवे=जलाता है मान करता है ।
"जरेवे गयद"
जलजिदु=जलजीव ।
जलप्पिय=बोला ।
जंवारा=भगड़ालू योद्धा "जंवारा भीम"
जपरिय (फा०) जंजार से बाध दिया ।
जम्मीवहि=जावित रहता है ।
जंनाइ=सम्यक् देख कर ।
जंबू=जम्मु नगर, २ जामुन ।
जबूर=(फा०) छोटी तोप ।
जत=जाव, जतु ।
वंतौ=चला गया ।
जहं कहं=जहा कहीं
जभरा=मस्ती (वाणों की)
जाम=जिस का, २ याम ।
जाम=याम, प्रहर ।
जावक=यावक, मेंहदी ।
जाइ=जिस का ।
जिकारा=जय जय कार ।
जितहु (हि वा) जिधर को, जितना ।
जिंदु=जिन (फा०) जिंद=आत्मा ।
जिन=जिन का ।
जिनर जल्ल=जिनवर जल्दी ।
जिदं=जितम् ।
जिरह=(फा०) कवच ।
जीह=जिह्वा ।
जुद परो=दृष्टि गोचर हुई
जुज्झार=योद्धा ।
जुटयौ=जुट पड़ा ।
जुत=युक्त ।
जुत्तौ=जुत गया, काम में लग गया ।
जुथ्थ=यूथ ।
जुवत्ति=युवति ।
जुवान=(फा०) जवान ।
जुविक=युवक ।
जूप=यूप ।
जूरं=जुड़ा हुआ, "गन मुत्ति जूर" (18 4)
जूव=जव, वेग ।
जूह=यूथ ।
जे जुरी=अगर जुड़ गई—भिड़ गई । २ आज्वल्यमान ।
जैत्तियं=ज्यात्विकम् ।

जेणि=जिस ने।

जेरं=(फा) जेर, आधीन।

जेहा=जैसा।

जोइय=जाया, देखा।

जोगिनि पुर=दिल्ली।

जोट=(पजा०) जोड़ा।

जोर=(फा०) जोफ, हानि।

जोयि=देखा।

जोर=(फा०) जोर, बल।

झ

झनक्कै=झन झनाता है।

झनप्पि=झड़प लेकर, "झगरौ झनप्पि" (13—91)

झरलं झर=झग्ल झरल करना, थर्राना।

झली=झेल ली, सहन कर ली?

झल्लोरियौ=झलोर दिया, पकड़ कर हिला दिया।

झलक्किय=झलक पड़ी।

झक्लिया=झलका दिया, चमका दिया।

झप, झंपै, झपि=झपट कर।

झंपै=झख मारता है।

झाक=धाक।

झार=ज्वाला।

झारउ=झाड़ दिया।

झारतौ=झाड़ते हुए।

झारै, झारौ, झारउ=झाड दिया।

झझ=झाज, "बजे झिझि आवज्झ हत्थे" (10—14)

झल्लवै=झेलता है।

झझ=जूझना।

झुरै=(पजा०) झुरता है, दुखित होना है।

झौनि=छौनी, समूह "रुनति भौंर झौनि।"

ट

टुक टुक=किंचित्।

टग टग=टक्टकी, निर्निमेष।

टट=किनारा तट।

टंक=टकार।

टुट्टिय=टूट गया।

टेर=टेर लिया, बुलाया।

टोप=शिरस्त्राण।

टोरं=एकित "कह मालती टोर भूरि सुवेशी" (1—143)

टोरिवै=(पजा०) टोरने के लिए, चलाने के लिए।

टोह=(पजा०) टोहना, खोजना।

ठ

ठट्ठ=समूह, भीड़।

ठठुक्की=ठिठक गई, ठहर गई।

ठयउ=ठहर गया।

ठाह=ठहराव।

ठा=(पजा०) स्थान।

ठिल्लै=ठेल दिए, धकेल दिये।

ड

डड परौ=डट कर खड़ा हो गया।

डड=दण्ड।

डडियौ=दण्ड दिया।

डहक्किय=डहका बना, 'डमरू डुह

डबर—आडबर।
डाटै—(पजा०) डाटा—प्रबल।
डिंडिय—डौंडी बजाइ।
डिंभ घटिया, निकम्मा, 2 हरिन शावक
डुंग—डुंग देव एक सामत।
डुलिग—डुल गया घबरा गया।
डुल्लिय—डुल गया, घबरा गया।

ढ

ढट्ठी—(पजा०) भारी, भरकम, 'गदा कम ढट्ठ' (1—130)
ढट्ठा—ढरना, धड़ाम से गिरना।
ढरिपर्यौ—ढह गया, गिर पड़ा।
ढरक्त—ढलकते हैं।
ढंक्न—ढक्कन, रक्षा करना। "रुप ढक्न इल होइ"
ढाटे—(पजा०) डाटे प्रबल।
ढारु—ढाल।
ढिमरु—बच्चा, "नहि ढिमरु विल्लिय"
ढिल्लीस—दिल्लीपति।
ढुरि—ढुरना, (पंजा०) सरकना, चलना।

त

तक्त (पंजा०) ताकते हैं, देखते हैं।
तक्कै—(पंजा०) देखता है।
तग्गी—तकड़ी—प्रबल।
तच्छि, ताछकर, काटकर।
तद्दित—तद्दित
तण—तन—(राजस्था०) का, की।
तत्ते—गरम जोशिले।
ततये—तबले की नादानुकृति।
तत्थ—तथ्य, 2 तत्र।
तद्=तदा, तभी, तब।
तद्द सह=उसके साथ।
तन्न=तन।
तपि ताम=माघ से तप कर।
तमकि=तमक कर।
तमासु—(फा०) तमाशा।
तमोर=ताम्बूल।
तयं=त्रय।
तर=तरु।
तरफरै=तड़फता है।
तर-स्याम=श्यामतर (शब्द व्यत्यय)
तलपत्र=तड़फना है, 2 पत्तों की शय्या।
तबल्लत=(हि बो०) तबलौं=तबतक।
तसब्बीह=(अ०) तसबीह।
तंती=तन्त्री।
त्थ=था।
त्यनय स्तनितम्।
ताजी, ताजिय+(फा०) अरबी घोड़ा।
तानी=फैलाई।
ताम=उसको। 2 तामस गुण।
तारिय=(फा०) तारी—अन्धकार।
तालई=ताल ठोकना।
तिप्प=तीक्ष्ण।
तिष्ठ=तिष्ट।
तिड़क्की=तिड़क गई=फट गई।
तिड़िय=तिड़क गया।
तिरसल=त्रिशूल।
तिरहुत्ति=मैथिल प्रदेश,

तिरहुति" (ग्रयोध्या कांड)
तिराय=तैरा दिया ।
तिलोय=तीन लोक ।
तिलक्क=तिलक ।
तिन्न=तिरने=त्रस्त तृणम् ।
तुष्पार=घोड़ा ।
तु गन=तु ग ।
तुर्ट=टूट गया ।
तुट्टइ=टूटता है ।
तुट्ठि=तुष्ट हो कर ।
तु टु=(फा०) तु दुर=घोर शब्द ।
तुं बर=तु बे की तरह फूला हुआ ।
तु बा=एक पनाबी बाद्य विशेष तंबुरा ।
तुरक्की=तुर्की ।
तुर=तूण । त्वरा
तुरंती=तुर त, शीघ्र ।
तुरिय=घोड़ा ।
तूल=रूइ ।
तेक=तेग ।
तेनहस=तेनस्वा ।
तौं=(हि बो) तूने ।
तौन=तून, तूणीर ।
तौ लगि=(हि बो) तब तक ।
त्रिवल्ली=त्रिवली ।
त्रीय=तीन ।

थ

थट्टं=थट्टइ=समूह ।
थ टौ=ठहर गया ?
थपे=स्थापित किए ।
थवाइत=स्थापित करवाया ।
थहं=(पत्ता) थहं=स्था ।
थहरिय=ठहर गया ।
थाइ=स्थिर ।
थानए=स्थान पर स्थित हुए ।
थानह=स्थान
थार=थाल ।
थिर=स्थिर ।
थुति=स्तुति ।
थु ग=नादानुकति ।

द

दज्झ=दाह
दज्झइ=जलाता है ।
दड्ढ=दाढ़ २ दढ ।
दद्दइ=देता है ।
दद्दुर=दं दुर ।
दर=दार ।
दरया=(फा०) River
दल=सेना ।
दलिद=दरिद्र ।
दह=दस ।
दहिग=जल गया ।
दतिय=दती ।
दद=द्वद्व ।
दाइच्च=दयित ।
दाच्छ=दक्ष ।
दादुल्ल=दं दुर ।
दाया=दाता ।

दारें=(दृ विदारे) विदीर्ण किया।
दावतं=(फा) प्रीतिभोज।
दाम=दाम=रस्सी।
दिग्ग=दिशा।
दिग्गय=दिग्गज।
दिनियर=दिनकर।
दिट्ठ =देखा।
दिरके=विदक गए, पशु का विदकना।
दिस्न=देखा।
दीरए=विदीर्ण किए।
दीह=दीर्घ।
दुग्रा=(फा) प्रार्थना।
दुज्ज=द्विज।
दु दं=द्व द्व।
दु धारी=दो धारी (तलवार)।
दुन्निम=(ग्र) दुनियां।
दुब्भौ=द्विविधा।
दुम=द्रुम।
दुल्लह=दुर्लभ।
दुहत्ती=दोही गौ दुही?
दुहत्था=दोनों हाथ।
दून=दुगना।
देवगनि=देवता गण।
देहरे=द्वार।
दोजकि=(फा०) दोजख।
दोही=द्रोही।

ध

धपी=फैंकी, "धपो ग्रंधी धूर"।
धज=ध्वजा।
धधीर=प्रबल योधा।
ध्रम्म=धर्म।
धार धार=धाड़ धाड़।
धारधरी=धराधर।
धु धर=धुग्राधार।
धु धरिग=धुग्राधार हो गया।
धुम्मिल=धूमिल=ग्रंधकारमय।
धुम्मिलिय=धूमिल किया।
धुरक्को=दिल में धक धक हुई।
ध्रुव=ध्रुव।
धूप=संतापकारी, "बधे सप धूप"। १०४
धूर=धूल।
धोम=धूम।
धौर=धौला=सफेद।

न

नध=नथ।
नप्पै=क्रोधित होता है।
नछत्री छितानं=पृथ्वी का क्षत्रियों रहित कर दिया।
नट्ठिग=नट्ठ गया (पजा) दौड़ गया। २ नष्ट हो गया।
नट्ठय=नष्ट हुग्रा।
नत्थ=नत्थ लिया, नाक में नकेल डाली।
नत्थि=नत्थ कर।
नद्ध =बाँध दिया।
नप्पिय=(पजा) नप्प लिया, पकड़ा।
नफेरि=(फा) नफीरी।
नयर=नगर।
नरी=स्त्री, २ बंदूक ३ नाड़ी।
नवल्ल=नूतन।

नरत्र=नरतर लगाया।
नंच-नंचौ=क्रोधित हुआ।
नंचिए=नाचने लगे।
नषे=रोक लिए।
नाउ=नाम।
नार=नाला, नद।
नारि=(फा) तोप।
नाह=नाथे।
निय=निज।
निकृष्य=निकृष्ट।
निकहूढी=निकाल कर।
निकट्ट=निकृष्ट।
निकल्लि=निकल कर।
निपे=नपे।
निगड्डि=गाड़ कर।
निघट्टिया=घट गया, कम हो गया
निभिल्ले=झेलते हैं, सहन करते हैं।
निर्द्दयार=निर्दयी।
निर्धरय=निराधार।
निट्ठ=निष्ठा, नष्ट।
नितार=नित्य।
नितारे=न्यारे, पृथक।
निवट्ट=निपट।
निब्बर=निपट गया।
निम्मइ=निमाता है।
निम्मल=निर्मल।
निर्य=निज २ नित्य।
नियरेण=समीप से।
नियाणन=नयाणा, नादान।

निरत्ति=निरक्त=विरक्त।
निवट्टे=निपटते हैं।
निवड्ढी=निबद्ध=बांध कर।
निवाजिय=(फा०) नमाज पढ़ी।
निसान=(फा०) झंडा, २ नगाड़ा।
निसुरत्त=निसुरत्ति खांन।
निहाय=छोड़कर।
नूरं=(फा) नूर, चमक, तेज।
नेन=नैन।
नेर, नैर, नयर=नगर।
नैड़े=(हि बो) नेड़े=समीप।

प

पष्प=पद्म।
पष्पर=पाखर।
पष्पारयौ=प्रक्षालित किया।
पगह=पग।
पच्छा=पश्चात्।
पच्छैयर=पीच्छे हटा दो (सेना)।
पत्त=प्राप्त करना, पहुँचना।
पतावहि=विश्वास दिलाता है।
पतियहि=प्रत्यय, विश्वास करना है।
पतीज किय=विश्वास किया।
पत्तोमि=प्रत्येमि, विश्वास करता हूं।
पथ पथ्य, पन्थह=पथ, मार्ग।
पथरिय=फैल गया।
पत्थी=पथिक, प्रथित।
पत्थे=पथ में।
पद्धर=(पजा०) पद्धरा, हमवार।
पट्ट=पट।

पट्टनं=पत्तन, नगर ।
पंबर=रेशमी वस्त्र ।
पट्ठया=भेज दिया ।
प्पमान=प्रमाण ।
पय=पाव ।
पयंपि=पकड़ कर, २ बोल कर ।
पयपै=प्रजल्प, बोलते हैं ।
पयानह=प्रयाण ।
परच्चए=परच गए, दिल बहल गया ।
परष्पन=परीक्षण ।
परनक=पर्यंक ।
परट्ठि=भेज कर ।
परतिष्य=प्रत्यक्ष ।
परिअ्र त=पर्यंत ।
परिभ्ररि=परिक्रमा करके ।
परिठ्ठ=प्रतिष्ठा ।
परिणाम=प्रणाम ।
परिहार=एक राजपूत ।
परि वहि=परि वहित ।
पारिहरि=प्रतिहारि ।
परेव=कबूतर ।
पलह=प्लवग=नौका ।
पल्लए=नौकावत्, डगमगाए ।
'पयाल पलह पल्लए (10 25)
पलक=पलक ।
पलट्टहिं=पलटते हैं ।
पलत्थिय=पलट दिया ।
पल्लानि=पलान, पलायन ।
पस्तर=प्रस्तर ।
पसाव=फैल व ।
पहकि=पृथक करकें ?

पहर=प्रहर ।
पहार=पहाड़, २ प्रहार ।
पहु=प्रभु ।
पहुप जलि=पुष्पाञ्जलि ।
पपिय=पक्षी ।
पजलि=प्राञ्जलि ।
पंगुरे=पंगुर ।
पडिय=देवी का पाँडा ।
प्रजारी=प्रज्वलित की ।
प्रजभाल=प्रज्वलित अग्नि ।
प्रतष्षि=प्रत्यक्ष ।
प्रथ्थ=प्रथा ।
प्रष्प=प्रश्न ?
प्र ब=प्रबल, "भुमि प्रब्बल" (17-3)
प्रसद=प्रासाद ।
पाइक=पायक=पदाति ।
पापर पष्पर=पाखर ।
पागार=पगार ।
पाटह=पटहा तरता ।
पान=प्राण, २ पाणि, ३ ताँबूल ।
पायार=पाताल ।
पारत्थह=पार्थ ।
पारद्धी=पार वा=विद्वान् ।
पारस=स्पर्श ।
पारसि=स्पर्श कर के ।
पार-त्थियौ=पार हुआ ।
पासयो=समीप आया ।
पिक्कए=भोती ।
पिष्षि=देख कर ।
पिछोर=पिछना ।
पिट्टि=सिर पीट कर ।

बलिआ=बली।
बल्लिनि=लताए।
वली राय=बलिराज।
बहत्त=बह गया।
बहे=वध किया, २ बह गए।
बृहि=बर्हि=मोर।
बिजवहु=बीज दो, वपन कर दो।
बारह=बार "इहि बारह"=इस बार।
बिहल्लं=स्थान से हिल गया २ विह्वल।
ब्बुक्किय=बुक्कने लगा रोने लगा।

भ

भग्ग=मग्न।
भग्गी=भाग गई।
भष्पहि=कहता है, २ खाता है।
भष्षु=भक्ष्य।
भत्तं=भक्त।
भत्ति=भक्ति।
भद्दं=भद्दा।
भद्दव=भाद्रपद।
भमी=घूम गई।
भरक=भड़क गया, क्रुद्ध हो गया।
भरक्के=भड़क गए।
भल=भला।
भल्लनि=भाले।
भल्ली=भली, सुंदर।
भजनह, भंजिय=तोड़ दिया।
भृत=भृत्य।
भाय=भाव।
भारथ्थ=भारत।
भारिय=भारी, बोझल।
भिंग=भृंग।
भिंडिपाल=स० भिंदिपाल="अश्व प्रदीप साधनम्" (दे० समुद्रगुप्त प्रशस्ति) भाषा में=टाँपिया।
भिन्ने=भर दिए।
भिद्दिहे=भेदेगा।
भिन्नो=भेद दिया।
भिभिय=भयभीत हुआ।
भिरिग=भिड़ गया।
भिल्ला=भिलिनी।
बिहरत=(फा०) बहिश्त।
भीमानी=भयकर।
भीव=भय।
भुग्गवै=भोगता है।
भूर=भूरि।

म

मग्गहि=ढूंढता है।
मग्गिवान=खाजी।
मग्गे=मार्ग में।
मग्गसिसि=मार्गशीर्ष मास में।
मच्छरी=प्रदेश विशेष।
मज्झि=मध्य में।
मज्झै= ,, ,,
मत्त=मदोमत्त, २ मात्रा।
मतिय=मति, बुद्धि।
मत्ते कथै=मतवाला हाथी।
मत्थे=मस्तक पर।
मत्थौ=मथ दिया।

मई=मद ।
मधूनेपी=मधुपुरी, मथुरा ।
मनुहार=मनहरना ।
मण्डल=मण्डलाकार ।
मफ्फिय=माफ कर ।
मदमंत=मदोमत्त ।
मसाण=श्मशान भूमि ।
मसलति=(अ०) मश्लहत=सम्मति ।
मसलिग=मसल दिया ।
मसद=(फा०) मसनद ।
मसुत्ति—(अ०) मशावरत- मशवरा ।
महग्ग=महार्घ्य ।
महा भर=महा भट ।
महिल-सुष=महिला के सुख, भोग ।
महल्ल (अ०) महल ।
मज—मंझु, २ मंझ=मध्य ।
मंजे=मांजते हैं, रगड़ते हैं ।
मडी=मडित की ।
मडव=मडित करता है ।
मस फट्टे नरी=मास की नली फट गई ।
मृगे तिस्स=मृगतृष्णा ।
मजाद=मर्यादा ।
मित्तिय=मिता, विचार किया ।
मिहिमान=(फा०) महमान ।
मुक्को=छोड़ दिया ।
मुक्की=छोड़दी, २ मुक्ति ।
मुक्करे=मुकलित हुए ।
मुक्ल्यौ=मुकुलित हुआ ।
मुगत्ति=मुक्ति ।
मुच्छि=मुर्च्छा, २ मुष्टि ।
मुत्तिय=मौक्तिक ।
मुत्ति सारे=मौक्तिक सार ।
मुद्द=मुद्रा ।
मु दिग=मू द दिया ।
मुनारे=(फा०) मीनार ।
मुरक्किय=मुरक गया, जरक गया ।
मुसाफ (अ०) मुसहफ=पुस्तक कुरान ।
मुही=मुझ को ।
मूर=मूल ।
मेर=मेरू पर्वत ।
मेल्हा=मेल दी, फैंक दी ।
मैद्धितिय=मद्धम, मैला कर दिया ।
मैन मैनत्य=काम देव ।
मै मत्ता=मदोंमत्त ।
मोर=मेरा ।
मोरी—मोड़दी ।
मोहरय=मोह जनक ।
मौजे=(फा०) मौज में ।

र

रघ्यं=रख दिया ।
रषत=रखता है ।
रजक्क=धोबी ,
रजत=रजता है, तृप्त होता है ।
रज्ज=रजना, तृप्त होना ।
रजिय=रंग गया ।
रत्तल (फा०) रतन, "रत्त लिय नैन" ।
रत्तिय=रात्रि ।
रत्तरी=रात्रि ।
रत्तौ=अनुरक्त हुआ ।
रत्थं—रथ्या, २ रथ ।

रदग्गे=दात पर, 'रदग्गे इलाह" ।
रनकि झकि=नूपुर नादानुकृति ।
रनि=रण ।
रपट्टे=रपट गए, फिसल गए ।
रल्ले=रल गए, जा मिले ।
 ग=आनंद ।
ृजहु=प्रस न होओ ।
रज रनिय=(फा०) रज=कष्ट ।
रजीनं=रजित=प्रसन्न, करने वाला ।
 घ=रंध्र ।
रभसु= =रभस=वेग ।
 सीह=रण सिंह ।
रातं=अनुरक्त
रान (फा०) जघा ।
रावर=राजकुल, २ तुम्हारा ।
राह=(फा०) मार्ग ।
रिंगए=रेंगे, पेट के बल चले ।
रिंगए= ,, , ,, ,,
रिजे, रिझै=रीभते हैं, प्रसन्न होते है ।
रुक्कि=रुक कर ।
रुख्ख=रुक्ख (प्रा०) वृक्ष ।
रुखह=रुख तरफ ।
रुधिद्र=रुधिर से आर्द्र ।
रुद्धा=रोक दी ।
रु घइ=रोकता है ।
रुरनि=रुलति=रुलने हैं लुढ़कते हैं शब्द करते हैं ।
रूपय=रूप ।
रूव=रूप ।
रूर=सुन्दर, प्रशस्त ।
रेहए=रेखांकित किए ।
रोह=आरोहण किया ।
रोहत=पैदा होते हैं ।

ल

लष्पि=देख कर ।
लग्न=लग्न ।
लच्छि=लक्ष्मी ।
लच्छि=लक्षयित्वा ।
लद्द=लदा हुआ ।
लद्धी=प्राप्त की ।
लवक्कि=लपक कर, लढकना, लहलहाना ।
लहता=प्राप्त करता है ।
लह=प्राप्त करता हूँ ।
लहा=प्राप्त की ।
लिद्ध-रिद्ध =समृद्ध ।
लाक=लकीर ।
लु गी=लौंग, २ सिर पर बांधने का रेशमी दुपट्टा ।
लुत्थि=लोथ=लाश ।
लु भइ=लोभित होता है ।
लुभि =लोभित हो कर ।
लुसंदी=(पजा०) लुसती है, जलाती है ।
लोइ=लोक ।
लोहानौ=एक राजपूत कुल "लोहाना आजान बाहु ।

व

वइट्ठ=बैठा है ।
वषत=(फा०) वक्त—समय ।
वग्ग=(फा०) बाग, वग ।

वाग=घोड़े की वाग, लगाम।
वागी=वणिक, सैनिक।
वगे=(हि० बो०) वग गए, बौड़ गए।
वग्गे=वर्ग में।
वच्छ=वत्स, वच्छा।
वजइ=वजता है।
वट्टी=वाट (हि० बो०) मार्ग।
वट्ट=वत्ती, वर्तिका।
वट्टै=वाटते है ?
वड्डतनी=वड़े तन वाला, हृष्ट पुष्ट।
वड्ढि=वाढ़ कर काट कर।
वत्त=बात, वार्ता, २ दूत।
वत्तै वतरहि=वातें करता है।
वत्थ=वर्त्में, "अग्गौ उगली राव कनौज वत्थ" (8-3)।
वथ्य=वस्ति कटि, २ वक्षस्थल।
वद्=बनना।
वद्दर=वादल।
वधूव=वधू।
वनाइग=बनाया।
वन्यौत=वन्य—जंगली।
वपं=वपु।
वरज्ज=रोकना।
वरी=वरण की, २ श्रेष्ठा।
वल्लिय=वेल।
वल्लिए=वेष्टित किए।
वसीठ=दूत।
वहनी=भगिनी।
वहयो=वहना, वहाव।
वक्रिय=टेढ़ा किया।

वाञ्छि=चाह कर।
वाजित्र=वाद्य विशेष।
वाम-वाइव वाव=वायु।
वार=केश।
वारुनि=सेना, "दस हजार वारुनि विसाल" (१४ ४२)
वारी=वाटिका।
वाह=भुजा।
वि=अपि।
विअ, विय=दो।
विकस=विकसत।
विगत्ति—विगति—दुर्दशा।
विगलि—विगलित होना, विखरना "विगलि केस" (६ ५६)
विचीच=वीच वीच में।
विच्छन=वृन्द (बहुव०)
विजना=वींजना, वीनना।
विज्ज, विज्जल=विद्युत।'
विंज्झ=विंध, २ विंध्याचल।
विमुक्का=भय से विदकना, उच्छलना ?
विटरत=विटरते हैं, विगड़ते हैं।
विट्टयौ=रोका ?
विट्टुरे=विरतरित हुए।
विंटिय=विखेर दिया ?
विड्डरि=वहुत डर कर।
वितिय, वितयौ=वीत गया।
वित्तक्कु=घन।
वित्थारयौ=विस्तार किया।
विंद=वृंद।

विद्दरे=विदीर्ण हुए, बिखर गया ।
विद्ध = विधु ।
विधुव=विधु ।
विनिय=बाना, चुना ।
विनट्टै=नष्ट होते हैं ।
विनानि=नाना प्रकार ।
विन्यानि=विज्ञानी, २ न्यारा ।
विपं विप्प=विप्र ।
विप्फुरे=विस्फुरित हुए ।
विभट=विशेष भट-योद्धा ।
विभ भट्ट=ब्राह्मण भट्ट ।
विभुच्छ=बुभुक्षा ।
वियसि=आकाश में ।
विरत्य=वृथा ।
विरद्द=विरुद ।
विरट=बहुत रटना ।
विरुझियो=उलझ गया ।
विरूर=अति सुन्दर ।
विलष्यो=विलखा, रोया ।
विलग्ग=अधिक मलान हो गए ।
विहत्तिय=मार दिया ।
विहान=विभात, प्रात काल ।
विहयति=क्रोध में आकर उधम मचाते हैं ।
विहर=विहार ।
विहल=विह्वल ।
विहल्ल=वेहाल ।
विहिणा=विधिना ।
विहु=विधु ।
वभ्भ=बीच में ।
बीनी=चुनी ।
वीरह=वीर का ।
वेतसल्ल=वैंत ।
वेर=(हि० बो०) वार, कितनी वार ।
वेवास=विवस ।
वेसा=वेश्या ।
वैरष्ष (फा०) झंडा ।
वैरग=बिना रंग के ।
वैरागरे=वैर का घर ।
वैसवय=वय संधि ।
वाइ=वापी ।

स

सकट्ट=शकट ।
सकास=सुकृश ।
सकिल्सी=किसी सहित ।
सकीन=सकीर्ण ।
सष्प=सखा ।
सग्ग=स्वर्ग ।
सजए=सज गए ।

सज्जा=शय्या।
सझयौ=साध्य हुआ।
सतनज=सतलुज दरया।
सत्थ=साथ। २ समर्थ।
सत्थह= ,, ,,
सथ्थल=(हि० बो०) घास की भरी जो दोनों भुजाओं में आ जाए।
सद्द=शब्द।
सद्दे=(पंजा०) बुलाए।
सदनइ=साधना इच्छा।
सद्धै=साधता है।
सदाइ=सदा।
सन्नाह=सनाह, कवच, सनाथ।
सनिद्द=सन्निहित।
सबल्ल=सबल।
समथ्थ=समर्थ।
समज्झ= ,, ,,
समत्त=समस्त, २ समर्थ।
समत्तह=समर्थ।
समप्पन=समर्पण।
समाह=सम आहव—युद्ध ?
सम्हो=सम्मुख
समरइ=समर।
समल=श्यामल।
समली=श्यामली काली।
समि=सम। २ स्वामी।
समुद्द=समुद्र।
समूर=समूल।
समे=साथ में।
सयल=सकल, २ शैल।
सरक्क=सरकना।
सरत=शरद ऋतु।
सरद्द=शरद ऋतु।
सरम=(फा०) शर्म-लज्जा।
सरीव=शलाका ?
सल=सालना, कष्ट देना।
सल्ल=शल्य।
सलक्कहि=सिसकता है।
सल्लक्कमि=सङ्क्रमण करके।
सलष तणी=सलषपवार की कन्या इञ्छिनी।
सलमलहि=सिकुड़ते हैं।
सलहे=प्रशंसा करता है।
सविग=सवेग।
सहर=(फा०) शहर।
सहलौ=सहज, आसान।
सष=शंखासुर राक्षस।
सगरइ=समर—युद्ध।
सगाने=साथ में।
सघरिग=संहार कर दिया।
सच्चय=संचित किया।
सचवी=संचित करती है।
सजुत=संयुक्त।
सझर=झरना टपकना।
संठयौ=सांठा, जोड़ लगाया।
सठी=सांठ लगाई।
सदूषि=संदूख।
संघ=संधियां—जोड़।
संधै=संधि करता है।
सन्नाहिय=संहार किया।
संभरयं=संभृतम्।
सपत्ते=पहुँच गए।
समरि=स्मरण करके।

हकारिग=बुलाया, 2 अहंकार किया।
हाइ=है।
होति=सूर्य किरण।
हुँकु=हुंकार।
हुप्पै=हूकता है, खगारा मारता है।
हुतौ=था।
हुल्लारहि=हुलारे देता है।
हुल्लसै=उल्लसित होते हैं।
हूर=(अ०) सुंदर परी।
हूल=पीड़ा।
हेंगुरी=इंडुरी, इंडुवा।
होमी=होम कर दो।

परिशिष्ट शब्द कोष

अकुरिय—अ कुरित हुआ।
अकवारिय—अकवार करना, जप्फी मारना
अगुली—10—24।
अगमै—अपनाता है।
अजियन (18-29) अ ज—कमल।
अ जु—(1—81) अ ज कमल।
अ जुरियाइ (6—66) अ जलि।
अपुत्त 1—29 "अपुत्त प्रहारे"।
अपडली—अपडल—अखण्ड—ईश्वर
अप्पार—अखाड़ा।
अप्पी—अत्ती—आख।
अगनित्तइ—अगणित—असख्य।
अग्गइ—आगे ही।
अगिवान—अग्रणी।
अगु—आगे से ही, पहिले से ही।
अग्गे—अग्रे।
अगैवान—अग्रणी, अग्रगामी।
अचिज्जाई—आश्चर्य हुआ।
अट्ठारपी=10—28।
अडरित—डरा नहीं, भयभीत नहीं हुआ।
अढर—जो न ढलता हो, अडिग।
अतत्ते—जो तत्ते—गर्म जोशिले न हो।
अत्थवै—अस्त होता है।
अ दूनि—अ दुक—हाथी बाधने का लोहे का किल्ला।
अ दाइ—17—9
अघार—आधार।
अनघोर—जो घोर न हो।
अनरत्तौ—अननुरक्त।
अनेही—जो स्नेह न करता हो।
अ बरिय—अ बर?
अभगा—दृढ योद्धा।
अभ—16—31
अम्म—अम्मर—अमर—देवता।
अमग्गह—अमग—कुमार्ग।
अमजेम—3—45।
अरत्त—अरक्त, विरक्त।
अरुट्ठ—जो न रूठा हो, अर्थात् रुष्ट न हुआ हो।
अलंगिल—आलिंगित।
अव नह—2—6।
अवसान—अत।
अविहर—4—18।
असारी—विना सार के।
असंभौ—असभव।
अहुट्टि—अटक गई?
अहन—न हनन करना?

आ

आकर्षी—आकर्षक।
आदेषन—सिंचन।
आमग्ग 2—9 आ मार्ग।
आरुट्ठो—(4—19) आरूढ़।

आरत्तत—अनुरक्त होता है।
आररिय—रार—लड़ाई की।
आरस—अर्श—(फा०) आसमान।
आले—विरले।
आवतई—आते ही।
आवर्दा—लर्जा 5—15।
आसरिय—आश्रय लिया।
आसिक्क—आशिक।

इ

इप्पि—ईक्ष, देख कर।
इत्ते—इतने।
इत्तो—इतना।
इंद पत्थ—इंद्र प्रस्थ।
इम—इस प्रकार।
इलाह—इला—पृथ्वी।

उ

उग्गाह—उग्घा (पंजाबी) प्रसिद्ध।
उज्जए 10-18
उभार्ण 8 8
उरप्प 9 82
उल्ल 8 10
उवत्ति 9 132
उसघ 11 29
उदिग्ग—उदित हुआ।

क

कंक—क्षत्रिय।
कष—काख, कक्ष।
कजियन 18 29
कंद्रन 8 78
कंटलाए—गले से लगाए।
कंधति—कंधा देते हैं, सहारा देते हैं।
कक्कतर—कक्करतर।
कग्गद—कागद, कागज़।
कग्गल—3—6 कौआ।
कच्छी 9-118, कच्छ जातीय।
कच्छै—10 1c कटिबंध कसते हैं।
कज्जे—(पंजा०) कवच पड़ गया, अंग विहीन हो गए।
कट्टइ—काटता है।
कट्टनी—काटने वाली।
कढ्ढी—(पंजा०) निकाल दी।
कटारिय—कटार कटारी, बर्छी।
कटिक्कति—कटकटाता है, दाँत चबाता है।
कट्टिया—काट दिया।
कट्टेरि—काटने वाला।
कठेर—कठेर-एक राजपूत जाति।
कढ्ढै—(पंजा०) निकालता है।
कणजे—10-9
कर्तेरि—काटने वाला।
कद्दव—कर्दम।
कद्द—कदम अथवा कद, कब।
कनवत्ति—कनक-कांति।
करकिय—कड़क गईं, बजने लगीं, "करकिय पंजरी"—डफ बजने लगे।
करसि—(पंजा०) करेगा।
करारे—करड़े, कठोर।
कलक्कलि—कलिकाल, अथवा कलकल।

गंभ—गर्भ ।
गजमुत्ति—गज मौक्तिक ।
गज्जित—गर्जित ।
गज्जिलक 12-32
गड्ड्यो—गाड़ दिया ।
गड्डहिं—गाड़ता है ।
गड्ड—गढा ।
गलान=गलतान—(हिसारी) व्यस्त ।
गम्मरु (पंजा०) नव युवक ।
गयन—गया ।
गयनेह—गगन में ।
गरयौ—गल गया ।
गरिट्ठ—गरिष्ठ ।
गवट्ठिय—(10-69)
गस्सी—ग्रसित हुई ।
गात—(हिसारी) शरीर ।
गामी—ग्रामीण ।
गावारह—गवार, मूर्ख ।
गारुरी—गारुड़ी—सर्प विष उतारने वाला
गुट्टै—गुप्त बात करता है ।
गुरहिं—गुर्राते हैं ।
गोईत—गोपितम् ।
गुस्तान—18-8

घ

घु मर—घुमड़ कर ।
घत्तिय—(पंजा०) भेज दिया, अथवा मार दिया ।

च

चक चक्किय—चकित हुए ।
चक्रित कुंतल—घु घराले केश ।
चट्टदे—चढ़ते हैं ।
चवत—चब चबाता है ।
चवहिं—बोलते हैं ।
चवट्टा—चौगुणी ।
चहुट्यो—चुहुंट गया, चिपक गया ।
चमरालिय—14 121
जाइ=चाव स ।
चाकरह—चाकर—नौकर ।
चिकारे—चिल्लाना, दु:ख से कराहना ।
चिट्ठिय—चिट्ठी—पत्र ।
चु गाइ—चुगने के लिए, चरना ।
चु गिल—चगुल ।

छ

छक्का=छक गए, थक गए ।
छज्जै—छाजे—शोभित हुए ।
छज्जित—शोभित ।
छंड़े—छिंडे पादिए, शरीर छलनी कर दिया ।
छद्द—आच्छादित ।
छपया—छपा—रात्रि ।
छयल्ल—छैल छबीला ।
छाछी—छाछ—तक्र ।
छिकारे—जय जयकार ।
छिछ—छींटे ।
छितान—छिति—पृथ्वी ।
छिरक्कति—छिड़कती है ।
छुछु दरी—छछु दर ।

ज

जगी मृदगा—जग का बाजा।
जजरीं 13 11
जजारइ—जञ्जाल।
जनूर 18-9
जजोई—14-17
जंहूर 14-41
जंतिय—जाता है।
जंवर —(9 104) जबरदस्त।
जक—जकना, संकोच करना।
जगारिय—जगाया।
जगि—जाग कर।
जग्गारे—जगा दिये।
जग्गे—जाग गये।
जज्यौ—18-74
जज्जर—ज्वलित।
जड़-जडु—जडु उजडु—मूर्ख।
जत्य—यथा।
जत्तइ—जाता है।
जरकस—जरीदार वस्त्र।
जद्द—नद्द—वंश, जद्दद औलाद।
जदु—यदुवश अथवा जब।
जबरजग—जबरदस्त।
जार्ज—48 21 एक सामंत?
ज्याव—(14 26) यावत्।
जानि—यानि के अथवा जानकर।
जाम—याम, अथवा जहा।
जामिनि—यामिनि।
जापालदा 10 30
जिक्कास—9-165
जिगन 11-37
जितकु (हिसारी) जिधर को।
जिते—जितने अथवा जीत लिये।
जिलाश 9-114
जि॰गरी 8-88
जीविय 5-66
जुजह्ल 1-162
जुट्यो—जुट गया, पिल पड़ा।
जुर—जुड़ना।
जुरि—जुड़ कर।
जुवप्पन—युवापन।
जूरं—जड़ित।
जेजरी—8-65
जेरो 5 20
जाट—जोड़ा।
जोइल—देखता है।
जातिक—ज्योतिष।
जोरा—जोड़ा तथा जोरावर।
जोरन—जोड़ने के लिये।

झ

झप्यो—झप मारी।
झंपहि—झप मारता है।
झण्डा—पताका।
झंप झपे—झपटता है, आक्रमण करता है।
झक झाई 17 6
झकझोरिग—झकझोर दिया।
झुकि—झुक कर।

झगरौ—झगड़ा।
झमक्कंति—झमकते हैं।
झरप्पि—झपट कर।
झरोषनि—झरोखे, गवाक्ष।
झल्लरि झल्लरिया—झकझोड़ दिया। भींच दिया।
झल्लिय—झेल लिया, सहन किया।
झल्लोरियो—झल्ला गया, पागल हो गया।
झाई—छा गई।
झाक झमा—17-4
झारयउ—झाड़ दिया, झिड़क दिया।
झारान्यौ (10 72) झाड़ दिया।
झारि—झाड़ कर।
झारौ—झाड़ दिया, झिड़क दिया'
झिझि—झाज—खड़ताल।
झिम झिमिक—झलकारा देकर।
झुम्मिय—झूम कर।
झूझ त—जुझ त, जुझते हैं।
झूमि—झूम कर।

ट

टंक्तयं—ताट क।
टट्टर—टट्टरी—गजा सिर।
टट्ठा—मखौल।
टार—2-5 तार।
टुक्कि—टुकड़े टुकड़े करके।
टूकह—टुकड़े कर दूगा।
टांहर 11 121 एक राजपूत का नाम।
टोप—टोपी—सिर त्राण।
टोर—(पजा०) चाल, गति।
टारिवे—(पंजा०) टारने के लिये चलाने के लिए।

ठ

ठट्ठरि—ठट्ठा मखौल।
ठाई—उठाइ, ऊची की।
ठानी—ठान ली।
ठाम—स्थान।
ठिल्ले—ठेल दिये, धकेल दिये।
ठिल्लन—धकेलना।
ठौ—स्थान।

ड

डड्यौ—दडित किया।
डंडली 13—51।
डडने—दण्ड देने के लिए।
डड्डूरी 5-55
डरप्पि—डर कर।
डहक्कंत—डहकते हैं।
डहडहे—डमरू डह डह करता है।
डाटा—दाढी।
डार—(डिसारी) पक्ति।
डिगै—डिगता है, गिरता है।
डुल्यो—डुल गया, घबरा गया।
डुलिग— " "
डुलिय— " "
डोलाइल—डोलते हैं, घूमते हैं।

ढ

ढकिय—ढक लिया।
ढढोरियौ—ढढोरा दिया। डिम डिम बजाकर घोषणा की।

ढढारहिं—ढढोरा फेरते हैं।
ढरकन—ढलकते हैं।
ढलक्किय—ढलक गया।
ढल्लिरिय—धकेल दिया।
ढहि पर्यौ—(हिसारी) गिर पड़ा।
ढारे—ढाल दिये, गिरा दिए।
ढाहिय—ढाह दिया, गिरा दिया।
ढिल्लरी—ढीली।

त

तपतानं—मार मार कर तखता बना दिया।
तग्गे—(1 14) तकडे—प्रबल।
तटंकता—ताटक।
तत—तत्व।
तंतु—तत्व।
त्यट—समूह।
तह तद—तब।
तनहाले—तनहाई—अकेला।
तबल्लह—तबला।
तमुला 9—105 ताम्बूल।
तरकि—तरक कर, उछल कर।
तरफरै—तड़फता है।
तरप्पि—तड़फ कर।
तरारी—1-66।
तवस्थिय—स्तवन करके।
ताटकता—ताटंक—कर्ण आभूषण।
तारी— फा) अन्धकार।
तारे—तारा गण।
तिट्ठ 13-78

तिपा तिपत्ति 8-65 नादानुकृति।
तिराय—तैरा दिया, पार कर दिया।
तीप—तीक्ष्ण।
तु गइ—उत्तुंग।
तुटितान—टूट गया।
तुरत्त—तुरत्त—शीघ्र मार देना।
तोन—तूणीर।
ताविय—ताड़ कर।

थ

थट्टा 11-3
थरहराना—थर्राना, कांपना।
थमन—थम्बा—स्तम्भ।

द

दती—हाथी।
द्रवइ—द्रवित होता है।
दट्ट 19-16
दम्म—दम रखना, हौसला करना।
दर्वानि—दव—अहंकार।
दसंत—देखते ही।
दहभारा—दस भार।
दहसति—दहशत—डर।
दिढवर—दृढ़ अम्बर—कवच।
दिढिय—दीहदा है (पंजा०)—दीखता है, अथवा दिया।
दियदे—दे दिए।
दींचा—(पंजा०) दीखता है।
दीघु—देखने के लिए।
दीलवलं—(फा) दिलवर।
दुदर—दुर्दर।

दुनी—दुगनी।
दुभ्भो—द्विविधा।
दुरंगे—दो रंगा—कपटी, दो रंगी चाल
दुर्यात—दूर होना, नष्ट होना।
दुरित—दूर कर दिया, दुत्कार दिया।
दुवे—दोनों।
दुसल्ली—दुःशल का पति जयद्रथ।
दूनति—दुग्गण "पट्ठ दुनति"। छ दूनी बारह।
दूप – दर्प।
देहरे—दरवाजे पर, देहली पर।

ध

धर—धड़।
धरकै—धड़कता है।
धरग—अरधंग।
धराधर—धड़ाधड़, लगातार।
धसिय—धस गया।
धुकियौ—धकेल दिया?
धुक्कति—धुकती है, जलती है।
धुक्को—9-118
धूमग—धुए जैसा।
ध्रु मडल—ध्रुव मडल।
धूप—एक देव।

न

नधो 10-39
नंधिया—पकड़ लिया।
नट्टिग—नष्ट हो गया, अथवा नट्ट गया, दौड़ गया।
नट्टिनी—नटनी नर्तकी।
नथ्यै—नकेल डाल दी अथवा सनाथ किया।
नदरी 9 82
नद्दयं—नाद करता है।
नद्दं—नष्ट?
नया—नूतन।
नल्ल विहुल्ल 1-162
नस्सी—नष्ट हो गई।
नाव 8-21
नाइक—नायक।
नाच्छे 5-47
नाजी 9-113
निक्करि के—निकल कर।
निकरिस—निकल कर।
निघट्टिग—घट गया।
निघट्टिया—घटा दिया।
निघातयं घातय—घात प्रतिघात।
निछत्री—क्षत्रियों रहित।
निद्दरइ—निढाल होता है।
निढाल—कमजोर।
निदधिजा—समुद्रजा—सरस्वती।
निधार—निराधार।
निम्मई—निर्माण करता है।
निव्वाहियउ—निर्वाह किया।
निवारे—दूर कर दिए।
नीलकर—नीला करने वाला।
नुम्महि—नम्र होता है।

नेवर—नेउल—नेवला।
नैक—(हिसारी) जराक, ईषद्।
नैण—नैन।
नैन नटि नटि—नयनाभिनय करके।

प

पक्कर—15-8
पष्पर—हाथी का लोहे का झूल।
पगार 11-30 किनारा
पच्छै पष्पै—पिछला पखवाड़ा।
पच्छारिय—पच्छाड़ दिया।
पच्छै पहर—पिछले प्रहर।
पजाए—पहुँचा दिए।
पट्ठर 7-6
पट्टरोह—पटड़े पर चढ़ना, चौकी पर खड़ा करके आदर करना।
पटटी 13-79
पट्टुर 13-105
पट्ठे—भेज दिए।
पत्त—प्राप्तम्।
पत्थारिय—प्रस्तार फैलाव किया।
पथिय—प्रथित।
पद्धर—(पजा०) पद्धरा, हमवार।
पन्न—पएय।
पयातनि 13-29
पयानह—प्रयाण।
परषिय—परख करके।
परस—स्पर्श।
पराइन—पड़े हैं?
परिगह—परिग्रह।
परिहार—एक राजपूत जाति।
परिपति—परिपतति=चारों ओर से गिरते हैं।
पल्लौं—प्रलय।
पलट्यौ—पलट आया वापिस हुआ।
पलट्टहि—पलटता है।
पलक—11-23 एक पल
प्रसरै—प्रसर, फैलता है।
पसारु—प्रसार, फैलाव।
पहु पजुगी—पुष्पाजली।
पचजन्य—शख।
पचफारि—पाच फाड़े, फाकें।
पचुकी—14-22
पजर—पिंजर—ककाल।
पंजरी—पिंजर।
पजरत—ककालवत् आचरण करना।
पंसारी—प्रसारी—फैला दी।
प्रगासिय—प्रगट हुआ।
प्रज्जरै—प्रज्वलित होता है।
प्रलबे—लटक गये।
प्रसल्लि—10—26
पाइक्क—पायक—सेवक ?
पाग=पाग, पगड़ी।
पाजी (हिसारी) मूर्ख।
पातक्क—पापी।
पार-छियो—पार हो गया।
पारि—पक्ति।
पिंगिय—पीली।
पिंज—पिंजर।

रजाए—रजा दिए, तृप्त कर दिए।
रजिय—रज गया, तृप्त हो गया।
रट्ट्या—7 30 रटना ?
रत्तह—अनुरक्त होता है।
रत्तलिय—रत्तल (पजा०) रक्त।
रत्ति—किम्मत, तथा रतिक-जरा सा, थोडा सा।
रत्थी—रथ चालक।
रम्मिय—रमण करके।
रल्लै—(हिसारी) रल गये, जा मिले।
रहसी—(पजा०) रहता है, तथा रहसि एकान्त में।
राज ग—राजाओं का समूह।
रारि—झगडा।
राहप्प—(11-47) (फा०) राहत से।
राह विराह—मार्ग कुमार्ग।
रिंघ 11-19
रिंघए—(7 30) रेंगना, पेट के बल चलना।
रिंधीग—रींघ दिया, रींघना—(हिसा) पकाना।
रिंद—1 7 (फा) शराबी, बदमाश।
रुद्दी—रोक दी।
रुधिद्रा—रुधिर से आर्द्र।
रुप्पी—रोप दिया (हिसा०) आरोपण किया।
रूप्पीयौ—आरोपण किया।
रूब—रूप।
रोम—रोब—प्रभावित करना।

ल

लँ—(हिसा०) तक।
लपिन—लक्षण।
लडयि—लडकर।
लत्तान—लता—(पंजा०) वस्त्र, तथा लातें मारना।
लद्दी—(हिसा०) लाद दी, लादना—गड्डे पर सामान लगाना।
लद्धो—लब्ध की, प्राप्त कर ली।
ललाटेय—ललाट।
लवन=(9 57) लवन7लवण।
लहानं—लहणा (हिसा०) प्राप्त करना।
लाजी—9 113
लामस—3 33
लिथ्थौ—राक दिया ?
लिद्धिय—प्राप्त किया।
लोव--6-31
लुट्टे—लुट गए।
लौं—(व्रज) तक।
लोवीवलो 9 19 समान, तुल्य।
लाहनीन पाइ—लोहे की बेडिया पावों में।

व

वपत—वक्त (फा०) समय।
वट्ठै—बढ़ गए, अविक हुए।
वत्थय—14 27 वक्षस्थल ?
वनेतं=वन्य, व गलो।
वर विंझ 7 34
वसीठनि (बहुव०) दूत
वंच्छरी—चाहती है।
वंनी—वझना—आना (मुलतानी पंजाबी)
वंझरिय—(18-70) बांझ, बंध्या

सनदन—कमल ।
सत्थति—साथ ।
सद्दि—साथ कर ।
सद्धिय—साथ दिया ।
सनतव—11 69
सनाह=कवच ।
सनेत-नेत—17 19
सपज्जै—पज्ज—(पंजा०) बहाना, बहाना करता है ।
सपुरानौ—(14-116)
सबक्कि 3-23
सबे—सब, सर्व ।
समक—सम-अक—एक साथ ।
समाह—13-76
समुहाइ—सम्मुख होकर ।
समूर—समूह ।
समाध—1 68
सलिता—सरिता ।
सलिय—11 7
सलब—(4 26) फा० जप्त करना ।
सवाइ—सवाया ।
सविग—(2 63) सवेग ।
ससत्रा—शस्त्रधारी ।
सहियन—सहन किया ।
सहीर 6-2
सत्रियणि—स्त्रियों सहित ।
सवै—सवता है, झरता है ।
सकलापने—एकत्रित होना ।
संक्रमि—संक्रमण करके ।
सकुली—सकुल—व्याप्त ।
सक्की—शका करता है ।
सचना—संचित की, एकत्रित की ।
संजोरे—सजोकर, सवार कर ।
संजलिय—(15 12)
संभ—(हिसा०) सायकाल ।
सभरिय (18-60) भड़ गया ।
सठहु—साठ—गाँठ लगा दो ।
सबर्ह—सम्बल ।
समरहु—संभल जाओ ।
समरै—सभलता है ।
साखि—साक्षी ।
साजं—साजो सामान ।
सात—4-17 सात—घात ?
सार—शस्त्र, तत्व ।
सारम=(फा०) शरम, लज्जा ।
सारुक्क 12 8
सावद्धी 10-29
सावा—(पजा०) हरित ।
साशाही=साबाश, बाह बाह ।
साबीर—12-10 सबीर ?
स्याल—शृगाल ? तथा शूल ।
सिखंडिय—13 38 शिखंडी ?
सिंगिन—(बहुव०) शृंगी—साग—बरछी
सिंगिन—हेम—शृंगी हेम—शुद्ध स्वर्ण ।
सिंघले—सिंहली घोड़े ।
सिज्या—शया ।
सिज्ज ति—सज ति 19-58
सिट्टक 19 5
सिंदूरी—सिंदूर वाला घोड़ा या हाथी ।
सिंधुर—सिंधुर—हाथी ।
सिप्पर—सिर पर ?

सिभाइ—11-48
सिलहता—सिलहदार—कवचधारी।
सिल्सार—13-87
सिलहै—सिलह—कवच पहन कर।
सिल्ली 4-18
सीमंत 12-9, सामा का अंत।
सीर—(6-31) क्षीर।
सीरी 9-19
सीहत्यै—सीहत्य 16-58
सुक्किगयं—सूख गया।
सुचंगा—बहुत अच्छा।
सुझके—सूझता है दीखता है।
सुठांम—सु स्थान।
सुतज्जी 13-77, सम्यक् छोड़ दी।
सु दहि—9-155
सुधार्ट 5-2
सुपिंग—पीला।
सुभियहि—शोभित होता है।
सुध—स्वय।
सुसताइ—सुरता कर।
सुसाकी (4-17) मद्य पिलाने वाला।
सुहर—सुहड—हृष्ट पुष्ट।
सुहीनं—अति हीनता।
सूक—10-35
सूरवां—सूरमा (डिंग०) शूरवीर।
सोभनी 4 9
सादं मादं 1 65
सोनु—स्वर्ण।
स्रोन नल्लीं—रक्तधारा।
सोसन—शोषण करने के लिए।
सौकी 5 49।

ह

हकाव—(9-145) हकलाना।
हड-नेया 5-36
हंपि—हाफ कर।
हनदे—(पंजा०) हनन करते हैं।
हमं—अहंकारोक्ति।
हयो—है।
हलकि—हलक कर।
हलके—हलक गए, पागल हो गए।
हल्ल भल्ले—हड़बड़ाकर हल्ला—हमला करना।
हलग—हिले, हलचल हुई।
हल्लति—हिलता है।
हलि—हिल गई।
हसिय—हसता है।
हस्से—हंसे।
हाटक्क्य—हाटक—स्वर्ण।
हामति—(5-31)
हलीं—हिल गई।
हिंगोली—5 30
हित्ति—इति।
हिल्ली—(5 82) हिल गई।
हिब्बी—वाहनपी 10 29
हुप्पै—(6-41) हुंकारता है।
हुत्ती—थी।
हुलास—उल्लास।
होति—होता है।

त्र

त्रसत—डरते हैं।
त्रिडग्गो—त्रि-डग—कदम।

सहायक पुस्तकों की सूची

१ संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य सदन, इलाहाबाद।

२ चंद बरदाई और उस का काव्य—डा० विपिन बिहारी त्रिवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद।

३ अपभ्रंश व्याकरण—केशवराम, गुजरात वर्नाकुलर सोसाइटी, अहमदाबाद।

४ अपभ्रंश पाठावली— " " "

५ प्राकृत व्याकरण—हेमचन्द्र सूरी।

६ गुजराती इंगलिश डिक्शनरी।

७ सन्देश रासक—सम्पादित—जिन विजय सूरी, भारतीय विद्या भवन, बम्बई।

८ अनल्ज ऑफ राजस्थान—कर्नल टाड, रौटलेज एण्ड केगन, लण्डन।

९ जायसी ग्रन्थावली—डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।

१० बीसलदेव रासो—सम्पादित डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद् इलाहाबाद।

११ रामचरित मानस का पाठ—डा० माता प्रसाद गुप्त।

१२ इन्ट्रोडक्शन टु इण्डियन टैक्सचूअल क्रिटिसिज़म्, द्वारा एस एम कात्रे—ओरियण्टल पब्लिशिंग क०, पूना।

१३ इनर्टन्स पञ्चतन्त्र।

१४ रेवातट समय—डा० विपिन बिहारी त्रिवेदी, लखनऊ युनिवर्सिटी।

१५ राजस्थानी साहित्य और भाषा—मिनारिया, बीकानेर।

१६ हेमचन्द्र—देसी नाम माला, पिशल।

१७ पृथ्वी राज रासो वृहद् सस्करण—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
१८ अर्ध मागधी डिक्शनरी।
१९ हिन्दी शब्द सागर—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
२० हर्नले, कम्परटिव ग्रमर ऑफ गौडियन लगवेजिज।
२१ रासो सरक्षा—मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या, काशी।
२२ इण्ट्रोडक्शन टु प्राकृत—ए सी वुलनर।
२३ प्राकृत पैंगलम्—सी एम घोष, बगाल एसियाटिक सोसाइटी।
२४ पृथ्वीराज विजय—ऑफ जयानक,
२५ पुरातन प्रबन्ध सग्रह—जिन विजय सूरी, भारतीय विद्या भवन बबई।
२६ कोषोत्सव स्मारक संग्रह—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।
२७ मध्यकालीन भारतीय सस्कृति—जी एच ओझा।
२८ मध्यकालीन भारत का इतिहास—,, ,,
२९ राजपूताने का इतिहास—जगदीश गहलोत।
३० हिस्टोरिकल ग्रैमर ऑफ अपभ्रश—डा० तगारे, डक्कन कालेज पूना।
३१ पृथ्वीराज रासो मे कथानक रूढियां—व्रज विलास, राजकमल दिल्ली।
३२ व्रज भाषा—डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
३३ प्राकृत ग्रैमर—ऋषिकेश, मेहरचन्द लक्ष्मणदास लाहौर।
३४ निघण्टु तथा निरुक्त—डा० लक्ष्मण स्वरूप, ऑक्सफोर्ड।
३५ प्रौलिगेम्ना टु महाभारत—डा० वी एस सुक्थकर, पूना।
३६ भारतीय प्राचीन लिपिमाला—जि एच ओझा।
३७ भारतीय सम्पादन शास्त्र—श्री मूलराज जैन, बसाती बाजार लुधियाना।
३८ महाकवि धनपाल—प्राकृत कोष, भाव नगर।
३९ करण्ड चरिउ—डा० हीरालाल जैन।
४० प्रबन्ध चिन्तामणि—मेरुतुगाचार्य, सिंधी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद।
४१ वर्ण रत्नाकर ऑफ ज्योतिरीश्वराचार्य—सम्पादित डा० सुनीति कुमार चैटर्जी।
४२ रासो की भाषा—डा० नामवर सिंह, सरस्वती प्रेस, वाराणसी।

हिन्दी पत्रिकाएँ

१ सरस्वती—मई, जून १६२६, नवम्बर १६३४, जून १६३५, अप्रैल १६४२, नवम्बर १६२१।
२ राजस्थानी—सम्पूर्ण फाइल (शादूल रिसर्च इन्स्टीच्यूट)।
३ राजस्थानी जिल्द—३ जनवरी १६४०।

अंग्रेजी पत्रिकाएँ

१ हिस्टोरिकल क्वाटरली जिल्द १८, १६४० तथा दिसम्बर १६४२।
२ एसियाटिक सोसाइटी जनरल जिल्द २५।
३ प्रोसीडिंगज बगाल एसियाटिक सोसाइटी, सन् १८६८
४ जिल्द ६ वीं, एसियाटिक सोसाइटी जनरल १८६४।
५ बगाल एसियाटिक सोसाइटी जनरल जिल्द १२, १८७३।
६ कवि चद वरदाई—इण्डियन आएटी क्वेरी जिल्द १, १८७२।